उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

हल्द्वानी

BLIS- 104

पुस्तकालय वर्गीकरण प्रायोगिक

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विद्याशाखा

I SEMESTER

पाठ्यक्रम समिति

प्रोफे0 एच0पी0 शुक्ल
निदेशक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ0 देवेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग
उ0मु0वि0वि 0, हल्द्वानी

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ज्योतिष विभाग
समन्वयक (अतिरिक्त प्रभार)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर वी0पी0 खरे
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी

प्रोफेसर जे0एन0 गौतम
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

प्रोफेसर आर0के0 सिंह
अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

डॉ0 टी0एन0 दूबे
पुस्तकालयाध्यक्ष, उत्तरप्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

पाठ्यक्रम समन्वयक एवं संयोजन

डॉ नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ज्योतिष विभाग। समन्वयक (अतिरिक्त प्रभार)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

सम्पादन

डॉ0 टी0एन0 दूबे
पुस्तकालयाध्यक्ष, उत्तरप्रदेश राजर्षि
टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

इकाई लेखन	खण्ड	इकाई संख्या
प्रोफेसर जे0एन0 गौतम जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेश	**1, 2,3,4,5**	**1 से 16 इकाई**

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

प्रकाशन वर्ष - 2018 **प्रकाशक -** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

मुद्रकः -

नोट : - (इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।)

पुस्तकालय वर्गीकरण एवं प्रायोगिक

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – डी0डी0सी0 19 वाँ संस्करण (भाग – 1)	**पृष्ठ - 2**
इकाई 1: डी0डी0सी0 का क्रम विकास एवं संरचना	3 -30
इकाई 2: वर्ग संख्या निर्माण की सरल विधि एवं योजक युक्ति (Add Device) का प्रयोग	31-48
इकाई 3: सारणी – 1 (Standard Subdivisions) का प्रयोग	49-64
द्वितीय खण्ड - डी0डी0सी0 19 वाँ संस्करण (भाग – 2)	**पृष्ठ 65**
इकाई 4 : सारणी -2 Area का प्रयोग	66-85
इकाई 5 : सारणी -3 (Subdivisions of Individual Literature) का प्रयोग	86-106
इकाई 6: सारणी – 4,5,6 एवं 7 एवं आग्रताक्रम का प्रयोग	107-150
तृतीय खण्ड - कोलन क्लासीफिकेशन 6 वाँ संशोधित संस्करण (भाग -1)	**पृष्ठ 151**
इकाई 7: कोलन क्लासीफिकेशन का परिचय, क्रम विकास एवं संरचना	152-171
इकाई 8: मूलभूत श्रेणियों का परिचय एवं प्रयोग	172-191
इकाई 9: वर्गीकरण के नौ चरण	192-197
चतुर्थ खण्ड - कोलन क्लासीफिकेशन 6 वाँ संशोधित संस्करण (भाग -2)	**पृष्ठ 198**
इकाई 10: विभिन्न युक्तियों का परिचय एवं प्रयोग	199-212
इकाई 11: सामान्य एकलों (Common Isolate) का परिचय एवं प्रयोग	213-235
इकाइ 12: दशा सम्बन्ध (Phase Relation) का वर्ग संख्या निर्माण में प्रयोग	236 –246
पंचम खण्ड - कोलन क्लासीफिकेशन 6 वाँ संशोधित संस्करण (भाग -3)	**पृष्ठ 247**
इकाई 13: मुख्य वर्ग A से F तक वर्गांक निर्माण	248-273
इकाई 14: मुख्य वर्ग G से L तक वर्गांक निर्माण	274-323
इकाई 15: मुख्य वर्ग M से Q तक वर्गांक निर्माण	324-350
इकाई 16: मुख्य वर्ग R से Z तक वर्गांक निर्माण	351-393

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक

(B.Lib-18)

प्रथम सेमेस्टर- चतुर्थ प्रश्न पत्र

पुस्तकालय एवं वर्गीकरण प्रायोगिक

खण्ड - 1

डी0डी0सी0 19 वाँ संस्करण भाग – 1

इकाई – 1 डी0डी0सी0 का क्रम विकास एवं संरचना

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास
1.4 प्रथम संस्करण का प्रमुख योगदान
1.5 बेकन व हेरिस की वर्गीकरण पद्धति पर आधारित दशमलव वर्गीकरण – पद्धति
1.5.1 भूमिका
1.5.2 अनुसूची
1.5.3 सापेक्षिक अनुक्रमणिका
1.6 दशमलव वर्गीकरण की मौलिक योजना
1.6.1 दशमलव पद्धति
1.6.2 सोपान क्रमिक अंकन
1.6.3 स्मृति सहायक
1.7 सहायक सारणियाँ
1.8 दशमलव वर्गीकरण पद्धति की विशेषताएँ
1.9 दशमलव वर्गीकरण पद्धति की कमियाँ
1.10 डीडीसी संस्करण–20
1.11 डीडीसी संस्करण–21
1.12 डीडीसी संस्करण–22
1.13 डीडीसी संस्करण–23
1.14 सारांश

1.15 शब्दावली

1.16 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.17 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

1.18 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण पद्धति को आधुनिक वर्गीकरण पद्धति का श्रेय प्राप्त है इस पद्धति के प्रणेता एवं आविष्कारक मेलविल ड्यूवी, जिनका पूरा नाम मेलविल लुईस कौसुथ ड्यूवी (Melville Louis Kossuth Dewey) था। किन्तु आप मेलविल ड्यूवी से ही विश्वविख्यात थे। आपका जन्म न्यूयार्क स्टेट के अदम्स सेन्टर (Adams Centre) नामक नगर में 10 दिसम्बर, 1851 में हुआ था। ड्यूवी एक छोटे व्यवसायी के पुत्र थे, जब इनकी उम्र मात्र पाँच वर्ष ही थी तब इन्होंने कहा था कि मैं अपनी माँ की खाद्य सामग्री (Larder) को व्यवस्थित (Arranged) करूँगा। इनके अन्दर शिक्षा ग्रहण करने की लगन एवं उत्सुकता बचपन से ही थी। ड्यूवी के बाल्यकाल की 85 पुस्तकों का संग्रह इस ओर इंगित करता है कि ग्रंथों के प्रति इनकी अभिरुचि थी। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए 1870 में अम्हर्स्ट महाविद्यालय (Amberst College) में प्रवेश लिया तथा 23 वर्ष की ही आयु में (1874) स्नातक की उपाधि प्राप्त की जब वे विद्यार्थी ही थे तभी उसी कॉलेज में अंशकालीन रूप से ग्रंथालय में कार्य करने लगे थे तथा स्नातक परीक्षा पास करने के बाद आपको उसी कॉलेज में 9 जुलाई, 1873 को पुस्तकालय सहायक के पद पर नियुक्त किया गया। अपने विद्यार्थी जीवन में ही आपने 1873 में एक वर्गीकरण प्रणाली की रचना प्रारंभ कर दी थी।

कुछ समय पश्चात् आपकी नियुक्ति पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर अल्वनी न्यूयार्क स्टेट लाइब्रेरी में हुई। 1887 में ड्यूवी ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम स्कूल की स्थापना की तथा प्रशिक्षण प्रारंभ किया बाद में इसे एल्वनी (न्यूयार्क) में स्थानान्तरित कर दिया गया जो बाद मे ंन्यूयार्क स्टेट लाइब्रेरी स्कूल के नाम से प्रसिद्ध हुआ उसी समय मेलविल ड्यूवी को न्यूयार्क राज्य ग्रंथालय (New York State Library) का निदेशक भी नियुक्त किया गया।

पुस्तकालय विज्ञान की प्रथम पत्रिका 'लाइब्रेरी जर्नल' (Library Journal) के संपादन व प्रकाशन का कार्य भी ड्यूवी ने संपन्न किया इसका प्रकाशन 1876 में प्रारंभ हुआ। इसके अतिरिक्त अमेरिकन ग्रंथालय संघ (American Library Association), वर्तनी सुधार संघ (Spelling Reform Association), मीटरी ब्यूरो (Metric Bureau) आदि राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना व संचालन में आपने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपने ब्रिटिश पुस्तकालय संघ (British LIbrary Association) (1877), रीडर्स एण्ड राइटर्स कंपनी (Readers and Writers Company) (1897), लाइब्रेरी ब्यूरो (Library Bureau) (1882) की स्थापना की तथा इनके संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1924 में ड्यूवी ने अपने प्रकाशनों के समस्त स्वत्वाधिकार एक दान पत्र के द्वारा 'लेक प्लेसिड क्लब एजूकेशन फाउण्डेशन' नामक संस्था को समर्पित कर दिया। आपने डी.डी.सी. से संबंधित ग्रंथों की बिक्री से प्राप्त आय का उपयोग दशमलव वर्गीकरण को अधिकाधिक उपयोगी बनाने, संशोधित, संपादित, प्रकाशित एवं प्रचारित करने के लिए किया। ड्यूवी को 1902 में एल्फ्रेड एवं सायराक्यूज

विश्वविद्यालयों द्वारा मानद उपाधियाँ प्रदान की गयीं। अंतरराष्ट्रीय संगठन (I.O. – International Organization) की स्थापना का श्रेय भी इन्हें ही जाता है। इस दशमलव पद्धति का आविष्कारक 26 दिसंबर 1931 में आत्म विलीन हो गया।

1.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप यह बताने में सक्षम होंगे कि –

- दशमलव वर्गीकरण पद्धति का उद्भव एवं विकास कैसे हुआ?
- इसकी संरचना कैसी है?
- सोपान क्रमिक अंकन क्या है?
- इस वर्गीकरण पद्धति की विशेषताएँ एवं कमियाँ क्या हैं; तथा
- सापेक्षित अनुक्रमणिका क्या होती है आदि।

1.3 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास (Historical Background and Growth)

मेलविल ड्यूवी ने दशमलव वर्गीकरण पद्धति की रचना प्रारम्भ करने से पूर्व भ्रमण कर अनेक ग्रंथालयों का अवलोकन किया तथा इस बात की आवश्यकता महसूस की कि पुस्तकालय में पुस्तकों का व्यवस्थापन विषयानुसार अधिक क्रमबद्ध एवं सुविधाजनक सिद्ध होगा इस संबंध में इन्होंने डब्ल्यू.टी. हेरिस (W.T. Harris), जेकब स्वार्ज (Jacob Schwartz) एवं नताले वत्तेजती (Natale Battezzati) से सुझाव प्राप्त कर लगभग 6 माह तक प्रचलित विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों का गहन अध्ययन किया। ड्यूवी ने अपनी पद्धति की रचना 1873 में प्रारंभ कर दी थी तथा 1873–76 तक परीक्षण के तौर पर इसे अमहर्स्ट कॉलेज में प्रयोग किया परीक्षण में सफलता प्राप्त होने के फलस्वरूप इसका प्रथम संस्करण 1876 में 'ग्रंथालयों में ग्रंथों एवं पुस्तिकाओं को क्रमबद्ध और सूचीबद्ध करने के लिए वर्गीकरण और विषयानुक्रमणिका (A Classification and subject index for cataloguing and arranging the books and pamphlets of a library) शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित हुआ इस संस्करण के आख्या पृष्ठ (Title page) पर ड्यूवी का नाम नहीं था तथा यह संस्करण कुल 44 पेजों में प्रकाशित हुआ जिसमें से 12 पृष्ठ की भूमिका 12 पृष्ठों की अनुसूची एवं 18 पृष्ठों की अनुक्रमणिका तथा 2 पृष्ठों में स्पष्टीकरण दिये गये थे। अब तक इस पद्धति के कुल 23 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं समस्त संस्करणों के विकास क्रम को निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है –

संस्करण	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठों की संख्या		अनुक्रमणिका	स्पष्टीकरण	कुल पृष्ठों की संख्या
		भूमिका	अनुसूची			

1	1876	12	12	18	2	44
2	1885	66	162	86		314
3	1888	4	227	185		416
4	1891	41	234	191		466
5	1894	41	235	191		467
6	1899	41	260	210		511
7	1911	48	420	324		792
8	1913	48	462	340		850
9	1915	48	465	342		856
10	1919	48	517	374		940
11	1922	61	551	376		988
12	1927	67	683	491		1243
13	1932	75	902	670		1647
14	1942	80	1048	799		1927
15	1951	55	459	192		716
15. Rev.	1952	56	469	402		927
16	1958] 2V.	121	1314	1004		2439
17	1965.67] 2V.	158	1382	940		2480
18	1971] 3V.	460	1627	2692		4779
19	1979] 3V.	482	1574	1217		3273

20	1989] 4V.	514	944—864	961		3183
21	1996] 4V.	605	2283	1207		4115
22	2003] 4V.	808	2340	920		4076
23	2011] 4V.	779	1291+1140	965		4,175

1.4 प्रथम संस्करण का प्रमुख योगदान (Main Contributions of First Edition)

प्रारंभ में पुस्तकालय स्टाफ द्वारा निधानियों पर पुस्तकों को व्यवस्थित करने के लिए नियत स्थिति (Fixed location) का प्रयोग किया जाता था। पुस्तकालयों में पुस्तकों का व्यवस्थापन विषयानुसार था किंतु एक विशिष्ट या मुख्य विषय को निर्दिष्ट करने के लिए निधानी पर परिग्रहण संख्या (Accession number) से व्यवस्थित किया जाता था। प्रत्येक ग्रंथ को शेल्फ पर निश्चित स्थान (Exact Position) को निर्दिष्ट करने के लिए एक शेल्फ मार्क निर्धारित कर दिया जाता था जो Room no., bay no., Tier no., shelf no., and specific position in shelf पर आधारित होता था। शेल्फ मार्क एक स्थाई स्थिति (लोकेसन) को दर्शाता था। बाद में प्रकाशित या आने वाले नये संस्करण को विषय के अन्त में स्थान प्रदान किया जाता था इसके बाद पुस्तकों के निधानी व्यवस्थापन में एक नया मोड़ आया जिसके फलस्वरूप डॉ.ड्यूवी के अंदर एक विचार उत्पन्न हुआ जो नियत स्थिति (Fixed location) के विरोध में था इसे 'सापेक्ष स्थिति' (Relative location) कहा गया इस प्रकार का विचार उत्पन्न करने वाले ड्यूवी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने पुस्तकों के वर्गीकरण में दशमलव अंक निर्दिष्ट किया न कि निधानी को, इसका परिणाम यह हुआ कि नये ग्रंथों को संबंधित विषय के साथ उचित स्थान पर अन्तर्वेशन (Interpolate) किया जाने लगा।

उन्नीसवाँ संस्करण (19th edition)—डी.डी.सी. का 19वाँ संस्करण 1979 में प्रकाशित हुआ जो तीन खण्डों में है। इसके प्रथम खण्ड में भूमिका (Introduction table), द्वितीय खण्ड में अनुसूची (Schedule) तथा तृतीय खण्ड सापेक्षित अनुक्रमणिका (Relative Index) है। आपने अपनी पद्धति में सिर्फ दशमलव (Decimal) अंक का ही प्रयोग किया है। यही कारण है इसे दशमलव वर्गीकरण पद्धति नाम दिया गया।

1.5 वेकन व हेरिस की वर्गीकरण पद्धति पर आधारित दशमलव वर्गीकरण पद्धति

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में हेरिस की पद्धति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है—हेरिस ने बेकन द्वारा प्रयुक्त विषयों के क्रम को विलोम क्रम में रखकर अपनी पद्धति का आविष्कार किया बेकन, हेरिस व ड्यूवी द्वारा प्रयोग किये गये विषयों के क्रम व्यवस्था को अग्र तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है—

बेकन की रूपरेखा 1965		हेरिस की रूपरेखा 1970	ड्यूवी की रूपरेखा 1976
वास्तविक क्रम	विलोम क्रम		
इतिहास	दर्शन	विज्ञान दर्शन धर्म सामाजिक एवं राजनीतिक विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान उपयोगी कला	सामान्य कृतियाँ दर्शन धर्म समाजशास्त्र भाषाशास्त्र विज्ञान उपयोगी कला
काव्य	काव्य	कला ललित कला काव्य कथा साहित्य साहित्य ग्रन्थ	ललित कला साहित्य
दर्शन	इतिहास	इतिहास भूगोल एवं यात्रा, जीवनी	इतिहास भूगोल एवं यात्रा, जीवनी

डी.डी.सी. पद्धति के प्रत्येक संस्करण में कुछ परिवर्तन तथा संशोधन अवश्य होते हैं। 15वाँ संस्करण स्टैण्डर्ड संस्करण के रूप में मान्य किया गया। 16वाँ संस्करण 2 खण्डों में प्रकाशित हुआ जिसमें प्रथम खण्ड अनुसूची (Schedules) तथा दूसरा खण्ड सापेक्षिक अनुक्रमणिका (Relative Index) का था। 18वाँ संस्करण 3 खण्डों में प्रकाशित हुए तथा 20वाँ संस्करण 4 खण्डों में प्रकाशित हुआ इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है —

खण्ड	संस्करण—19	संस्करण—20

1.	संपादक द्वारा भूमिका, सारणियाँ परिवर्तन एवं संक्षेपण सूची, अनुसूची का संक्षिप्त विवरण	संस्करण की मुख्य विशेषताएँ, भूमिका, सारणियाँ, परिवर्तन एवं संक्षेपण, तुलनात्मक सूची, समानता सारणी
2.	अनुसूची	अनुसूची का संक्षिप्त परिचय, अनुसूची 000—500
3.	सापेक्षिक अनुक्रमणिका	अनुसूची 600—900
4.	—	सापेक्षिक अनुक्रमणिका व नियमावली (Manual)

1.5.1 भूमिका (Introduction Table)

यह दशमलव वर्गीकरण पद्धति का प्रथम खण्ड है इसमें पद्धति की प्रमुख विशेषताओं, उसकी मूल योजनाओं, प्रयोग विधि तथा प्रक्रिया आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है जब वर्गीकार को वर्गीकरण प्रक्रिया में किसी प्रकार की कठिनाई महसूस होती है तो वह भूमिका में दिये गये नियम व विवरण से अपनी समस्या का समाधान करते हैं अर्थात् यह भूमिका वर्गीकार के लिए मार्गदर्शिका का कार्य करती है। इसके प्रथम खण्ड में सात सहायक सारणियाँ दी गयी हैं। अन्त में मुख्य वर्ग, विभाजन व उपविभाजनों की सारणी (Summaries) दी गयी है।

1.5.2 अनुसूची (Schedule)

इसमें संपूर्ण विषय जगत को मुख्य वर्गों, मुख्य विभाजनों, उप विभाजनों आदि में विभाजित किया गया है। संस्करण 19 में इसे द्वितीय खण्ड तथा संस्करण 20, 21, 22 एवं 23 में द्वितीय एवं तृतीय खण्ड में व्यवस्थित किया गया है।

1.5.3 सापेक्षिक अनुक्रमणिका (Relative Index)

दशमलव वर्गीकरण की एक मुख्य विशेषता इसकी सापेक्षिक अनुक्रमणिका का होना है सापेक्षिकता का अर्थ यह है कि अनुसूची में अनेक स्थानों में बिखरे एक ही विषय के विभिन्न पक्षों को अनुक्रमणिका में एक ही विषय शीर्षक के अंतर्गत समन्वित करना और उनके विभिन्न स्थानों को वर्गांको द्वारा इंगित करना। संस्करण 19 में तृतीय खण्ड तथा संस्करण 20 में चतुर्थ खण्ड में प्रकाशित किया गया है संस्करण 20 में इसके साथ

नियमावली (Manual) भी दी गयी है संस्करण 19 के प्रयोग के लिए नियम पुस्तिका (Manual) पृथक से सन 1882 में प्रकाशित की गयी थी।

1.6 दशमलव वर्गीकरण की मौलिक योजना (Basic Plan of Decimal Classification Scheme)

इस पद्धति में शुद्ध अंकन (Pure Notation) का प्रयोग किया गया है जो सामान्य से विशेषीकरण की ओर बढ़ती है इसमें मात्र 10 भारतीय अरबी अंकों (Indo-Arabic Numerals) का प्रयोग हुआ है शुद्ध अंकन के प्रयोग के कारण ही इसका आधार संकुचित है तथा इसके वर्गांक अपेक्षाकृत अन्य वर्गीकरण पद्धतियों की तुलना में लम्बे बनते हैं इस पद्धति में संपूर्ण विषय जगत को 10 मुख्य वर्गों (Main Classes) में विभाजित किया गया है–

0 Generalities –सामान्य वर्ग
1 Philosophy and related Discipline –दर्शन एवं संबंधित ज्ञान क्षेत्र
2 Religion – धर्म
3 Social Science – सामाजिक विज्ञान
4 Language – भाषा विज्ञान
5 Pure Science – शुद्ध विज्ञान
6 Technology (Applied Science) – प्रौद्यौगिकी (व्यावहारिक विज्ञान)
7 The Arts – कलाएँ
8 Literature – साहित्य
9 General Geography and History – (सामान्य भूगोल एवं इतिहास)

1.6.1 दशमलव पद्धति (Decimal System)

इस पद्धति में ज्ञान के विभाजन एवं उपविभाजन के लिए दशमलव भिन्न सिद्धांत (Decimal Fraction Device) का प्रयोग किया गया है इस प्रकार मुख्य वर्गों को निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है –

0.0 Generalities
0.1 Philosophy and related discipline
0.2 Religion
0.3 Social Science
0.4 Language
0.5 Pure Science
0.6 Technology
0.7 The Arts
0.8 Literature
0.9 General Geography and History

शून्य दशमलव एक (0.1) या शून्य दशमलव पाँच (0.5) आदि को सिर्फ वैचारिक स्तर (Idea Plane) पर ही विचार किया जा सकता है अर्थात् पढ़ते, लिखते, बोलते एवं विचार करते समय यह कल्पना की जाती है कि वर्गांक (Class no.) का प्रत्येक अंक दशमलव द्वारा विभाजित है किंतु जब वर्गांक को अंकित किया जाता है तो प्रत्येक अंक के पूर्व शमलव अंक का प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि इससे वर्गांक अनावश्यक रूप से लम्बा हो जायेगा। यह दशमलव कोई अर्थ व्यक्त नहीं करता इसे ड्यूवी महोदय ने आँखों को आराम देने एवं पढ़ने की सुविधा व याद रखने की दृष्टि से प्रयोग किया है। दशमलव भिन्न सिद्धांत के प्रयोग के कारण ही वर्गांक के प्रत्येक अंक को दशमलव अंकों की भाँति उच्चारित किया जाता है जैसे 370 (Educaion) को तीन सात शून्य (Three Seven Zero) उच्चारित किया जाता है न कि तीन सौ सत्तर अर्थात् उनका उच्चारण टेलीफोन अंकों की भाँति किया जाता है। इसी प्रकार–540 पाँच चार शून्य (Five Four Zero), 632 छः तीन दो (Six Three Two), 954 नौ पाँच चार (Nine Five Four) इत्यादि।

इस पद्धति में वर्गांक की न्यूनतम संख्या तीन होती है इससे कम अंकों से कोई भी वर्गांक निर्मित नहीं किया जा सकता। इन तीन अंकों को पूर्ण करने के लिए आवश्यकतानुसार शून्य (0) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे–700 (दो शून्य का प्रयोग)

इस प्रकार ज्ञान जगत् के प्रथम विभाजन में मुख्य वर्गों को निम्न लिखित प्रकार से

व्यवस्थित किया गया है–

000 – Generalities
100 – Philosophy and related Discipline
200 – Religion
300 – Social Science
400 – Language
500 – Pure Science
600 – Technology (Applied Science)
700 – The Arts
800 – Literature
900 – General Geography and History

उपर्युक्त मुख्य वर्गों में से प्रत्येक मुख्य वर्ग को द्वितीय वर्ग विभाजन द्वारा पुनः 10 विभागों में विभाजित कर अंकन (0-9) द्वारा अंकित किया गया है। इस प्रकार मुख्य वर्ग समाजविज्ञान (300) को निम्नलिखित 10 विभागों में विभाजित किया गया है –

300 – Social Science समाज विज्ञान

310 – Statistics (सांख्यिकी)
320 – (राजनीति शास्त्र)
330 – Economics (अर्थशास्त्र)
340 - Law (विधि)
350 – Public Administration (लोक प्रशासन)
360 – Social Problems & Services (सामाजिक समस्याएँ एवं सेवाएँ)
370 – Education (शिक्षा शास्त्र)
380 – Commerce (व्यवसाय)
390 – Customs, Etiqutte, Falklore (रीति–रिवाज, शिष्टाचार, लोकगीत)

इस विधि से अन्य मुख्य वर्गों को भी दस–दस विभागों में बाँटा गया है इस प्रकार इस

पद्धति में कुल 100 विभाग (Division) हैं जिनको संस्करण 19 के खण्ड 1 पृष्ठ 472 पर द्वितीय संक्षेपक में दिया गया है इन 100 विभागों में से प्रत्येक विभाग को तृतीय विभाजन द्वारा 10 अनुभाग (Sections) में बाँटा गया है और अनुभागों को भी 0–9 अंकों से अंकित किया गया है इस प्रकार इस पद्धति मतें कुल 1000 अनुभाग हैं जिनको कि खण्ड 1 के पृष्ठ 473–482 पर तृतीयक संक्षेपक में दिया गया है। इस प्रकार रसायन शास्त्र (540) को निम्नलिखित 10 अनुभागों (Sections) में बाँटा गया है–

540 – Chemistry
541 – Physical & theoretical chemistry
542 – Laboratories, apparatus, equipment
543 – Analytical chemistry
544 – Qualitative chemistry
545 – Quantitative chemistry
546 – Inorganic chemistry
547 – Organic chemistry
548 – Crystallography
549 – Mineralogy

इस प्रकार अनुभागों को उपानुभागों उप–उपानुभागों एवं और भी सूक्ष्म उपानुभागों में विभाजित किया गया है –

उदाहरण –

361.6	Public Action
361.61	Social Policy
361.614	Welfare and human rights

361.614

3	6	1	6	1	4
मुख्य वर्ग	विभाग	अनुभाग	उपानुभाग	उप–उपानुभाग	सूक्ष्म उपानुभाग
Main Class	Division	Section	Sub-Section	Sub-Sub Section	Micro-Section

1.6.2 सोपान क्रमिक अंकन (Hierarchical Notation)

यह एक सोपान क्रमिक वर्गीकरण पद्धति है इसमें प्रत्येक क्रमागत विभाजन द्वारा वर्गांक लम्बाई में एक अंक (Digit) से बढ़ जाता है यह श्रृंखला क्रमशः बायीं से दायीं ओर बढ़ती जाती है इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वर्गांक सामान्य (General) से विशिष्टता (Specific) की ओर बढ़ता जाता है –

उदाहरण– 3 Social Science
36 Social Problem and services
364 Chriminology
364.1 Criminal offeness
364.13 Political and related offeness
364.132 Offeness against Governmental Ethics
364.132 3 Corruption

1.6.3 स्मृति सहायक (Mnemonics)

इस पद्धति में स्मरणशीलता का गुण विद्यमान है इसका अर्थ होता है कि समान एकल विचारों को समान एकल अंकों द्वारा व्यक्त किया जाना इस विशेषता का प्रयोग किसी भी विषय के साथ किया जा सकता है। दशमलव वर्गीकरण पद्धति में विषयों एवं ज्ञान शाखाओं को संश्लेषित करने हेतु एक ही प्रकार के विचारों को व्यक्त करने के लिए एक ही प्रकार के समान एकलों को प्रयोग करके इसमें स्मृति सुलभ साधनों (Memory Aids) का समावेश किया गया है। इस पद्धति में प्रयुक्त सहायक सारणियों के अंकनों को प्रयोग किये जाने पर उनमें एकरूपता आती है।

(A) मानक उपविभाजन के रूप में–

Dictionary of Science 503
Dictionary on Medical Term 610.3
Dictionary of Higher Education 378.003

नोट– शब्द कोश के अंकन '3' को क्रमशः एक और दो एवं तीन शून्यों के साथ अनुसूची में दिये गये नियमों के अनुसार दर्शाया गया है।

(B) भौगोलिक उपविभाजन के रूप में–

History of India 954

Geography of India	915.4
Civil Procedure of India	347.54

(c) भाषा उप–विभाजन के रूप में–

English Language	420
English Literautre	820
General Encyclopaedia is English	032

अन्य (Others)

अनुसूची में Ecology के लिए वनस्पति विज्ञान (581) जन्तु विज्ञान (591) तथा जीव विज्ञान (574) में एक ही अंक (5) को निर्धारित किया गया है जो स्मरणशीलता के गुण को परिलक्षित करता है।

सारणी 5 व 6 में भाषा के आधार पर व्यक्तियों को दर्शाने वाले अंकन में समानता है यहाँ तक कि मुख्य वर्ग 400 में 420–490 के अंतर्गत वर्णित भाषाओं के अनुक्रम व दोनों सारणियों के भाषा के आधार पर बने अंक के अनुक्रम में भी समानता देखने को मिलती है। जैसे–

Language	420–490	सारणी–5	सारणी–6
English	420	–2	–2
French	430	–3	–3

1.7 सहायक सारणियाँ (Auxiliary Tables)

ड्यूवी कृत दशमलव वर्गीकरण पद्धति में अनुसूची के अतिरिक्त प्रथम खण्ड में सात सहायक सारणियों का प्रावधान किया गया है जिनमें दो प्रकार के एकलों को सूचीबद्ध किया गया है–सामान्य एकल (Common Isolate) एवं विशिष्ट एकल (Special Isolate)

सामान्य एकल (Common Isolate)

ऐसे एकल जिनका प्रयोग आवश्यकता पड़ने पर किसी भी मुख्य वर्ग के साथ किया जा सकता है इनके लिए किसी निर्देश की आवश्यकता नहीं होती है। खण्ड 1 में वर्णित सारणियों में से चार सारणियाँ (1,2,5,7) को सामान्य एकलों के अंतर्गत रखा गया है। सारणी 2,5 एवं 7 के प्रयोग के निर्देश अनुसूची में दिये रहते हैं। अगर निर्देश न दिये हों तो प्रथम खण्ड अर्थात् मानक उपविभाजन के अनुसार क्रमशः 09, 089 एवं 088 का प्रयोग करते हुए संबंधित वर्गांक जोड़ते हैं। सारणी 1 में मानक उप–विभाजन (Standard Sub-division) दिए गए हैं जिनका उपयोग आवश्यकतानुसार किसी भी विषय के किसी भी वर्गांक के साथ जोड़कर किया जा सकता है जो अनुसूची में वर्णित एवं सूचीबद्ध अंकनों

(Notations) की प्रकृति के अनुसार कभी एक शून्य, दो शून्य, तीन शून्य या चार शून्य के साथ्ज्ञ प्रयुक्त किये जाते हैं।

विशिष्ट एकल (**Special Isolate**)

ऐसे एकल जो किसी मुख्य वर्ग विशेष के लिए निर्मित किये गये हैं या जिन एकलों का प्रयोग निर्धारित किये गये विषय के साथ ही किया जाता है उन्हें विशिष्ट एकलों की संज्ञा दी गयी है। इनके उपयोग संबंधी निर्देश दिये गये हैं दशमलव पद्धति में सारणी 3, 4 व 6 के उप–विभाजनों को विशिष्ट एकलों की श्रेणी में रखा गया है।

सामान्य एवं विशिष्ट एकलों की सात सारणियाँ निम्नलिखित हैं–

सारणी	संस्करण 19
1	Standard Subdivisions
2	Areas
3	Subdivisions of Individual literature
4.	Subdivisions of Individual languages
5	Racial, Ethnic, National Groups
6	Languages
7	Persons

उपर्युक्त तालिका में वर्णित सातों सारणियों का प्रयोग अकेले नहीं हो सकता क्योंकि इनसे किसी मुख्य वर्ग या विषय की अभिव्यक्ति नहीं होती अर्थात् इनका प्रयोग किसी विषय के वर्गांक के साथ ही किया जाता है। जैसे हम जापान को एक विषय नहीं बना सकते जिसके लिए अंकन –52 निर्धारित किया गया किन्तु इसे किसी विषय के साथ जोड़कर पूर्ण वर्गांक निर्मित किया जायेगा।

जैसे– History of Japan
जापान का इतिहास
9 + –52 = 952

1.8 दशमलव वर्गीकरण पद्धति की विशेषताएँ (**Characteristics of DDC Scheme**)

1. यह एक लगभग परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति है जिसमें सभी संभावित विषयों को विभिन्न मुख्य वर्गों के नीचे सहायक अनुक्रम में दिया गया है और उनके वर्गांक भी साथ–साथ दिये गये हैं अतः वर्गीकार को ग्रंथों के वर्गांक को निर्मित करने के लिए पूर्व निर्मित (Readymade) वर्गांक प्राप्त करना पड़ता है।

2. यह सरल, स्पष्ट, उपयोगी एवं सुव्यवस्थित रूप से प्रकाशित प्रथम आधुनिक वर्गीकरण पद्धति है और वर्गकार इसका सुविधापूर्वक उपयोग कर सकते हैं।

3. इसमें शुद्ध अंकन (Pure Notation) प्रयुक्त किया गया है जो सरल एवं व्यावहारिक है।

4. भारतीय अरबी अंकों (Indo-Arabic numerals) 0,1,2,3.........9 का प्रयोग किया गया है जो लिखने, पढ़ने तथा याद रखने में सहायक है।

5. इसकी अनुक्रमणिका (Index) बहुत व्यापक एवं उपयोगी है जो इस पद्धति की विशेष विशेषता है।

6. सहायक सारणियों को प्रयोग करने से अधिकतर विषयों को सह–विस्तारित वर्गांक (Co-extensive class number) प्रदान किया जाता है।

7. इसमें अनेक स्थानों पर स्मृति सहायक अंकों का भी प्रयोग किया गया है अर्थात् समान एकल विचारों को समान एकल अंकों द्वारा प्रदर्शित किया गया है जो बार–बार प्रयुक्त होने के कारण याद रखने में सहायक होते हैं।

8. इस वर्गीकरण पद्धति का दशमलव अंकन पद्धति पर आधारित होने के कारण इसमें प्रयुक्त अंकन भी दशमलव भिन्न (Decimal fractioned) होते हैं जिससे इसकी विस्तार शीलता में वृद्धि हो गयी है।

9. यह सभी प्रकार के ग्रन्थालयों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है,

   इसके संक्षिप्त विवरण एवं अनेक भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं जो छोटे ग्रन्थालयों तथा विभिन्न अलग–अलग भाषी क्षेत्रों के लिए भी उपयोगी है।

10. एक संगठित विशेषज्ञों का संपादक मंडल इसे निरंतर संशोधित एवं परिवर्तित करने में संलग्न रहता है, जिससे समय–समय पर नवीन आने वाले विषयों को भी अनुसूची स्थान प्रदान करती है।

11. इसकी सरलता एवं उपयोगिता ही इसकी आलोचना का कारण है यद्यपि यह पद्धति विश्व के 70 प्रतिशत ग्रन्थालयों में प्रयुक्त हो रही है फिर भी इसमें कुछ कमियाँ हैं।

1.9 ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति की कमियाँ (Limitations of DDC Scheme)

1. **सैद्धांतिक दृष्टि से अपूर्ण (Uncompleted from Philosophical/Theoratical point of view)**—यह पद्धति सैद्धांतिक दृष्टि से अपूर्ण है इसमें वर्गीकरण के मूलभूत सिद्धांतों का उपयोग समान रूप से नहीं किया गया है।
2. **संकुचित आधार (Limited base)**—शुद्ध व सीमित अंकन के प्रयोग के कारण इसका आधार बहुत छोटा है। इसमें ज्ञान जगत को केवल 10 भागों में बाँटा गया है, जिसके फलस्वरूप कई समान व बराबर महत्व के विषयों को उपयुक्त स्थान नहीं मिल सका है इस कारण से यह पद्धति ज्ञान के नवीनतम अनुसंधानों पर लिखित पाठ्य सामग्री को समाविष्ट करने में असमर्थ है।
3. **अमेरिकन झुकाव (American Incliened)**—इसमें अमेरिकन झुकाव अधिक देखने को मिलता है। अप्रचलित अमेरिकन शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। सापेक्षिक अनुक्रमणिका में भी सामान्य आँग्ल पदों का उल्लंघन किया गया है। यह झुकाव धर्म (Religion) में स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है।
4. **अंकों का असमान आवंटन (Ununiformity in distribution of notation)**—इस पद्धति

में अंकों का आवंटन बहुत ही असमान व अविवेकपूर्ण ढंग से किया गया है। जिन विषयों पर सबसे अधिक ज्ञान का निरंतर विकास हो रहा है। उन विषयों को मात्र दस—दस अंक देकर उनके महत्व को गौण बना दिया गया। उदाहरणार्थ—500 (शुद्ध विज्ञान—Pure Science) के अंतर्गत 510 गणित—Mathematics, 520 खगोल विज्ञान (Astronomy), 530 (भौतिक विज्ञान—Physics) आदि। इसी प्रकार 300 (समान विज्ञान—Social Science) एवं 600 (प्रौद्योगिकी—Technology) के अंतर्गत महत्वपूर्ण विषयों को मात्र दस—दस अंक आवंटित किये गये हैं किन्तु इसकी तुलना में 100 (Philosophy—दर्शन), 200 (Religion—धर्म), 400 (Language—भाषा), 800 (साहित्य—Literature), 900 (General geography and History) (सामान्य भूगोल एवं इतिहास) आदि विषयों को सौ—सौ अंक देकर अन्य विषयों के विस्तार को संकुचित बना दिया गया है कुछ मुख्य वर्गों को दूसरे मुख्य वर्ग के अंतर्गत रखकर उनके महत्व को कम कर दिया गया है, जैसे—100 दर्शन शास्त्र (Philosophy) के अंतर्गत 150 मनोविज्ञान (Psychology) को व्यवस्थित किया गया है।

5. **विषयों का दोषपूर्ण संस्थापन (Defaultful Arrangement of Subjects)**—कुछ ऐसे मुख्य वर्ग जिन्हें पास—पास होना चाहिए अर्थात् जिनका आपस में निकट का संबंध

है उन्हें एक–दूसरे से दूर रखा गया है तथा इनके मध्य अन्य ऐसे विषयों को व्यवस्थित किया गया है जिन्हें अन्यत्र रखा जाना चाहिए अर्थात् यह अनुपयुक्त एवं दोषपूर्ण है क्योंकि वर्गीकरण का प्रथम उद्देश्य है संबंधित विषयों को एक साथ रखना। इस पद्धति में भाषा और साहित्य, समाज विज्ञान एवं समाज कल्याण, अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य, सार्वजनिक वित्त एवं निजी वित्त आदि संबंधित विषयों को एक–दूसरे से दूर रखा गया है।

6. **अविवेकपूर्ण विधि से उपविषयों के अंकनों का आवंटन (To Assign of notation to Ancillary in Irrational method)**–इस पद्धति में प्रत्येक मुख्य वर्ग को दस विभागों में बाँटा गया है तथा प्रत्येक विषय को एक विभाग दिया गया है किन्तु कुछ मुख्य वर्गों में ऐसा नहीं किया गया है। कुछ मुख्य वर्गों में किसी विषय को तो एक विभाग दिया गया है किन्तु शेष को 'अन्य 'Other' के अंतर्गत रख दिया गया है। उदाहरणार्थ–

(अ) **मुख्य वर्ग 400 (भाषा–Language) एवं 800 (साहित्य–Literature) में**–इसमें कुछ यूरोपीय भाषाओं– अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन, स्पेनिश, ग्रीक, लेटिन आदि को एक–एक विभाग दिया गया है तथा शेष भाषाओं को 890 'Other' के अंतर्गत रखा है जिनके अंतर्गत विश्व की कई महत्वपूर्ण भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है जैसे–चीनी, रूसी, हिंदी, उर्दू, पर्शियन आदि।

(ब) **मुख्य वर्ग 200 (धर्म–Religion) में**–इसका विभाजन भी असमान व अविवेकपूर्ण ढंग से किया गया है इसके अंतर्गत ईसाई (Christian) धर्म को कई विभाग आवंटित किये गये हैं तथा संसार के अन्य सभी धर्मों को 290 'Other' के अंतर्गत रखा गया है।

(स) **मुख्य वर्ग 030 सामान्य कृतियाँ (Generalities)**–030 सामान्य विश्वकोशों को, जो किसी भाषा में लिखे गये हैं, में से कुछ भाषाओं का उल्लेख किया गया है किन्तु कुछ भाषाओं के विश्वकोशों का वर्गांक निर्मित करने के लिए 039 'Other' Language के अंतर्गत वर्गीकृत करने एवं भाषा अंक को सारणी 6 से लाने का निर्देश दिया गया है।

जैसे– Encyclopaedia in Hindi Language
हिंदी भाषा के विश्वकोश
039 + –914 31 = 039.914 31

1.10 डीडीसी संस्करण 20 (**DDC 20**)

डीडीसी 20 का प्रकाशन सन् 1989 में चार खण्डों में हुआ था इसके प्रथम खण्ड में सारणियाँ (Tables), द्वितीय खण्ड में अनुसूची (Schedules) 000–599, तृतीय खण्ड में भी अनुसूची 600–999 तथा चतुर्थ खण्ड में अनुक्रमणिका एवं नियमावली (Index and Manual) को व्यवस्थित किया गया है। डीडीसी 20 की संरचना मुख्य वर्ग तथा सारणियों के नामों में परिवर्तन को इस प्रकार समझाया जा सकता है–

खण्ड 1–परिचय सारणी (Introduction Tables)
खण्ड 2–अनुसूची (Schedules : 000-599)
खण्ड 3–अनुसूची (Schedules : 600-999)
खण्ड 4–सापेक्ष अनुक्रमणिका–नियमावली (Relative Index-Manual)

खण्ड 2 एवं 3 के अंकनों के साथ निम्नलिखित सात सहायक सारणियों के अंकन को जोड़कर वर्गांक निर्मित किया जाता है–सारणियों के नामों में 19वें संस्करण से कुछ भिन्नता है।

सारणी 1	–	मानक उपविभाजन (Standard sub-division)
सारणी 2	–	भौगोलिक क्षेत्र, ऐतिहासिक काल एवं व्यक्ति (Geographic Areas, Historical Periods and Persons)
सारणी 3	–	साहित्यिक विधा तथा प्रथक साहित्य (Sub-divisions for individual literature for specific literary forms)

इस तृतीय सारणी को तीन भागों में इस प्रकार विभाजित किया गया है –

Table 3-A for works by or about individual Authors
Table 3-B for works by or about two or more Authors
Table 3-C for sub-divisions to be added to 3-B numbers and 808-809
सारणी 4–भाषाओं के उपविभाजन (Sub-divisions of Individual Languages)
सारणी 5–जातीय, उपजातीय, राष्ट्रीय समूह (Racial, Ethric, National Groups)
सारणी 6–भाषाएँ (Languages)
सारणी 7–व्यक्तियों के समूह (Groups of Persons)

अनुसूची (खण्ड 2 एवं 3) में मुख्य वर्गों को इस प्रकार विभाजित किया गया है–

000 – Generaalities
100 – Philosophy & psychology
200 – Religion
300 – Social sciences
400 – Languages
500 – Natural sciences & mathematics

600 – Technology (Applied sciences)

700 – The arts

800 – Literature & rhetoric

900 – Geography & history

सापेक्षिक अनुक्रमणिका एवं नियमावली (Relative Index and Manual)

सापेक्षिक अनुक्रमणिका को डीडीसी 20 के चतुर्थ खण्ड में दिया गया है। इस अनुक्रमणिका में उन शब्दों को सम्मिलित किया जाता है जो सारभूत अंकों को इंगित करते हैं। विशिष्ट विषयों के पर्यायवाची शब्द वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। डीडीसी 19 में अनुक्रमणिका में सारणियों के अंकन को इंगित करने के लिए सारणियों के नाम संक्षिप्त में दिये जाते हैं। जबकि 19वें संस्करण के बाद के संस्करणों में से उस सारणी की संख्या दी जाती है। जैसे–

DDC 19		DDC 19 के बाद के संस्करणों में	
Hindi		Hindi	
Language	491.43	Language	491.43
Literature	891.43	Literautre	891.43
Lang.	–914 31	T.4	–914 31
India		India	
Area	–54	T.2	–54

इस संस्करण में मुख्यतः ब्रिटिश कोलम्बिया एवं संगीत में परिवर्तन किये गये हैं। डीडीसी 19 से डीडीसी 20 में जो परिवर्तन किये गये हैं उन्हें समानता सारणी, तुलनात्मक सारणी, पुर्नस्थापना एवं संक्षिप्तीकरण सारणियों में उल्लेख किया गया है। नियमावली में भी संशोधित, परिवर्तित या नए अंकों को जोड़ने से संबंधित जानकारी दी गई होती है।

टिप्पणी:संस्करण 20 में मुख्य रूप से 'see also' अन्तर्निर्देश का ही प्रयोग हुआ है जबकि संस्करण 19 में see; other relations see; other aspects see; see also इत्यादि का बहुतायत से प्रयोग किया गया है।

नियमावली (Manual)

चतुर्थ खण्ड के अंत में पृष्ठ 735–958 पर दी गयी है जबकि 19वें संस्करण में इसे पृथक रूप से सन् 1982 में प्रकाशित किया गया है। नियमावली वर्गीकार को अनुसूची एवं सारणियों में वर्णित विभिन्न वर्गांकों/अंकनों में विभिन्न पक्षों, उनकी जटिलताओं और विकल्पों के बारे में जानकारी प्रदान करती है तथा इसके अतिरिक्त यह लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में दशमलव वर्गीकरण विभाग की नीति व प्रायोगिक प्रक्रिया का भी वर्णन करती है। सापेक्षिक अनुक्रमणिका के साथ ही नियमावली देने से वर्गीकार को सुविधा होती है। अनुसूची या सारणियों में जिन अंकनों को परिवर्तित, संशोधित, पुनर्स्थापन इत्यादि किया गया है तो वहाँ पर नियमावली देखिये 'see manual' निर्देश दिए गए हैं। कुछ निर्देशों की

भाषाओं में भी परिवर्तन किया गया है। इसे क्रमानुसार (Numeric order) में व्यवस्थित किया गया है। नियमावली के बाद पृष्ठ 959–96, पर परिशिष्ट (Appendix) दिया गया है। इसमें लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के दशमलव वर्गीकरण विभाग की नीतियों एवं प्रावधानों का उल्लेख किया गया है।

डीडीसी 20 की विशेषताएँ (Special Features of DDC 20)

डीडीसी 20 की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. इस संस्करण में नियमावली चतुर्थ खण्ड में सापेक्षिक अनुक्रमणिका के अन्त में प्रकाशित की गई है जबकि 19वें संस्करण में यह पृथक से प्रकाशित हुई थी।
2. इसमें बहुस्तरीय संक्षिप्त सारणियाँ भी दी गयी हैं।
3. सारणी 1 में कुछ अंक शामिल किए गए हैं, कुछ के अर्थ परिवर्तित किए गए हैं तथा कुछ की क्षमता में वृद्धि की गयी है।
4. संगीत तथा ब्रिटिश कोलम्बिया पूर्ण रूप से संशोधित कर दी गई है (फोइनिक्स अनुसूची)
5. अनुसूची को उठाने रखने तथा प्रयोग करने में सुविधा होती है क्योंकि इसे दो खण्डों में व्यवस्थित किया गया है।
6. संक्षिप्त सारणियों को प्रथम खण्ड के अंत से स्थानांतरित करके द्वितीय खण्ड के प्रारंभ में व्यवस्थित किया गया है।
7. प्रथम खण्ड के अंत में फाइनिक्स अनुसूची की तुलनात्मक एवं समानता सारणी को शामिल किया गया है।
8. भूमिका को पुनः लिखा गया है।
9. यह संस्करण 4 खण्डों में प्रकाशित है।

सीमाएँ (Limitations) डीडीसी 20 की कुछ कमियाँ निम्नलिखित हैं –

1. विषयों का दोषपूर्ण व्यवस्थापन यथावत बना हुआ है।
2. अनुसूची को दो खण्डों में प्रकाशित होने से वर्गीकार को 'जोड विधि' (Add Device) से वर्गांक बनाने में परेशानी का अनुभव होता है।
3. विषय शब्दकोश या विश्वकोश के साथ भाषा अंकन लगाने का प्रावधान समाप्त कर दिया गया है जिससे वर्गांक अधूरा निर्मित होता है।
4. इस संस्करण में सारणी 2 में –3–9 के नीचे –1 में वर्णित अंकनों को जोड़ने के निर्देश नहीं दिया गया है।

1.11 डीडीसी संस्करण 21 (DDC 21)

डीडीसी 21, सन् 1996 में प्रकाशित हुआ था यह संस्करण भी 4 खण्डों में प्रकाशित किया गया है। इसकी संरचना इस प्रकार की गई है–

खण्ड 1–Prefatory material, Editor's Introduction, Glossary, Table 1-7 and information on the changes in the new editions

खण्ड 2–Schedule 000-599

खण्ड 3–Schedules 600-999

खण्ड 4–Relative Index-Manual

इस संस्करण को यूजर फ्रेंडली बनाने का प्रयास किया गया है तथा उन कमियों को दूर करने की कोशिश की गई है जो इससे पूर्व के संस्करणों में नहीं हो सकी। आधुनिकीकरण पर भी जोर दिया गया है। अनुसूचियों एवं सहायक सारणियों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये हैं तथा नवीन अवधारणाओं को सम्मिलित किया गया है।

अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise) 1

1. डीडीसी 17 के मुख्य वर्गों को लिखिए।
2. डीडीसी 19 के सात सहायक सरणियों के नाम लिखिए।
3. डीडीसी की तीन विशेषताएँ बताइए

1.12 डीडीसी संस्करण 22 (DDC 22)

ड्यूई दशमलव वर्गीकरण का 22वाँ संस्करण 2003 में प्रकाशित हुआ था। इसका इलेक्ट्रॉनिक संस्करण वेब ड्यूई (Web Dewey) जुलाई, 2003 में ही आ गया था। 22वें संस्करण की सूचना इन्टरनेट के माध्यम से भी प्राप्त की जा सकती है। इस संस्करण में पहली बार वेब पर्यावरण (Web Environment) को समाहित किया गया है। यह ऐसा संस्करण है जिसने विश्व ज्ञान में विकसित सभी नए विषयों को अपने में शामिल किया है।

1.12.1 प्रणाली का व्यवस्थापन (Organization of System)

ड्यूई दशमलव वर्गीकरण का 22वाँ संस्करण 4076 पृष्ठों के साथ चार खण्डों और 11 भागों, जो कि 'ए' से 'के' तक चिन्हित है, में विभाजित है –

खण्ड–1 : भाग ऐ से जी

ए–xi-xxxvi	प्राथमिक पृष्ठ, नोट्स और नई विशेषताएँ
बी–xxxvii-lxiii	डीडीसी प्रणाली का परिचय। इसमें डीडीसी के वर्गांक को बनाने के लिए सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है।

सी—lxv-lxxiv	शब्दावली : इसके अंतर्गत डीडीसी में प्रयुक्त पदों की संक्षेप में परिभाषा दी गई है।
डी—lxxv-lxxvii	भाग ए से सी तक के पदों एवं विचारों की अनुक्रमणिका है।
ई—1-181	मैनुअल : यह अस्पष्ट या अनेकार्थ नम्बरों की व्याख्या एवं समझने हेतु मार्गदर्शिका है। इसमें लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के डेसिमल क्लासिफिकेशन डिवीजन की नीतियों का सार भी प्रस्तुत किया गया है।
एफ—183-713	6 तालिका उनके उपविभाजनों के साथ।
जी—715-731	पूर्ववर्ती संस्करण में से पुनः स्थापित एवं पुनः प्रयुक्त नम्बरों की समतालिका।

खण्ड—2 : भाग एच से आई

एच—v-xvi	तीन प्रमुख संक्षेपिकाएँ
आई—1-1250	000—599 वर्गों की अनुसूचियाँ

खण्ड—3 : भाग जे

जे—1-1074	600—999 वर्गों की अनुसूसचियाँ

खण्ड—4 : भाग के

के—1-928	सापेक्षिक अनुक्रमणिका : इसमें अनुसूचियों एवं तालिकाओं में दिए गए विषयों की आनुवर्णिक एवं संरचनात्मक अनुक्रमणिका दी गई है।

1.12.2 डीडीसी 22 की विशिष्ट विशेषताएँ (Special features of DDC 22)

- स्पष्ट टिप्पणी
- यूजर फ्रेंडली संस्करण
- संक्षिप्त संपादकीय परिचय
- सारणी 7 को समाप्त कर दिया गया है।
- नियमावली को चतुर्थ खण्ड (डीडीसी 21) से स्थानांतरित कर प्रथम खण्ड में सारणियों से पहले व्यवस्थित किया गया है।
- पारदर्शितायुक्त पक्ष संरचना
- मुख्य वर्ग 000 कम्प्यूटर साइंस, सूचना एवं सामान्य कार्य को इंगित करती है।
- यह सुपर हाई—टेक संस्करण है।

- सापेक्षिक अनुक्रमणिका को सरल बना दिया गया है।

1.12.3 नई विशेषताएँ (New Features)

22वें संस्करण से जैसा कि उम्मीद थी, उसी के अनुरूप इसमें ज्ञान के मानचित्रण की अद्यतन सोच एवं नित नई उभर रही शब्दावली को प्रस्तुत किया गया है। इस नए संस्करण में पाठकों की सूचना खोजने की अभिरुचि एवं डीडीसी से पाठकों की प्रत्याशा को ध्यान में रखकर ही इसका प्रकाशन किया गया है। इस प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन से पूर्व पर्याप्त सावधानियाँ बरती गई हैं। 22वें संस्करण में स्टेट यूनिवर्सिटी न्यूयॉर्क के जार्ज द' एलिया (George D'Elia) द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम एवं ऑस्ट्रेलिया में डीडीसी के उपयोक्ताओं का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों को इस संस्करण में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त एडिटोरियल पॉलिसी कमेटी (DCEPC) ने बाहरी विशेषज्ञों, संगठनों एवं संस्थाओं से सतत संपर्क स्थापित करके नए–नए सुझाव प्राप्त किए हैं। इसके अतिरिक्त यूडीसी से प्राफेसर आई.सी. मैकाल्विन (I.C. McIlwaine) एवं सियर्स लिस्ट से डॉ. जोसफ मिलर (Joseph Miller) को संशोधन प्रक्रिया में शामिल किया गया। अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण ने निम्नलिखित क्षेत्रों को संशोधित करके पुनः व्यवस्थित किया गया है–

- भौगोलिक क्षेत्र
- कानून
- राजनीतिक प्रणाली और दल
- भाषा
- साहित्य
- ऐतिहासिक काल

1.12.4 संशोधन (Revisions)

डीडीसी 22वें संस्करण में पुराने संस्करणों की तरह ही पूरे वर्गांकों को परिवर्तित एवं संशोधित नहीं किया गया है परंतु आंशिक परिवर्तन कई जगहों पर दिखाई देता है। सारणियों एवं अनुसूची में काफी संशोधन किए गए हैं। इसके प्रमुख संशोधन इस प्रकार हैं –

1. पूर्व में डीडीसी का प्रकाशन फॉरेस्ट प्रेस से हो रहा था, अब इसे ओसीएलसी (OCLC) के द्वारा किया जा रहा है।
2. सारणी 7 व्यक्तियों के वर्ग (Groups of Persons) का निरसन (Abrogation) किया गया है, जो इसका एक महत्वपूर्ण संशोधन है। इस सारणी की

विषयवस्तु को अनुसूची एवं सारणी–1 के अंकन–08 में व्यवस्थित किया गया है।

3. 22वें संस्करण में कुछ अंकनों को 21वें संस्करण के सदृश रखा गया है। जबकि कुछ अंकनों को और छोटा कर दिया यगा है।
4. इस संस्करण में 21वें संस्करण के कई अंकों को नए शब्दार्थों में पुनः प्रयुक्त किया गया है।

1.12.5 वेब ड्यूई (**Web Dewey**)

यह ड्यूई दशमलव वर्गीकरण 22 (2003) डेटाबेस का वेब आधारित संस्करण है इस संस्करण की विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

- वेब ड्यूई (2003) और संक्षिप्त वेब ड्यूई (2004) का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण आज इन्टरनेट पर उपलब्ध है। लेकिन इसका उपयोग लाइसेंस प्राप्त उपयोक्ता ही कर सकते हैं। साथ ही इसमें उद्धरण क्षमताएँ भी विकसित की गई हैं जो कि प्रयोग करने वालों को अपनी टिप्पणी जोड़ने की अनुमति प्रदान करती है।
- इसमें हजारों आपेक्षिक अनुक्रमणिका और बने हुए अंक दिए गए हैं।
- इसमें लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस सब्जेक्ट हैडिंग्स डी.वी. हैडिंग्स के साथ दी गई है।
- यह त्रैमासिक रूप से अद्यतन होता है जिस कारण से इसमें वर्गीकरण और नए LCSH Mappings, अनुक्रमणिका पद और बने बनाए पद जोड़ दिए जाते हैं।

इस संस्करण में भी अनुसूची एवं सारणियों में अनेक परिवर्तन किए गए हैं।

1.13 डीडीसी संस्करण 23 (**DDC 23**)

डीडीसी के 23वें संस्करण का प्रकाशन सन् 2011 में हुआ इसके पश्चात् 15वें संक्षिप्त संस्करण का प्रकाशन भी 2012 में हुआ था। इस संस्करण में भी अनेक संशोधन (पूर्ण या आंशिक) तथा परिवर्तन किये गये हैं। इसके अंतर्गत मुख्य वर्ग एवं 6 सहायक सारणियों का विवरण इस प्रकार है।

1.13.1 मुख्य वर्ग (**Main Classes**)

000 General works, Computer Science and Information
100 Philosophy and Psychology
200 Religion
300 Social Sciences
400 Languages
500 Pure Sciences
600 Technology

700 Arts and Recreation
800 Literature
900 History and Geography

1.13.2 सारणियाँ (Tables)

इस संस्करण की 6 सहायक सारणियाँ निम्नलिखित हैं –

- T1 Standard Subdivisions
- T2 Geographic Areas, Historical Periods, Biography
- T3 Subdivisions for the Arts, for Individual Literatures, for Specific Literary Forms
    - T3A Subdivisions for Works by or about Individual Authors
    - T3B Subdivisions for Works by or about More than One Author
    - T3C Notation to Be Added Where Instructed in Table 3B, 700.4, 791.4, 808-809
- Subdivisions of Individual Languages and Language Familites
- T5 Ethnic and National Groups
- T6 Languages

अभ्यास प्रश्न (Questions for Exercise) 2

4. डीडीसी 23वें संस्करण अनुसार सहायक सारणियों के नाम लिखिए।
5. डीडीसी 22 की विशेषताएँ बताइए।
6. वेब ड्यूवी के बारे में लिखिए।

1.14 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप यह जान चुके होंगे कि दशमलव वर्गीकरण पद्धति में दशमलव पद्धति का अनुपालन कैसे होता है। इस पद्धति का ऐतिहासिक विकास की भी जानकारी हो गई होगी। डीडीसी पद्धति को विश्व के लगभग 135 से अधिक देशों के दो लाख पुस्तकालयों में उपयोग किया जा रहा है। इसके व्यापक प्रयोग का कारण इसकी सर्वाधिक लोकप्रियता, इसकी सरलता एवं नियमित रूप से अद्यतन होना है। नवीन संस्करणों में विषयों को नई–नई अवधारणाओं को आवश्यकतानुसार उनको व्यवस्थित किया जा रहा है। इसकी निरंतर अद्यतन एवं उन्नत होने के कारण ही यह अब ''वेब डीवी'' के रूप में हमारे सामने उपलब्ध है।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में वर्गीकरण के क्षेत्र में दशमलव वर्गीकरण पद्धति एक महान उपलब्धि है। इसका 19वाँ संस्करण तो बहुत ही लोकप्रिय हुआ था। अब तक

इसके 23 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं तथा 24वें संस्करण पर कार्य चल रहा है। सहायक सारणियाँ एवं इसकी सापेक्षिक अनुक्रमणिका इस पद्धति को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

1.15 शब्दावली (Glossary)

दशमलव पद्धति	–	वर्गांक की संपूर्ण संख्या दशमलव अंक पर आधारित
मानक उपविभाजन	–	ऐसे विभाजन, हिन्हें आवश्यकता पड़ने पर नियमानुसार किसी भी विषय के साथ जोड़ा जा सके।
अनुसूची	–	विषयों के विभाजन एवं उप–विभाजनों की सूची।
सापेक्षिक अनुक्रमणिका	–	किसी एक अवधारणा को अनुसूची एवं समस्त सारणियों में किस परिप्रेक्ष्य में कहाँ–कहाँ पर उल्लेख है तथा उसका वर्गांक क्या है? उन्हें अनुक्रमणिका में एक साथ वर्गानुक्रम में व्यवस्थित एवं सूचीबद्ध होना ही सापेक्षिक अनुक्रमणिका कहलाता है।

1.16 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer of questions for Exercise)

अभ्यास प्रश्न–1

(i)

000	-	Generalities
100	-	Philosophy and related disciplines
200	-	Religion
300	-	Social sciences
400	-	Languages
500	-	Pure sciences
600	-	Technology (Applied science)
700	-	The Arts
800	-	Literature
900	-	General Geography and History

(ii) डीडीसी 19 की सात सहायक सारणियाँ इस प्रकार हैं–

Table 1 -	Standard subdivisions
Table 2 -	Areas
Table 3 -	Subdivisions of Individual literatures
Table 4 -	Subdivisions of Individual languages
Table 5 -	Racial, Ethnic, National Groups

Table 6 - Languages
Table 7 - Persons

(iii) डीडीसी की तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

- यह सरल, स्पष्ट, उपयोगी, सुव्यवस्थित एवं अद्यतन रूप से प्रकाशित वर्गीकरण पद्धति है।
- इसमें शुद्ध अंकन का प्रयोग होने से यह सरल एवं व्यावहारिक है।
- इसकी अनुक्रमणिका बहुत ही व्यापक एवं उपयोगी है।

<u>अभ्यास प्रश्न 2</u>

(iv)

Table 1	-	Standard subdivisions
Table 2	-	Geographic Areas, Historical Periods, Biography
Table 3	-	Subdivisions for the Arts, for individual literatures, for specific literary forms
Table 4	-	Subdivisions of Individual Languages and Language Families.
Table 5	-	Ethnic and National Groups
Table 6 -		Languages

(v) डीडीसी 21 की विशेषताएँ

डीडीसी 21, सन् 1996 में प्रकाशित हुआ था यह संस्करण भी 4 खण्डों में प्रकाशित किया गया है। इसकी संरचना इस प्रकार की गई है–

खण्ड 1–Prefatory material, Editor's Introduction, Glossary, Table 1-7 and information on the changes in the new editions

खण्ड 2–Schedule 000-599

खण्ड 3–Schedules 600-999

खण्ड 4–Relative Index-Manual

इस संस्करण को यूजर फ्रेंडली बनाने का प्रयास किया गया है तथा उन कमियों को दूर करने की कोशिश की गई है जो इससे पूर्व के संस्करणों में नहीं हो सकी। आधुनिकीकरण पर भी जोर दिया गया है। अनुसूचियों एवं सहायक सारणियों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये हैं तथा नवीन अवधारणाओं को सम्मिलित किया गया है।

(vi) वेब डीवी

यह ड्यूई दशमलव वर्गीकरण 22 (2003) डेटाबेस का वेब आधारित संस्करण है इस संस्करण की विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

- वेब ड्यूई (2003) और संक्षिप्त वेब ड्यूई (2004) का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण आज इन्टरनेट पर उपलब्ध है। लेकिन इसका उपयोग लाइसेंस प्राप्त उपयोक्ता ही कर सकते हैं। साथ ही इसमें उद्धरण क्षमताएँ भी विकसित की गई हैं जो कि प्रयोग करने वालों को अपनी टिप्पणी जोड़ने की अनुमति प्रदान करती है।
- इसमें हजारों आपेक्षिक अनुक्रमणिका और बने हुए अंक दिए गए हैं।
- इसमें लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस सब्जेक्ट हैडिंग्स डी.वी. हैडिंग्स के साथ दी गई है।
- यह त्रैमासिक रूप से अद्यतन होता है जिस कारण से इसमें वर्गीकरण और नए LCSH Mappings, अनुक्रमणिका पद और बने बनाए पद जोड़ दिए जाते हैं।

इस संस्करण में भी अनुसूची एवं सारणियों में अनेक परिवर्तन किए गए हैं।

1.17 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979), Dewey Decimal Classifications and Relative Index. 3 vols., 17th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1966), ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण पद्धति : क्रियात्मक विश्लेषण, (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1966), ''ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण पद्धति (20वाँ संस्करण) : मूल्यांकन एवं समालोचनात्मक विवेचन'' ग्रंथालय विज्ञान, खण्ड–27, अंक 1–2, पृ.11–23
- Singh, Niranjan (2000). DDC 21 and Beyond : The DDC prepares for the future. In readings in LIS : Fertschrift volume of Dr.S.P.Sood, Raj Publishing House, Jaipur.
- Hussain, Sabahat (2004). Dewey Decimal Classification : A complete survey of twenty two edition, B.R. Publishing Corporation, Delhi.
- Kaushik, Sanjay K. (2004). DDC 22 : A practical approach, Ess Ess Publications, New Delhi.
- PSG Kumar (2003). Knowledge organization, Information Processing and Retrieval : Practice, B.R.Publishing Corporation, Delhi.
- Satija, M.P. (2004). Exercise in the 22nd edition of the Dewey Decimal Classification, Ess Ess Publications, New Delhi.
- Singh, Niranjan (2008). Selected Changes and revisions in DDC 22 : An analysis. In information literacy in digital era. ed. by C.Lal, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987), प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–2 : वर्ग संख्या निर्माण की सरल विधि एवं योजक युक्ति का –प्रयोग

Unit-2 : Simple methods and use of add devices to prepare the class number

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 प्रयोग के नियम
2.3.1 अनुक्रमणिका का प्रयोग
2.4 डीडीसी पद्धति का प्रयोग
2.4.1 शीर्षक
2.4.2 केंद्रित शीर्षक
2.4.3 परिभाषा एवं व्याख्यात्मक टिप्पणी
2.4.4 उदाहरण टिप्पणी
2.4.5 विषय क्षेत्र निर्धारक टिप्पणी
2.4.6 समावेश टिप्पणी
2.4.7 अनुदेश टिप्पणी
2.4.7.1 यहाँ वर्गीकृत कीजिए
2.4.7.2 वैकल्पिक प्रावधान
2.4.7.3 सहायक सारणियों से जोड़िए टिप्पणियाँ
2.4.8 आधार अंक के साथ अन्य अनुक्रम की पूर्ण संख्या का प्रयोग
2.4.9 आधार अंक के साथ किसी अन्य वर्ग संख्या के कुछ भाग का प्रयोग
2.4.10 योजक चिन्ह तारांकन (*) की सहायता से विषयों का वर्गीकरण
2.4.11 सहायक सारणियों एवं अनुसूची दोनों से जोड़िए टिप्पणी
2.4.12 अन्यत्र वर्गीकृत कीजिए टिप्पणी
2.4.13 वर्ग..........में............टिप्पणियाँ
2.4.14 के लिए..............देखें टिप्पणियाँ
2.4.15 व्यापक/विस्तृत कार्य को वर्गीकृत टिप्पणियाँ
2.4.16 पूर्व प्रयुक्त टिप्पणी
2.5 वर्गीकृत शीर्षक
2.6 अभ्यास हेतु शीर्षक

2.7 सारांश
2.8 शब्दावली
2.9 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
2.10 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण पद्धति एक लगभग परिगणनात्मक (Almost Enumerated) वर्गीकरण पद्धति है। इसके अंतर्गत संभावित विषयों के बने बनाए (Readymade) वर्गांक दिए गए होते हैं। इनके अतिरिक्त स्वतः कोई अन्य वर्गांक निर्मित नहीं किया जाता। उक्त के अतिरिक्त भी अनुसूची एवं सारणियों में निर्देश दिए गए हैं। इन निर्देशों का आधार यह है कि जहाँ पर आवश्यक समझा गया है या संभावना हो सकती है कि यहाँ पर नियमानुसार अनुसूची के अंतर्गत अन्य विषयों का अनुक्रम की संख्या को जोड़कर वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं। अनुसूची में दिए गए अनुक्रमों में एक विषय के अनुक्रमों के साथ उसी विषय या अन्य विषय के दूसरे अनुक्रम की संख्या को प्रयोग किए जाने के प्रावधान से वर्गीकरण पद्धति की क्षमता में विस्तार एवं वृद्धि तो होती ही है साथ ही ऐसे प्रावधानों से अनुसूची के आकार में वृद्धि को कम किया जा सकता है। दशमलव वर्गीकरण पद्धति नियमित रूप से संशोधित कर प्रकाशित की जा रही है तथा इसमें नियमित रूप से नए–नए अवधारणाओं को सम्मिलित किया जा रहा है। संस्करण 20 से यह पद्धति चार खण्डों में प्रकाशित हो रही है।

अनुसूची में अनावश्यक विस्तार एवं वृद्धि से बचाने हेतु इस पद्धति में आवश्यकतानुसार कई स्थानों पर दो विषयों या दो से अधिक अनुक्रमों की संख्याओं को जोड़ने हेतु अनेक प्रकार की योजक विधियों का प्रयोग किया गया है।

2.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आप यह बताने में सक्षम होंगे कि –

- डीडीसी में वर्गांक निर्मित करने के नियम क्या हैं?
- विभिन्न टिप्पणियों एवं निर्देश का क्या तात्पर्य है तथा इनकी क्या उपयोगिता है; तथा
- एक विषय के साथ दूसरे विषय के अंकनों का प्रयोग कैसे किया जाएगा आदि।

ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था है, इसका प्रथम उद्देश्य है पाठ्य–सामग्री का समुचित उपयोग। लेकिन यह तभी संभव है जब पाठक की वांछित पाठ्य–सामग्री को एक निश्चित क्रम में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यवस्थित किया जाए जिससे पाठक द्वारा मांग करने पर कम से कम समय पर उसे प्रदान किया जा सके यह सिर्फ वर्गीकरण द्वारा ही संभव है इसके माध्यम से एक विशिष्ट विषय की समस्त पाठ्य–सामग्री को एक स्थान पर व्यवस्थित किया जाता है। ग्रंथालय वर्गीकरण का प्रमुख उद्देश्य पाठ्य–सामग्री को निश्चित क्रम में व्यवस्थित कर सूचना की पुनः प्राप्ति को सुगम बनाना है। किसी ग्रंथ के वर्गीकरण का प्रथम चरण विषय निर्धारण होता है जो साधारणतया ग्रंथ की आख्या से ज्ञात

हो जाती है लेकिन कभी–कभी आख्या से विषय का निर्धारण करना वर्गीकार के लिए कठिन हो जाता है तो इस समस्या के निदान के लिए विषय सूची, प्राक्कथन, भूमिका आदि का अध्ययन करना चाहिए। वर्गीकार को सभी विषयों की सामान्य जानकारी एवं वर्गीकरण प्रक्रिया तथा प्रयोग विधि से अच्छी प्रकार परिचित होना चाहिए।

2.3 प्रयोग के नियम (Rules to use)

कुछ आवश्यक एवं महत्वपूर्ण नियम हैं जिन्हें वर्गीकार को वर्गीकरण कार्य के लिए प्रयोग मे लाना चाहिए–

1. प्रत्येक ग्रंथ का वर्गीकरण पाठकों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर करना चाहिए ताकि यह कार्य तर्कहीन न होने पाये।
2. कभी–कभी आख्या पर आधारित वर्गीकरण ग्रंथ को गलत स्थान पर पहुँचा देता है इसलिए उसके अन्तर्विषय को ज्ञात करने के लिए विषय सूची, प्राक्कथन, उपआख्या तथा भूमिका आदि का भी अध्ययन करना चाहिए।
3. जब कोई ग्रंथ किसी विशिष्ट विषय के दो या दो से अधिक उपविषयों को प्रदर्शित करता हो तो उसे सबसे प्रमुख उपविषय में वर्गीकृत करना चाहिए यदि सभी उपविषय समान महत्व के हों तो विस्तृत विषय के अंतर्गत वर्गीकृत करना चाहिए।
4. कभी–कभी ऐसे ग्रंथ आ जाते हैं कि उनसे संबंधित वर्गांक अनुसूची में नहीं दिये रहते तो इस अवस्था में उस ग्रंथ को उस विषय के अंतर्गत वर्गीकृत करना चाहिए जिस विषय के वह अधिक नजदीक हो।
5. कभी–कभी ग्रंथ दो विषयों से संबंधित होते हैं तो इस अवस्था में ऐसे विषय के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा जिसका उल्लेख अनुसूची में पहले किया गया हो।
6. किसी ग्रंथ के लिए मात्र अनुक्रमणिका से वर्गांक निश्चित नहीं करना चाहिए बल्कि अनुक्रमणिका द्वारा चयन किये गये अंक को अनुसूची से मिलान अवश्य करें।
7. वर्गीकरण कार्य में आने वाली कठिनाइयों एवं जटिलताओं के समाधान हेतु जो निर्णय लिए जाएं उसका लेखा रखना चाहिए जिससे भविष्य में उनसे संबंधित ग्रंथ को वही वर्गांक प्रदान किया जा सके। ऐसा करने से वर्गांक में समानता/एकाग्रता बनी रहती है।

2.3.1 अनुक्रमणिका का प्रयोग (Use of Index)

अनुक्रमणिका दशमलव वर्गीकरण पद्धति की असाधारण विशेषता है फिर भी इसका प्रयोग कम से कम करना चाहिए। खण्ड 1 के अंत में (संस्करण 19) में दिये गये प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय संक्षेपकों (Summaries) को क्रम से अध्ययन कर सम्भावित वर्गांक खोजना चाहिए इससे विषय से संबंधित अन्य पहलुओं का ज्ञान हो जाता है। इसके बाद भी यदि समस्या उत्पन्न हो रही हो तो अनुक्रमणिका की सहायता से संबंधित वर्गांक तक कम से कम समय में पहुँचा जा सकता है।

2.4 डी.डी.सी. पद्धति का प्रयोग (**Use of DDC Scheme**)

वर्गीकार को प्रायोगिक वर्गीकरण करते समय प्रत्येक निर्देश व टिप्पणी को ध्यान में रखना चाहिए यह निर्देश सात सारणियों, अनुसूची या अनुक्रमणिका में कहीं भी दिये गये हों क्योंकि तीनों संक्षेपकों के आधार पर सम्भावित वर्गांक तक तो पहुँचा जा सकता है किंतु उनमें विषयों के सूक्ष्म विषयान्तरों का समावेश हो भी रहा है या नहीं इसकी जाँच करके ही अंतिम निर्णय लेना चाहिए। इस पद्धति में जगह–जगह पर कई भिन्न–भिन्न प्रकार के निर्देश दिये गये हैं जिन्हें जान लेना तथा वर्गीकरण करते समय वर्गीकार द्वारा इनका पालन करना अति आवश्यक है ताकि त्रुटियों की संभावना लगभग समाप्त हो सके।

2.4.1 शीर्षक (**Headings**)

किसी पद या शब्द को किसी विशिष्ट शीर्षक द्वारा प्रकट किया जाता है यह इतना विस्तृत होता है कि अपने अधीनस्थ सभी प्रविष्टियों को समाविष्ट कर लेता है। सोपान क्रमिक सिद्धांत के कारण विशिष्ट विषय का शीर्षक अपूर्ण हो सकता है। किंतु इसे उस विस्तृत शीर्षक का अंश मानकर पढ़ना चाहिए जिसका कि वह भाग है। उदाहरणार्थ 891.43 हिंदी का तात्पर्य हिंदी साहित्य से है किंतु 491.43 का तात्पर्य हिंदी भाषा से है।

यदि किसी शीर्षक के दो पदों में से अंतिम पद को छोटे कोष्ठक ( ) में रखा गया है तो वह निकटतया या पूर्णतया तथा प्रथम पद का पर्यायवाची होगा। जैसे–

010.42 Analytical (descriptive bibliography)
—492 Nether lands (Holland)
—5493 Shri Lanka (Ceylon)
—620.112 72 Radiographic (X-ray)
—589.41 Rhodophyta (Red algae)

2.4.2 केंद्रित शीर्षक (**Centered Headings**)

जब अनुसूची में किसी एक पहलू को प्रदर्शित करने के लिए एक से अधिक अंकनों का प्रयोग किया जाता है तभी केंद्रित शीर्षक का प्रयोग किया जाता है ऐसी अवस्था में यह निर्देश दिया गया होता है कि इसके अंतर्गत वर्गीकृत करें। जैसे–

616.1—616.9 Specific disease
342—347 Law of individual states and nations
362—363 Specific social problems and services

2.4.3 परिभाषा एवं व्याख्यात्मक टिप्पणी (**Definition and Explanatory Notes**)

अगर किसी विषय के क्षेत्र (Scope) की जानकारी न हो तो उसके अंतर्गत दी गयी सूचना का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि कुछ शीर्षकों को अच्छी तरह से समझने के लिए उनके नीचे व्याख्यात्मक टिप्पणी दी गयी है तथा कहीं–कहीं शीर्षक को परिभाषित भी किया गया है।

उदाहरणार्थ :

410 Linguistics के नीचे निम्नलिखित परिभाषा दी गयी है– Science and structure of spoken and written language.

2.4.4 उदाहरण टिप्पणी (**Example Notes**)

इस प्रकार की टिप्पणी में शीर्षकों के आशय को स्पष्ट किया गया है इसमें यह स्पष्ट किया जाता है कि किस प्रकार के विषय अथवा विषयात्मक अवधारणाओं का समावेश किया गया है।

उदाहरण : 332.422 2 Gold standards

Examples :	gold coin, gold bullion, gold exchange standards.
	394.2 Special occasions
Examples :	anniversaries, birthdays, celebrations, fast days.
	355.133 23 Enforcement
Example :	Use of military police, criminal investigation.

2.4.5 विषय क्षेत्र निर्धारक टिप्पणी (**Scope Notes**)

विषय और उसके उपविभाजनों की विशिष्टताओं का उल्लेख संबंधित शीर्षकों के नीचे उनके विषय क्षेत्र को स्पष्ट करने के लिए टिप्पणियाँ दी गयी हैं। जैसे–

631.3	Agricultural tools, machinery, equipment description, use place in agriculture.
621.483 1	Reactor Physics
	Theory, description, testing of physical phenomena occuriring with in reactors.

2.4.6 समावेश टिप्पणी (**Inclusive Notes**)

कुछ ऐसे उपविषय है जिन पर पर्याप्त साहित्य अभी भी उपलब्ध नहीं है तथा अनुसूची में उनके लिए अलग से वर्गांक की व्यवस्था नहीं है लेकिन उन उपविषयों को ऐसे

विषयों के अंतर्गत रखने का प्रावधान किया गया है जो उन शीर्षकों के विषय क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आते।

उदाहरण–331.813 704 2 Technological unemployment including unemployment due to automation.

351.827 Foreign commerce

Including tourism by foreigners

2.4.7 अनुदेश टिप्पणियाँ (Instruction Notes)

वर्गीकार की सहायता हेतु अनेक प्रकार की अनुदेश टिप्पणियों (Instruction notes) का प्रयोग अनुसूची में किया गया है, जो निम्नलिखित हैं –

1. Class here notes
2. Optional provision
3. Add from auxiliary tables notes
4. Add from schedule notes
5. Add from both tables & schedule notes
6. Class elsewhee notes
7. Cross reference notes
8. Class......in.......notes
9. Class comprehensive work in.....notes
10. Formerly notes

2.4.7.1 यहाँ वर्गीकृत कीजिए (Class here Notes)

यहाँ वर्गीकृत कीजिए (Class here notes) टिप्पणियों का प्रावधान अनुसूची में जगह–जगह पर किया गया है इस प्रकार की टिप्पणी का प्रयोग ऐसे पहलू के लिए किया जाता है जो कि शीर्षक को अतिव्याप्त (Overlap) करते हैं जैसे भौगोलिक सारणी में -54 India के नीचे 'Class here Himalayas.....' पद मिलता है यहाँ पर India and Himalayas दोनों एक दूसरे के वृत को प्रतिच्छेदित करते हैं क्योंकि Himalayas India से विस्तृत व संकुचित दोनों हैं इसकी सीमाएँ भारत से बाहर फैली हुई हैं इस संदर्भ में विस्तृत है तथा इसकी सीमाएँ भारत के कुछ ही राज्यों से लगती हैं इस संदर्भ में संकुचित है।

इसी प्रकार– 340 Law के अंतर्गत
Class hare jurisprudence
343.01 – Military, defence (national security), veterans law
Class here war and emrgency legislation

382.05-* Import trade
Class here non-tariff barriers to trade

576 Microbes
Class here microbiology

2.4.7.2 वैकल्पिक प्रावधान (Optional Provision)

कहीं–कहीं पर अनुसूची में एक ही पद या विशिष्ट विषय के लिए निर्धारित वर्गांक के अतिरिक्त वैकल्पिक वर्गांक का भी प्रावधान किया गया है तथा वहाँ पर यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस वर्गांक के स्थान पर किसे प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

उदाहरण– —016 Indexes (Stand.Sub.div.)
(It is optional to class here subject bibliographies and catalogs prefer 016)

229.24 Judith (Schedule)
If preferred, Class in 222.88 (Ed.19)

330. (159) Socialist and related schools
(optional number prefer 335)

2.4.7.3 सहायक सारणियों से जोड़िये टिप्पणियाँ (Add from Auxiliary tables Notes)

सात सहायक सारणियों में से सारणी 2–7 के अंतर्गत ऐसे अंकन दिये गये हैं जिनका प्रयोग अनुसूची के कुछ निश्चित वर्गांकों के साथ करके उन्हें विशिष्टता प्रदान की जा सकती है। प्रत्येक निर्देश में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि अनुसूची के किस आधार अंक के साथ कौन सी सहायक सारणी के किस अंकन का प्रयोग किया जाना है। जैसे–327 (International relation) के अंतर्गत ..3–.9 (Foreign relation of specific nations) में सारणी 2 के अंकन 3–9 तक के अंकन जोड़ने का निर्देश दिया गया है। जैसे–भारत की विदेश नीति (Foreign policy of China)

327 आधार अंक में चीन का अंकन–51 जोड़ दिया जायेगा। अतः वर्गांक 327+ –51 = 327.51 होगा।

इसी प्रकार–

305.9 के अंतर्गत

909—999 Persons by occupation
Add to base number 305.9 notation 09-99 from table 7

155.84 Specific racial and ethnic groups
Add to base number 155.84 notation 03-99 from tables 5.

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन प्रकार की योजक युक्तियों/विधियों का प्रावधान किया गया है। उपर्युक्त तीनों योजक विधियों को उदाहरण सहित इस प्रकार समझाया जा सकता है–

2.4.8 आधार अंक के साथ अन्य अनुक्रम की पूर्ण संख्या का प्रयोग (Use of complete number of other sequence with base number)

इसका तात्पर्य एक विषय के साथ अन्य विषय या अनुक्रम के संपूर्ण संख्या को जोड़कर वर्गांक निर्मित करने से है। इसे विषय विधि (Subject device) भी कहा जा सकता है। दशमलव वर्गीकरण पद्धति की अनुसूची (खण्ड–2) में अनेक स्थानों पर, जहाँ आवश्यकता महसूस की गई है, वहाँ पर संपूर्ण वर्ग संख्या को प्रयुक्त करने के निर्देश दिये गये हैं। इस प्रावधान के अंतर्गत उस विशिष्ट आधार अंक वाली वर्ग संख्या के साथ ''000–999'' अथवा ''100–999' तक के किसी भी संख्या को आवश्यकतानुसार जोड़ा जा सकता है। इसे निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है–

उदाहरण–1 : Indexing and abstracting of medical science literature
025.06 + 61[0] = 025.066 1

द्वितीय खण्ड अनुसूची में मुख्य वर्ग Library science के 020 अंकन के अंतर्गत इसके उपविभाजन 025.06 में पद 'Information storage and retrievala system devoted to specific disciplines and subjects' दिया गया है। इसी के अंतर्गत विशिष्ट विषय के प्रलेखन को वर्गीकृत (Class here documentation of specific disciplines and subjects) करने का प्रावधान है।

प्रलेखन (documentation) पद Indexing and abstracting की ही अभिव्यक्ति है। अंकन 020.06 के अंतर्गत यह निर्देश दिया गया है– "Add 001-999 to base number 025.06" इसी निर्देश के अनुसार 025.06 के साथ आयुर्विज्ञान साहित्य (medical lit.) के लिए 610 जोड़ा गया है, चूँची नियमानुसार दशमलव वर्गीकरण पद्धति में दशमलव के बाद अंतिम संख्या के रूप में शून्य (0) नहीं हो सकता इसलिए 610 का शून्य हटा दिया गया है।

उदाहरण–2 : Agriculture Science Library
026 + 63[0] = 026.63

अनुसूची में वर्ग संख्या 020 Library Science के विभाजन 026 के सामने "Libraries devoted to various specific disciplines and subjects" दिया गया है। यह अंकन विशिष्ट पुस्तकालयों को वर्गीकृत करने के लिए निर्धारित किया गया है। इसके नीचे दिये गये निर्देशानुसार "Add 001-999 to bare number 026" के साथ किसी भी विषय की संख्या

जोड़कर उस विशिष्ट विषय के पुस्तकालय का वर्गांक बनाया जाएगा। उपर्युक्त निर्मित वर्गांक में 630 कृषि विज्ञान के लिए प्रयुक्त हुआ है। नियमानुसार अंतिम अंक शून्य को हटा दिया गया है।

उदाहरण–3 : Bibliography of books on constitutional and administrative law
016 + 342 = 016.342

अनुसूची के मुख्य वर्ग 010 Bibliography के उपविभाजन 016 "Subject bibliographies and catalogues दिया गया है। इसके अंतर्गत 016.1– .9 में यह निर्देश दिया गया है कि आधार अंक 016 के साथ 100–999 तक के किसी भी उपयुक्त वर्ग संख्या को आवश्यकतानुसार जोड़कर वर्गांक बनाया जा सकता है। उपयुक्त उदाहरण में 342 Constitutional and administration law के लिए प्रयोग किया गया है।

उदाहरण–4 : Trade Union of Lawyers
331.881 1 + 34[0] = 331.881 134

अनुसूची के मुख्य वर्ग 331 Labour Economics के उपविभाजन 331.881 "Other than extractive, manufacturing, construction" के नीचे निर्देश दिया है कि "Add 001-999 to base number 331.881 1 वकील (Lawyers) के लिए अंकन 340 जोड़ा गया है। नियमानुसार अन्त में शून्य होने के कारण उसे हटा दिया गया है।

उदाहरण–5 : Strikes of Nursing Personnel
331.892 81 + 610.730 69 = 331.892 816 107 306 9

अनुसूची के मुख्य वर्ग 331 Labour Economics के उपविभाजन 331.892 8 के नीचे 331.892 81 के अंतर्गत अनुसूची में उल्लिखित निर्देश "Add 001-999 to base number 331.892 81 के अनुसार Nursing Personnel के लिए 610.730 69 को जोड़ा गया है।

2.4.9 आधार संख्या के साथ किसी अन्य वर्ग संख्या के कुछ भाग का प्रयोग (Partial use of any other class number with base number)

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में वर्ग संख्या को निर्मित करने के लिए यह योजक विधि सर्वाधिक प्रयोग होती है। अनुसूची में वर्ग संख्या के नीचे इस प्रकार का निर्देश दिया रहता है– इस.......आधार अंक के साथ इस.......वर्गांक में से ये अंक.......छोड़ते हुए जोड़िए (Add to base number.......following.......in.......)। इसका तात्पर्य यह है कि वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए सिर्फ उसी अंश को जोड़ा जाएगा जिसकी आवश्यकता होती है। शेष भाग को जोड़ने के निर्देश दिये रहते हैं।

उदाहरण–6 : Fracture in chest bone
617.15 + [611.71] 2 = 617.152

अनुसूची के मुख्य वर्ग 610 Medical Science के उपविभाजन 617.15 के सामने Fracture दिया गया है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित निर्देश दिया गया है–

Add to base number 617.15 the number following 611.71 in 611.711–611.718

अनुसूची 611.71 के सामने पद Bones के नीचे 611-712 Chest के लिए प्रयुक्त हुआ है। निर्देशानुसार 611.712 को जोड़ते समय 611.71 छोड़ दिया गया है।

उदाहरण–7 : Statistics on deaths due to Dengue Fever
312.26 + [616.] 921 = 312.269 21

अनुसूची में पद (Statistics on) deaths caused by disease का अंकन 312.26 दिया गया है तथा इसके अंतर्गत अंकन 313.261 – .269 के नीचे यह निर्देश दिया गया है कि आधार अंक 312.26 के साथ 616 को हटाते हुए 616.1–616.9 के किसी भी उपविभाजन को जोड़ा जा सकता है। अनुसूची में अंकन 616.921 के सामने Dengue Fever मिलता है। इसी निर्देशानुसार उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक निर्मित किया गया है।

उदाहरण–8 : Priest in Hinduism
294.5 + [291] 61 = 294.561

अनुसूची के अंकन 294.5 हिन्दू धर्म के लिए प्रयोग किया गया है इसके अंतर्गत इस प्रकार निर्देशित किया गया है–

.56-.57 Leaders, organization, activities

Add to base number 294.5 the number folloiwng 291 in 291.6-291.7

उपर्युक्त उदाहरण में Priest का अंकन 61 को 291.61 से लिया गया जिसमें निर्देशानुसार 291 छोड़ दिया गया है।

उदाहरण–9 : Regional physiology of abdomen
612.9 + [611.9] 5 = 612.95

अनुसूची के उपविभाजन 612 Human physiology के लिए प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत इस प्रकार निर्देश दिया गया है–

उदाहरण–9 : Regional physiology
Add to base number 612.9 the number following 611.9 in 611.91–611.98

उपर्युक्त उदाहरण में निर्देशानुसार अंतिम वर्गांक बनाते समय 611.9 को छोड़ दिया गया है।

उदाहरण—10 : Sheep production for multiple purposes
636.31 + [636.088] 92 = 636.319 2

अनुसूची में पद Sheep के लिए 636.3 अंकन दिया गया है। इसके अंतर्गत 636.31 Sheep for specific purposes दिया गया है इसके नीचे पद Production मिलता है तथा आधार अंक 636.31 को लेते हुए अंकन 636.088 1—636.088 9 तक के अंकन में से 636. 088 को छोड़ते हुए उपयुक्त अंकन को जोड़े जाने का निर्देश भी दिया गया है। उपर्युक्त शीर्षक के लिए (636.088) 92 को 636.088 को छोड़ते हुए Multipurposes वर्गांक निर्मित किया गया है।

2.4.10 योजक चिन्ह तारांकन (*) की सहायता से विषयों का वर्गीकरण (Subject classification with the help of Asterisk (*)

इस योजक विधि में किसी अंकन के नीचे उस विषय के विभिन्न पहलुओं एवं दृष्टिकोणों के अंकन दिये रहते हैं। इनका प्रयोग उस वर्ग के तारांकित अंकनों के साथ किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अंकन 617, 346, 347, 372, 618.1, 725.1 एवं 784.4 आदि। इन सभी अंकनों को अनुसूची में तारांकित किया गया है। इस तारांकन की सहायता से उसी पृष्ठ के नीचे दिये गये निर्देश Add as instructed under……. का अनुपालन करते हुए उस तालिका जाते हैं। जहाँ जाने के लिए पृष्ठ के नीचे निर्देश दिया गया है। जैसे—

784 Voice and vocal music
.4* Folk songs

पृष्ठ के नीचे Add as instructed under 784.1–784.7 दिया गया है।

उदाहरण—11 : Atomic structure of Protoactinium
546.424 + 4 + [541.2] 4 = 546.424 44

अनुसूची में पद Protoactinium के लिए 546.424 अंकन दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पाद टिप्पणी में अंकन 546 के अंतर्गत दी गयी तालिका के अंकनों को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उक्त तालिका में 4 अंकन के सामने Theoretical chemistry दिया गया है, इसके नीचे 4 अंकन के साथ 541.22—541.28 में से 541.2 अंकन को हटाते हुए आवश्यकतानुसार उपयुक्त अंकन को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। इसी निर्देशानुसार Atomic structure के लिए अंकन 541.24 लिया गया है जिसे जोड़ते समय 541.2 अंकन छोड़ दिया गया है।

उदाहरण—12 : Complications of heart surgery
617.412 + 01 = 617.412 01

अनुसूची के अंकन 610 के अंतर्गत 617.412 के सामने पद Heart surgery दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पाद टिप्पणी में यह निर्देश दिया गया है कि 617 के अंतर्गत दी गई तालिका के अंकनों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। तालिका में Surgical complications के लिए अंकन 01 निर्धारित किया गया है उपर्युक्त उदाहरण को इसी निर्देशानुसार निर्मित किया गया है।

उदाहरण—13 : Tax according in wholesale and retail trade
657.839 + 0 + [657.] 46 = 657.839 046

अनुसूची में पद Wholesale and retail trade के लिए 657.839 दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पाद टिप्पणी में अंकन 657.8 के अंतर्गत दी गयी तालिका के अंकनों को जोड़ने का निर्देश दिया गया है।

उक्त तालिका में 01—07 के सामने Specific aspects of accounting दिया गया है, इसके नीचे शून्य (0) के साथ 657.1—657.7 में से 657 अंकन को हटाते हुए आवश्यकतानुसार उपयुक्त अंकन को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। अंकन 657.46 में से अंकन 657 को हटाते हुए 46 अंकन Tax accounting के लिए प्रयुक्त हुआ है।

उदाहरण—14 : Electrotherapy for disease of joints
616.72 + 06 + [615.8] 45 = 616.720 645

अनुसूची के मुख्य वर्ग 610 Medical science के अंतर्गत 616.72 अंकन के सामने (Disease) of joints दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। नीचे दी गई पाद टिप्पणी में अंकन 616.1—616.9 के अंतर्गत दी गई तालिका में अंकनों को जोड़ने हेतु निर्देशित किया गया है। उक्त तालिका में Therapy के लिए अंकन 06 दिया गया है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित निर्देश दिया गया है—

06 Therapy
062-069 Other therapy

Add 06 the number folloiwng 615.8 in 615.82–615.89

उपर्युक्त उदाहरण में Electrotherapy के लिए 615.845 अंकन को 615.8 को छोड़ते हुए जोड़ा गया है।

उदाहरण—15 : Science curriculum in Elementary schools
372.35 + 043 = 372.350 43

अनुसूची के मुख्य वर्ग 372 Elementary education के अंकन 372.35 के सामने पद Science दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पृष्ठ के नीचे दी गई पाद टिप्पणी 372.3–372.8 में दी गई तालिका में अंकन 043 curriculums के लिए निर्धारित किया गया है। उपुर्यक्त उदाहरण में Curriculums के लिए अंकन 043 को अनुसूची के पृष्ठ 530 पद दी गई तालिका 372.3–372.8 से लिया गया है।

2.4.11 सहायक सारणियों एवं अनुसूची दोनों से जोड़िये टिप्पणी (Add from both tables and Schedules Notes)

अनुसूची में कुछ स्थानों पर सहायक सारणी एवं अनुसूची दोनों के अंकनों को एक साथ प्रयोग करने के निर्देश दिये गये हैं कभी अनुसूची पहले तथा सहायक सारणी बाद में एवं कभी सहायक सारणी पहले तथा अनुसूची को बाद में प्रयोग करने के निर्देश मिलते हैं।

उदाहरण–16 Economic geography of Japan
910.1 + 33 [0] + 0 + -52 = 910.133 052

उपर्युक्त उदाहरण में 910.1 Topical geography के नीचे अनुसूची के अंकन 001–999 तक के आवश्यक अंकन को जोड़ने का प्रावधान है तत्पश्चात् शून्य (0) जोड़ते हुए भौगोलिक अंकन 1–9 जोड़ने का निर्देश दिया गया है।

इसी प्रकार : Burnese non-dominant aggregates in Africa
305.8 + -958 + 0 + -6 = 305.895 806

2.4.12 अन्यत्र वर्गीकृत कीजिए टिप्पणियाँ (Class else where notes)

अनुसूची में कुछ वर्गांकों के नीचे 'अन्यत्र वर्गीकृत कीजिए' टिप्पणी देकर वर्गीकार को निर्देशित किया गया है कि उस विषय के ग्रंथ का वर्गीकरण, जिस शीर्षक के नीचे यह टिप्पणी दी गयी है वहाँ वर्गीकृत न करें बल्कि उस वर्गांक के नीचे करें जहाँ के लिए निर्देशित किया गया है। जैसे– '361.61 Social policy' के नीचे निर्देश दिया गया है कि यदि 'Welfare reform' हो तो उसको 361.68 के अंतर्गत वर्गीकृत कीजिए।

2.4.13 वर्ग............में................टिप्पणियाँ (Class........in........Notes)

अनुसूची में कहीं–कहीं पर इस प्रकार के निर्देश भी मिलते हैं –

उदाहरण–17 522.302 22 Moon Pictures and Designs
Class charts and Photographs in 523.39

2.4.14 के लिए..............देखें टिप्पणियाँ (For........see.........Notes)

अनुसूची में वर्गांकों के लिए नीचे इसके लिए इसे देखें टिप्पणियाँ दी गयी हैं जिसे वर्गीकरण करते समय सावधानी रखना चाहिए। जैसे–

उदाहरण–18 398.356 Scientific and Technical themes in folklore for medical folklore, see 398.353
181.4 Indian Philosophy
See also 181.15 for philosophy of Pakistan and Bangladesh.
181.45 Yoga-Indian Philosophy
"For Physical yoga see 613.704 6;
Hindu yogic mediation, 294.543."

2.4.15 व्यापक/विस्तृत कार्य को वर्गीकृत टिप्पणियाँ (Class comprehensive work in........ Notes)

इस प्रकार की टिप्पणी केंद्रित शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं।

उदाहरण–19 181.41-181.48 Hindu–Brahmanical Philosophy
Class comprehensive work in 181.4
297.12–297.14 Source of Islam
Class comprehensive work in 297.1

(अ) अप्रयोग वर्गांक (Class number not to be used)

जिन वांछित शीर्षकों के अंकनों को बड़े कोष्ठक [ ] में अंकित किया गया हो तथा सामने दिये गये पद के नीचे 'Not to use, class in....... का निर्देश दिया गया हो तो इसका तात्पर्य यह होता है कि 'इस वर्गांक का प्रयोग मत कीजिए' तथा .... में वर्गीकृत कीजिए। जैसे–

[250.68] Management of local christian church Do not use; class management of local christian church in 254
[221.03] Dictionaries, encyclopaedias, concordances of the old Testament.

Do not use; class dictionaries and encyclopaedias in 221.3, concordances in 221.4–221.5.

(ब) स्थगित वर्गांक (Number discontinued)

जब वर्गांक बड़े कोष्ठक में दिया गया हो तथा उसके सामने पद के नीचे यह निर्देशित किया गया हो कि यह वर्गांक समाप्त हो चुका है (Number discontinued) तो यहाँ न वर्गीकृत करके वहाँ वर्गीकृत करें जहाँ के लिए निर्देशित किया गया है। जैसे–

333
[.38] Subdivisions and development
Number discontinued; class subdivisions in 333.3
213
[.5] Creation of life and human life (Ed. 19)
Number discontinued, class in 213

(स) अप्रयुक्त वर्गांक (Unassigned class number)

कुछ स्थानों में अंकन को [ ] बड़े कोष्ठक में दिया गया होता है किंतु उनके सामने दिये गये पद को भी बड़े कोष्ठक में अंकित करके अप्रयुक्त वर्गांक के लिए निर्देशित किया गया है।

जैसे–

[006] [Unassigned] (Ed. 19)
Most recently used in Edition 16
[008] [Never assigned] (Ed. 19)
[004] Never assigned (Ed. 19)

2.4.16 पूर्व प्रयुक्त टिप्पणियाँ (Formerly Notes)

कुछ शीर्षकों के सामने या नीचे बड़े कोष्ठक [ ] में निर्देश 'Formerly' दिये गये हैं जिनका अर्थ होता है कि इस शीर्षक के लिये पूर्व प्रयुक्त अंकन यह था।

जैसे–

002 The book [formerly 001.552]
418.02 Translation and Interpretation
class here machine translation [formerly 029.756]

2.5 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Safety measures for air and space transportation
   363.124 + 75 = 363.124 75
2. Biological library
   026 + 574 = 026.574
3. Classification of Zoology books
   025.46 + 591 = 025.465 91
4. Climate and Weather photography
   778.538 + 551.6 + 778.538 551 6
5. Subject bibliography of science literature
   016 = 5[00] = 016.5

6. Physiology and chickens
   636.50 + [636.0] 89 + [61] 2 = 636.508 92
7. Wages of glass industry
   331.28 + [6] 66.1 = 331.286 61
8. Uniform in marine forces
   359.96 + [355.] 14 = 359.961 4
9. Mysticism in Hindu religion
   294.54 + [291.4] 2 = 294.542
10. Urea used in rice agriculture
    633.18 + 89 [631.8] 41 = 633.188 941

2.6 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Regional physiology of human face
2. Salts of sodium
3. Maintenance and repairing of ancient Chinese architecture
4. Mutation on insects
5. Plant Biophysics
6. Physiology of birds
7. Training of horses for zoos
8. Medicinal fungus plants
9. Band music programme
10. Radio isotape scanning of hypo-thyrodism

2.7 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको उन सभी नियमों एवं पहलुओं की जानकारी हो गई होगी जिसकी सहायता से शीर्षकों का वर्गीकरण किया जाता है। यह पद्धति लगभग परिगणनात्मक पद्धति के अंतर्गत आती है। इसमें कोई भी वर्गांक प्रावधान एवं निर्देश के अनुसार ही निर्मित किया जा सकता है। स्वतः ही कोई अंकन वर्गीकार द्वारा जोड़ा नहीं जा सकता। यही कारण है कि इस पद्धति में अनेक प्रकार के एवं विभिन्न स्तरों पर निर्देश एवं टिप्पणियों को उल्लिखित किया गया है। ये निर्देश वर्गीकरण कार्यों में सहायक होते हैं। एक विषय के साथ दूसरे विषय के संपूर्ण वर्गांक या उसके कुछ अंश को जोड़ने का भी प्रावधान किया गया है।

2.8 शब्दावली (Glossary)

अन्यत्र वर्गीकृत करें – किसी विशिष्ट प्रविष्टि के अंतर्गत दी गई यह टिप्पणी उससे संबंधित विषयों के लिए उपयुक्त वर्ग संख्या की ओर निर्देशित करती है।

में जोडिए निर्देश	–	किसी शीर्षक के अंतर्गत दिया गया निर्देश, जिसके आधार पर अनुसूची से प्राप्त संख्या को विस्तारित करने के लिए उसमें अनुसूची या सारणी की किसी संपूर्ण संख्या या उसके अंश को जोड़ा जा सके।
अप्रयोग टिप्पणी	–	इसमें वर्गांकों को बड़े कोष्ठक में दिया जाता है तथा सामने लिखे संबंधित पद के नीचे 'Do not use' लिखा होता है तथा........ में वर्गीकृत करने का निर्देश भी होता है।

2.9 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class number of Titles for Exercise)

1. 612.9 + [611.9] 2 = 612.92
2. 546.382 + 24 = 546.382 24
3. 722.11 + 028 9 = 722.110 289
4. 595.70 + [592.] 159 2 = 595.701 592
5. 581.19 + [574.19] 1 = 581.191
6. 598.2 + [591.] 1 = 598.21
7. 636 + 10 [636.0] 889 9 = 636.108 899
8. 589.2 + 04 + [581.] 634 = 589.204 634
9. 785.12 + 07 + [785.07] 39 = 785.120 739
10. 616.444 + 07 [616.07] 575 = 616.444 075 75

2.10 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996) ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998), Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987), प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–3 : सारणी 1 मानक उपविभाजनों का प्रयोग

Unit-3 : Use of Standard Subdivisions

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मानक उपविभाजन : अर्थ एवं परिभाषा

3.4 मानक उपविभाजनों के प्रकार

3.5 मानक उपविभाजनों के प्रयोग संबंधी निर्देश

3.6 अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

3.7 मानक उपविभाजनों के प्रयोग में अपवाद

3.8 शून्यों का विलोपन

3.8.1 निर्देश न होने पर

3.8.2 निर्देश होने पर

3.9 भाषा एवं विषय शब्दकोश या विश्वकोश

3.10 सारणी 1 के साथ भौगोलिक अंकनों का प्रयोग

3.11 मानक उपविभाजनों के साथ सारणी 5 एवं 7 का प्रयोग

3.12 वैकल्पिक प्रावधान

3.13 वर्गीकृत शीर्षक

3.14 अभ्यास हेतु शीर्षक

3.15 सारांश

3.16 शब्दावली

3.17 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक

3.18 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

ग्रंथों की रचना अनेक दृष्टिकोणों से की जाती है। ये ग्रंथ इन्हीं दृष्टिकोणों को लेकर प्रकाशित किये जाते हैं। वर्गीकरण एवं वर्गीकरण पद्धतियों के लिए इन दृष्टिकोणों का विशेष महत्व है। ऐसी अवधारणाएँ एवं दृष्टिकोण जो किसी भी विषय के साथ अपना स्वरूप स्पष्ट करते हैं उन्हें उन समस्त विषयों के साथ बार–बार उल्लेख न करते हुए इन्हें पृथक से व्यवस्थित एवं सूचीबद्ध किया गया है। विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में इन्हें अलग–अलग नामों से संबोधित किया जाता है। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल एवं दशमलव वर्गीकरण पद्धति में मानक उपविभाजन कहा जाता है। ये उपविभाजन न तो विशिष्ट विषय होते हैं और न ही अकेले प्रयोग किए जाते हैं। मानक उपविभाजनों को प्रथम खण्ड के प्रथम सारणी में पृष्ठ 2–13 तक सूचीबद्ध किया गया है। इस सारणी के अंकनों से पूर्ण डैश (–) लगा हुआ है जो किसी विषय के साथ जुड़ते ही स्वतः ही विलुप्त हो जाता है।

3.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई की रचना का उद्देश्य है –

1. मानक उप–विभाजनों के अर्थ, उपयोगिता तथा उनके प्रयोग से अवगत कराना।
2. इन उप–विभाजनों का उपयोग निर्देशित तथा अनिर्देशित अवस्था में करने संबंधित नियमों को उदाहरण सहित व्याख्या करना तथा समझाना।
3. सारणी 1 के अंकनों की सहायता से सारणी 2, 5 एवं 7 के अंकनों को जोड़ने के नियमों एवं प्रावधानों की उदाहरण सहित व्याख्या।

3.3 मानक उप–विभाजन : अर्थ एव परिभाषा (Standard Subdivision : Meaning & Definition)

ग्रंथालयों में ग्रंथों के वर्गीकरण के मुख्य आधार विषय होते हैं। वर्तमान युग में ग्रंथ अनेक दृष्टिकोणों से लिखे जाते हैं जिन्हें कई विभिन्न रूपों में प्रकाशित किया जाता है। कुछ विषय ऐसे होते हैं जो विषय के सैद्धांतिक दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं जबकि कुछ ग्रंथ विषय की रूपरेखा को निरूपित करते हैं, कुछ ग्रंथ उस विषय के ऐतिहासिक पहलू को स्पष्ट करते हैं तथा कुछ ग्रंथ विषय के संकलन, विश्वकोश, शब्दकोश, वार्षिकी, निर्देशिका आदि के रूप में प्रकाशित होते हैं। ऐसे ग्रंथ विवेचन एवं वर्गीकरण की दृष्टि से विशेष महत्व के होते हैं। उपयोगकर्ताओं को प्रदान करने की दृष्टि से ग्रंथालय में इन्हें आवश्यकतानुसार अलग–अलग व्यवस्थित किया जाता है। सभी वर्गीकरण पद्धतियों में ऐसे ग्रंथों को दर्शाने के लिए रूप विभाजन की व्यवस्था की गयी, जिन्हें पृथक वर्गीकरण पद्धति में पृथक नाम से जाना जाता है। इस तरह के सामान्य उप–विभाजनों विभिन्न विषयों के साथ समान पद व समान अंकनों द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है। ऐसे उपविभाजनों

को डीडीसी के द्वितीय संस्करण से बारहवें संस्करण तक रूप विभाजन, तेरहवें संस्करण में सामान्य उपविभाजन (Common sub-divisions), चौदहवें संस्करण में एकरूप उपविभाजन (Uniform sub-divisions), पन्द्रहवें से सोलहवें संस्करण में पुनः रूप विभाजन (Form divisions) तथा सत्रहवें से तेइसवें संस्करण अर्थात वर्तमान संस्करण में इसे मानक उपविभाजन (Standard sub-divisions) के नाम से इनका उल्लेख किया गया है। डीडीसी का नवीनतम संस्करण DDC 23, 2011 में प्रकाशित हो चुका है।

इस सारणी में दिये गये समस्त उपविभाजन न तो कोई विषय हो सकते हैं न ही स्वयं पूर्ण वर्गांक हो सकते हैं और न ही इन्हें अकेले प्रयुक्त किया जा सकता है। इन्हें सारणी में डैश (–) के साथ सूचीबद्ध किया गया है। जब इन अंकनों को किसी विषय के साथ जोड़ते हैं तो डैश स्वतः ही समाप्त हो जाता है। इन मानक उपविभाजनों को अनुसूची में दिये गये किसी भी अंकन के साथ आवश्यकता पड़ने पर बिना निर्देश के प्रयुक्त किया जाता है। मानक उपविभाजनों को शून्य के साथ सूचीबद्ध किया गया है लेकिन इनका प्रयोग हमेशा एक समान रूप से नहीं होता इसलिए इनकें प्रयोग संबंधी सावधानी रखना अतिआवश्यक है ताकि त्रुटियों से बचा जा सके। कभी इनका प्रयोग शून्य को हटाते हुए, कभी एक, दो, तीन या चार शून्य के साथ किया जाता है। इन उपविभाजनों का प्रयोग किस प्रकार किया जाना है यह उस विषय के ऊपर निर्भर करता है जिस विषय के साथ इन उपविभाजनों को प्रयुक्त होना है।

मानक उपविभाजनों को प्रत्येक मुख्य वर्ग में अलग–अलग वर्णित करना उचित नहीं था क्योंकि ये सर्वसामान्य उपविभाजन हैं जिन्हें किसी भी विषय के साथ जोड़ा जा सकता है इससे अनुसूची के आकार में वृद्धि भी नहीं होती। डीडीसी में मानक उपविभाजनों का प्रयोग इसके द्वितीय संस्करण (1885) से किया जा रहा है।

परिभाषा (Definition) – इन उपविभाजनों को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है –

- ऐसे उपविभाजन/एकल जिनका प्रयोग आवश्यकता पड़ने पर अनुसूची में वर्णित किसी भी मुख्य वर्ग या उनके उपविभाजन के साथ बिना किसी निर्देश के किया जा सके।
- विषयों अथवा ज्ञान क्षेत्रों के निरूपण के लिए प्रयुक्त ऐसे रूप जो सामान्यतया सभी विषयों पर लागू हो सकते हैं।
- A table of notations designating certain frequently recurring forms or methods of treatment applicable to any subject or discipline. May be added, as required, to any number in the schedules.

मानक उपविभाजनों को प्रथम खण्ड की प्रथम सारणी में वर्णित किया गया है। इन्हें मुख्य रूप से 9 वर्गों में विभाजित कर सूचीबद्ध किया गया है –

– 01	Philosophy and Theory	दर्शन एवं सिद्धांत
– 02	Miscellany	विविध
– 03	Dictionaries, Encyclopaedias, Concordaances	शब्दकोंश, विश्वकोश, शब्दानुक्रमणिकाएँ
– 04	Special topics of general applicability	सामान्य प्रयोग के विशिष्ट प्रकरण
– 05	Serial Publications	धारावाहिक प्रकाशन
– 06	Organisation and Management	संगठन एवं प्रबंध
– 07	Study and Teaching	अध्ययन एवं अध्यापन
– 08	History and description of the subject among groups of persons	व्यक्तियों के समूह के मध्य विषय का इतिहास व वर्णन
– 09	Historical and Geographical treatment	ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विवरण

3.4 मानक उपविभाजनों के प्रकार (Types of Standard Subdivisions)

मानक उपविभाजनों के विभिन्न प्रकार मुख्य रूप से निम्नलिखित हैं –

1. ऐसे उपविभाजन जो ग्रंथात्मक रूप को दर्शाते हैं जैसे विश्वकोश, सामयिक प्रकाशन इत्यादि।
2. आंतरिक संरचना एवं दृष्टिकोण से संबंधित जैसे सिद्धांत, तकनीक, इतिहास, अध्ययन एवं अध्यापन।
3. ऐसे उपविभाजन जो सीमित परिस्थितियों में संपूर्ण विषय को प्रस्तुत करते हैं जैसे–क्षेत्र, ऐतिहासिक काल एवं व्यक्तियों के प्रकार।
4. वाह्यस्वरूप एवं विशिष्ट दृष्टिकोणों से संबंधित जैसे सारांश (Synopsis), रूपरेखा (Out line) इत्यादि।
5. ऐसे विभाजन जो विषय का उसके उपयोगकर्ता से संबंध स्थापित करने में सहायक होते हैं जैसे–विषय एक व्यवसाय की तरह, विशिष्ट उपयोगकर्ताओं के लिए कार्य।
6. मिश्रित उपविभाजन जैसे–जीवनियाँ।
7. ऐसे उपविभाजन जो विषय के बारे में विशिष्ट प्रकार की सूचनाएँ प्रदान करने में सहायक होते हैं जैसे–निर्देशिकाएँ, उत्पाद सूची आदि।

3.5 मानक उपविभाजन के प्रयोग संबंधी निर्देश (Instructions Related to use of Standard Subdivisions)

1. ये पूर्ण वर्गांक नहीं होते और न ही किसी विषय को इंगित करते हैं, इनका प्रयोग अनुसूची में वर्णित वर्गांक के साथ होता है।

2. मानक उपविभाजन के प्रयोग से संबंधित निर्देश की आवश्यकता नहीं होती। ये किसी भी मुख्य वर्ग के साथ आवश्यकता पड़ने पर प्रयुक्त हो सकते हैं।
3. इनका कभी स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।
4. प्रत्येक मानक उपविभाजन एवं शून्य से प्रारंभ होता है लेकिन यदि निर्देश हो तो निर्देशानुसार इन्हें बिना शून्य के या एक से अधिक शून्यों के साथ जोड़ा जाता है।
5. कभी–कभी अनुसूची में विषय के साथ ही मानक विभाजन का उल्लेख मिलता है अगर ऐसा हो तो अनुसूची में वर्णित वर्गांक को ही प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए। सारणी में वर्णित उपविभाजन को नहीं। यदि आवश्यकता पड़ती है तो सारणी 1 से वर्गांक को विस्तार किया जा सकता है।
6. किसी एक वर्ग संख्या के साथ मानक उपविभाजन का प्रयोग सिर्फ एक बार ही किया जा सकता है। यदि ग्रंथ के विषय में मानक उपविभाजन से संबंधित तत्व एक से अधिक बार प्रयुक्त हुए हों तो केवल एक उपविभाजन को ही प्राथमिकता के आधार पर चुना जायेगा। प्राथमिकता का निर्धारण वरीयताक्रम सारणी (Table of Precedence) की सहायता से किया जायेगा। यह सारणी प्रथम सारणी के प्रारंभ में पृष्ठ संख्या 1 पर दी गयी है।

उदाहरण : 1. History of Teaching in Medical Science : with special reference to human Physiology

अनुसूची में मुख्य वर्ग 612 Human Physiology के नीचे 612.001–612.009 Standard subdivisions of human physiology के अंकनों को सारणी 1 से लाने का निर्देश है। इस शीर्षक में दो मानक उपविभाजनों -09 History तथा -07 Study and teaching का प्रयोग हुआ है। अग्रताक्रम तालिका देखें तो Study and teaching को History पर वरीयता प्राप्त है। अतः उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक निम्नलिखित होगा–

612 + -007 = 612.007

उदाहरण : 2. Organisation of Library and Information Centres

अनुसूची में मुख्य वर्ग 020 (Library and Information Science) के नीचे कुछ मानक उपविभाजनों का उल्लेख है इसलिए इनसे संबंधित विचारों की अभिव्यक्ति के लिए इन्हीं अंकनों का प्रयोग किया जायेगा न कि सारणी 1 से।

020.6

उदाहरण : 3. Personnel Management of Library and Information Centres

मुख्य वर्ग 020 में .6 Organisation and Management (मानक उपविभाजन) का उल्लेख किया गया है चूँकि इस उदाहरण में कर्मचारी प्रबंध का वर्णन है इसलिए वर्गांक को सारणी 1 से विस्तार किया गया है।

020.6 + [–06] 83 = 020.683

3.6 अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग (Use of Table of Precedence)

किसी एक विषय की अनेक विशेषताएँ हो सकती हैं अर्थात् उनका अध्ययन अनेक पृथक–पृथक पहलुओं से किया जा सकता है। अनुसूची में इन विशेषताओं के आधार पर किये जाने वाले विभाजनों का सही उद्धरण क्रम (Citation order) बनाने वाली तालिका को अग्रताक्रम तालिका कहते हैं जिसमें एक पहलू को दूसरे अन्य पहलू पर प्राथमिकता प्रदान की जाती है। अनुसूची में कुछ वर्गों के अंतर्गत इस तालिका का प्रावधान किया गया है। इसी प्रकार सारणी 1 के प्रथम पृष्ठ पर भी अक्रताक्रम तालिका दी गई है।

जब एक ही शीर्षक में दो या अधिक उपविभाजनों का प्रयोग हुआ हो तो वर्गीकार के सामने ये समस्या आ जाती है कि वह उनमें से किसका प्रयोग करे अर्थात किसे प्राथमिकता दे। इस समस्या का समाधान अग्रताक्रम/वरीयताक्रम तालिका से किया जाना चाहिए। यह सारणी वर्गीकार को यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि जब विषय के प्रारूप में दो या दो से अधिक मानक उपविभाजनों का प्रयुक्त किया हो तो उसमें विषय का वर्गांक बनाने के लिए किस मानक विभाजन को प्रयुक्त किया जायेगा। मानक उपविभाजन की सारणी में समस्त उपविभाजनों को प्राथमिकता के आधार पर सूचीबद्ध किया गया है। इसी सारणी के आधार पर मानक उपविभाजन का चुनाव किया जाना चाहिए।

उदाहरण : 4. Serials on history of Organic Chemistry

इस उदाहरण में विषय 'Organic Chemistry' है तथा इसमें दो मानक उपविभाजन 'Serials' तथा 'History' का प्रयोग हुआ है अग्रताक्रम तालिका देखें -09 History को -05 Serials से वरीयता प्रदान की गयी है इसीलिए इसका वर्गांक बनाते समय -05 Serials को छोड़ दिया गया है।

547.009 = 547.009

3.7 मानक उपविभाजनों के प्रयोग में अपवाद (Exceptions in use of Standard Subdivisions)

डीडीसी में एक शीर्षक में सिर्फ एक ही मानक उपविभाजन का प्रयोग किया जाता है इसके बावजूद कहीं–कहीं पर अपवाद देखने को मिलते हैं। जैसे–

1. 04 Special topics of general applicability के नीचे यह निर्देश दिया गया है कि इस उपविभाजन को प्रयोग में तभी लाएँ जब अनुसूची में यह विशिष्ट रूप से उल्लिखित किया गया हो कि इसके तथा इसके उपविभाजनों के बाद जब आवश्यक हो तो सारणी 1 में वर्णित मानक उपविभाजन –01 से –09 में दिये गये अन्य मानक उपविभाजनों को भी जोड़ा जा सकता है।

उदाहरण : 5. Personnel management of public schools

372.104 21 Public schools

-0683 Personnel management

372.104 21 + –068 3 = 372.104 210 683

2. जब किसी मुख्य वर्ग के अंतर्गत मानक उपविभाजनों का अर्थ परिवर्तित कर या विस्तृत कर सूचीबद्ध किया गया हो तो इस वर्गांक के पश्चात् सारणी 1 में दिये गये उपविभाजनों का प्रयोग पुनः किया जा सकता है।

उदाहरण : 6. Periodicals on vocational education

370.1 Philosophy . Theories

.113 Vocational education

-05 Serials (T.1)

370.113 + -05 = 370.113 05

3. कभी–कभी मानक उपविभाजन वाले अवधारणा को अनुसूची के विषय में सम्मिलित कर लिया जाता है किन्तु इनके प्रारम्भ में लगे शून्य को हटा दिया जाता है। ऐसा -09 Historical and Geographical treatement के लिए प्रायः देखा गया है।

उदाहरण : 7. An Index of British Penal Institutions

365 Penal and related institutions

.9 Historical, Geographical treatement

Add to notation -1-9 from table 2 to base no.365.0

(T.2) (T.1)

365.9 + 41 + 016 = 365.941 016

3.8 शून्यों का विलोपन (Omission of Zero)

मानक उपविभाजनों को हम किसी भी विशिष्ट विषय के साथ दो अवस्थाओं में प्रयुक्त कर सकते हैं – निर्देश होने पर तथा निर्देश न होने पर। जब अनुसूची में सारणी 1 के प्रयोग से संबंधित किसी प्रकार का निर्देश दिया गया हो तो हमें वर्गांक को इसी निर्देशानुसार वर्गीकृत करना चाहिए। यदि अनुसूची में इनको प्रयुक्त करने के लिए निर्देश न दिये गये हों तो नियमानुसार शून्यों को विलोपन किया जाना चाहिए।

3.8.1 निर्देश न होने पर

1. यदि विशिष्ट विषय के वर्गांक के अंत में शून्य न दिया गया हो तथा मानक उपविभाजन को प्रयोग करने का निर्देश भी नहीं दिया गया हो तो वर्गांक इस प्रकार निर्मित किया जायेगा–

उदाहरण :

8. Manual of cataloguing
025.34 + -0202 = 025.340 202
9. Research on library of congress classification
025.433 + -072 = 025.431 072
10. Philosophy of Hinduism
294.5 + -01 = 294.501
11. Study of self education
374.1 + -07 = 374.107
12. French glossary of agricultural crops
631+ –03 + -41 = 631.034 1

2. जब विशिष्ट विषय का वर्गांक एक शून्य के साथ समाप्त होता हो तथा साथ में सारणी 1 को प्रयुक्त करना हो तो एक शून्य को हटाते हुए वर्गांक निर्मित किया जायेगा

उदाहरण :

13. Dictionary of Mathematics
51 [0] + -03 = 510.3
14. Awards in medicine
61 [0] + -079 = 610.79
15. Formulas of chemistry
54 [0] + -0212 = 540.212
16. Psyschological principles of education
37 [0] + -019 = 370.19

3. जब विशिष्ट विषय का वर्गांक दो शून्यों के साथ समाप्त होता हो तथा दशमलव बिंदु के बाँयें तरफ दो शून्य तथा दाँयें तरफ एक शून्य हो तो वर्गांक निर्मित करते समय दो शून्यों को हटाए जाने का प्रावधान है।

उदाहरण :

17. Encyclopaedia
5[00] + -03 = 503
18. Journals of applied sciences
6[00] + -05 = 605
19. Literary criticism
8[00] + -09 = 809
20. History of fine and decorative arts
7[00] + -09 = 709

3.8.2 निर्देश होने पर

अनुसूची में कई जगह मानक उपविभाजनों को प्रयोग करने हेतु पृथक–पृथक निर्देश देखने को मिलते हैं। यदि अनुसूची में निर्देशित किया गया हो कि मानक उपविभाजन को प्रयोग शून्य हटाते हुए करना है या एक, दो, तीन, चार, शून्य के साथ तो हमें इस निर्देश का पालन सख्ती से करना चाहिए भले ही वर्गांक में दशमलव बिन्दु से पहले एक शून्य या दो शून्य प्रयुक्त हुए हों। ऐसा प्रावधान अनुसूची के किसी विशिष्ट विषय के अंतर्गत उनके विभाजनों एवं उपविभाजनों के लिए आवंटित अंकनों एवं मानक उपविभाजनों में एकरूपता होने की संभावना को देखते हुए उनमें विभेद करने हेतु इस प्रकार के निर्देश दिये जाते हैं।

उदाहरण : 21. Philosophy of Library & Society
021 – Library and Society

यहाँ पर मानक उपविभाजन के अंकनों को दो शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश है। अतः वर्गांक इस प्रकार निर्मित किया जायेगा –

021 + -001 = 021.001

इसी प्रकार : 22. Plans and diagrams in land economics
333 + -002 23 = 333.002 23

23. Teaching of private law in Universities
346 + -007 11 = 346.007 11

24. Classification of Fishes
597 + -001 2 = 597.001 2

25. Study of curriculums
Curriculums - 375
Study - 07 (सारणी 1)

नोट– यहाँ पर मानक उपविभाजनों के अंकनों को तीन शून्यों के साथ प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। अतः वर्गांक इस प्रकर निर्मित किया जायेगा।

375 + -0007 = 375.000 7

इसी प्रकार : 26. Periodical of Public administration
350 + -0005 = 350.000 5

27. Directory of special libraries
026 + -000 25 = 026.000 25

28. Handbook of subject classification
025.46 + -000 202 = 025.460 002 02

3.9 भाषा/विषय शब्दकोश या विश्वकोश (Language/Subject Dictionary or Encyclopaedia)

शब्दकोश या विश्वकोश को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है – भाषा पर आधारित एवं विषय पर आधारित। जब भाषायी शब्दकोश या विश्वकोश को वर्गीकृत करना हो तो मुख्य वर्ग भाषा (400) से भाषा अंकन का चयन किया जाता है। भाषायी अंकन के साथ सारणी 1 शब्दकोश या विश्वकोश के अंकन को जोड़ते हैं। यदि द्विभाषी ग्रंथ हो तो दूसरी भाषा के अंकन को सारणी 6 से लेकर जोड़ा जाएगा। ऐसा निर्देश सारणी 1 के -32-39 (Add language notation 2-9 from table 6 to base number -03) के अंतर्गत दिया गया है।

नोट– भाषा के साथ शब्दकोश का अंकन जोड़ना हो तो इसे सारणी 4 से लेकर जोड़ा जाएगा। यहाँ पर यह बात हमेशा याद रखें कि भाषायी शब्दकोश में तीसरी भाषा को जोड़ने का कोई प्रावधान नहीं है।

उदाहरण : 29. French Encyclopaedia
44 [0] + -3 = 443

फ्रेंच भाषा का अंकन 440 है। यदि केवल फ्रेंच भाषा का वर्गांक बनाना हो तो 440 बनेगा लेकिन यदि इसके साथ सारणी 4 के किसी अंकन को जोड़ना होता मुख्य वर्ग 400 भाषा में 440 के नीच आधार अंक 44 लेने (Base number for French : 44) का निर्देश दिया गया है इसी प्रकार के निर्देश उन सभी भाषाओं के अंकन के नीचे दिये गये हैं जिन भाषाओं के अंकन के अन्त में शून्य (0) है। जैसे जर्मन (430) अंग्रेजी (420) आदि।

उपर्युक्त उदाहरण में 44 को मुख्य वर्ग 400 से लेकर Encyclopaedia के लिए –3 अंकन सारणी 4 से लिया गया है। नीचे दिये गये उदाहरणों में इसी नियम का पालन किया गया है। जिस उदाहरण में दो भाषाएँ हैं उनमें दूसरी भाषा को सारणी 6 से लाया गया है।

उदाहरण : 30. English dictionary
42 [0] + -3 = 423
31. English-Hindi dictionary
42 [0] + -3 + -914 31 (T.6) = 423.914 31
32. German-French dictionary
44 [0] + -3 + 31 (T.6) = 443.31
33. Dictionary of library science
02 [0] + -03 (T.1) = 020.3
34. French dictionary of library science

02 [0] + -03 (T.1) + -41 (T.6) = 020.341

उपर्युक्त उदाहरण नं. 33 एवं 34 में शब्दकोश का अंकन सारणी 1 से लिया गया है। सारणी 1 के –03 के नीचे -032-039 By language के निर्देश दिया गया है– Add "Language" notation 2-9 from Table 6 to base number-03. अतः उदाहरण 34 में फ्रेंच भाषा का अंकन सारणी 6 से लेकर जोड़ा गया है। विषय पर आधारित विश्वकोश एवं शब्दकोश में शब्दकोश एवं विश्वकोश का अंकन सारणी 1 से लेने का नियम है।

3.10 सारणी 1 के साथ भौगोलिक अंकनों का प्रयोग (Use of Geographical notation with Table 1)

अनुसूची में जहाँ पर संभावना व्यक्त की गई है अर्थात् जहाँ पर आवश्यकता है वहाँ पर विषयों के अंतर्गत भौगोलिक अंकनों को सारणी 2 से लेकर जोड़ने के निर्देश दिये गये हैं। यदि निर्देश न भी दिये गये हों तो सारणी 1 के अंकन –09 को जोड़ते हुए सारणी दो अंकनों को नीचे दिये गये निर्देशानुसार जोड़ा जा सकता है।

-091 Treatement by areas, regions, places in general (Add "Areas" notation 1 from Table 1 to base number -09)

-93-099 Treatment by specific continents, countries, localities, extra tessestrial worlds (Add "Areas" notation 3-9 from table 2 to base number -09)

उदाहरण :

35. Labour economics in Angola
331.12 + -09 (T.1) + -673 (T.2) = 331.120 967 3

36. Agricultural sociology of developed countries
307.72 + -09 (T.1) + -172 2 (T.2) = 307.720 917 22

37. Palmistry in ancient Egypt
133.6 + -09 (T.1) + -32 (T.2) = 133.609 32

38. Naval forces in Vermount
359+ -009 (T.1) + -743 (T.2) = 359.009 743

39. Human disease in Haryana
616+ -009 + 545 58 = 616.009 543 58

40. Military science in Japan
355 + -009 + 52 = 355.009 52

नोट– उपर्युक्त उदाहरण में –09 का प्रयोग दो शून्य के साथ निर्देशानुसार किया गया है।

इसी प्रकार : 41. Industrial Research in Kerala

6 [00] + 072 0 + 548 3 = 607.205 483

उपर्युक्त उदाहरण में Research के अंकन को सारणी 1 से लिया गया है वहाँ पर –072 के साथ एक शून्य add करते हुए सारणी 2 के अंकन 1–9 को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है।

42. Indian Association of Special libraries and Information centre (IASLIC)
026 + 000 60 + 54 = 026.000 605 4

उपर्युक्त उदाहरण में मुख्य वर्ग 026 के अंतर्गत सारणी 1 के अंकनों को तीन शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश है। सारणी 1 में –06 के अंतर्गत एक शून्य बाद में जोड़ते हुए सारणी 2 को प्रयोग करने का निर्देश इस प्रकार दिया गया है–

-060 3-9 National, state, provincial, local organization (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number -060)

43. Directory of Private libraries of Portugal
027.1 + -025 (T.1) + 469 (T.2) = 027.102 469

उपर्युक्त उदाहरण में -025 Directory को सारणी 1 से लिया गया है इसके अंतर्गत (Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number -025) निर्देशित किया गया है। –469 पुर्तगाल को सारणी 2 से लेकर जोड़ा गया है।

3.11 मानक उपविभाजनों के साथ सारणी 5 एवं 7 का प्रयोग (Use of Table 5 and 7 with Standard Subdivisions)

अनुसूची में विशिष्ट विषय एवं उनके उपविभाजनों साथ सारणी 5 एवं 7 के अंकनों का प्रयोग करने संबंधी निर्देश दिये रहते हैं लेकिन यदि निर्देश न दिये गये हों तथा विषय की आवश्यकता हो तो सारणी 5 के अंकनों को सारणी 1 से -08 History and description of the subject among groups of persons के अंतर्गत दिये गये निम्नानुसार दो निर्देशों का उपयोग करते हुए सारणी 5 एवं 7 के अंकनों का प्रयोग आवश्यकतानुसार करना चाहिए।

-088 Treatment among groups of specific kinds of persons
Other than racial, ethnic, national
Add "Persons" notation -04-99 from Table 7 to base number -088

-089 Treatement amont specific racial, ethnic, national groups.

Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5

उपर्युक्त –089 के अतिरिक्त सारणी 1 के अंकन –024 के साथ भी सारणी 7 का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग तभी किया जाता है जब विषय में झुकाव स्पष्टः देखने को मिलता है। जैसे– Mathematics for Engineers

नीचे दिये जा रहे उदाहरण –088, –089 एवं –024 को जोड़ने से संबंधित हैं।

उदाहरण :

44. Sex instructions for adults
613.96 + -088 (T.1) + -056 (T.7) = 613.960 880 56
45. Mathematics for Engineers
51 [0] + -024 + -62 (T.7) = 510.246 2
46. Calculus for management scientists
515+ -024 (T.1) + -65 (T.7) = 515.024 65
47. Social law of Indians
344+ -008 9 (T.1) + -914 11 = 344.008 991 411
48. Reading interest among Doctors
028.9 + -088 (T.1) + -61 (T.7) = 028.908 861
49. Colon classification for Indian practitioners
025.435 + -024 (T.1) + -03 (T.7) + -914 11 (T.5)
= 025.435 024 039 141 1
50. Women in Indian history
9+ -54 (T.2) + -008 8 (T.1) + -042 (T.7) = 954.008 804 2

3.12 वैकल्पिक प्रावधान (Alternative Provisions)

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में कुछ वर्गांक के वैकल्पिक वर्गांक बनाने का प्रावधान है। यह पुस्तकालय पर निर्भर है कि वह किसे वरीयता प्रदान करना चाहते हैं लेकिन अनुसूची एवं सारणी में यह स्पष्टतः उल्लेख किया गया है कि किस अंकन को वरीयता प्रदान की जानी चाहिए।

जैसे– -016 Indexes (T.1)

(It is optional to class here subject bibliographies and catalogue prefer 016)

इसी प्रकार –

016 Subject bibliographies and catalogs (Schedule)
(If preferred, class with the specific discilines or subject using "standard subdivisions" notation -
016 from Table 1)
934 India to 647

If preferred, class in 954.01

910 General geography Travel

[.1] Topital geography

(Use of this number is optional, perfer specific subject)

51. Bibliography of microbiology books

576 + -016 (T.1) = 576.016 या 016 + 576 = 016.576

52. Economic geography

33 [0] + 09 = 330.9 या 910.1 + 33 [0] = 910.133

53 In index to medical science literature

61 [0] + -016 = 610.16 या 016 + 61 [0] = 016.61

3.13 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Examples)

1. Formulas of Chemistry
   54 [0] + -021 2 = 540.212
2. Russian dictionary
   491.7 + -3 = 491.7
3. Russian-Hindi dictionary
   491.7 + -3 + -914 31 = 491.739 143 1
4. History of economic thoughts
   330.1 + -09 = 330.109
5. German-English dictionary of botany
   581+ -03 + -31 = 581.033 1
6. Engineering colleges
   62 [0] + -000 711 = 620.007 11
7. Encyclopaedia of Yoga
   613.704 6 + -03 = 613.704 603
8. History of public administration
   350 + -000 9 = 350.000 9
9. Directory of agricultural libraries in cuba
   026 + 63 [0] + -025 + -729 1 = 026.630 257 291
10. Drug abuse among middle aged adults
    362.293 2 + -088 + -0564 = 362.293 208 805 64

3.14 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Higher education in Bihar
2. Prison building in Pakistan

3. Tuberculosis in rural areas
4. In index to plant breeding
5. A study of general pattern of social behaviour of Ancient Egyptians
6. Folk arts by the blind persons
7. Personal finance for cricketeers
8. Librarianship as a profession in India
9. Social structure of Bangladesh
10. Financial management of private schools
11. Bibliography of orthopedic surgery
12. Encyclopaedia of textile technology
13. History of LIS in 20th century
14. French-English-German dictionary
15. Library classification of librarians

3.15 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप मानक उपविभाजन की अवधारणा से अच्छी तरह परिचित हो चुके होंगे। मानक उपविभाजन की अवधारणा ने दशमलव वर्गीकरण पद्धति को अधिक उपादेय बना दिया है। इन्हें अनुसूची में कहीं पर भी जोड़ा जा सकता है लेकिन इनको जोड़ते समय हमें शून्य हटाने, बढ़ाने आदि के बारे में अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए। इस सारणी के साथ अन्य सहायक सारणियों को भी जोड़ने के निर्देश मिलते हैं। यदि शीर्षक में एक से अधिक मानक उपविभाजन से संबंधित तथ्य दिये गये हों तो किस अंकन को छोड़ा जाये तथा किस अंकन को जोड़ा जाये यह निर्णय सारणी 1 के प्रथम पृष्ठ पर दी गई अग्रताक्रम सारणी की सहायता से लेना चाहिए।

3.16 शब्दावली (Glossary)

मानक उपविभाजन – ऐसे विभाजन जो आवश्यकता पड़ने पर किसी भी विषय के साथ जोड़े जा सकें।

अग्रताक्रम – एक अंकन को दूसरे अंकन से वरीयता प्रदान करना।

3.17 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

1. 378 + -541 2 = 378.541 2
2. 725.6 + -09 + -549 1 = 725.609 549 1
3. 616.995 + -009 + 173 4 = 616.995 009 173 4
4. 631.53 + -016 = 631.530 16 or 016 + 631.53 = 016.631 53

5. 306 + -089 + - 931 = 306.089 931
6. 745 + -088 + -081 61 = 745.088 081 61
7. 332.024 + -024 + -796 35 = 332.024 024 796 35
8. 020.23 + -09 + -54 = 020.230 954
9. 305 + -09 + -549 2 = 305.095 492
10. 373.222 + -068 1 = 373.222 068 1
11. 617.3 + -001 6 = 617.300 16 or 016 + 617.3 = 016.617 3
12. 677 + -003 = 677.003
13. 02 [0] + -090 4 = 020.904
14. 44 + -3 + -21 = 443.21
15. 025.42 + -024 + -92 = 025.420 240 92

3.18 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996). ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987). प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

खण्ड - 2

डी0डी0सी0 19 वाँ संस्करण - भाग दो

इकाई–4 : सारणी 2 भौगोलिक क्षेत्र का प्रयोग

Unit-4 : Table 2 Areas

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 भौगोलिक विभाजनों के प्रकार

4.3.1 सामान्य क्षेत्र, स्थान आदि

4.3.2 व्यक्ति

4.3.3 प्राचीन विश्व

4.3.4 आधुनिक विश्व

4.4 प्रायोगिक प्रक्रिया

4.5 भौगोलिक स्थानों/विभाजनों को उपयोग करने के नियम

4.5.1 निर्देशित अवस्था में सारणी 2 का प्रयोग

4.5.2 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 2 का प्रयोग

4.5.3 निर्देशित अवस्था में भी अंकन –09 का प्रयोग

4.6 सामान्य क्षेत्र, स्थान (–1) का प्रयोग

4.7 दो देशों के मध्य संबंध

4.8 –09 के साथ दूसरे देश के अंकन का प्रयोग

4.9 सामान्य क्षेत्र एवं विशिष्ट देश का एक साथ प्रयोग

4.9.1 प्रथम विधि

4.9.2 द्वितीय विधि

4.10 वर्गीकृत शीर्षक

4.11 अभ्यास हेतु शीर्षक

4.12 सारांश

4.13 शब्दावली

4.14 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक

4.15 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

डीडीसी में भौगोलिक विभाजनों की पृथक–पृथक संस्करणों में पृथक–पृथक व्यवस्था की गई थी। यह 16वें संस्करण तक मुख्य वर्ग इतिहास (900) के अंतर्गत 940–999 तक निर्दिष्ट किये गये थे, जो विभिन्न देशों के आधुनिक इतिहास को प्रकट करते थे। प्राचीन इतिहास को 930–939 तक उल्लिखित किया गया था। यदि आवश्यकता हुई तो इतिहास के वर्गांक भौगोलिक विभाजन को दर्शाने हेतु उपयोग किया जाता था जबकि 17वें एवं 18वें संस्करण में '930–939' की भाँति विभाजित कीजिए संकेत के स्थान पर ''क्षेत्र अंकन जोड़िए 1-9, 3-9, 4-9 (Add area notation 1-9, 3-9, 4-9)" निर्देश दिये गये हैं। डीडीसी के 19वें संस्करण में भौगोलिक विभाजनों को खण्ड 1 के पृष्ठ 14–386 तक सूचीबद्ध किया गया है। इस द्वितीय सारणी का प्रयोग भौगोलिक क्षेत्रों को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है ताकि यदि कोई विशिष्ट विषय किसी क्षेत्र विशेष से सम्बद्धता को संकेत करता है तो उसे भौगोलिक संख्या की सहायता से स्पष्ट किया जा सके। जैसे समुद्री सीमाएँ, देश, राज्य, महाद्वीप, शहर, गाँव आदि। भौगोलिक विभाजन की यह सारणी अन्य 6 सारणी की तुलना में अधिक विस्तृत है। इन भौगोलिक क्षेत्रों को मुख्य रूप से 9 भागों में वर्गीकृत किया गया है। कुछ ऐसे विषय क्षेत्र हैं जिनके साथ किसी देश का नाम जोड़ दिया जाए तो उसकी पहचान एवं महत्व बढ़ जाता है जैसे– संगीत, इतिहास, वास्तुकला, नृत्य, कला, मूर्तिकला एवं रीतिरिवाज आदि।

4.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई की रचना का उद्देश्य है –

1. द्वितीय सारणी में दिये गये भौगोलिक क्षेत्रों/विभाजनों का परिचय तथा उनके प्रयोग के बारे में समझाना।
2. उन नियमों की उदाहरण सहित व्याख्या करना, जिनकी सहायता से वर्गांक निर्मित किये जाते हैं।
3. सामान्य क्षेत्रों एवं विशिष्ट स्थानों के विभेद को बताना।
4. विशिष्ट स्थानों एवं सामान्य क्षेत्रों को एक साथ प्रयोग करने संबंधी नियमों को उदाहरण सहित समझाना।
5. अनुसूची में निर्देशित एवं अनिर्देशित अवस्था में भौगोलिक विभाजनों के प्रयोग के बारे में समझाना।

डीडीसी के प्रथम खण्ड की सारणी 2 में भौगोलिक क्षेत्रों एवं स्थानों को तार्किक क्रम में सूचीबद्ध करके व्यवस्थित किया गया है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण सारणी है। इस सारणी का प्रयोग दोनों ही अवस्था में किया जा सकता है अर्थात् अनुसूची में दिशा–निर्देश दिये जाने की अवस्था में तथा न दिये जाने की अवस्था में भी। इस सारणी के अंकन भी

डैश (–) के साथ दिये रहते हैं जिनका स्पष्ट संकेत है कि इस सारणी के अंकनों का प्रयोग भी अकेले नहीं किया जा सकता। इन अंकनों को किसी विशिष्ट विषय के साथ जोड़कर ही किया जा सकता है। इस सारणी को विस्तृत रूप से 9 भागों में विभाजित कर सूचीबद्ध किया गया है। इस इकाई में डीडीसी के 19वें संस्करण से संबंधित चर्चा की गई है तथा उदाहरण भी इसी संस्करण पर आधारित है। वैसे तो इस वर्गीकरण पद्धति के 23 संस्करण अब तक प्रकाशित हो चुके हैं।

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में भौगोलिक विभाजनों एवं उपविभाजनों को इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

4.3 भौगोलिक विभाजनों के प्रकार (Kinds of Geographical Divisions)

1. कटिबंधीय क्षेत्र (Zonal region)
2. भूमि एवं भूमि के प्रकार (Land and Land forms)
3. हवा एवं पानी (Air and Water)
4. वनस्पतियों के प्रकार (Types of Vegetation)
5. शहरी एवं आर्थिक आधार पर बने क्षेत्र (Socio-economic regions)
6. अन्य प्रकार के लौकिक क्षेत्र (Other Kinds of terrestial region)
7. अंतरिक्ष (Space)
8. महाद्वीप, देश, प्रदेश (Continents, Countries, Localities)

भौगोलिक उपविभाजन भी स्वयं पूर्ण वर्गांक नहीं होते तथा इसका प्रयोग कभी भी

अकेले नहीं किया जायेगा बल्कि इन्हें किसी विशिष्ट विषय के साथ नियमानुसार जोड़ा जाता है। इस सारणी के अंकनों को भी डैश (–) के साथ सूचीबद्ध किया है जो विषय अंकन के साथ जोड़ने पर स्वतः ही विलुप्त हो जाता है।

डीडीसी के 19वें संस्करण में भौगोलिक विभाजनों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया गया है–

–1 सामान्य क्षेत्र (General areas)
–2 व्यक्ति (Persons)
–3 प्राचीन विश्व (Ancient World)
–4–9 आधुनिक विश्व (Modern World)

भौगोलिक विभाजनों को मुख्य रूप से द्वितीय सारणी के पृष्ठ 14 पर उल्लिखित किया गया है जो इस प्रकार है–

–1 Areas, regions, places in general

–2	Persons regardless of area, region, place
–3	The Ancient World
–4	Europe Western Europe
–5	Asia Orient far East
–6	Africa
–7	North America
–8	South America
–9	Other parts of the world and extra lerrestrial worlds Pacific ocean islands (Oceania)

4.3.1 –1 सामान्य क्षेत्र, स्थान आदि (Area regions, places in general)

सामान्य क्षेत्र, स्थान आदि के लिए –1 अंकन को आवंटित किया गया है तथा इसे निम्नलिखित वर्गों में पुनः वर्गीकृत कर सूचीबद्ध किया गया है–

–11	Frigid zones
–12	Temperate zones (Middle Latitude zones)
–13	Torrid zones (Tropics)
–14	Land and Land forms
–15	Regions by types of vegetation
–16	Air and water
–17	Socioeconomic regions
–18	Other kinds of terrestrial regions
–19	Space

4.3.2 –2 व्यक्ति (Persons)

जब स्थान अंकन 1–9 को जोड़ने का निर्देश प्रत्यक्ष रूप से दिया गया हो तो जीवन कथा, आत्मकथा आदि का अंकन सीधे क्रमशः –22, –24 बिना मानक उपविभाजन जोड़ते हुए प्रयुक्त किये जाएंगे, जैसे–

उदाहरण : Elementary Educators
372.92 न कि 372.092

4.3.3 –3 प्राचीन विश्व (Ancient World)

भौगोलिक विभाजन के अंकन –3 को प्राचीन विश्व को निर्दिष्ट करने हेतु निर्धारित किया गया है। इनको निम्नलिखित प्रकार सूचीबद्ध किया गया है–

–31 China

–32	Egypt
–33	Palestine
–34	India
–35	Mesopotamia and Iranian Plateau
–36	Europe north and west of Italian peninsula
–37	Italian peninsula and adjacent territories
–38	Greece
–39	Other parts of ancient world

4.3.4 –4–9 आधुनिक विश्व (**Modern World**)

भौगोलिक अंकन –4–9 तक आधुनिक विश्व को वर्गीकृत किया जाता है। यहाँ पर पद 'आधुनिक विश्व' का प्रयोग नहीं किया गया है लेकिन जब शीर्षक में प्राचीन विचारधारा का समावेश न हो तो इसे आधुनिक मानते हुए 4–9 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए। ऑस्ट्रलिया महाद्वीप को अलग अंक आवंटित न करके इसकी उपेक्षा की गयी है जबकि अमेरिका को दो अंक (7,8) प्रदान किये गये हैं। एशिया, यूरोप एवं अफ्रीका को एक–एक अंक निर्धारित किये गये हैं। इस पद्धति में आधुनिक विश्व को निम्नलिखित भागों मे विभक्त किया गया है–

–4	Europe	यूरोप
–5	Asia	एशिया
–6	Africa	अफ्रीका
–7	North America	उत्तरी अमरीका
–8	South America	दक्षिण अमरीका
–9	Other parts of the world	विश्व के अन्य भाग

प्रत्येक महाद्वीप को 9 प्रमुख देशों में बाँटा गया है उदाहरण के लिए –4 एवं –5 यूरोप एवं एशिया को दर्शाया जा रहा है–

–4 Europe Western Europe

–41	British Isles
–42	England and Wales
–43	Central Europe Germany
–44	France and Monaco
–45	Italy
–46	Iberian Peninsula and adjacent islands Spain
–47	Union of Soviet Socialist Republics (Soviet Union)
–48	Scandinavia
–49	Other parts of Europe

–5 Aia Orient Far East

–51 China and adjacent areas
–52 Japan and adjacent areas
–53 Arabian Peninsula and adjacent areas
–54 South Asia India
–55 Iran (Persia)
–56 Middle Aast (Near East)
–57 Siberia (Asiatic Russia)
–58 Central Asia
–59 Southeast Asia

प्रत्येक देशों को पुनः विभाजित कर सूचीबद्ध किया गया है। उदाहरण के लिए -51 China एवं -54 India को दर्शाया गया है–

-51 China and Adjacent Areas

–511 Northeast China
–512 Southeastern China
–513 Southwestern China (South-Western Region)
–514 Northwestern China (North-Western Region)
–515 Tibet Autonomous Region
–516 Sinkiang-Uighur Autonomous Region
–517 Mongolia
–518 Manchuria
–519 Korea

–54 South Asia India

–541 Northeastern India
–542 Uttar Pradesh
–543 Madhya Pradesh
–544 Rajasthan
–545 Punjab Region of India
–546 Jammu and Kashmir
–547 Western India
–548 Southern India
–549 Other Jurisdiction

नोट– दशमलव वर्गीकरण पद्धति के नवीनतम संस्करणों में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं बिहार को विभाजित करने के बाद सृजित नए राज्यों, उत्तरांचल (उत्तराखण्ड), छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड को भी सम्मिलित करते हुए इनके लिए पृथक अंकन आवंटित किए गए हैं।

4.4 प्रायोगिक प्रक्रिया (Practical Process)

इस सारणी के अंकनों का प्रयोग भी अकेले नहीं हो सकता न ही ये किसी विशिष्ट विषय को व्यक्त करते हैं। चूँकि अपने आप में पूर्ण वर्गांक नहीं होते इसीलिए इनको अनुसूची में दिये गये अंकनों को आवश्यकतानुसार जोड़ा जाता है। अनुसूची के साथ जोड़ने के साथ ही भौगोलिक अंकनों के साथ प्रयुक्त डैश (–) स्वतः ही समाप्त हो जाता है। समस्त महाद्वीपों को पुनः देशों एवं राज्यों (देश की व्यवस्था के अनुसार) में विभक्त किया गया है जैसे जापान के लिए –52 और –32, चीन के लिए –51 और –31 तथा भारत के लिए –54 और –34 अंकनों को निर्धारित किया गया है। यहाँ पर –3 अंकनों की श्रृंखला प्राचीन की अवधारणा को व्यक्त करते हैं। शीर्षक में प्राचीन (Ancient) शब्द का प्रयोग होने पर ही प्राचीन के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। यदि प्राचीन शब्द का प्रयोग न हुआ हो तो शीर्षक को आधुनिक के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा। शीर्षक में आधुनिक शब्द दिया गया हो या न दिया गया हो।

उदाहरण :

1. History of modern China
   9 + -51 = 951
2. History of China
   9 + -51 = 951
3. History of Ancient China
   9 + -31 = 931
4. History of Ancient India
   9 + -34 = 934

4.5 भौगोलिक स्थानों/विभाजनों को उपयोग करने के नियम (Rules for use of Geographical Places/Divisions)

यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि इस सारणी का उपयोग अकेले नहीं किया जाता। अनुसूची में इनके उपयोग हेतु आवश्यकतानुसार जगह–जगह पर निर्देश दिये गये हैं। इन निर्देशों में एकरूपता नहीं है। जैसे Add area notation 1-9, 3-9 or 4-9 निर्देश दिये गये हैं इसी प्रकार कहीं पर बिना शून्य के कहीं पर 09, कहीं पर 009 के भी निर्देश दिये गये हैं। इसलिए ग्रंथ को वर्गीकृत करते समय इन निर्देशों को बहुत ही ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। अनुसूची में दिये गये निर्देशों का पालन पूरी दृढ़ता से किया जाना चाहिए।

4.5.1 निर्देशित अवस्था में सारणी 2 का प्रयोग (Use of Table 2 when Instructed)

जब अनुसूची में विशिष्ट विषय के किसी अंकन के साथ भौगोलिक विभाजनों के अंकन को जोड़ने की आवश्यकता हो तथा उसके अंतर्गत भौगोलिक अंकन जोड़ने का

निर्देश "Add area notation" दिया हो तो इस अवस्था में भौगोलिक अंकन को अनुसूची अंकन में सीधे जोड़ देते हैं। इस प्रकार इन निर्देशों के अनुसार अनुसूची में वर्णित किसी भी वर्गांक के अंतर्गत दिए गए निर्दिष्ट आधार अंक (Base number) के साथ भौगोलिक विभाजन सारणी में दिये गये अंकन 1–9, 3–9 या 4–9 को जोड़ा जा सकता है।

उदाहरण : 5. Economic development of Punjab 338.954 552

विश्लेषण– अनुसूची में 338.9 के अंतर्गत Economic development and growth दिया गया है। इसके नीचे .93 - .99 Development programs and policies of specific jurisdictions and groups of jurisdiction के अंतर्गत (Add areas notation 3-9 from table 2 to base number 338.9) दिया गया है। सारणी 2 से पंजाब का अंकन 545 52 लिया गया है।

उदाहरण : 6. General libraries of India 0.27.054

अनुसूची में General libraries वर्ग अंकन 027 दिया गया है तथा इसके नीचे मानक विभाजन को दो शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश दिया गया तथा इसके बाद .09 – 09 Geographical Treatment के अंतर्गत 'Add "areas" notation 1-9 from table 2 to base number 027.0' निर्देश दिया गया है अतः वर्गांक इस प्रकार बनेगा–

027.0 + -54 = 027.054

उदाहरण : 7. Foreign policy of Japan 327.52

अनुसूची में Foreign policy के लिए अंकन 327 दिया गया है तथा विशिष्ट भौगोलिक विभाजन को जोड़ने के लिए .3 – .9 में यह निर्देशित किया गया है कि आधार अंक 327 में भौगोलिक अंकन को सीधे जोड़ दीजिए अतः वर्गांक इस प्रकार बनेगा–

327 + -52 = 327.52

नीचे दिये गये उदाहरण इन्हीं नियमों पर आधारित हैं –

8. Foreign Trade of China

विश्लेषण :

International commerce (Foreign trade) 382
Historical and geographical treatment 382.09
Instruction : Add area notation 1-9 from table 2 to base number 382.09
Area : China -51 (from table 2)
Class Number : 382.095 1

9. Political Parties in France

विश्लेषण :

Political Parties : 324.2
Instruction : Geographical treatment
Add areas notation 4-9 from table 2 to base number 324.2
Area : France-44 (from table 2)
Class Number : 324.244

10. Library of Congress : National Library of America

विश्लेषण :

Government Libraries : 027.5
Instruction : .53 - .59 specific institutions
Add areas notation 3-9 from table 2 to base number 027.5
Area : America-73 (from table 2)
Class Number : 027.573

11. Public Libraries in Great Britain

विश्लेषण :

Public Libraries : 027.4
Instruction : .43 - .49 Treatment by specific continents, countries, localities.
Add "areas" notation 3-9 from table 2 to base number 027.4
Area : Great Britain - 41
Class Number : 027.441

नोट– यहाँ पर कुछ अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं। छात्र इनका विश्लेषण कर अपनी क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं

12. Private law of Japan
346 + -52 = 346.52
13. Folk music of Germany
781.7 + -43 = 781.743
14. Indian National Bibliography (INB)
015 + -54 = 015.54
15. British Foreign Investments
332.673 + -41 = 332.673 41
16. General organizations of Spain

068 + -46 = 068.46

17. Japanese Diet

328 + -52 = 328.52

18. Education of Women in Malta

376.9 + -458 5 = 376.945 85

4.5.2 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 2 का प्रयोग (Use of Table 2 when not Instructed)

जब आख्या में विषय की वर्ग संख्या में भौगोलिक विभाजनों को जोड़ने की आवश्यकता हो लेकिन उस वर्ग संख्या के अंतर्गत द्वितीय सारणी को जोड़ने से संबंधित निर्देशन दिया गया हो तो सारणी 1 मानक उपविभाजन के अंकन –09 की सहायता से सारणी 2 के अंकनों को जोड़ा जा सकता है। मानक उपविभाजन के अंकन –09 का प्रयोग करते समय उन नियमों का पालन करना चाहिए जो मानक उपविभाजनों के लिए बनाए गए हैं। अर्थात –09 अंकन का प्रयोग बिना शून्य, एक शून्य, दो या तीन शून्य के साथ करना चाहिए यह उस विषय के विभाजन एवं उपविभाजनों की स्थिति पर निर्भर करता है। अंकन –09 एक कड़ी की भूमिका निभाता है।

19. Military science in India

विश्लेषण :

Military art and science – 355

Historical and geographical treatment – 009

Area	:	India (-54 from table 2)
Class Number	:	355.009 54

20. Bureaucracy in Italy

विश्लेषण :

Bureaucracy	:	351.001
Area	:	Italy (-45 from table 2)

यहाँ पर भौगोलिक विभाजन जोड़ने के लिए निर्देश नहीं दिये गये हैं इसलिए सारणी 1 से –09 जोड़ा जायेगा इसके सारणी 2 के अंकन प्रयुक्त होंगे अतः वर्गांक होगा –

351.001 + -09 + -45 = 351.001 094 5

21. Life of Jesus in Mexico

विश्लेषण :

Life of Jesus	:	232.9

England: Mexico (-72) from table 2

यहाँ पर सारणी 1 को दो शून्य से प्रयुक्त करने का निर्देश है। अतः वर्गांक इस प्रकार बनेगा –

232.9 + -009 + -72 = 232.900 972

22. Cancer disease in British Columbia

विश्लेषण :

Canter disease : 616.994
Area : British Columbia (-711) from table 2

यहाँ पर भौगोलिक विभाजन जोड़ने के लिए निर्देश नहीं दिये गये लेकिन मानक उपविभाजन को दो शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है अतः वर्गांक इस प्रकार बनेगा–

वर्गांक 616.994 + -009 + -711 = 616.994 009 711

23. Agricultural sociology of developed countries

विशलेषण :

Urban communities : 307.76
Historical and geographical treatment : 09 (Table 1)
Area : High (by degree of economic development (-172 2) from table 2
Class number : 307.760 917 22

नोट– जिस वांछित वर्गांक के बाद भौगोलिक उपविभाजन को जोड़ने के लिए सारणी 1 से –09 जोड़ना हो तो वांछित वर्गांक के नीचे यह अवश्य देख लें कि मानक उपविभाजन का प्रयोग किस प्रकार करना है, जैसे–

Use -.01-.09 for standard subdivisions
Use -.001-.009 for standard subdivisions
Use -.0001-.0009 for standard subdivisions
Use -.00001-.00009 for standard subdivisions

4.5.3 निर्देशित अवस्था में भी अंकन –09 का प्रयोग (Use of notation -09 in the situation of instructed too)

अनुसूची में कई स्थानों पर विषयों के अंतर्गत भौगोलिक विभाजनों के अंकनों को प्रयुक्त करने हेतु मानक उपविभाजन के अंकन –09 को जोड़ते हुए आवश्यकतानुसार सारणी 2 के भौगोलिक विभाजनों को जोड़ने के निर्देश मिलते हैं उदाहरण के लिए

अनुसूची के अंकन 382 (International Commerce) के अंतर्गत 382.09 Historical and geographical treatment के अंतर्गत आधार अंक 382.09 के साथ भौगोलिक सारणी के अंकनों को आवश्यकतानुसार जोड़ने का निर्देश है। सारणी 2 में Korea हेतु अंकन –519 प्रयुक्त हुआ है।

24. Foreign trade of Korea

विशलेषण :

International commerce (Foreign trade) – 392
Historical and geographical treatment – 09

Instructions	:	Add 'areas' notation 1-9 from table 2 to bare number 382.09
Area	:	Korea (-519) from table 2
Class number	:	382.095 19

4.6 सामान्य क्षेत्र, स्थान (–1) का प्रयोग (Use of Areas, Places in General)

सामान्य क्षेत्रों के अंतर्गत उन भौगोलिक विभाजनों एवं उपविभाजनों को सम्मिलित किया गया है जिनको किसी एक निश्चित क्षेत्रफल या भौगोलिक सीमा में बांधा नहीं जा सकता। इन विभाजनों का प्रयोग भी विशिष्ट महाद्वीप, देश की भांति ही किया जाएगा। यह व्यवस्था निर्देशित एवं अनिर्देशित दोनों ही अवस्थाओं पर लागू रहेगी।

25. Private and public libraries in rural area

विशलेषण :

General libraries – 027
Private and public libraries – 027.1

Instructions	:	Add 'areas' notation 1-9 from table 2 to bare number 027.1
Area	:	Rural (-173 4) from table 2
Class number	:	027.1 + -173 4 = 027.117 34

26. Botanical garden in Asian sector

विशलेषण :

Botanical sciences – 580
Botanical gardens – 580.744

Instructions	:	Add 'areas' notation 1-9 from table 2 to base number 580.744

Area : Asian sector (-163 25) from table 2
Class number : 580.744 + -163 25
580.744 163 25

उपर्युक्त उदाहरण के आधार अंक 580.744 के साथ द्वितीय सारणी से भौगोलिक विभाजन –1–9 में से उपयुक्त अंकन का चयन कर जाड़ने का प्रावधान दिया गया है। सारणी 2 में Asian sector के लिए अंकन –163 25 दिया गया है

27. Adult education in Urban regions

विशलेषण :

Adult education – 374
Historical and geographical treatement – 374.9
Instructions : .91-.93 Geographical treatment
Add 'areas' notation 1-9 from table 2 to base number 374.9
Area : Urban regions (-173 2) from table 2
Class number : 374.9 + -173 2 = 374.917 32

उपर्युक्त उदाहरण में आधार अंक 374.9 के साथ भौगोलिक विभाजन के अंकन 1–9 में से उपयुक्त अंकन का चयन कर जोड़ने का प्रावधान दिया गया है। सारणी 2 में Urban regions के लिए अंकन 173 2 दिया गया है।

नोट– यहाँ पर कुछ अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं। छात्र अभ्यास करके अपनी क्षमता का विकास कर सकते हैं।

28. Elementry education in rural areas
372.9 + -173 4 = 372.917 34

29. International trade of western block
382.09 + -171 3 = 382.091 713

30. Economic assistance by communist countries
338.91 + -171 7 = 338.911 717

31. Standard of living in christianity regions
339.47 + -09 + -176 1 = 339.470 917 61

32. Birds of desert area
598.29 + -154 = 598.291 54

4.7 दो देशों के मध्य संबंध (Relation Between two Nations)

किसी भी देश का संबंध विश्व के अनेक देशों के मध्य हो सकता है। इस संबंध

का दृष्टिकोण पृथक–पृथक हो सकता है, जैसे–राजनीतिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आदि। इस प्रकार के संबंधों को दर्शाने के लिए आवश्यकतानुसार अनुसूची में यथास्थान निर्देश दिये गये हैं। निर्देशानुसार दो देशों के अंकनों को योजक अंक शून्य (0) या शून्य नौ (09) द्वारा जोड़ने का प्रावधान किया गया है। किंतु यदि दो देशों के अंकन जोड़ने संबंधी निर्देश न दिये गये हों तो किसी भी परिस्थिति में दो देशों के अंकनों का प्रयोग एक साथ नहीं किया जा सकता।

जब दो देशों को जोड़ने के निर्देश दिये गये हों तो यह जान लेना आवश्यक है कि किस देश को प्राथमिकता प्रदान की जाये। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित अनुसार प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए।

1. अगर किसी ग्रंथ में एक देश को अधिक महत्व प्रदान किया गया हो उसी देश के अंकन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए भले ही देश, शीर्षक एवं सारणी में पहले प्रयुक्त हुआ हो या बाद में।
2. यदि ग्रंथ में दोनों देशों को समान महत्व दिया गया हो तो भौगोलिक सारणी में जिसे पहले वर्णित किया गया हो उसे प्राथमिकता दी जानी चाहिए न कि जो शीर्षक में पहले प्रयुक्त हुआ हो।
3. स्थानीय देश को महत्व देने के लिए क्रम को ध्यान में न रखते हुए स्थानीय देश के अंकन को प्राथमिकता दी जा सकती है।

उदाहरण : 33. Exchange rate between Indian rupee and Italian lira

विशलेषण :

Financial economics	:	332
Exchange rate and their determination	:	332.456
Exchange rates of specific currencies and groups of currencies	:	332.456 09
Instructions	:	Add "areas" notation 1-9 from table 2 to base number 332.456 09 then add 0 and again add notation 1-9 from table 2
Area	:	India (-54) then add 0 Italy (-45) from table 2
Class number	:	332.456 09 + -54 + 0 + -45 = 332.456 095 404 5

34. Indian economic assistance to Nepal

Economic development and growth	:	338.9

Economic assistance	:	338.91
International assistance (Aid) by specific: jurisdictions and groups of jurisdictions		.911-919
Instructions	:	Add "areas" notation 1-9 from table 2 to base number 338.91 then add 0 and again add notation 1-9 from table 2
Area	:	India (-54) from table 2 than add 0 Nepal (-549 6) from table 2
Class number	:	338.91 + -54 + 0 + -549 6 = 338.915 405 496

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में एक देश भारत है तथा दूसरा विदेशी। अब भारत के दृष्टिकोण से समान महत्व वाले दो देशों को जोड़ने वाले उदाहरण दिये जा रहे हैं।

35. Foreign trade between Great Britain and China

अनुसूची के अंकन 382 International commerce (Foreign trade) दिया गया है तथा इसके अंतर्गत -09 Historical and geographical treatment में आधार अंक 382.09 के साथ भौगोलिक सारणी के अंकन 1–9 में से आवश्यकतानुसार अंकन जोड़ सकते हैं। उपर्युक्त आख्या में दोनों देश विदेशी हैं तथा भारत की दृष्टि से दोनों समान महत्व के हैं। इसलिए जो अनुसूची में पहले आएगा वह वरीय क्रम में होगा। इसका वर्गांक इस प्रकार निर्मित किया जाएगा।

382.09 + -41 + 0 + -51 = 382.094 105 1
(T.2) (T.2)

36. Economic policy of France towards Germany

अनुसूची के पृष्ठ क्रमांक 296 में 337 International economics के लिए प्रयुक्त हुआ है। पृष्ठ क्रमांक 297 में .3-.9 Foreign economic policies and relations of specific jurisdictions and groups of jurisdictions के अंतर्गत Add "areas" notation 3-9 from table 2 to base number 337 दिया गया है। समान महत्व के दोनों देशों में सारणी 2 में जो पहले दिया गया है उसे पहले लिखा जायेगा, तत्पश्चात शून्य (0) एवं फिर दूसरे देश का अंकन जोड़ा जायेगा। उपर्युक्त उदाहरण का वर्गांक इस प्रकार निर्मित किया जाएगा।

337 + -43 + 0 + -44 = 337.430 44

अन्य उदाहरणः 37. Foreign relation between Great Britain and India
327 + -54 + 0 + -41 = 327.540 41

38. Exchange rate of currencies between India and Germany

332.456 09 + -54 + 0 + -43 = 332.456 095 404 3

39. Population movement from Bangladesh to India – its social implications

304.8 + -54 + 0 + -549 2 = 304.854 054 92

40. Trade between Brazil and Columbia

382.9 + -81 + 0 + -861 = 382.981 086 1

41. Indo-Pak relationship

327 + -54 + 0 + 549 1 = 327.540 549 1

42. Chinese foreign assistance to under developed countries

338.91 + -51 + 0 + -172 4 = 338.915 101 724

4.8 –09 के साथ दूसरे देश के अंकन का प्रयोग (Use of Notation of Second country with -09)

अनुसूची में कहीं–कहीं पर दूसरे देश के अंकन को –09 के साथ जोड़ने के भी निर्देश मिलते हैं जबकि प्रथम देश के अंकन को विषय के साथ सीधे ही जोड़ने के लिए निर्देश मिलते हैं।

43. Colonization by Spain in India

अनुसूची में 325.3 Colonization के अंतर्गत .33-.39 Colonization by specific countries में यह निर्देश दिया गया है कि जिस राष्ट्र द्वारा औपनिवेश किया गया है उसका अंकन सारणी 2 से लेकर सीधा जोड़ा जायेगा तत्पश्चात मानक उपविभाजन से –09 जोड़ते हुए उस देश का अंकन जोड़ा जाएगा जिस देश में उपनिवेश किया गया है। अतः वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा –

वर्गांक 325.3 + -46 + -09 + -54 = 325.346 095 4

4.9 सामान्य क्षेत्र एवं विशिष्ट देश का एक साथ प्रयोग (Use of Places in general and specific countries)

विषय की आवश्यकतानुसार सामान्य क्षेत्र एवं विशिष्ट देशों को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता होती है। अधिकांशतः अनुसूची में किसी वांछित शीर्षक के अंतर्गत भौगोलिक उपविभाजन जोड़ने के लिए निम्नलिखित प्रकार के निर्देश दिये रहते हैं– Add areas notation-1 from table 2, Add areas notation 1-9, Add areas mptatopm 3-9 या Add

areas notation 4-9 आदि। लेकिन विषय की माँग देखते हुए कहीं–कहीं पर सामान्य क्षेत्र एवं विशिष्ट महाद्वीप, देश को एक साथ प्रयोग करने के निर्देश भी दिये रहते हैं ये निर्देश न भी दिये गये हों तो सारणी 2 के पृष्ठ 14 एवं 27 पर इनको प्रयोग करने से संबंधित निर्देश दिये गये हैं। इनको एक साथ प्रयोग करने की दो विधियाँ हैं

4.9.1 प्रथम विधि

सारणी 2 के पृष्ठ 14 पर उल्लिखित किया गया है कि भौगोलिक विभाजन के

सामान्य क्षेत्र –1 या उसके किसी उपखण्ड के साथ भौगोलिक विभाजन –3–9 तक किसी भी अंकन का प्रयोग संयोजी चिन्ह शून्य (0) के साथ जोड़ा जा सकता है।

44. Cattles of Torrid Zones of Europe

अनुसूची में Cattle के लिए 636.2 अंकन का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत मानक उपविभाजन को दो शून्य (00) के साथ जोड़ने का निर्देश दिया गया है। सारणी 2 के पृष्ठ 14 में दिये गये निर्देशानुसार पहले Torrid Zone के लिए –13 अंकन फिर शून्य (0) तत्पश्चात Europe के लिए –4 अंकन जोड़ा जाएगा। अतः उपर्युक्त उदाहरण का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा–

वर्गांक : 636.2 + -009 + -13 + 0 + -4 = 636.200 913 04

4.9.2 द्वितीय विधि

इस विधि से भी वर्गांक निर्मित किया जा सकता है। इसका उल्लेख सारणी 2 के पृष्ठ 27 पर किया गया है। इसके अंतर्गत यह निर्देश दिया गया है कि भौगोलिक उपविभाजन –3–9 तक के अंतर्गत दिये गये किसी भी अंकन का प्रयोग पहले होगा, इसके पश्चात योजक चिन्ह –009 के बाद सारणी 2 में से –11–19 तक किसी भी अंकन को विषय की आवश्यकतानुसार जोड़ा जा सकता है लेकिन सामान्य क्षेत्र के अंकन को जोड़ते समय (-1) को हटा दिया जाएगा, जैसे–

Torrid Zone of Europe
Subject + -4 + -009 + [-1] 3 = -400 93

45. Birds of Forest in Mongolia
598.29 + -517 + -009 + [-1] 52 = 598.295 170 095 2

46. Libraries and Information Centres in rural areas of America
027.0 + -173 4 + 0 + -73 = 027.017 340 73

या / दूसरी विधि

027.0 + -73 + -009 + [-1] 734 = 027.073 009 734

47. Study of curriculums for rural region in Italy
375.009 + -1734 + 0 + -45 = 375.009 173 404 5

48. Desease of lungs in deltas of Asia
616.24 + -009 + -146 + 0+ -5 = 616.240 091 460 5

4.10 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Non dominant aggregates in Korea
323.1 + -519 = 323.151 9
2. Public libraries in North Central Countries
027.4+ -714 4 = 027.471 44
3. British Foreign investments
332.673 + -41 = 332.673 41
4. Foreign relation between China and Spain
327 .46 + 0 + -51 = 327.460 51
5. Poverty in Odissa
362.5 + -09 + -541 3 = 362.509 541 3
6. Economic development of China
338.9 + -51 = 338.951
7. Exchange the currencies between rupee and dollar
332.456 09 + -54 + 0 + -73 = 332.456 095 407 3
8. International policy of Canada with Pakistan
327 + -549 1 + 0 + -71 = 327.549 107 1
9. Atmospheric pressure in Forests
551.54 + -09 + -152 = 551.540 915 2
10. History of India during Mughal Period
9 + -54 + [954] .025 = 954.025
11. Secondary education and schools in Iran
373 + -55 = 373.55
12. Emigration from Burma to Saudia Arabia
325.2 + -591 + -09 + -538 = 325.259 109 538
13. Collection of treaties between India and Bangladesh on air transportation
341.756 7 + [341-] 0266 + -54 + 0 + -549 2 = 341.756 702 665 405 492
14. Elementary education in Indian villages
372.9 + -173 4 + 0 + -54 = 372.917 340 54
or
372.9 + -54 + -009 + [-1] 734 = 372.954 009 734

4.11 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Historical atlas of India
2. Land economics of America
3. Political parties of Algeria
4. Co-operative movement in Gujarat
5. French trade with Mexico
6. Christian Church in China
7. Mango Crops of Uttar Pradesh
8. Rural community of South Asia
9. Cultural treaties between India and China
10. Elementary education in urban regions of France
11. Special libraries in the region with muslim religion dominating area.
12. Future of intercast marriage in India.
13. Sugarcane in the region where Punjabi language is predominate
14. World history of developing countries
15. Trade between China and Pakistan

4.12 सारांश (Summary)

विश्व की भौगोलिक रचना एवं उसकी स्थिति विभिन्न प्रकार की है। इनका वर्णन इस इकाई में किया गया है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको भौगोलिक क्षेत्रों एवं उनके प्रकारों का ज्ञान हो गया होगा। यह सारणी समस्त सहायक सारणियों में सर्वाधिक व्यापक है। इस सारणी के अंकनों को निर्देशित अवस्था में, अनिर्देशित अवस्था में, सीधे या अंकन –09 की सहायता से जोड़ने का प्रावधान अनुसूची एवं आवश्यकतानुसार सारणियों में भी किया गया है। सामान्य क्षेत्रों एवं विशिष्ट देशों को पृथक से सूचीबद्ध किया गया है।

4.13 शब्दावली (Glossary)

सामान्य क्षेत्र – ऐसे क्षेत्र जिन्हें एक सीमा में बाँधा नहीं जा सकता जैसे Rural, River, Forest आदि।

विशिष्ट देश – ऐसे क्षेत्रों की एक भौगोलिक सीमा होती है।

4.14 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class number of Titles for Exercise)

1. 911 + -54 = 911.54
2. 333 + -009 + -73 = 333.009 73

3. 324.22 + -65 = 324.265
4. 334.09 + -547 5 = 334.095 475
5. 382.9 + -44 + 0 + -72 = 382.944 072
6. 27 + -51 = 275.1
7. 634.44 + -09 + -542 = 634.440 954 2
8. 307.72 + -09 + -54 = 307.720 954
9. 341.767 + [341.] 0266 + -54 + 0 + -51 = 341.767 026 654 051
10. 372.9 + -173 4 + -44 = 372.917 340 44

    or

    372.9 + -44 + 0 – [1] 734 = 372.944 073 4

4.15 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996) ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998), Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987), प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–5 : सारणी 3 विशिष्ट साहित्यिक उपविभाजन

Unit-5 : Table 3 Subdivisions of Individual Literatures

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.1 उद्देश्य

5.3 सारणी 3 को प्रयोग करने के नियम

5.4 सारणी 3 में वर्णित विशेष रूप

5.4.1 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार

5.5 जब शीर्षक में भाषा न दी गई हो

5.5.1 जब पद 'साहित्य रचना' दिया गया हो

5.5.2 मानक उपविभाजन का प्रयोग

5.5.3 यदि पद 'संग्रह' दिया गया हो

5.5.4 यदि शीर्षक में 'काल/समय भी दिया गया हो

5.5.5 यदि किसी विशिष्ट व्यक्तियों के लिए/या द्वारा संग्रह हो

5.5.6 यदि शीर्षक में जीवनी, इतिहास, आलोचना एवं मूल्यांकन आदि उपस्थित हो

5.6 जब साहित्य की भाषा शीर्षक में दी गई हो

5.6.1 यदि शीर्षक में साहित्य का विशिष्ट रूप न हो

5.6.1.1 मानक उपविभाजन का प्रयोग

5.6.1.2 यदि पद 'संग्रह' उपस्थित हो

5.6.1.3 यदि शीर्षक में पद 'इतिहास, समीक्षा, मूल्यांकन, जीवनी' आदि उपस्थित हों

5.6.2 यदि साहित्य की भाषा के साथ उसके विशिष्ट रूप का भी उल्लेख हो

5.6.2.1 मानक उपविभाजन का प्रयोग

5.6.2.2 'पद संग्रह' के साथ सारणी 3-A का प्रयोग

5.6.2.3 विशिष्ट रूप के साथ इतिहास, मूल्यांकन आदि के साथ ही सारणी 3-A का प्रयोग

5.6.2.4 विशिष्ट रूप के साथ काल का प्रयोग

5.6.2.5 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार

5.6.2.6 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकारों के साथ काल का प्रयोग

5.7 विलियम शेक्सपियर के कार्यों की तालिका

5.8 कृत्रिम भाषाओं का साहित्य

5.9 सारणी 3-A के अंतर्गत वरीयताक्रम सारणी
5.10 वर्गीकृत शीर्षक
5.11 अभ्यास हेतु शीर्षक
5.12 सारांश
5.13 शब्दावली
5.14 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
5.15 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

यह सारणी प्रथम खण्ड की तीसरी सारणी है तथा मुख्य वर्ग साहित्य की सहायक सारणी के रूप में कार्य करती है। इस सारणी के विशिष्ट एकलों की श्रेणी में रखा गया है क्योंकि इस सारणी के अंकन का प्रयोग सिर्फ मुख्य वर्ग साहित्य (800) के साथ किया जाता है। इस सारणी के अंकन भी पूर्ण वर्गांक निर्मित नहीं करते अर्थात् ये अंकन भी अकेले प्रयुक्त नहीं होते। अनुसूची में 808 में वर्णित विषयों के साथ इनके प्रयोग के लिए विशिष्ट निर्देश दिये गये हैं तथा आधार अंक 810–890 के साथ इस सारणी का प्रयोग उन्हीं अंकनों के साथ किया जायेगा जिन्हें तारांकित (*) किया गया है। कुछ तारांकित वर्ग संख्याओं के अंतर्गत तो आधार अंक निर्दिष्ट कर दिये गये हैं जबकि कुछ तारांकित वर्ग संख्याओं के अंतर्गत आधार अंक नहीं दिये गये। जहाँ पर आधार अंक नहीं दिये गये वहाँ पर तारांकित वर्ग संख्या को ही आधार अंक मान लिया जाता है। सारणी 3 में ऐसे विभिन्न विषयों के लिए अंकन दिये गये हैं जो विभिन्न साहित्यों में पाये जाते हैं जैसे–साहित्य की विविध विधाएँ या रूप (Form) अर्थात् कहानी, नाटक, पद्य आदि। ये विभिन्न रूप प्रत्येक भाषा के साहित्य में पाये जाते हैं जैसे–अंग्रेजी कविता, हिंदी नाटक, उर्दू नाटक, उपन्यास आदि। इन्हें सारणी 3 में एक साथ सूचीबद्ध किया गया है।

सारणी 3 को विस्तार करते हुए एक उप–सारणी 3-A भी दी गयी है, यह सारणी 3 की पूरक सारणी है। इस सारणी में उन विशिष्ट विधाओं को वर्णित किया गया है जिन दृष्टिकोणों को साहित्यों में चित्रित किया जाता है। इस सारणी में अन्य सारणियों के अंकन को प्रयोग करने के निर्देश दिये गये हैं। साहित्य में शोध क्षेत्रों के दृष्टिकोणों को स्पष्ट करने के लिए सारणी 3-A बहुत ही सहायक है।

5.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई की रचना का उद्देश्य है–

1. मुख्य वर्ग साहित्य के साथ सारणी 3 की उपयोगिता को बताते हुए उनकी व्याख्या करना।
2. साहित्य के विभिन्न रूपों को वर्णित करना।
3. साहित्यिक विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए नियमों का उल्लेख करना तथा उदाहरण सहित समझाना।
4. सारणी 3 की विस्तारित सारणी 3-A की उपयोगिता एवं इसके उपयोग करने के प्रावधानों को उदाहरणों सहित करना; तथा
5. सारणी 3-A के लिए अग्रताक्रम तालिका को उदाहरण सहित समझाना।

5.3 सारणी 3 को प्रयोग करने के नियम (Rules for use of Table 3)

1. इस तृतीय सारणी को सिर्फ मुख्य वर्ग 800 में 808 के अंतर्गत दिये गये निर्देश द्वारा या 810–890 में दिये गये तारांकित उपविभाजनों के साथ ही प्रयोग किया जा सकता है। यह सारणी प्रथम खण्ड के पृष्ठ 387–403 में वर्णित है।
2. जब साहित्य की भाषा न दी गयी हो, भाषा दी गयी हो, या विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार दिये गये हों तो इन तीनों ही अवस्थाओं में –08 एवं –09 आदि का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।
3. जब शीर्षक में सात्यि की भाषा दी गयी हो लेकिन रूप (Form) न दिया गया हो तो सारणी 3 के पृष्ठ 389 पर वर्णित शून्य (0) से प्रारंभ होने वाले –01–09 के उपयुक्त अंकन का प्रयोग किया जाना चाहिए।
4. जब शीर्षक में साहित्य की भाषा एवं रूप दोनों ही उपस्थित हों तो सारणी 3 के पृष्ठ 391 पर –1 Poetry के साथ वर्णित 1001–1007, 1008, 1009 का प्रयोग संबंधित रूप के अंकन को जोड़ते हुए किया जाएगा।
5. जब विशिष्ट रूप के विशिष्ट प्रकार का वर्णन हो जिन्हें तारांकित भी किया गया होता है, के साथ सारणी 3 के पृष्ठ 390 पर वर्णित –01–07, –08, –09 का प्रयोग किया जाएगा।
6. जब साहित्य में एक से अधिक भाषा दी गयी हो या किसी भी भाषा का उल्लेख न हो तो इसे 801–809 के अंतर्गत वर्गीकृत करने का निर्देश दिया गया है।

सारणी 3-A का प्रयोग सारणी 3 में दिये गये निर्देश द्वारा या अनुसूची में 808–809 के अंतर्गत दिये निर्देश द्वारा ही किया जाता है।

5.4 सारणी 3 में वर्णित विशिष्ट रूप (Specific forms given in Table 3)

मुख्य वर्ग साहित्य के विशिष्ट रूपों को सारणी 3 के पृष्ठ 391 में निम्नलिखित प्रकार से वर्णित किया गया है–

– 1	Poetry	पद्य / कविता
– 2	Drama	नाटक
– 3	Fiction	उपन्यास
– 4	Essays	निबंध
– 5	Speeches	भाषण
– 6	Letters	पत्र
– 7	Satire and humor	उपहासपूर्ण लेख एवं विनोदपूर्ण लेख

–8 Miscellaneous writings विविध लेखन

5.4.1 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार (Specific types of Specific Form)

उपर्युक्त विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकारों का भी उल्लेख किया गया है, जैसे–

–1 Poetry

–102 *Dramatic

–103 *Epic

–104 *Lyric and balladic

–1042 *Sonnets

–1043 *Odes

–1044 *Ballads

–2 Drama

–202 *For radio and television

–203 *For motion pictures

–204 *Drama of restricted scope etc.

–2041 *One-act plays

–3 Fiction

–301 *Short stories

–306 *Cartoon fiction

–308 *Specific types of fiction

–3087 *Love and romance etc.

–30876*Science

यहाँ पर साहित्य में उपलब्ध विशेषताओं के आधार पर निर्मित शीर्षकों को वर्गीकृत करने हेतु विभिन्न नियमों का उल्लेख किया जा रहा है –

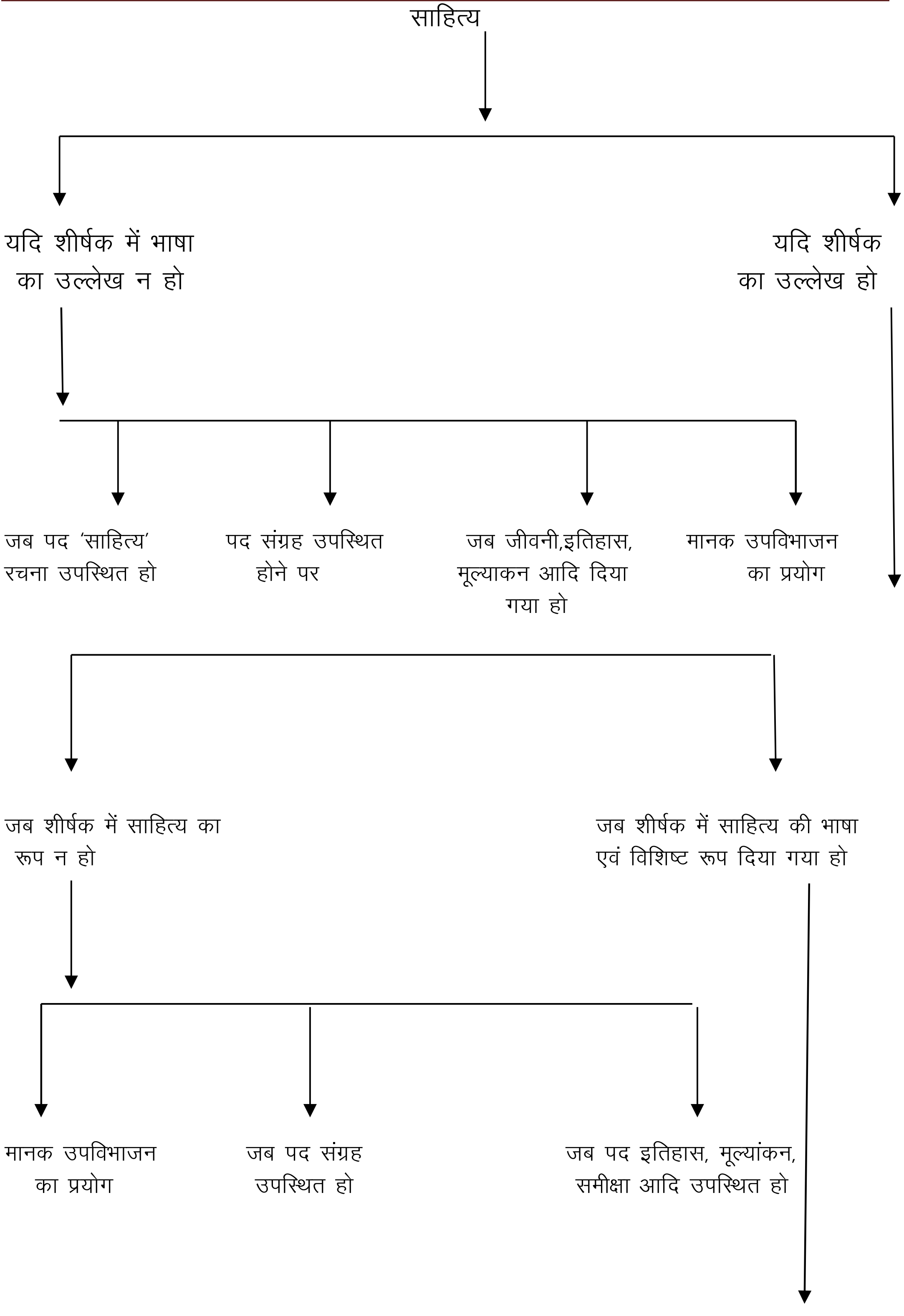
साहित्य
यदि शीर्षक में भाषा का उल्लेख न हो
यदि शीर्षक का उल्लेख हो
जब पद 'साहित्य' रचना उपस्थित हो
पद संग्रह उपस्थित होने पर
जब जीवनी,इतिहास, मूल्याकन आदि दिया गया हो
मानक उपविभाजन का प्रयोग
जब शीर्षक में साहित्य का रूप न हो
जब शीर्षक में साहित्य की भाषा एवं विशिष्ट रूप दिया गया हो
मानक उपविभाजन का प्रयोग
जब पद संग्रह उपस्थित हो
जब पद इतिहास, मूल्यांकन, समीक्षा आदि उपस्थित हो

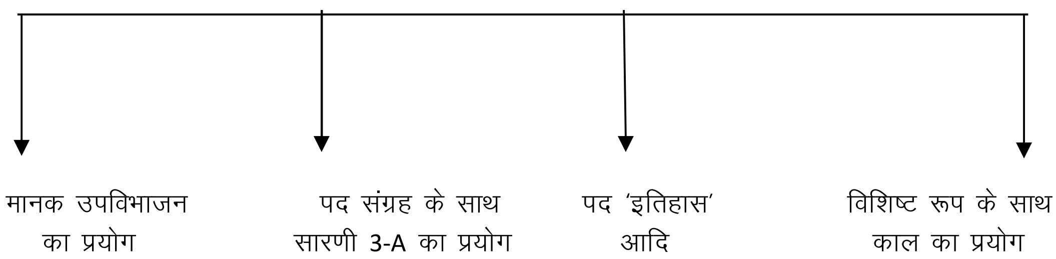

5.5 जब शीर्षक में भाषा न दी गयी हो (**Language is not given in title**)

जब शीर्षक में साहित्य की भाषा न दी गयी हो या साहित्य एक से अधिक भाषाओं से संबंधित हो तो इन दोनों ही स्थिति में शीर्षक को वर्ग संख्या 801–809 के अंतर्गत संबंधित अंकन के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

5.5.1 जब पद 'साहित्य रचना' (**Rhetoric/Composition**) दिया गया हो

यदि साहित्य के शीर्षक में पद 'साहित्य रचना' को उल्लिखित किया गया हो तो उसे 800 या 808.1–808.7 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा।

उदाहरण : 1. Tamil rhetoric
808.04 + -948 11 = 808.049 481 1

अनुसूची में 808.04 (Rhetoric in specific language) के अंतर्गत 808.043–808.049 में अन्य भाषा को सारणी 6 से लाने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त उदाहरण में आधार अंक 808.04 में तत्काल भाषा का अंकन –948 11 सारणी 6 से लिया गया है।

5.5.2 मानक उपविभाजन का प्रयोग

यदि शीर्षक में ऐसे पद का प्रयोग हुआ हो जो मानक उपविभाजन के अंकन –01–07 से संबंधित हो तो उसे अंकन 801–807 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

उदाहरण : 2. Literary organization
8[00] + -06 = 806

मुख्य वर्ग 800 साहित्य में –06 मानक उपविभाजन से लिया गया है तथा नियमानुसार अंतिम वर्गांक बनाते समय दो शून्यों को हटा दिया गया है।

5.5.3 यदि पद संग्रह (**Collection**) दिया गया हो

यदि शीर्षक में पद 'संग्रह' का प्रयोग हुआ हो, तो इसे 808.8 में उपयुक्त वर्गांक के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा। यदि संग्रह के साथ विशिष्ट रूप भी उपस्थित हो तो इसे अंकन 808.81–808.88 के अंतर्गत तथा यदि विशिष्ट रूप का उल्लेख न हो तो इसे 808. 8001–808.803 के अंतर्गत वर्गीकृत करने का प्रावधान है।

उदाहरण : 3. Collection of literature displaying idealism

808.80 + -13 = 808.801 3

अनुसूची में 808.8 (Collections from more than one literature) के अंतर्गत 808. 801–808.803 (Collections displaying specific features) में सारणी 3-A के अंकन 1–3 को जोड़ने का निर्देश है। उपर्युक्त उदाहरण में idealism के लिए –13 अंकन को सारणी 3-A से लेकर वर्गांक निर्मित किया गया है।

उदाहरण : 4. Collection of literature displaying adventure fiction
808.83 + [-30] 87 = 808.838 7

अनुसूची में 808.83 (*Collections of fiction) के अंतर्गत 808.831–808.838 (specific scopes and types) में सारणी 3 के –30 को हटाते हुए 301–308 अंकन को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त उदाहरण में adventure fiction के लिए अंकन –308 7 (30 छोड़ते हुए) को सारणी 3 से लिया गया है।

5.5.4 यदि शीर्षक में काल समय (Periods) भी दिया गया हो

यदि शीर्षक में विशिष्ट रूप के साथ समय का भी उल्लेख किया गया हो इसे 808–81–808.89 के अंतर्गत तारांकित नियमों का पालन करते हुए विशिष्ट तालिका में –01–05 Historical Periods के अंतर्गत निर्देशानुसार –090 हटाते हुए मानक उपविभाजन सारणी से काल अंकन को जोड़ा जाएगा।

उदाहरण : 5. Collection of 19th century drama
808.832 + 0 + [-090] 34 = 808.820 34

5.5.5 किसी विशिष्ट व्यक्तियों के लिए/या द्वारा संग्रह हो

जब साहित्य को किसी व्यक्तियों के लिए संग्रह किया गया हो या किसी व्यक्तियों द्वारा संग्रह किया गया हो तो इसे 808.89 (Collections for and by specific kinds of persons) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए। यहाँ पर सारणी 3-A के अंकन 8 (Literature for and by various specific, racial, ethnic groups) के अंतर्गत सारणी 5 के अंकन –03–99 को लाने के लिए निर्देश दिया गया है।

उदाहरण : 6. Collection of literature by Koreans

808.89 + -8 + -957 = 808.898 957

उपर्युक्त उदाहरण में निर्देशानुसार कोरियन्स के लिए –957 अंकन को सारणी –5 से लेकर जोड़ा गया है।

5.5.6 यदि शीर्षक में जीवनी, इतिहास, आलोचना एवं मूल्यांकन आदि उपस्थित हों

शीर्षक में उपर्युक्त विचारों का समावेश होने पर इसे 809 अंकन के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा।

उदाहरण : 7. Critical history of 20th Century literature

8[00] + 090 4 = 809.04

उपर्युक्त उदाहरण में नियमानुसार 20वीं शताब्दी के अंकन को दो शून्य हटाते हुए प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार : 8. Critical appraisal of short stories

809 + [808.8] 3 + [-30] 1 = 809.31

9. Biography of literators 809

5.6 जब साहित्य की भाषा शीर्षक में दी गयी हो (When language of literature is given in title)

शीर्षक में साहित्य की भाषा का उल्लेख हो तो इसे मुख्य वर्ग साहित्य के 810–890 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा।

उदाहरण : 10. Burmese literature

895.8

Hindi literature

891.43

5.6.1 यदि शीर्षक में साहित्य का विशिष्ट रूप न हो

यदि शीर्षक में साहित्य की भाषा का तो उल्लेख हो किंतु इसका विशिष्ट रूप न दिया गया हो तो सारणी 3 के पृष्ठ 389 पर वर्णित (0) से प्रारंभ होने वाले –01–09 अंकन में से उपयुक्त वर्ग का प्रयोग किया जा सकता है।

5.6.1.1 मानक उपविभाजन का प्रयोग

जब भाषा साहित्य में मानक उपविभाजन का प्रयोग करना हो तो उपयुक्त मानक उपविभाजन –01–07 का प्रयोग सारणी 1 से किया जा सकता है जबकि 08–09 का उल्लेख सारणी 3 में ही किया गया है।

उदाहरण : 11. Encyclopaedia of Arabic literature

892.7 + -03 = 892.703

अनुसूची में अरैबिक साहित्य के लिए 892.7 दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। नियमानुसार विश्वकोश के लिए –03 अंकन को मानक उपविभाजन से लेकर वर्गांक निर्मित किया गया है।

5.6.1.2 यदि पद 'संग्रह' उपस्थित हो

यदि साहित्य की भाषा के साथ संग्रह का उल्लेख किया गया हो तो शीर्षक की भाषा के साथ सारणी 3 के अंकन –08 का प्रयोग किया जाता है। अंकन –08 में आधार अंक –080 लेते हुए सारणी 3-A के अंकन –01–99 को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है।

उदाहरण : 12. Collection of Bengali literature

891.44 + -08 = 891.440 8

अनुसूची में 891.44 बंगाली साहित्य के लिए प्रयुक्त हुआ है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। नियमानुसार संग्रह के लिए –08 अंकन को सारणी 3 से लिया गया है।

उदाहरण : 13. Collection of Bengali literature displayaing romanticism

यह उदाहरण उपर्युक्त को विस्तार किया गया है। बंगाली साहित्य में संग्रह के लिए –08 जोड़ने के पश्चात् आधार अंक –080 लेते हुए सारणी 3-A का प्रयोग किया गया है। अतः–

891.44 + 080 + -145 = 891.440 801 45

इस उदाहरण में 145 अंकन सारणी 3-A से Romanticism के लिए प्रयुक्त हुआ है।

5.6.1.3 यदि शीर्षक में पद 'इतिहास, समीक्षा, मूल्यांकन, जीवनी' आदि उपस्थित हों

यदि भाषा के साथ समीक्षा, इतिहास, विवरण आदि का उल्लेख किया गया हो तो इसके लिए सारणी 3 के अंकन –09 (History, Description, Critical appraisal) का प्रयोग

किया जायेगा, जिसे पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है – पहला समय का अंकन जोड़ने के लिए तथा दूसरा सारणी 3-A के अंकनों को जोड़ने से संबंधित है। जीवनी को भी यहीं वर्गीकृत किया जायेगा।

उदाहरण : 14. History of Malayalam literature
894.812 + -09 = 894.812 09

Critical study of Hebrew literature
892.4 + -09 = 892.409

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में साहित्य की भाषा को तारांकित किया गया है तथा नियमानुसार –09 अंकन को सारणी 3 के पृष्ठ 389 से लिया गया है।

उदाहरण : 15. Criticism of Marathi literature displaying marriage life
891.46 + -09 + -354 = 891.460 935 4

अनुसूची में मराठी साहित्य के लिए 891.46 अंकन प्रयुक्त हुआ है इसे तारांकित भी किया गया है। आलोचना के लिए –09 को सारणी 3 के पृष्ठ 389 से लिया गया है, इसके नीचे –091–099 के अंतर्गत सारणी 3-A को प्रयोग करने के लिए निर्देश दिया गया है। सारणी 3-A का अंकन –354 Marriage life के लिए प्रयुक्त हुआ है।

उदाहरण : 16. Critical analysis of 20th Century French literature
84 + - 0900 + -91 = 840.900 91

उपर्युक्त उदाहरण में 84 अंकन फ्रेंच साहित्य के लिए प्रयुक्त हुआ है तथा सारणी –3 में –09 Critical को वर्णित करता है। इसके नीचे –090 01–090 09 निर्देशित करता है कि काल/समय को जोड़ने के लिए आधार अंक –0900 लेते हुए संबंधित साहित्य के लिए दी गयी समय तालिका (Period table) से उपयुक्त अंकन को जोडें। उपर्युक्त उदाहरण में –91 बीसवीं शताब्दी के लिए फ्रेंच भाषा के लिए वर्णित समय तालिका से लिया गया है।

5.6.2 यदि साहित्य की भाषा के साथ उसके विशिष्ट रूप का भी उल्लेख हो

यदि शीर्षक में साहित्य की भाषा के साथ उसका विशिष्ट रूप भी दिया गया हो तो सारणी 3 के पृष्ठ 391–398 पर वर्णित उपविभाजन –1–8 एवं उनके उपखण्डों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जायेगा।

उदाहरण : 17. Sanskrit Drama
891.2 + -2 (Table 3) = 891.22

18. Hindi Poetry
891.43 + -1 (T.3) = 891.431

19. English Essays
82 + -4 (T.3) = 824

उपर्युक्त उदाहरणों में क्रमशः Drama (-2), Poetry (-1) तथा Essays (4) को सारणी –3 से लेकर जोड़ा गया है।

5.6.2.1 मानक उपविभाजन का प्रयोग

जब शीर्षक में साहित्य की भाषा एवं उसके विशिष्ट रूप के साथ मानक उपविभाजन की (–01–09) आवश्यकता हो तो संबंधित मानक उपविभाजन को सारणी 1 से लाकर –001–007 तक के अंकन का प्रयोग किया जायेगा। –008–009 का उल्लेख सारणी 3 के पृष्ठ 391 पर ही किया गया है। ये सारे मानक उपविभाजन पद्य (Poetry) के साथ संयुक्त रूप से दिये गये हैं यदि दूसरा विशिष्ट रूप हो तो पद्य के अंकन में (-1001) 1 को हटाकर उस रूप का अंकन जोड़ देते हैं जैसे –2001, –3001, –4001 आदि।

उदाहरण : 20. Encyclopaedia of Hindi Poetry
891.43 + -1003 = 891.431 003

21. Encyclopaedia of Hindi Drama
891.43 + 200 + [-100] 3 = 891.432 003

22. Research on Sanskrit Fiction
891.2 + -300 + [-100] 72 = 891.230 072

23. Collection of German poetry
83 + -1008 = 831.008

24. History of Telugu Fiction
894.827 + -300 + [-100] 9 = 894.827 300 9

25. Biography of Finnish Poets
894.541 + -1009 = 894.541 100 9

5.6.2.2 पद 'संग्रह' के साथ सारणी 3-A का प्रयोग

जब शीर्षक में साहित्य की भाषा, उसका विशिष्ट रूप एवं संग्रह के साथ सारणी 3-A का प्रयोग करना हो तो आधार अंक संग्रह के साथ एक शून्य को जोड़कर (-08+0) किया जायेगा।

उदाहरण : 26. Collection of French drama displaying Ramanticism
84 + -200 + [-100] 80 + 145 = 842.008 014 5

उपर्युक्त उदाहरण में फ्रेंच साहित्य के लिए 84 आधार अंक अनुसूची से लिया गया है। –2 अंकन नाटक के लिए प्रयुक्त हुआ है तत्पश्चात् निर्देशानुसार दो शून्य को जोड़ा गया है एवं (-100) हटाते हुए 8 संग्रह के लिए प्रयुक्त हुआ है। सारणी 3-A के अंकन

जोड़ने के लिए –80 आधार अंक लिया गया है तथा 145 अंकन रोमांश के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

27. Collection of Japanese fiction displaying Fantasy
    895.6 + 300 + [-100] 80 + 15 = 895.630 080 15
28. Collection of french poetry about life cycle
    84 + -100 80 + 354 = 841.008 035 4
29. Collection of Tamil Drama displaying ghosts
    894.811 + -200 + [-100] 80 + 375 = 894.811 200 803 75

5.6.2.3 विशिष्ट रूप के साथ इतिहास, मूल्यांकन आदि के साथ ही सारणी 3-A का प्रयोग

जब शीर्षक में रूप के साथ पद मूल्यांकन, जीवनी, विवरण, आलोचना एवं समीक्षा आदि उपस्थित हों तो सारणी 3 के उपविभाजन –100 9 का प्रयोग आवश्यकतानुसार विशिष्ट रूप को परिवर्तित करते हुए किया जायेगा। जैसे Biography of Poets (-100 9), Biography of dramatist (-200 9) इत्यादि। सारणी –3 में –100 9 के अंतर्गत ही 3-A के अंकनों को प्रयोग करने का प्रावधान है।

उदाहरण : 30. History of Tibetan Poetry
    895.4 + -100 9 = 895.410 09

अनुसूची में तिब्बतन भाषा के साहित्य के लिए 895.4 अंकन प्रयुक्त हुआ है। इसके साथ सारणी 3 से Poetry के–1 एवं History के लिए –009 अर्थात् संयुक्त नम्बर –100 9 का प्रयोग किया गया है।

उदाहरण : 31. History of human qualities in Punjabi Drama
    891.42 + -200 [-100] 9 + 353 = 891.422 009 353

उपर्युक्त उदाहरण में Human qualities के लिए अंकन 353 को सारणी 3-A से लेकर जोड़ा गया है।

32. Evaluation of HIndi poetry displaying horror
    891.43 + -100 9 + 16 = 891.431 009 16
33. Rajasthani poetry displaying special days : critical study
    891.479 + -100 9 + 33 = 891.479 100 933
34. Bengali fiction displaying realism
    891.44 + -300 [-100] 9 + 12 = 891.443 009 12

5.6.2.4 विशिष्ट रूप के साथ काल का प्रयोग

यदि साहित्य को किसी अवधि के दृष्टिकोण पर अध्ययन किया गया हो अर्थात् जब शीर्षक में रूप के साथ काल (Periods) भी दिया गया हो तो इसे सारणी 3 में संबंधित रूप के अंतर्गत वर्णित केंद्रित शीर्षक –11–19 Poetry of specific periods, -21-29 Drama of specific periods, -31-39 Fiction of specific periods आदि के अंतर्गत दिये गये निर्देशानुसार वर्गांक निर्मित किया जायेगा। इसके लिए निम्नलिखित क्रम का प्रयोग किया जाता है–

साहित्य की भाषा + विशिष्ट रूप + काल + –10 को हटाते हुए –100 1 –100 9

नोट– अनुसूची में सूचीबद्ध साहित्य की भाषा के अंतर्गत कालतालिका को उल्लिखित किया गया है। यदि किसी भाषा के अंतर्गत काल नहीं दिया गया, तो जिस भाषा के अंतर्गत वर्णित काल तालिका को प्रयुक्त करना है, का निर्देश वहाँ पर दिया गया है जैसे बंगाली राजस्थानी आदि साहित्य के अंतर्गत 891.4 में वर्णित काल तालिका को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है।

उदाहरण : 35. Collection of Punjabi drama of 19^{th} Century
891.42 + -2 + 4 + [-10] 08 = 891.422 408

उपर्युक्त उदाहरण में पंजाबी के लिए 891.42 प्रयोग हुआ है, नाटक के लिए –2 तथा हिंदी साहित्य के नीचे वर्णित तालिका से 4 उन्नीसवीं शताब्दी के लिए प्रयुक्त हुआ है। नियमानुसार [-10] को हटाते हुए 08 संग्रह के लिए प्रयोग हुआ है। यदि इसके साथ सारणी 3-A का प्रयोग करना हो तो 08 में एक शून्य (0) जोड़ते हुए सारणी 3-A का प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण : 36. Collection of later 20^{th} century Sinhalese fiction about animals

891.48 + -3 + 7 + [-10] 080 + 36 (T.3-A)= 891.483 708 036

उपर्युक्त उदाहरण में सिंहलीज भाषा के लिए 891.48 प्रयुक्त हुआ है। अनुसूची में यह अंकन अन्य भारतीय भाषाओं के लिए आवंटित किया गया है। उपन्यास के लिए अंकन –3 को सारणी 3 से लिया गया है। सिंहलीज भाषा हेतु 891.4 के नीचे दी गई काल तालिका को उपयोग करने का निर्देश दिया गया है। इस तालिका से अंकन 7 20वीं शताब्दी के लिए प्रयुक्त हुआ है। सारणी 3 में दिये गये –31–39 Fiction of specific periods निर्देशानुसार [-10] हटाते हुए 08 संग्रह के लिए जोड़ा गया है तत्पश्चात्

निर्देशानुसार 08 में एक शून्य (0) जोड़ते हुए सारणी 3-A से Animals के लिए अंकन 36 जोड़ा गया है।

उदाहरण : 37. Critical analysis of 20th Century Swedish
839.7 + -2 + 91 [-10] 09 = 839.729 109

उपर्युक्त उदाहण में स्वीडिश साहित्य के लिए 839.7 अंकन प्रयुक्त हुआ है। उपन्यास हेतु सारणी 3 से –3 लिया गया है स्वीडिश साहित्य के अंतर्गत वर्णित काल तालिका से 7 को बीसवीं शताब्दी के लिए जोड़ा गया है। सारणी 3 में दिये गये -31-39 Fiction of specific periods निर्देशानुसार –10 को हटाते हुए 09 आलोचनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयुक्त हुआ है। यदि शीर्षक की माँग हो तो 09 के बाद सीधे सारणी 3-A का प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि –100 9 के अंतर्गत निर्देश दिया गया है।

उदाहरण : 38. Critical appraisal of fairies tales in later 20th century in Hindi fiction
891.43 + -3 + 7 + [-10] 09 + 375 = 891.433 709 375

उपर्युक्त उदाहण में 375 को सारणी 3-A से Fairies tales के लिए प्रयुक्त किया गया है।

5.6.2.5 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार

सारणी 3 में वर्णित विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकारों 102, 106, 202, 203, 301, 501 एवं 506 आदि का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जायेगा। इन सबको तारांकित भी किया गया है। इनको तारांकित करने का तात्पर्य है कि -1-8 specific forms के अंतर्गत ऐसे तारांकित अंकनों के साथ मानक उपविभाजन –01–07, –08, –09 पद के अंकन को आवश्यकतानुसार जोड़ने का प्रावधान है। अंकन –08 एवं –09 को पुनः सारणी 3-A द्वारा उपविभाजित कर और अधिक सह विस्तृत बनाया गया है। कुछ अंकनों को तारांकित नहीं किया गया जैसे –802–808 जिन अंकनों को तारांकित नहीं किया गया उनके साथ केंद्रित शीर्षक –1–8 के अंतर्गत दिये गये निर्देशों का पालन नहीं किया जायेगा। इन उदाहरणों में उपर्युक्त नियमों का प्रयोग हुआ है–

उदाहरण : 39. Collection of realism Danish drama for radio and television
839.81 + -202 + -08 + 12 = 839.812 020 812

40. Collection of English short stories
82 + -301 + -08 = 823.101 8

41. Evaluation of Hindi love stories by Russians

891.43 + -308 5 + -09 + 8 + -917 1= 891.433 085 098 917

1

42. History of Tragedy drama of French literature
84 + -205 12 + -09 = 842 051 209

5.6.2.6 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकारों के साथ काल का प्रयोग

यदि शीर्षक में विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार के साथ काल का प्रयोग हुआ हो तो भाषा + विशिष्ट रूप + काल अंकन + विशिष्ट रूप के प्रकार को लिखते हैं। इसके बाद आवश्यकतानुसार केंद्रित शीर्षक 1–8 के अंतर्गत दिये गये निर्देश का प्रयोग किया

जायेगा–

उदाहरण : 43. Collection of 20th century realism Hindi Drama for radio and Television
891.43 + -2 + 7 + -02 + -08 + 12 = 891.432 702 08

44. Evaluation of modern Greek adventure of 19th century about social themes
889 + -3 + 2 + -087 + -09 + 355 = 889.320 870 935 5

5.7 विलियम शेक्सपियर के कार्यों की तालिका (List of works of William Shakespeare)

अनुसूची में शेक्सपीयर के कार्यों की एक पृथक तालिका पृष्ठ 1405–1406 में दी गयी है जिसे अंकन 822.33 के अंतर्गत वर्णित किया गया है। इसमें वर्णानुक्रम (Alphabetical order) का भी प्रयोग किया गया है। शेक्सपीयर के व्यक्तिगत कार्यों को O-Z तक सूचीबद्ध किया गया है, जिसमें O-R तक हास्य (Comedies), S-V दु:खद (Tragedies) W-X ऐतिहासिक (Histories), Y कविताएँ (Poems) तथा Z संशय (doubtful) कृतियों का उल्लेख किया गया है। कृतियों को अंग्रेजी वर्णमाला के साथ दो संख्याओं को डैश (–) से जोड़ा गया है। इसमें पहली संख्या मूल पाठ के लिए तथा दूसरी संख्या उसकी आलोचना, समीक्षा से संबंधित है। यदि मूलकृति का वर्गांक बनाना हो तो अंग्रेजी वर्णमाला के साथ पहली संख्या का प्रयोग होगा लेकिन जब किसी मूलकृति की समीक्षा आदि का वर्णन हो तो अंग्रेजी वर्णमाला के साथ सिर्फ दूसरी संख्या का प्रयोग किया जायेगा। याद रहे दोनों संख्याओं का एक साथ प्रयोग किये जाने का प्रावधान नहीं है। उपर्युक्त नियमों पर आधारित उदाहरण निम्नलिखित हैं–

उदाहरण : 45. Biography of Shakespeare
822.33B

46. Hamlet : A critical study
822.33 S8
47. As you like it
822.33 O3
48. Criticism on As you like it
822.33 O4
49. Complete works on tragedies of Shakespeare
822.33 S-V
50. Individual works of Shakespeare
822.33 O-Z

5.8 कृत्रिम भाषाओं का साहित्य

अनुसूची के पृष्ठ 1434 पर वर्गांक '899 Other literature' के अंतर्गत कृत्रिम भाषाओं के साहित्य को सारणी 6 की सहायता से वर्गीकृत करने का प्रावधान किया गया है

- Esperanto literature899.992
- Interlingua literature 899.993

5.9 सारणी 3-A के अंतर्गत वरीयताक्रम सारणी

सारणी 3-A में केंद्रित शीर्षक '8-9 literature for and by specific kinds of persons' के अंतर्गत वरीयताक्रम सारणी दी गयी है। अतः आवश्यकता पड़ने पर इस सारणी का प्रयोग करें।

यहाँ पर सारणी 3-A के पृष्ठ 402 में अग्रताक्रम तालिका दी जा रही है। साथ में उदाहरण भी दिए गए हैं।

अग्रताक्रम (Precedence)	विशेषता (Features)	अंकन (Notation)	उदाहरण (Examples)
1.	Age	9282-9285	Children, Adolescent, Adults
2.	Sex	9286-9287	Men, Women
3.	Occupational and non-occupational characteristics	9204-9279, 929	Doctor, Engineers, Painter, Teachers etc.
4.	Racial, Ethnic, National groups	8	Indians, Japanese, Chinese etc.

5.	Specific continents, Countries, Localities	93-99	Residents of India, Italy, Uttar Pradesh, Rajasthan
6.	Residents of Specific regions	91	Rural Authors, Urban audhors

उदाहरण : 51. Literature by Punjab women rural doctors residing in European countries

उपर्युक्त उदाहरण में सारणी 3-A के केंद्रित शीर्षक 8–9 के अंतर्गत दी गई अग्रताक्रम तालिका के आधार पर क्रम निर्धारित करना चाहिए तथा नियमानुसार वर्गांक निर्मित करना चाहिए यदि अग्रताक्रम तालिका के आधार पर प्राप्त अंकों को व्यवस्थित कर दिया जाये तो यह निर्धारित करना आसान होता है कि किस अंकन का उपयोग किया जाना चाहिए तथा किस अंकन को छोड़ देना चाहिए। इसे इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए –

अग्रता क्रमांक	अग्रता श्रेणी	उपस्थित पद तथा श्रेणियों से संबंध (उदाहरण में)	अंकन
1.	Age	—	—
2.	Sex	Female	9287
3.	Occupational and Non-occupational features	Doctor	9261
4.	Racial, Ethnic National groups	Punjabis	89142
5.	Specific continents, Countries, Localities	European countries	94
6.	Residents of specific regions	Rural	91734

उपर्युक्त उदाहरण के विश्लेषण तथा इसकी अग्रता श्रेणी में दिये गये अग्रताक्रम के आधार पर संयुक्त पद Punjabis, Female rural doctors residing in European countries के

लिए Female/Women के अंकन 9287 का ही केवल प्रयोग होगा क्योंकि इसे अन्य एकलों से वरीयता प्राप्त है। इसी प्रकार यदि Sex न होता तो Doctor को अग्रता प्राप्त है।

5.10 वर्गीकृत शीर्षक (Classified titles)

1. Quotation of Shakespeare
   822.33H
2. Literary Criticism
   809
3. French short story – A bibliography
   84 + -301 + -016 = 843.010 16
4. Collection of literature on comedy
   808.80 + -17 = 808.801 7
5. English epic poetry
   82 + -103 = 821.03
6. Evaluation of Hamlet
   822.33 S8
7. History of Greek literature displaying social theme
   889 + -09 + 355 = 889.093 55
8. Evaluation of Hindi love stories by Bengalis
   891.43 + -308 5 + -09 + 8 + 914 4 = 891.433 085 098 914 4
9. Criticism of Russian poetry of 19th century
   891.7 + -1 + 3 + [-10] 09 = 891.713 09
10. History of Kannad drama
    894.814+ -2 + [-1] 009 = 894.814 200 9
11. Collection of Hindi drama dealing with reasons
    891.43 + -2 + [-1] 008 0 + 33 = 891.432 008 033
12. Critical appraisal of victorian fiction
    82 + -3 + 8 + -09 = 823.809
13. Collection of drama for motion pictures
    808.81 [-20] 3 = 808.823
14. Hindu religion in British fiction
    82 + 300 + [-100] 9 + 4 + 294.5 = 823.009 429 45
15. Quotation in American literatures of post revolutionary period
    81 + -8 + 2 + 02 = 818.202
16. Collection of later 19th century Hindi fictions about animals
    891.43 + -3 + 4 + [-10] 80 + 36 = 891.433 408 036
17. Collection of English romantic poetry
    82 + -10080 + 145 = 821.008 014 5

18. Description of Portuguese literature by Dutch children
    869 + -09 + 9282 = 869.099 282
19. Collection of French drama of classical period displaying naturalism
    84 + -2 + 4 + [-10] 080 + 12 = 842.408 012
20. Collection of Swedish poetry of reformation period
    839.7 + -1 + 2 + [-10] 08 = 839.712 08

5.11 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. French short stories – A bibliography
2. Bibliography of Rabindranath Tagore (Bengali Poet, b.1869)
3. History of Greek literature displaying social themes
4. Collection of HIndi poetry for children
5. History of lyric poetry
6. Collection of 20th century literature
7. Post Eligabethan English drama
8. Biography of English debators
9. Critical study of Tamil literature
10. Collection of German poetry about everyday life

5.12 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप को ज्ञात हो गया होगा कि साहित्य में कितनी विधाएँ हो सकती हैं या यह कह सकते हैं कि साहित्य रचना में कितने पृथक–पृथक तत्व उपस्थित हो सकते हैं। साहित्य के रूप तो विभिन्न प्रकार के होते ही हैं साथ ही साहित्य किसी विशेष दृष्टिकोण से भी लिखा जाता है। ऐसा उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है। किसी विशेष दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए सारणी 3 की विस्तारित सारणी 3-A की भूमिका महत्वपूर्ण है। साहित्य मुख्य वर्ग में सारणी 3-A के माध्यम से सारणी 5 एवं 7 के अंकनों को प्रयोग करने के प्रावधान से शीर्षकों को उचित वर्गांक दिया जाना संभव हुआ है।

5.13 शब्दावली (Glossary)

विशिष्ट रूप – साहित्य की रचना का स्वरूप जैसे–कविता, नाटक आदि।

संग्रह – विशिष्ट रूप के साहित्य को संकलित कर प्रकाशित स्वरूप।

5.14 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

1. 84 [0] + -301 + -016 = 843 010 16
2. 891.44 + -1 + 4 + [-10] 09 = 891.441 409
3. 889 + -09 + 355 = 889.093 55
4. 891.43 + -100 80 + 9282 = 891.431 008 092 82
5. 809 + [808.8] 1 + [-10] 4 = 809.14
6. 808.800 [-090] 4 = 808.800 4
7. 82 [0] + -2 + 4 = 822.4
8. 82 [0] + -503 + -09 = 825.030 9
9. 894.811 + -09 = 894.811 09
10. 83 [0] + -100 80 + 35 = 831.008 035 5

5.15 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996) ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998), Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987), प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–6.1 : सारणी 4 विशिष्ट भाषाओं के उपविभाजन

Unit-6.1 : Subdivisions of Individual Langauges

इकाई की रूपरेखा

6.11 प्रस्तावना
6.12 उद्देश्य
6.13 भाषा उपविभाजनों को प्रयोग करने के नियम
6.14 मुख्य वर्ग भाषा (400) के साथ सारणी 1 का प्रयोग
6.15 भाषा उपविभाजन सारणी 4 का भाषाएँ (सारणी 6) द्वारा विस्तार
6.16 विशिष्ट शब्दकोश (–31)
6.17 एक भाषिक शब्दकोश
6.18 द्विभाषीय/बहुभाषीय शब्दकोश
6.18.1 शब्दकोश की एक भाषा कम समझी जाने वाली हो
6.18.2 शब्दकोश की दोनों भाषाओं का महत्व समान हो
6.19 विषय शब्दकोश/विश्वकोश
6.20 वर्गीकृत शीर्षक
6.21 अभ्यास हेतु शीर्षक
6.22 सारांश
6.23 शब्दावली
6.24 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
6.25 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

6.11 प्रस्तावना (Introduction)

इस सारणी के अंकनों को प्रथम खण्ड के पृष्ठ 404–407 तक उल्लिखित किया गया है। इसका प्रयोग मुख्य वर्ग भाषा 400 में सूचीबद्ध सिर्फ उन्हीं अंकनों के साथ किया जाएगा जिन्हें तारांकित (*) किया गया हो। इस सारणी के अंकन भी पूर्ण वर्गांक नहीं होते तथा अकेले प्रयुक्त नहीं हो सकते। इन अंकनों से पूर्व डैश लगा रहता है जो भाषा अंकन के साथ जोड़ने पर समाप्त हो जाता है। इन अंकनों के प्रयोग के लिए 420–490 विशिष्ट भाषाओं के नीचे निर्देश दिये गये हैं। समस्त भाषाओं को इस प्रकार सूचीबद्ध किया गया है–

410 – Linguistics

420 – English Language

430 – 480 Major European languages

490 – Other languages, Non European

इस इकाई में सारणी 4 के प्रयोग संबंधी नियमों को सम्मिलित करते हुए उदाहरण की सहायता से समझाया गया है।

6.12 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई की रचना का उद्देश्य है–

1. उपविभाजनों को अवगत कराना।
2. मुख्य वर्ग 400 भाषा के साथ इनको प्रयोग करने के नियमों को उदाहरण सहित समझाना।
3. भाषा एवं विषय शब्दकोशों एवं विश्वकोशों को वर्गीकृत करने के लिए विभिन्न नियमों को उदाहरण सहित व्याख्या करना।

6.13 भाषा उपविभाजनों को प्रयोग करने के नियम (Rules to use of langauge subdivisions)

भाषा उपविभाजनों को प्रयोग करने के लिए मुख्य नियम इस प्रकार हैं–

1. इनका प्रयोग सिर्फ मुख्य वर्ग भाषा (400) में 420–490 के अंतर्गत तारांकित अंकनों में ही किया जायेगा।
2. अनुसूची में जो भाषा शून्य पर समाप्त होती है उनके लिए आधार अंक शून्य को हटाते हुए किये जाने का निर्देश है। जैसे– 42[0] + Table 4

3. यदि भाषा मुख्य वर्ग के साथ सारणी 4 के किसी अंकन का प्रयोग हो चुका हो फिर भी शब्दकोश का अंकन जोड़ा जाना हो तो शब्दकोश के लिए मानक उपविभाजन के अंकन –03 का प्रयोग किया जायेगा।
4. द्विभाषी शब्दकोश में प्रथम भाषा का अंकन मुख्य वर्ग 400 से तथा दूसरी भाषा का अंकन सारणी 6 से लाया जायेगा।

इस सारणी में विभिन्न भाषाओं के विविध पहलुओं जैसे स्वरलिपि (Notation), पुरालिपिशास्त्र (Poleography), ध्वनिशास्त्र (Phonology), उच्चारण (Pronounciation), शब्दकोश (Dictionary) तथा व्याकरण (Grammar) आदि का उल्लेख किया गया है।

उदाहरण : 1. Spelling and Pronounciation in Portuguese words
469 + -81 = 469.81

अनुसूची में तारांकित पद पुर्तगीज भाषा का अंकन 469 दिया गया है। सारणी 4 भाषा उपविभाजन में –81 Words के लिए प्रयुक्त हुआ है। उपर्युक्त शीर्षक इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

2. Phonology in French language
44[0] + -15 = 411.5

अनुसूची में तारांकित पद फ्रेंच भाषा के लिए 440 प्रयुक्त हुआ है जबकि Phonology के लिए अंकन –15 सारणी 4 से लिया गया है।

3. Pitch and Pauses in German language
43 + -16 = 431.6

अनुसूची में जर्मन भाषा के लिए 430 अंकन दिया गया है लेकिन इसके नीचे आधार अंक 43 लेने का निर्देश है। इसे तारांकित भी किया गया है जबकि –16 Pitch and Pauses को सारणी 4 से लिया गया है।

6.14 मुख्य वर्ग भाषा (400) के साथ सारणी 1 का प्रयोग (Use of Table 1 with Main Class Language (440))

सारणी 4 में मानक उपविभाजन –01–02, –03, –05, –09 को प्रथम सारणी से लाने के लिए निर्देशित किया गया है। अतः भाषा मुख्य वर्ग में मानक उपविभाजन को एक शून्य के साथ प्रयोग किया जायेगा।

4. Directory of Bengali language
491.44 + -025 = 491.440 25

अनुसूची में बंगाली भाषा के लिए तारांकित अंकन 491.44 आवंटित किया गया है। नियमानुसार सारणी 4 में जाने पर सारणी 1 पर जाने का निर्देश मिलता है अतः सारणी 1 के मानक उपविभाजन –025 का प्रयोग Directory के लिए किया गया है।

5. Periodicals in Hindi language
491.43 + -005 = 491.430 05

अनुसूची में हिंदी भाषा के लिए 491.43 अंकन दिया गया है। अंकन –005 सारणी 1 से Periodicals के लिए प्रयुक्त हुआ है।

6.15 भाषा उपविभाजन सारणी 4 का भाषाएँ सारणी 6 द्वारा विस्तार (Extension of Table 4 language subdivisions by Table 6)

कभी–कभी एक भाषा के मौलिक स्वरूप में अन्य भाषा के शब्द इस प्रकार समाहित हो जाते हैं कि दोनों भाषाओं के शब्दों में पहचानना मुश्किल हो जाता है क्योंकि वह उसी भाषा के शब्द प्रतीत होने लगते हैं। यदि इस प्रकार के किसी ग्रंथ की रचना की गयी हो तो शीर्षक को अंकन -24 Foreign elements सारणी 6 से लाकर जोड़ा जाएगा।

उदाहरण : 6. Use of German words in Russian language
491.7 + -24 + -31 = 491-724 31

अनुसूची में रशियन भाषा के लिए 491.7 अंकन प्रयुक्त हुआ है। सारणी 4 से Foreign elements के लिए –24 अंकन को जोड़ा गया है इसके नीचे दिये गये निर्देशानुसार जर्मन भाषा का अंकन –31 सारणी 6 से लाकर प्रयुक्त किया गया है। कुछ इसी प्रकार के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं –

7. Latin words adopted in English language
42 + -24 + -71 = 422.471

8. Test of English for English speaking people
42 + -864 + 914 31 = 428.649 143 1

9. Sanskrit words in Marathi language
491.48 + -24 + -912 = 491.482 491 2

6.16 विशिष्ट शब्दकोश (–31) (Specialized Dictionary)

किसी विशिष्ट प्रयोजन से निर्मित शब्दकोश को विशिष्ट शब्दकोश की श्रेणी में रखा गया है। सारणी 4 में इस अंकन का प्रयोग पर्यायवाची (Synonyms), समनाम (Homonyms), संकेताक्षरों (Abbreviations), मुहावरों (Idioms) तथा विलोम शब्दों (Antonyms) आदि के लिए किया जाता है।

उदाहरण :

10. Dictionary of Russian abbreviations
491.7+ -31 = 491.731

11. Dictionary of Czech antonyms
491.86 + -31 = 491.863 1

12. Synonyms in French dictionary
44 + -31 = 443.1

13. Homonyms in Japanese language
495.6 + -31 = 495.631

14. Derivation of Sanskrit words
491.2 + -2 = 491.22

अनुसूची (खण्ड 2) के पृष्ठ 610 पर संस्कृत भाषा के लिए 491.2 अंकन दिया गया तथा तारांकित भी किया गया है। तारांकन में 420–490 के अंतर्गत सारणी 4 के अंकन –01–86 तक आवश्यकतानुसार अंकन जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त उदाहरण में –2 Etymology का प्रयोग Derivation में रशियन भाषा के लिए सारणी 2 से लिया गया है।

नीचे उदाहरण 15–17 इसी नियम पर आधारित हैं –

15. Tamil reader
494.811 + -86 (T.4) = 494.811 86

16. How to translate in German from other language
43 + -802 (T.4) = 438.02

17. Alphabets in Japanese language
495.6 + -11 (T.4) = 495.611

6.17 एक भाषिक शब्दकोश (One Language Dictionary)

जिन शब्दकोशों में शब्द एवं उन शब्दों के अर्थ उसी भाषा में दिये गये हैं उन्हें एक भाषिक

शब्द कहते हैं। इस प्रकार के शब्दकोशों के लिए सारणी 4 के अंकन -3 Dictionary of the standard form of the language का प्रयोग किया जायेगा।

18. Rajpal Hindi dictionary
491.43 + -3 = 491.433

अनुसूची में हिंदी भाषा के लिए 491.43 अंकन दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। Dictionary के लिए सारणी –4 से –3 अंकन लिया गया है।

19. Oxford English to English dictionary
42 + -3 = 423

अनुसूची में अंग्रेजी भाषा के लिए 420 अंकन दिया गया है लेकिन इसके लिए आधार अंक 42 लेने का निर्देश है जबकि –3 अंकन शब्दकोश के लिए सारणी –4 से लिया गया है। इसी नियमों पर आधारित कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

20. Korean language dictionary
495.7 + -3 = 495.73

21. Alphabetical dictionary in Spanish language

465 + -3 = 465.3

22. Pocket dictionary in Rajasthani language
491.479 + -3 = 491.479 3

6.18 द्विभाषीय / बहुभाषीय शब्दकोश (Multilingual Dictionary)

द्विभाषीय शब्दकोश से तात्पर्य एक अधिक अर्थात दो भाषाओं के शब्दकोश से है जबकि बहुभाषीय शब्दकोश से तात्पर्य दो अधिक भाषाओं वाले शब्दकोशों से है। भारत ऐसे शब्दकोश भी प्रकाशित हुए हैं जिनमें 18 भाषाएँ एक साथ दी गयी हैं। इसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित किया गया है। एक से अधिक भाषाओं वाले शब्दकोश से तात्पर्य शब्द एवं अर्थ की भाषा में भिन्नता होना। इस प्रकार के शब्दकोशों को वर्गीकृत करने के लिए प्रथम भाषा को मुख्य वर्ग भाषा (400), शब्दकोश को सारणी 4 से –3 अंकन का प्रयोग किया जायेगा। सारणी 4 के अंकन –3 के अंतर्गत –32–39 Bilingual के अंतर्गत Add "Language" notation 2-9 from Table 6 to -3 निर्देश दिया गया है। इस निर्देशानुसार शब्दकोश की दूसरी भाषा को सारणी 6 से लेकर जोड़ा जाएगा। यहाँ एक बात ध्यान रहे कि शीर्षक में दी गई प्रथम दो भाषाओं के बाद दी जाने वाली भाषाओं को जोड़ने संबंधी नियमों का उल्लेख नहीं किया गया है।

द्विभाषीय शब्दकोशों को निम्नलिखित नियमानुसार वर्गीकृत किया जाएगा –

6.18.1 शब्दकोश की एक भाषा कम समझी जाने वाली हो

जब शब्दकोश में दो भाषाएँ दी गयी हों तथा उनमें एक भाषा कम प्रचलित हो या कम समझी जाने वाली हो तो कम समझी जाने वाली भाषा का अंकन पहले आएगा क्योंकि शब्दकोश का प्रयोग वे ही पाठक करेंगे जो कि इस भाषा को जानना या सीखना चाहते हैं। अंग्रेजी भाषा को समझने वाले विश्व में सर्वाधिक लोग हैं लेकिन जब हिंदी के साथ इसका वर्गांक निर्मित करेंगे तो अंग्रेजी का अंकन पहले आएगा अर्थात भारत की दृष्टिकोण से हिंदी हमारी मात्र भाषा है इसलिए इसे सर्वाधिक जानने वाले हैं तथा इसे अधिक समझी जाने वाली भाषा के कारण इसे बाद में जोड़ते हैं। इन कारणों से द्विभाषीय शब्दकोशों के वर्गांक अलग–अलग देशों में अलग–अलग निर्मित हो सकते हैं।

उदाहरण : 23. Hindi-English dictionary
42 [0] + -3 (T.4) + -914 31 (T.6) = 423.914 31

24. English-Greek dictionary
48 [0] + -3 (T.4) + -21 = 483.21

25. Tamil-Hindi dictionary
494.811 + -3(T.4) + -914 31 (T.6) = 494 .811 391 431

26. Russian-Hindi dictionary
491.7 + -3 (T.4) + -914 31 (T.6) = 491.739 143 1

नोट– यदि उदाहरण 26 को रूस में वर्गीकृत किया जाये तो हिंदी का अंकन पहले आएगा तथा यह वर्गांक बनेगा 491.43 + -3 (T.4) + -917 1 (T.6) = 491. 433 917 1

6.18.2 शब्दकोश की दोनों भाषाओं का महत्व समान हो

जब शब्दकोश की दोनों भाषाएँ समान महत्व की हों अर्थात् कौन–सी भाषा कम प्रचलित है तथा कौन सी अधिक प्रचलित है, इसका निर्धारण न हो सके तो इस प्रकार के शब्दकोश को वर्गीकृत करने के लिए उस भाषा के अंकन को प्राथमिकता प्रदान की जायेगी जिस भाषा के अंकन को अनुसूची में बाद में वर्णित किया गया है तथा जिस भाषा अंकन का वर्णन पहले है उसे शब्दकोश का अंकन सारणी 4 से लेते हुए दूसरी भाषा के अंकन को सारणी 6 से लाने का निर्देश दिया गया है।

उदाहरण : 27. German-French dictionary
44 + -3 + -31 = 443.31

फ्रेंच भाषा का अंकन अनुसूची में 440 तथा जर्मन के लिए 430 दिया गया है। नियमानुसार फ्रेंच के लिए आधार अंक 44 [0] लेते हुए शब्दकोश के लिए सारणी –4 से –3 लिया गया

है तथा जर्मन भाषा के लिए –31 अंकन सारणी 6 से लेकर जोड़ा गया है। इन्हीं नियमों पर आधारित कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

28. Punjabi-Marathi dictionary
491.46 + -3 (T.4) + -914 2 (T.6) = 491.463 914 2

29. Concise Arabic-English dictionary
492.7 + -3 (T.4) + -21 (T.6) = 492.732 1

30. Malyalam-Kannad dictionary
491.814 + -3 (T.4) + -948 14 (T.6) = 491.814 394 814

31. Japanese-Burmere dictionary
495.8 + -3 (T.4) + -956 (T.6) = 495.839 56

32. Hebrew-Ethiopic dictionary
492.8 + -3 (T.4) + -924 = 492.839 24

नोट– यदि दो से अधिक भाषाओं के शब्दकोश को वर्गीकृत करना हो तो शीर्षक में प्रथम दो भाषाओं के बाद वाली भाषा को छोड़ दिया जाता है क्योंकि दो से अधिक भाषा के अंकन को जोड़ने का प्रावधान नहीं है।

33. Hindi-English-French dictionary
42 + [0] + -3 (T.4) + -914 31 (T.6) = 423.914 31

(फ्रेंच भाषा को छोड़ दिया गया है क्योंकि दो से अधिक भाषाओं को जोड़ने का प्रावधान नहीं है।)

34. Greek-German-French dictionary

उपर्युक्त शीर्षक में फ्रेंच भाषा को छोड़ दिया गया है तथा अनुसूची में ग्रीक भाषा के लिए 480 तथा जर्मन भाषा के लिए 430 प्रयुक्त किया गया है। दोनों समान महत्व की भाषाएँ हैं इसलिए अनुसूची में बाद में वर्णित भाषा ग्रीक के लिए आधार अंक 48 लिया गया है तथा दूसरी भाषा के अंकन –31 को सारणी 6 से लिया गया है। अतः वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा– 48 + -3 (T.4) + -31 (T.6) = 483.31

6.19 विषय शब्दकोश/विश्वकोश (Subject Dictionary (Glossary) / Encyclopaedia)

विषय शब्दकोश/विश्वकोश से संबंधित विषय की परिभाषा, शब्दों के अर्थ, प्रयोग,

उत्पत्ति आदि के बारे में जानकारी मिलती है इसलिए इन्हें विषय वर्गांक के साथ वर्गीकृत किया जाता है इसके लिए सारणी –1 से –03 अंकन शब्दकोश हेतु प्रयोग किया जाता है न कि सारणी –4 से –3 अंकन। यदि शब्दकोश के साथ भाषा के अंकन को जोड़ना हो तो –03 के नीचे दिये गये निर्देश –032–039 by language के द्वारा भाषा अंकन को सारणी 6 से लेकर प्रयोग करते हैं। यदि विषय शब्दकोश में दो भाषाओं का उल्लेख किया गया हो तो शीर्षक में दो भाषाओं का उल्लेख किया गया हो तो शीर्षक में प्रयुक्त दूसरी भाषा को छोड़ दिया जाता है क्योंकि दूसरी भाषा को जोड़ने का प्रावधान नहीं है।

उदाहरण : 35. Glossary of Chemical terms
54 [0] + -03 (T.1) = 540.3

36. Glossary of Chemical terms in English
54 [0] + -03 (T.1) + -21 (T.6) = 540 321

37. Dictionary of library classification in English
025.42 + -03 (T.1) + -21 (T.6) = 025.420 321

38. Hindi-German dictionary of Microbiology
576 + -03 (T.1) + 914 31 = 576.039 143 1

नोट– अंतिम उदाहरण में नियमानुसार जर्मन भाषा का अंकन प्रयुक्त नहीं किया जा सका।

6.20 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Examples)

1. Synonyms in Urdu dictionary
491.439 + -31 = 491.439 31
2. English dictionary
42 [0] + -3 = 423
3. English dictionary of phonology
42 [0] + -15 (T.4) + -03 (T.1) = 421.503
4. Dictionary of German homonyms
43 [0] + -31 = 433.1
5. Dictionary of French abbreviation
44 [0] + -31 = 443.1
6. Hindi to Hindi dictionary
491.43 + -3 = 491.433
7. Chinese grammar
495.1 + -5 = 595.15
8. French Encyclopaedia

44 [0] + -3 = 443

9. French encyclopaedia of Horticulture
   635 + -03 (T.1) + -41 (T.6) = 635.034 1
10. Dutch-Swedish dictionary
    7 + -3 + -393 1 = 733.931
11. Importance of Pitch and Pauses
    43 + -16 = 431.6
12. Encyclopaedia of library science
    02 [0] + -03 (T.1) = 020.3
13. Encyclopaedia of wood construction
    694 + -03 (T.1) = 694.03
14. Encyclopaedia of wood construction in Japanese language
    694 + -03 (T.1) + -956 (T.6) = 694.039 56
15. Encyclopaedia of wood construction in Japanese and English language
    694 + -03 (T.1) + -956 (T.6) = 694.039 56

नोट– अंतिम उदाहरण में दूसरी भाषा अंग्रेजी का अंकन प्रावधान न होने के कारण नहीं जोड़ा जा सका।

6.21 अभ्यास हेतु शीर्षक (Examples for Exercise)

1. ToeFl (Test of English as a foreign language)
2. Translation of Hindi into German
3. Latin words adopted in English language
4. Father Kamil Bulke English-Hindi dictionary
5. English-Greek dictionary
6. English-Greek-French dictionary
7. Glossary of library science in English
8. Spelling of Russian words
9. Learn English through structural approach
10. Dictionary of Danish synonyms
11. Descriptive grammar of maithili language
12. Morphology and syntax in Thai languages
13. Slangs in Ethiopic languages
14. Punctuation marks in the Russian language
15. Japanese Korean-Burmese dictionary

6.22 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आपको यह ज्ञात हो गया होगा कि सारणी 4 में उल्लिखित भाषा उपविभाजनों को मुख्य वर्ग भाषा (400) के साथ किस प्रकार प्रयोग करना है। सारणी 4 में भाषा अंकनों के साथ सारणी 6 को प्रयोग करने के प्रावधान के कारण भाषा अंकन की क्षमता में वृद्धि हो गई है। कई शब्दकोश दो से अधिक भाषा में प्रकाशित होते हैं लेकिन दो से अधिक भाषाओं के अंकन को जोड़ने का प्रावधान न होने के कारण इसे जोड़ा नहीं जा सकता। इसी प्रकार विषय शब्दकोश या विश्वकोश में सिर्फ एक ही भाषा को जोड़ा जा सकता है।

6.23 शब्दावली (Glossary)

भाषा	–	अभिव्यक्ति का माध्यम
शब्दकोश	–	किसी भाषा विशेष में लिखित शब्दों का संग्रह, जिसे वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है तथा इसके साथ ही संभावित अनेक अर्थ दिये रहते हैं।
सामान्य विश्वकोश	–	विषय पर आधारित न होकर किसी भाषा में प्रकाशित कोश जिसमें मिश्रित विषय क्षेत्रों की अवधारणाओं उसका इतिहास आदि को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है।
विषय शब्दकोश	–	एक विषय से संबंधित शब्द संग्रह एवं उसकी अवधारणा तथा इतिहास आदि।

6.24 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class number of Title for Exercise)

1. 42 [0] + -864 = 428.64
2. 491.43 + -802 = 491.438 02
3. 42 + -24 + -71 = 422.471
4. 42 + -3 + 914 31 = 423 914 31
5. 48 + -31 + -21 = 483.21
6. 48 + -3 + -21 = 483.21
7. 02 [0] + -03 + -21 = 020.321
8. 491.7 + -81 = 491.781
9. 42 + -82 = 428.2
10. 491.81 + -31 = 491.813 1
11. 491.45 + -8 = 491.458
12. 495.91 + -5 = 495.915
13. 492.8 + -7 = 492.87

14. 491.7 + -1 =491.71
15. 495.7 + -3 + -956 = 495.739 56

6.25 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996) ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998), Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987), प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–6.2 सारणी 5 प्रजातीय, मानववंशीय, राष्ट्रीय समूह
Unit-6.2 : Table 5 Racial, Ethnic, National Groups

इकाई की रूपरेखा

6.21 प्रस्तावना
6.22 उद्देश्य
6.23 सारणी 5 को प्रयोग करने के नियम
 6.23.1 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 5 का प्रयोग
 6.23.2 सारणी 2 के माध्यम से सारणी 5 का प्रयोग
 6.23.3 सारणी 3 के माध्यम से सारणी 5 का प्रयोग
 6.23.4 सारणी 7 के माध्यम से सारणी 5 का प्रयोग
 6.23.5 सारणी 5 तथा 2 का एक साथ प्रयोग
6.24 वर्गीकृत शीर्षक
6.25 अभ्यास हेतु शीर्षक
6.26 सारांश
6.27 शब्दावली
6.28 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
6.29 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

6.21 प्रस्तावना (Introduction)

सारणी 5 को अनुसूची में निर्देशित एवं अनिर्देशित दोनों ही स्थितियों में प्रयोग कर सकते हैं। जबकि अन्य सारणियों में सारणी 5 को प्रयोग करने के संभावित उपविभाजनों के साथ निर्देश दिये गये हैं। इस सारणी में प्रजातीय मानववंशीय, राष्ट्रीय समूह से संबंधित अंकन निर्दिष्ट किये गये हैं। अनुसूची में जिन वर्गांकों के नीचे इस सारणी के प्रयोग के निर्देश दिये गये हैं वहीं पर आवश्यकता पड़ने पर इनका प्रयोग किया जाता है जैसे– 155. 84, 305.8, 371.97, 572.8, 809.801, –.879 आदि। यदि शीर्षक की मांग है लेकिन निर्देश नहीं दिये गये तो सारणी 1 मानक उपविभाजन के अंकन –089 Treatment among specific racial, ethnic, national groups के अंतर्गत दिये गये निर्देश– Add "Racial, Ethnic, National groups" notation 01-99 from Table 5 to base number -089 की सहायता से सारणी 5 के अंकनों का शीर्षक की आवश्यकतानुसार जोड़ा जायेगा। सारणी 1 में –089 की उपयोगिता को उदाहरण सहित इकाई 3 में समझाया जा चुका है।

सारणी 5,6 तथा मुख्य वर्ग भाषा (400) एवं साहित्य (800) के अंकनों में समानता देखने को मिलती है। ये स्मृति सहायक अंकनों के रूप में जाने जाते हैं। जैसे–

	सारणी 5	सारणी 6	मुख्य वर्ग भाषा	मुख्य वर्ग साहित्य
Englishman	- **2**1	-**2**1	4**2**.0	8**2**0
Germans	-**3**1	-**3**1	4**3**.0	8**3**0
Indians	-**914** 11	-**914** 31	4**91.4**3	4**91.4**3

उपर्युक्त उदाहरण में जिन अंकों में समानता स्पष्ट हो रही है उन्हें काला (Bold) किया गया है।

इस सारणी को प्रथम खण्ड के पृष्ठ 408–407 तक दिया गया है। अन्य सारणियों की भाँति ही इस सारणी सारणी के अंकन भी पूर्व वर्गांक नहीं हो सकते और न ही अकेले प्रयुक्त किये जाते हैं। इसमें भारतीय, रशियन्स, जापनीज, चाइनीज, नेपालीस, बंगालीज आदि मानव जाति एवं सामाजिक समूहों को सूचीबद्ध किया गया है। सारणी 5 एवं 6 में भाषा के आधार पर व्यक्तियों को दर्शाने वाले अंकनों में समानता देखने को मिलती है। सारणी 5 के साथ सारणी 2 के प्रयोग से संबंधित नियमों को उदाहरण सहित समझाया गया है। इस सारणी का प्रयोग निर्देशित तथा अनिर्देशित अवस्था में किया जा सकता है।

6.22 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई की रचना का उद्देश्य इस प्रकार है–

1. भारत एवं विश्व के मानववंशीय, प्रजातीय एवं राष्ट्रीय समूह से परिचय कराना।
2. इस सारणी को प्रयोग करने हेतु दिये गये विभिन्न नियमों एवं प्रावधानों को उदाहरण सहित समझाना।
3. सारणी 5 एवं 2 के अंकनों के एक साथ प्रयोग करने से संबंधित नियमों को उदाहरण सहित समझाना; तथा
4. सारणी 1, 3 एवं 7 के माध्यम से सारणी 5 के प्रयोग संबंधित नियमों को उदाहरण सहित व्याख्या करना आदि।

6.23 सारणी 5 को प्रयोग करने के नियम (Rules for use of Table 5)

1. अन्य सारणियों की भाँति इस सारणी का प्रयोग भी अकेले नहीं किया जा सकता अर्थात इसके अंकन भी अपने आप में पूर्ण वर्गांक नहीं हो सकते।
2. इसका प्रयोग अनुसूची में विषयों के अंतर्गत दिये गये निर्देश के माध्यम से किया जाता है।
3. यदि अनुसूची में इस सारणी को प्रयोग करने के लिए निर्देशित नहीं किया गया हो लेकिन शीर्षक में इसके अंकन को जोड़ने की आवश्यकता हो तो सारणी 1 मानक उपविभाजन के अंकन —089 (Treatment among specific racial, ethnic, national groups) की सहायता से सारणी 5 के अंकन 01—99 तक के किसी भी अंकन को प्रयुक्त किया जा सकता है।

उदाहरण : 1. Psychology of Australians
155.84 + -24 = 155.842 4

अनुसूची में मुख्य वर्ग 150 के उपविभाजन 155.8 में Ethnopsychology and national psychology के अंतर्गत 155.84 में सारणी 5 के अंकन —01—99 तक के अंकन को प्रयुक्त करने का निर्देश दिया गया है। उपयुक्त उदाहरण में —24 अंकन को सारणी 5 से ऑस्ट्रेलियन्स के लिये प्रयोग किया गया है।

2. Education of Neederlandish persons
371.97 + -393 = 371.973 93

अनुसूची में 371.97 में Special education for racial ethnic etc. groups के अंतर्गत सारणी 5 को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। अंकन —393 नीदरलैण्ड के निवासियों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

3. Russian non-dominant aggregates
305.8 + -917 1 = 305.891 71

अनुसूची में अंकन 305 Social stratification के लिए प्रयुक्त हुआ है तथा इसके नीचे Social aggregates को वर्गीकृत करने का निर्देश दिया गया है। अंकन 305.8 Racial,

Ethnic, National groups के अंतर्गत सारणी 5 के अंकनों का प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। सारणी 5 में रशियन्स के लिए अंकन –917 1 प्रयुक्त किया गया है।

6.23.1 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 5 का प्रयोग (Use of Table 5 without instruction)

यदि शीर्षक को वर्गीकृत करने के लिए सारणी 5 का प्रयोग आवश्यक हो लेकिन अनुसूची में इसके लिये निर्देश न दिया गया हो तो सारणी 1 मानक उपविभाजन –089 (Treatment among specific racial ethnic national groups) की सहायता से सारणी 5 के अंकनों को प्रयुक्त किया जा सकता है। मानक उपविभाजन –089 को प्रयुक्त करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि इसका प्रयोग एक शून्य, दो शून्य या अधिक या शून्य हटाते हुए किया जाना है।

4. Intra family relationship guide for Bengalis
   306.87 + -089 + -914 4 = 306.870 899 144

अनुसूची के अंकन 306.87 के सामने पद Intra family relationships दिया गया है। इसके अंतर्गत सारणी 5 के अंकनों को जोड़ने के निर्देश दिये गये हैं इसलिए सारणी 1 के अंकन –089 को जोड़कर उसके नीचे दिये गये निर्देशानुसार सारणी 5 से बंगालीज के लिए अंकन –914 4 प्रयोग किया गया है।

5. Manual of husband-wife relationship for Indians
   306.87 + -089 + -914 11 = 306.870 899 141 1

अनुसूची में अंकन 306.87 में husband-wife relationships दिया गया है लेकिन यहाँ इंडियन्स के लिए निर्देश नहीं है जो सारणी 5 में वर्णित है। अतः नियमानुसार मानक उपविभाजन के –089 अंकन की सहायता से इंडियन्स के लिए –914 11 अंकन को सारणी 5 से लिया गया है।

6. Development of Hockey among Punjabi people

अनुसूची में Field hockey के लिए 796.355 प्रयुक्त किया गया है जबकि इसके नीचे सारणी 5 के अंकनों को जोड़ने के निर्देश नहीं दिये गये। अतः उक्त शीर्षक का वर्गांक निर्मित करने के लिए मानक उपविभाजन के अंकन –089 की सहायता से सरणी 5 के अंकन –914 2 को पंजाबी के लिए प्रयोग किया गया है। अतः वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा–

796.355 + -089 + -9142 = 796.355 089 914 2

6.23.2 सारणी 2 के माध्यम से सारणी 5 का प्रयोग (Use of Table 5 through Table 2)

इस सारणी का प्रयोग सारणी 2 के माध्यम से भी किया जा सकता है क्योंकि सारणी 2 के पृष्ठ 25 पर अंकन —174 (Regions where specific racial, ethnic, national groups predominate) दिया गया है तथा इसके अंतर्गत सारणी 5 के अंकन 01—99 को प्रयोग किये जाने का निर्देश है। जैसे—

7. Adults education in the areas where Italians predominate

374.9 + -174 + -51 = 374.917 451

अनुसूची में 374.9 में सारणी 2 को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। सारणी 2 के अंकन —174 के अंतर्गत दिये गये निर्देशानुसार सारणी 5 से इटैलियन्स के लिए —51 अंकन प्रयुक्त किया गया है।

6.23.3 सारणी 3 के माध्यम से सारणी 5 का प्रयोग (Use of Table 5 through Table 3)

सारणी 3 को सारणी 3-A के रूप में विस्तारित किया गया है। इस सारणी का प्रयोग मुख्य वर्ग 800 साहित्य के साथ किया जाता है। सारणी 3 में —08 एवं —09 के अंतर्गत सारणी 3-A में अंकन 8 के नीचे सारणी 5 के अंकन —03—99 को प्रयोग करने का निर्देया दिया गया है।

8. Contributions to Bengalis to Hindi

891.43 + -09 + -914 4 = 891.430 991 44

9. Collections of German wrtings by Ramanians

अनुसूची में जर्मन साहित्य के अंकन 830 का आधार अंक 83 दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। सारणी 3 का अंकन —08 Collections के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसके अंतर्गत आधार अंक —080 के साथ सारणी 3-A के अंकनों को प्रयोग करने के निर्देश दिये गये हैं। सारणी 3-A में Literature for and by specific racial, ethnic national groups पद के नीचे सारणी 5 के अंकनों के प्रयोग करने के निर्देश दिये गये हैं। सारणी 5 में रोमैनियन्स के लिए अंकन —59 दिया गया है। अतः वर्गांक इस प्रकर निर्मित होगा—

83 [0] + -080 + 8 + -59 = 830.808 59

6.23.4 सारणी 7 के माध्यम से सारणी 5 का प्रयोग (Use of Table 5 through Table 7)

सारणी 7 का प्रयोग नियमानुसार करने के बाद इस सारणी के –03 अंकन (Persons by racial, ethnic, national background) के अंतर्गत सारणी 5 के अंकन –01–99 को प्रयोग करने का निर्देश है।

10. Colon classification for Indonesians practitioners

025.435 + -024 + -03 + -992 2 = 025.435 024 039 922

अनुसूची में द्विबिन्दु वर्गीकरण के लिए 025.435 अंकन दिया गया है। नियमानुसार –024 को सारणी 1 के लेते हुए –03 अंकन को सारणी 7 से लिया गया है। यहाँ पर –03 के अंतर्गत दिये गये निर्देशानुसार इण्डोनेशियन्स के लिए 992 2 अंकन को सारणी 5 से लिया गया है।

6.23.4 सारणी 5 तथा 2 का एक साथ प्रयोग (Use of both Table 5 and 2)

सारणी 5 की भूमिका में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि यदि अनुसूची में किसी प्रकार का निर्देश दिया गया है तो इसी का पालन किया जायेगा नहीं तो सारणी 5 के साथ सारणी 2 के अंकन को एक शून्य को जोड़ते हुए प्रयोग किया जायेगा। सबसे पहले अनुसूची में विषय का आधार अंक लीजिए इसके बाद यदि निर्देश हो तो निर्देशानुसार या मानक उपविभाजन के –089 के माध्यम से सारणी 5 के अंकन को जोडिए इसके बाद एक शून्य (ऐसे निर्देश अनुसूची में भी दिये रहते हैं) को जोड़ते हुए सारणी 2 के अंकन को जोड़ा जाना चाहिए।

11. Descrimination against Indians living in Brazil

305.8 + -914 11 + 0 + -81 = 305.891 411 081

अनुसूची में 305.8 के अंतर्गत सारणी 5 के अंकन एवं तत्पश्चात एक शून्य जोड़ते हुए सारणी 2 को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है।

इसी प्रकार

12. World history of Indo-Aryan

909.04 + -914 = 909.049 14

13. Biography of Mongols

920.009 2 + -942 = 920.009 294 2

14. Ethnic cookery of Koreans in China

641.592 + 957 + 0 + -51 = 641.592 957 051

15. Indian Handicraftsman in Philippines

745.5 + -089 + -91411 + 0 + -599 = 745.508 991 411 059
9

6.24 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Punjabi folk music in Indonesia
   789.2 + -914 2 + 0 + -598 = 789.291 420 598
2. Education of Brazilians in Canada
   371.97 + -698 + 0 + 71 = 371.976 980 71
3. Celetic folk music
   781.72 + -916 = 781.729 16
4. Bibliography of books prepared by Sindhis
   013 + -089 + -948 = 013.089 948
5. Psychology of Iranians
   155.84 + -915 = 155.849 15
6. Labour strikes in the area where Bulgarians predominate
   331.8929 + -174 + -918 11 = 331.892 217 491 811
7. Indian origins Uganda
   305.8 + -914 11 + 0 + -676 1 = 305.891 411 067 61
8. Gipsy music
   781.72 + -914 97 = 781.729 149 7
9. Dravidians races – a biological study
   572.8 + -948 = 572.894 8
10. Biography of Persians
    920.009 2 + -915 5 = 920.009 291 55

6.25 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Economic conditions of regions where Eskimos predomenate
2. Social relation of state with Sudanese
3. Reading habits among Russians
4. World history of New Zealanders
5. Wedding and marriage customs among Indo-Aryans in Armania
6. Psychology of the Canadians of French origin
7. Sinhalese migrant labour in New York state
8. Collection of literature by Spanish American

9. A study of general pattern of social behaviour of Italians
10. History of Jews in Europe

6.26 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आपको उस समूह की जानकारी हो गयी होगी जिसकी पहचान राष्ट्रीय, वंशीय या जातीय आधार पर भी हो सकती है जैसे भारतीय अर्थात् भारत में निवास करने वाले नागरिक वे चाहे किसी भी धर्म, जाति, क्षेत्र एवं लिंग से संबंध रखते हों। सारणी 5 के अंकन सारणी 6, मुख्य वर्ग भाषा (400) एवं साहित्य (800) के अंकन में कुछ अंश के समानता के कारण इसमें स्मरणशीलता अधिक पाई जाती हें इसका प्रयोग निर्देश न होने पर भी सारणी 1 के माध्यम से किया जा सकता है। इस इकाई में बहुसंस्लेषण की प्रक्रिया को उपयुक्त उदाहरणों सहित समझाया गया है।

6.27 शब्दावली (Glossary)

राष्ट्रीय समूह – जब किसी व्यक्ति/व्यक्तियों के समूह की पहचान राष्ट्र के नाम से हो तो उसे राष्ट्रीय समूह कहा जाता है।

प्रजातीय – जातीयता के आधार पर पहचान।

6.28 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

1. 330.9 + -174 + -97 = 330.917 497
2. 323.11 + -549 6 = 323.115 496
3. 028.9 + -089 + -917 1 = 028.908 991 71
4. 909.04 + -23 = 909.042 3
5. 392.5 + -089 + -914 + 0 + -566 2 = 392.508 991 405 662
6. 155.84 + -114 = 155.841 14
7. 331.63 + -914 + 0 + -747 = 331.639 140 747
8. 808.89 + -8 + -68 = 808.898 68
9. 306 + -089 + -51 = 306.089 51
10. 94 + -004 + -924 = 940.049 24

    or

    909.04 + -924 + 0 -4 = 909.049 240 4

6.29 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.

- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996) ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998), Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987), प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–6.3 : सारणी 6 : भाषाएँ

Unit-6.3 : Table 6 : Languages

इकाई की रूपरेखा

6.31 प्रस्तावना

6.32 उद्देश्य

6.33 सारणी 6 को प्रयोग करने के नियम

6.34 सारणी 6 की संक्षिप्त तालिका

6.35 विभिन्न सारणियों में दिये गये निर्देश

5.35.1 मानक उपविभाजन (सारणी 1)

5.35.2 भौगोलिक क्षेत्र (सारणी 2)

6.35.3 विशिष्ट भाषाओं के उपविभाजन (सारणी 4)

6.36 अनुसूची में दिये गये निर्देश

6.37 वर्गीकृत शीर्षक

6.38 अभ्यास हेतु शीर्षक

6.39 सारांश

6.40 शब्दावली

6.41 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक

6.42 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

6.31 प्रस्तावना (Introduction)

प्रथम खण्ड की सारणी 6 में विश्व की अधिकांश भाषाओं को पृष्ठ 418–431 तक वर्णित किया गया है। अन्य सारणियों की भाँति यह सारणी भी पूर्ण वर्गांक प्रदान नहीं करती अर्थात् इसका प्रयोग भी कभी अकेले नहीं किया जाता। इस सारणी को विशिष्ट एकल (Special Isolates) की श्रीणी में रखा गया है क्योंकि इनका प्रयोग बिना निर्देश के कभी नहीं किया जा सकता। ये निर्देश दो प्रकार के हो सकते हैं–

(अ) अनुसूची में उल्लिखित विशिष्ट विषयों के अंतर्गत दिये गये निर्देश; तथा

(ब) विभिन्न सारणियों में दिये गये निर्देश।

सारणी 6 के अंकनों को भी डैश (–) के साथ सूचीबद्ध किया गया है। अनुसूची के अंकनों के साथ प्रयुक्त होते ही यह डैश चिन्ह् स्वतः ही समाप्त हो जाता है। जब तक किसी प्राचीन या मध्यकालीन भाषाओं का उल्लेख उसी भाषा में अलग से न किया गया हो तो उस भाषा के लिए उसके आधुनिक भाषा के अंतर्गत ही वर्गीकृत किया जाएगा।

6.32 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात यह बताने में सक्षम होंगे कि –

1. भाषा पर आधारित ग्रंथों को वर्गीकृत करने संबंधी नियम क्या हैं?
2. विशिष्ट भाषा को बोलने वाले लोगों को वर्गीकृत करने के नियमों की व्याख्या करना।
3. भाषा पर आधारित क्षेत्रों के विषयों को वर्गीकृत करने के लिए नियमों एवं उदाहरण को समझाना।

6.33 सारणी 6 को प्रयोग करने के नियम (Rules to use of Table 6)

1. सारणी 6 का प्रयोग कभी भी अकेले पूर्ण वर्गांक के रूप में नहीं किया जाएगा।
2. इस सारणी के अंकनों का प्रयोग कभी भी बिना निर्देश के नहीं किया जा सकेगा।
3. इसका प्रयोग सहायक सारणियों या अनुसूची में दिये गये निर्देश के अनुसार ही किया जायेगा।

4. यदि शीर्षक में भाषा अंकन को जोड़ने की आवश्यकता हो लेकिन विशिष्ट विषय के अंतर्गत या सहायक सारणियों में सारणी 6 को जोड़ने के निर्देश नहीं दिये गये हों तो वर्गांक अधूरा ही निर्मित किया जायेगा लेकिन स्वतः ही भाषा अंकन प्रयोग नहीं किया जाएगा।

6.34 सारणी 6 की संक्षिप्त तालिका (Summary of Table 6)

भाषा अंकनों को 9 भागों में निम्नानुसार विभाजित किया गया है –

1. Indo-European (Indo-Germanic) languages
2. English and Anglo-Saxon languages
3. Germanic (Teutonic) language
4. Romance languages
5. Italian, Romanian, Rhaeto-Romanic
6. Spanish and Portuguese
7. Italic languages
8. Hellenic languages
9. Other languages

6.35 विभिन्न सारणियों में दिये गये निर्देश (Instructions given in various Tables)

6.35.1 मानक उपविभाजन (सारणी 1)

सारणी 1 मानक उपविभाजन के अंकन –03 के अंतर्गत –032–39 में सारणी 6 के अंकन को जोड़ने के निर्देश दिये गये हैं–

-032-39 by languages

Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to base number -03

उदाहरण : 1. Encyclopaedia of organic chemistry in English language

547 + -003 (T.1) + -21 (T.6) = 547.003 21

उपर्युक्त उदाहरण में 547 को अनुसूची से Organic Chemistry के लिए लिया गया है। वहाँ पर मानक उपविभाजनों को दो शून्यों के साथ प्रयोग करने के संकेत दिये गये हैं।

तदनुसार विश्वकोश के लिए –003 को सारणी 1 से लेते हुए उसके नीचे दिये गये निर्देशानुसार भाषा अंकन –21 को सारणी 6 से अंग्रेजी के लिए जोड़ा गया है।

2. Dictionary of Criminal law in Hindi
345 + -003 + -914 31 = 345.003 914 31

अनुसूची में Criminal law के लिए अंकन 345 दिया गया, उसके साथ मानक उपविभाजन के अंकनों को दो शून्यों के साथ प्रयोग करने का प्रावधान है। तदनुसार शब्दकोश का अंकन –03 सारणी 1 से लेते हुए –03 के नीचे दिये निर्देशानुसार हिंदी के लिए अंकन –914 31 को सारणी 6 से लाकर जोड़ा गया है।

6.35.2 भौगोलिक क्षेत्र (सारणी 2)

प्रथम खण्ड के सारणी 2 में भी भाषा अंकन को प्रयोग करने के निर्देश दिये गये हैं। इसकी सहायता से किसी विशिष्ट भाषा जानने एवं बोलने वाले लोगों के क्षेत्र को निर्धारित करने के लिए वर्गांक बनाए जाते हैं।

उदाहरण : 3. History of general libraries in French speaking countries
027.0 + -175 + -41 = 027.017 541

इस उदाहरण में सामान्य पुस्तकालय के लिए 027 अंकन अनुसूची में दिया गया है। इसके अंतर्गत इस प्रकार का निर्देश दिया गया है–

.01 - .09 Geographical treatment
Add "Areas" notation 1-9 from table 2 to base number 027.0

इसी आधार पर सारणी 2 से अंकन –175 जोड़ा गया है जिसके अंतर्गत इस प्रकार का निर्देश दिया गया है–

-175 Regions where specific languages predominate
Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to base number -175

इसी आधार पर सारणी 2 से –175 लेते हुए अंकन –41 को फ्रेंच भाषा के लिए सारणी 6 से लाकर जोड़ा गया है।

इसी प्रकार : 4. A study of newspaper in areas where German speaking people are living
079 + -175 + -31 = 079.175 31

6.35.3 विशिष्ट भाषाओं के उपविभाजन (T.4)

इस सारणी में शब्दकोश की द्वितीय भाषा के अंकन को सारणी 6 से लाने के निर्देश दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त –824, 834 एवं –864 के अंतर्गत भी इस प्रकार निर्देश दिये गये हैं–

-824 For those whose native language in different
Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to -824

-834 For those whose native language is different
Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to -834

-864 For those whose native language is different
Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to -864

उपर्युक्त तीनों में निर्देश एक समान प्रतीत हो रहे हैं लेकिन इनके दृष्टिकोण पृथक–पृथक क्रमशः –82, –83 एवं –86 के अंतर्गत दिये गये हैं।

उदाहरण : 5. Hellenic-Spanish dictionary
48 [0] + -3 + -61 = 483.61

भारत के दृष्टिकोण से दोनों भाषाएँ समान महत्व की हैं। इसलिए नियमानुसार अनुसूची में बाद में भी सूचीबद्ध भाषा को पहले रखा गया है। शब्दकोश के लिए अंकन –03 को सारणी 4 से लेकर उसके नीचे दिये गये निर्देशानुसार स्पैनिश भाषा का अंकन –61 को सारणी 6 से लाकर जोड़ा गया है।

6.36 अनुसूची में दिये गये निर्देश (Instructions given in Schedules)

अनुसूची में जहाँ पर आवश्यकता महसूस की गयी वहाँ पर सारणी 6 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देश दिये गये हैं। अनुसूची में सारणी 6 का प्रयोग निर्देश होने पर ही किया जायेगा।

उदाहरण : 6. Translation of Koran in Hindi
297.122 5 + -914 31 = 297.122 591 431

अनुसूची में 297.122 अंकन कुरान के लिए प्रयुक्त हुआ है इसके उपविभाजन 297. 122 5 में 'अनुवाद' पद दिया गया है इसके अंतर्गत सारणी 6 के अंकन –1–9 को प्रयोग करने का निर्देश मिलता है। अंकन –914 31 को हिंदी भाषा के लिए सारणी 6 से लेकर जोड़ा गया है।

7. Romanian encyclopaedia

03 + -59 = 035.9

अनुसूची में 035 रोमैनियन–इटैलियन आदि भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसके अंतर्गत आधार अंक 03 में सारणी 6 के 51–59 तक के अंकन को प्रयोग करने के निर्देश हैं। अंकन –59 को सारणी 6 से लिया गया है।

8. Encyclopaedia in English language
039 + -21 = 039.21

अनुसूची में 039 अन्य भाषा के विश्वकोश के लिए प्रयुक्त हुआ है यहाँ पर सारणी 6 के –2–9 तक के अंकन को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। अंग्रेजी के लिए अंकन –21 को सारणी 6 से लिया गया है।

इसी नियम पर आधारित कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

9. Folk literature in Dutch language
398.204 + -393 1 = 398.204 393 1
10. Bibliographies in Punjabi language
011.2 + -914 2 = 011.291 42
11. Hindi translation of Bible
220.5 + -914 31 = 220.591 431

6.37 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

उपर्युक्त ढंग से विश्लेषित एवं समझायी गयी विधि द्वारा निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा सामने दिये गये वर्ग संख्या से मिलाइए।

1. Dictionary of Russian Proverbs
398.9 + -917 1 + -03 = 398.991 710 3

2. Teaching of Punjabi language in elementary school
372.65 + -914 2 = 372.659 142
3. Cancer disease in Urdu speaking regions
616.994 + -009 + -175 + -914 39 = 616.994 009 175 914 39
4. Encyclopaedia of medical sciences in German language
61 [0] + -03 + -31 = 610.331
5. A social study of Rajasthani
305.7 + -914 79 = 305.791 479
6. Folk literature in Sanskrit language
398.204 + -912 = 398.204 912

7. Bhargav's Hindi-English dictionary
   42 + -3 + 914 31 = 423.914 31
8. Dictionary of Physics in Turkish languages
   53 [0] + -03 + -943 5 = 530.394 35

6.38 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. General rhetoric collection in Ukrarian language
2. India Today – A Hindi weekly
3. Philippine language
4. General collections of Quotation in Urdu
5. Urdu calligraphy
6. Tuberculosis disease in English speaking countries
7. Encyclopaedia of science in German languages
8. Hindi-English dictionary of applied physics
9. Social structure of Hindi speaking people in Canada
10. Sudanese language literature

6.39 सारांश (Summary)

भाषा का महत्व सभी विषय क्षेत्रों एवं विषयों के अध्ययन हेतु होता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको यह ज्ञान हो गया होगा कि सारणी 6 भाषाओं के अंकन को प्रयुक्त करने हेतु अनुसूची एवं सारणियों कें निर्देश दिये गये होते हैं। वर्गीकार को शीर्षक की आवश्यकता को देखते हुए सारणी 4 के अंकनों को नियमानुसार जोड़कर वर्गांक निर्मित किया जा सकता है। सारणी 6 को विशिष्ट एकलों को विशिष्ट एकलों की श्रेणी में रखा गया है। यही एक ऐसी सारणी है जिसका प्रयोग केवल निर्देश होने पर ही किया जा सकता है।

6.40 शब्दावली (Glossary)

भाषा – संचार या अभिव्यक्त का माध्यम

विशिष्ट एकल – जिनका उपयोग निर्देश होने पर ही किया जा सके।

6.41 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

1. 808.04 + -917 91 = 808.049 179 1
2. 059 + -914 71 = 089.914 71
3. 499 + [-99] 21 = 499.21
4. 089 + -914 39 = 089.914 39
5. 745.619 + -914 39 = 745.619 914 39
6. 616.995* + -009 + -175 + -21 = 616.995 009 175 21
7. 5 [00] + -03 + -31 = 503.31
8. 621 + -03 + -914 31 = 621.039 143 1
9. 305.7 + -914 31 + 0 + -71 = 305.791 430 71
10. 899 + [-99] 22 = 899.22

6.42 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996). ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987). प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–6.4 : सारणी 7 व्यक्ति

इकाई की रूपरेखा

6.41 प्रस्तावना
6.42 उद्देश्य
6.43 –1–9 विशेषज्ञ
6.44 सारणी 7 को प्रयोग करने के नियम
6.44.1 अनुसूची में दिए गए निर्देशों द्वारा सारणी 7 का प्रयोग
6.44.2 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन –024 का प्रयोग
6.44.3 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन –088 का प्रयोग
6.44.4 सारणी 2 के माध्यम से सारणी 7 का प्रयोग
6.44.5 सारणी 3 के माध्यम से सारणी 7 का प्रयोग
6.45 सारणी 7 के लिए अग्रतागक्रम तालिका
6.46 वर्गीकृत शीर्षक
6.47 अभ्यास हेतु शीर्षक
6.48 सारांश
6.49 शब्दावली
6.50 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
6.51 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

6.41 प्रस्तावना (Introduction)

यह प्रथम खण्ड (Volume) की अंतिम सारणी है जिसका उल्लेख पृष्ठ 432–452 में किया गया है। इस सारणी में व्यक्तियों को विभिन्न विशेषताओं के आधार पर कई समूहों में श्रेणीबद्ध कर सूचीबद्ध किया गया है। इस सारणी के अंकन भी पूर्ण वर्गांक नहीं होते। जब शीर्षक में व्यक्तियों का, व्यक्तियों द्वारा एवं व्यक्तियों के लिए उल्लेख हुआ हो तो इस सारणी से ही संबंधित अंकन का प्रयोग किया जाता है।

इस सारणी के अंकनों को मुख्यतः दो प्रकार से विभाजित किया गया है जैसे –01–09 एवं –1–9 इन विभाजनों की रूपरेखा (Summary) इस प्रकार है–

–01	Individual persons
–02	Groups of persons
–03	Persons by racial, ethnic, national groups
–04	Persons by sex kinship characteristics
–05	Persons by age
–06	Persons by social and economic characteristics
–08	Persons by physical and mental characteristics
–09	Generalists and novics

6.42 उद्देश्य (Objectives)

1. इस सारणी में जिन विशेषताओं के आधार व्यक्तियों को समूहों में श्रेणीबद्ध किया गया है, से अवगत कराना; तथा
2. सारणी की उपयोगिता एवं उपयोग करने के विभिन्न नियमों को उदाहरण सति व्याख्या करना आदि।

6.43 –1–9 विशेषज्ञ (Specialists)

विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ, व्यवसाय (Profession), रुचि (Hobby) आदि से संबंधित व्यक्तियों को –1–9 अंकन को इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया गया है।

1	Persons occupied with philosophy and related discipline
2	Persons occupied with or adherent to religion.
3	Persons occupied with the social sciences and socioeconomic activities
4	Persons occupied with linguistics and lexicography
5	Persons occupied with pure sciences
6	Persons occupied with applied sciences (Technologies)

7 Persons occupied with the arts

8 Persons occupied with creative writing and speaking

9 Persons occupied with geography, history, related disciplines and activities

6.44 सारणी 7 को प्रयोग करने के नियम(Rules for use of Table 7)

सारणी 7 को प्रयोग करने के नियम निम्नलिखित हैं–

1. अन्य सारणियों की भाँति इस सारणी का प्रयोग भी स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकेगा।
2. इसका प्रयोग अनुसूची से प्राप्त आधार अंक के साथ किया जाएगा।
3. अनुसूची में निर्देश मिलने पर इसका प्रयोग निर्देशानुसार किया जाता है।
4. यदि अनुसूची में निर्देश नहीं दिये गये हों लेकिन इस सारणी के अंकन को जोड़ना शीर्षक की मांग हो तो सारणी 1 मानक उपविभाजन के अंकन –088 या –024 की सहायता से इस सारणी के अंकन को जोड़ा जा सकता है।
5. मानक उपविभाजन के अंकन –024 का प्रयोग तब किया जाता है जब विषय में झुकाव स्पष्ट हो रहा है। शेष अन्य अवस्थाओं में –088 का ही प्रयोग किया जाएगा।
6. इस सारणी का प्रयोग निर्देशानुसार सारणी 2 एवं 3 की सहायता से भी किया जा सकता है।

6.44.1 अनुसूची में दिये गये निर्देशों द्वारा सारणी 7 का प्रयोग (Use of Table 7, when instructed in Schedule)

अनुसूची में उन विषयांतर्गत सारणी 7 के अंकनों को प्रयोग करने के निर्देश दिये गये हैं जहाँ पर इनको प्रयोग करना आवश्यक प्रतीत हुआ है ताकि विषय को स्पष्ट किया जा सके। अनुसूची में निर्धारित आधार अंक के साथ सीधे इस सारणी को जोड़ने के निर्देश दिये गये हैं।

उदाहरण : 1. Ethics of lawyers

174.9 + -344 = 174.934 4

अनुसूची में 174.9 Other profession and occupation वर्णित है उसके अंतर्गत सारणी 7 के 09–99 अंकन को जोड़ने के लिए निर्देशित किया गया है।

2. Personal finance to Hotelkeepers
332.024 + -647 = 332.024 647

अनुसूची में 332.024 में Personal finance दिया गया है इसके अंतर्गत .024 03 – .024 99 में Personal finance for specific classes of persons के नीचे सारणी 7 को प्रयोग करने के लिए निर्देश दिया गया है। 647 को सारणी 7 से hotelkeeper के लिए प्रयोग हुआ है।

3. Bibliography of works of librarian
013 + -092 = 013.092

अनुसूची में अंकन 013 'Bibliographies and catalogues of works by specific classes of authors के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसके बीच –.03–.87 के अंतर्गत सारणी 7 के अंकनों को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। अंकन –092 सारणी 7 से Librarian के लिए लिया गया है।

4. Collection of literature for surgeons
808.89 + 92 + -617 1 = 808.899 261 71

अनुसूची में अंकन 808.89 Collection for and by specific kinds of persons के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसके नीचे सारणी 3-A को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। सारणी 3-A में अंकन 920 4–927 9 के नीचे सारणी 7 के अंकनों को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। सारणी 7 में –617 1 अंकन Surgeons के लिए प्रयोग किया गया है।

6.44.2 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन –024 का प्रयोग (Use of Table 7 with -024 (T.1), when not instructed)

जब अनुसूची में निर्देश न दिया गया हो तथा शीर्षक में झुकाव या पक्षपात दृष्टिकोण स्पष्ट हो रहा हो तो सारणी 1 मानक उपविभाजन -024 works for specific types of users के अंतर्गत सारणी 7 के अंकनों को प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जायेगा।

5. Calculus for management scientists
515 + -024 + -65 = 515.024 65

अनुसूची में 515 Calculus के अंतर्गत सारणी 7 को प्रयोग करने के निर्देश नहीं दिये गये इसलिए Management scientists के लिए –65 अंकन का प्रयोग सारणी 1 मानक उपविभाजन के अंकन –024 के साथ किया गया है।

6. Works on gardening for grand parents
635 + -024 + -043 2 = 635.024 043 2

अनुसूची में 635 Garden Crops के लिए प्रयुक्त हुआ है लेकिन सारणी 7 को प्रयोग करने के निर्देश नहीं दिये गये हैं इसलिए मानक उपविभाजन के अंकन –024 के माध्यम से grand parents के लिए –043 2 अंकन को सारणी 7 से लिया गया है।

6.44.3 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन –088 का प्रयोग (Use of –088 of Table 1, when not instructed)

जब अनुसूची में निर्देश न दिया गया हो तथा विषय में झुकाव स्पष्ट न हो तो मानक उपविभाजन के अंकन –088 का प्रयोग सारणी 7 के अंकनों को जोड़ने के लिए किया जाता है।

7. Folk arts by the healthy persons
745 + -088 + -081 2 = 745.088 081 2

अनुसूची में 745 Decorative and minor arts के अंतर्गत Folk arts दिया गया है लेकिन सारणी 7 को जोड़ने के लिए निर्देश नहीं दिये गये इसलिए सारणी 1 के –088 का प्रयोग करते हुए –081 2 अंकन Healthy person के लिए प्रयुक्त हुआ है।

8. Funeral etiquette among Hindus
395.23 + -088 + -294 5 = 395.230 882 945

अनुसूची में अंकन 395 etiquette के लिए प्रयुक्त हुआ है लेकिन इसके अंतर्गत सारणी 7 को प्रयोग करने का निर्देश नहीं दिया गया है। इसलिए सारणी 1 से अंकन –088 जोड़ा गया है। इसके नीचे सारणी 7 को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। हिंदू के लिए अंकन –294 5 को सारणी 7 से लिया गया है।

9. Sex instructions to young adults
613.96 + -088 + -056 5 = 613.960 880 55

अनुसूची में 613.96 Manual of sexual technique के लिए प्रयुक्त हुआ है चूँकि यहाँ पर सारणी 7 को जोड़ने के लिए निर्देश नहीं है इसलिए सारणी 1 से –088 लेते हुए young adults के लिए –055 अंकन को सारणी 7 लेकर जोड़ा गया है।

6.44.4 सारणी 2 के माध्यम से सारणी 7 का प्रयोग (Use of Table 7 through Table 2)

यह पीछे बतलाया जा चुका है कि सारणी 2 का प्रयोग निर्देशित एवं अनिर्देशित अवस्था दोनों ही स्थितियों में किया जा सकता है इस नियम का पालन करते हुए सारणी 2 के अंकन -175 Regions where specific religion predominate के अंर्तत –176 2–176 9 में सारणी 7 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है।

10. Political conditions in Muslim countries
320.9 + -176 + -[29] 71 = 320.917 671

अनुसूची में 320.9 अंकन Political situation and condition के लिए प्रयुक्त हुआ है तथा इसके अंतर्गत सारणी 2 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। सारणी 2 में अंकन –176 में सारणी 7 के उपविभाजनों को –29 को छोड़ते हुए प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। अंकन 71 को सारणी 7 के 297 1 से 29 को हटाते हुए लिया गया है।

6.44.5 सारणी 3 के माध्यम से सारणी 7 का प्रयोग (Use of Table 7 through Table 3)

सारणी 3 की विस्तारित सारणी 3-A में साहित्य के अन्य विशिष्ट तत्वों का वर्णन किया गया है। अंकन –92 (For and by persons of specific classes) के अंतर्गत दिये गये निर्देश के माध्यम से जिस वर्ग के व्यक्तियों के लिए या व्यक्तियों द्वारा साहित्य लिखा गया है, उसे सारणी 7 से लाकर जोड़ा जा सकता है। इन अंकनों को प्रयोग करने के निर्देश –920 4–927 9 तथा –929 के अंतर्गत दिये गये हैं।

11. Collection of literature for civil service personnel
808.89 + -92 + -352 7 = 808.899 235 27

अनुसूची में मुख्य वर्ग 800 साहित्य में 808.89 (Collection for and by specific kinds of persons) के लिए प्रयुक्त किया है यहाँ पर सारणी 3-A में –92 For and by persons of specific classes के अंतर्गत सारणी 7 से –04–79 अंकन जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त उदाहरण में –352 7 Civil service personnel के लिए सारणी 7 से लिया गया है।

12. Criticism of Telugu literature by muslim
894.827 + -09 + -92 + -297 1 = 894.827 099 229 71

अनुसूची में अंकन 894.827 तेलुगू साहित्य के लिए प्रयुक्त किया गया है। अंकन –09 criticism के लिए सारणी 3 से लिया गया है। अंकन –09 के अंतर्गत सारणी 3-A से अंकन 001–99 जोड़ने का निर्देश दिया गया है। सारणी 3-A के अंकन 92 For and by persons of specific classes के नीचे सारणी 7 के अंकन 04–79 तक के अंकन को लाने का निर्देश दिया गया है। मुस्लिम के लिए –297 1 अंकन को सारणी 7 से लिया गया है।

6.45 सारणी 7 के लिए वरीयताक्रम सारणी (Table of Precedence for Table 7)

जब किसी ग्रंथ/शीर्षक में सारणी 7 में वर्णित एक से अधिक पदों का प्रयोग हुआ हो तो

आधार संख्या के साथ उनमें से किसी एक को प्राथमिकता के आधार पर जोड़ते हैं। सारणी 7 के लिए निम्नलिखित प्राथमिकता सारणी निर्धारित की गयी है–

–08 Persons by physical and mental characteristics
–06 Persons by social and economic characteristics
–05 Persons by age
–04 Persons by sex and kinship characteristics
–03 Persons by racial, ethnic, national background

नोट– सारणी 7 की रूपरेखा (Summary) में –03–08 तक के अंकन को विपरीत क्रम में रखकर ही वरीयताक्रम निर्धारित किया गया है।

6.46 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Diet regulation for middle aged persons
   613.26 + -024 + -056 4 = 613.260 240 564
2. Works on naturopathy for laymen
   615.535 + -024 + -090 9 = 615.535 024 090 9
3. Customs of military persons
   391.0 + [390.] 4 + -355 = 391.043 55
4. Mathematics for engineers
   51 [0] + -024 + -62 = 510.246 2
5. Collection of Marathi literatures by Chinese
   891.46 + -080 + 92 + -299 51 = 891.460 809 229 951
6. Advice to intrafamily relationship to middle class male people
   (Used table of precedence)
   306.87 + -088 + -062 2 = 306.870 880 622
7. Folk arts by the blind persons
   745 + -088 + -081 61 = 745.088 081 61
8. Manual of sex education for school children
   613.96 + -088 + -054 4 = 613.960 880 54
9. Methods of instructions in elementry education for deaf
   372.414 + -024 + -081 62 = 372.414 024 081 62
10. Ethics of sex and reproduction among unmarried mothers
    176 + -088 + -069 47 = 176.088 069 47

6.47 अभ्यास हेतु शीर्षक (Tables for Exercise)

1. Library classification for philosopher
2. Funeral etiquette among christianity

3. Criticism of Russian literature by Sikhs
4. Calculus for management scientists
5. Customs of lawyers
6. Medical for nurses
7. Ethics of Bankers and financers
8. Sex instructions for women
9. Yoga for old aged persons
10. Need of moral and ethical education for delinquents

6.48 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् यह ज्ञात हो गया होगा कि इस सारणी व्यक्तियों को कई दृष्टिकोणों से श्रेणीबद्ध करके सूचीबद्ध किया गया है लेकिन मुख्य रूप से इन्हें दो वर्गों 01—09 एवं —1—9 में विभाजित किया गया है। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आपको ज्ञात हो गया होगा कि उक्त दो वर्गों में विभाजित व्यक्तियों का आधार क्या है। इस सारणी को भी निर्देशित एवं निर्देशित दोनों ही अवस्थाओं में प्रयुक्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सारणियों में भी कई स्थानों पर सारणी 7 के अंकन जोड़ने का प्रावधान दिया गया है। अद्यतन संस्करणों में सारणी 7 को समाप्त कर इसे सीधे प्रथम सारणी में वर्णित किया गया है।

6.49 शब्दावली (Glossary)

अग्रताक्रम — एक से अधिक अंकनों में महत्व के आधार पर अग्रता प्रदान करना।

6.50 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

1. 025.42 + -024 + -11 = 025.420 241 1
2. 395.23 + -088 + -21 = 395.230 882 1
3. 891.7 + -09 + -92 + -294 6 = 891.709 922 946
4. 515 + -024 + -65 = 515.024 65
5. 390.4 + -344 = 390.434 4
6. 61 [0] + -024 + -613 = 610.246 13

7. 174.9 + -332 = 174.933 2
8. 613.96 + -024 + -042 = 613.960 240 42
9. 613.704 6 + -024 + -056 5 = 613.704 602 405 65
10. 370.114 + -088 + -364 = 370.144 088 364

6.51 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996) ड्यूवी. दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987). प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

इकाई–6.5 : अग्रताक्रम तालिका

Unit-6.5 : Table of Precedence

इकाई की रूपरेखा

6.51 प्रस्तावना

6.52 उद्देश्य

6.53 अग्रताक्रम तालिका

 6.53.1 मानक उपविभाजनों के अंतर्गत

 6.53.2 मनोविज्ञान विषय के अंतर्गत

 5.53.3 समाज कल्याण एवं सुधार के अंतर्गत

 5.53.4 अपराध शास्त्र के अंतर्गत

6.54 वर्गीकृत शीर्षक

6.55 अभ्यास हेतु शीर्षक

6.56 सारांश

6.57 शब्दावली

6.58 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक

6.59 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

6.51 प्रस्तावना (Introduction)

अग्रताक्रम तालिका से तात्पर्य किसी पहलू या विषय में समाहित एक से अधिक विशेषताओं में से किसी एक पहलू को दूसरे से वरीयता प्रदान करना है। ऐसा प्रावधान इसलिए किया गया है क्योंकि जब वर्गीकार किसी शीर्षक को वर्गीकृत करता है लेकिन उस शीर्षक में अनेक अवधारणों का सम्मिलित होने के कारण यह तय करने में परेशानी महसूस करता है कि किसे वर्गांक प्रदान करना है तथा किसे छोड़ देना है। ऐसी स्थिति में यदि वर्गीकार को स्वायत्तता प्रदान की जाती है तथा दो अलग–अलग वर्गीकार द्वारा लिए गए स्वायत्त निर्णयों के कारण एक ही शीर्षक के पृथक–पृथक वर्गांक बनने की संभावना बनी रहती है। इसीलिए दशमलव वर्गीकरण पद्धति में वरीयताक्रम सरणी। अग्रताक्रम सारणी का प्रावधान किया गया है। वर्गीकार इनकी सहायता से बिना संशय के सही वर्गांक बनाने में सक्षम हो जाता है। यदि शीर्षक में दो या अधिक मानक उपविभाजन के अंकनों को जोड़ने की आवश्यकता हो तो किसी भी स्थिति कें सिर्फ एक ही अंकन का प्रयोग किया जाता है। वर्गीकार द्वारा इसका निर्णय सारणी 1 मानक उपविभाजन के पृष्ठ 1 पर उल्लिखित अग्रताक्रम तालिका में निर्धारित अग्रता के आधार पर किया जाना चाहिए।

6.52 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप यह बताने में सक्षम होंगे कि –

1. वरीयताक्रम सारणी की क्या आवश्यकता है।
2. इस सारणी का आशय क्या है; तथा
3. हमें इसकी सहायता कब लेनी चाहिए आदि।

6.53 अग्रताक्रम तालिका (Table of Precedences)

6.53.1 मानक उपविभाजनों के अंतर्गत

– Special topics of general applicability	–04
– Persons associated with the subject	–092
– Techniques, procedures, apparatus, equipment, materials	–028
– Study and teaching (except -074, -076, -077)	–07
– Management	–068
– Philosophy and theory	–01

क्रमशः इसी प्रकार इस तालिका को विस्तृत रूप से प्रथम सारणी के पृष्ठ 1 पर देखा जा सकता है। अनुसूची में विशिष्ट विषयों के अंतर्गत सूचीबद्ध अग्रताक्रम तालिकाओं में से कुछ तालिका दी जा रही हैं–

6.53.2 मनोविज्ञान के अंतर्गत

155 In Differential and gentic Psychology

– Specific situations	155.93
– Appraisals and texts	155.28
– Psychology of specific ages and sexes	155.4- .6
– Ethnopsychology and national psychology	155.8
– Evolutional psychology	155.7
– Environmental psychology	155.9
– Sex psychology	155.3
– Individual psychology	155.2

6.53.3 समाज कल्याण एवं सुधार के अंतर्गत

351.84 In Social welfare and corrections

– Services to the physically ill	351.841
– Services to the mentally retarded	351.843
– Services to the metnally ill	351.842
– Services to the handicapped	351.844
– Correctional administration	351.849
– Services to the people aged 65 and over	351.846
– Services to the young	351.847
– Services to the groups	351.848
– Services to the poor	351.845

6.53.4 अपराध शास्त्र के अंतर्गत

351.84 In Social welfare and corrections

– Penology	364.6

— Treatment of discharged offenders	364.8
— Offerders	364.3
— Prevention of crime and deliquency	364.4
— Causes of crime and deliquency	364.2
— Criminal offenses	364.1
— Historical and geographical treatment of crime and alleviation	364.9

इसी प्रकार वर्ग 362 Social welfare problems and services, 641.5 Cookery, 658.304 Management of specific kinds of personnel, 704.942 Human figures and their parts, 808.81- .88 Collection of specific forms, 809.8 Literature for and by specific kinds of persons, 8-9 Literature for and by specific kinds of persons (Table 3-A) आदि के अंतर्गत अग्रताक्रम सारणी का समावेश किया गया है।

6.54 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Psychology Psychology of exceptional sibling children
   155.45
2. Problems of Punjabi Urban women
   362.799
3. Child care of mentally retarted school boys
   649.15 (371.9) 28 = 649.152 8
4. Technology of nitric acid
   661.894
5. Chinese dinner for Outdoor birthday party
   641.568
6. Nude women iconographic portriates
   704.942 4

6.55 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. InternalInternal auditing for cost of current assets in a mining enterprise

2. Religious priests, reformers & covers
3. Cutwork embroidery on table covers
4. Collection of English epigrams of Eligabeth by Indian girls
5. Painting of groups of nude women
6. History of organizing conference in library and information science

6.56 सारांश (Summary)

अग्रताक्रम तालिका का आशय किसी अंकन को दूसरे अंकन से पूर्व व्यवस्थित किया जाना है। इसका तात्पर्य यदि शीर्षक में उन दोनों अवधारणाओं का प्रयोग हुआ हो लेकिन नियमानुसार किसी एक अंकन को ही जोड़ा जा सकता हो तो ऐसी स्थिति में वर्गीकार के समक्ष यह सुविधा उत्पन्न हो जाती है कि किस अंकन का प्रयोग किया जाए तथा किस अंकन को छोड़ दिया जाए। ऐसी स्थिति में अग्रताक्रम तालिका की सहायता से निर्णय लेना आसान हो जाता है। यही कारण है कि यहाँ पर इस तरह की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना थी वहाँ पर अग्रताक्रम तालिका का प्रावधान किया गया है। इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आप वरीयताक्रम की अवधारणा एवं इसकी उपयोगिता को उदाहरणों की मदद से समझ गए होंगे।

6.57 शब्दावली (Glossary)

अग्रताक्रम – एक से अधिक अंकनों में महत्व के आधार पर अग्रता प्रदान करना।

वरीयता – प्राथमिकता

6.58 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class number of Titles for Exercise)

1. 657.862 072
2. 291.62
3. 746.96

4. 828.302 080 928 27
5. 757.4
6. 020.6

6.59 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and useful Books)

- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index, 3 vols., 19th ed., Forest Press, New York.
- गौतम, जे.एन. एवं सिंह, निरंजन (1996). ड्यूवी दशमलव वर्गीकरण : क्रियात्मक विश्लेषण (संस्करण 19 एवं 20), वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा।
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification, Sterling Publishers, New Delhi.
- Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC, Ess Ess Publications, New Delhi.
- सूद, एस.पी. एवं रावतानी, एम.आर. (1987). प्रैक्टिकल डीवी दशमलव वर्गीकरण : डीडीसी 19वें संस्करण पर आधारित, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

तृतीय खण्ड
कोलन क्लासीफिकेशन
6 वाँ संशोधित संस्करण

इकाई – 7 कोलन क्लासीफिकेशन का परिचय, क्रम- विकास एवं संरचना

Introduction of Colon Classification Scheme, Development and Structure

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का उद्भव एवं विकास

7.3.1 प्रथम संस्करण (1933)

7.3.2 द्वितीय संस्करण (1939)

7.3.3 तृतीय संस्करण (1950)

7.3.4 चतुर्थ संस्करण (1952)

7.3.5 पंचम संस्करण (1957)

7.3.6 षष्टम संस्करण (1960)

7.3.6.1 षष्टम संशोधित संस्करण (1963)

7.3.7 सप्तम संस्करण (1987)

7.4 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की संरचना

7.4.1 प्रथम भाग – नियम

7.4.2 द्वितीय भाग – अनुसूचियाँ एवं अनुक्रमणिका

7.4.3 तृतीय भाग – आद्यग्रन्थों तथा धार्मिक ग्रंथों की अनुसूचियाँ

7.5 द्विबिन्दु वर्गीकरण में प्रयुक्त अंकन

7.6 ज्ञान जगत का विभाजन

7.6.1 प्रामाणिक वर्ग

7.6.2 आधार वर्ग

7.7 सारांश

7.8 शब्दावली

7.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

7.11 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

विश्व में अनेक वर्गीकरण पद्धतियाँ प्रचलन में हैं। सभी पद्धतियों की अपनी–अपनी विशेषताएँ तथा कमियाँ देखने को मिलती हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का जन्म इन्हीं वर्गीकरण पद्धतियों के मूल्यांकन की परिणति है। डॉ. एस.आर. रंगनाथन की इच्छा थी कि एक ऐसी वर्गीकरण पद्धति की रचना की जाये जो नए–नए विषयों के मध्य समन्वय स्थापित करने के साथ–साथ भविष्य में ज्ञान जगत में जन्म लेने वाली अवधारणाओं को भी समाहित कर सके। उपर्युक्त के अतिरिक्त जटिल विषयों एवं मिश्रित विषयों से संबंधित शीर्षकों को सफलतापूर्वक वर्गीकृत कर सके। इस वर्गीकरण पद्धति के प्रणेता डॉ. एस.आर. रंगनाथन का जन्म 12 अगस्त, 1892 में हुआ था। इन्होंने अपनी स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा क्रमशः 1913 एवं 1916 में मद्रास विश्वविद्यालय से पूर्ण की। इन्होंने 1917 से 1920 तक राजकीय कॉलेज, मद्रास में गणित के प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। प्रसीडेंसी कॉलेज, मद्रास में गणित के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। मद्रास में गणित के अध्यापन के दौरान रंगनाथन पुस्तकालय की कार्यप्रणाली पर बहुत अधिक दिलचस्पी लिया करते थे तथा इस क्षेत्र में कुछ करना चाहते थे परिणामस्वरूप मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें सन 1924 में लंदन भेजा गया।

7.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपको ज्ञात होगा कि –

- इस पद्धति का विकास कैसे हुआ?
- इसमें प्रयुक्त अंकन एवं उसकी संख्या
- इसकी संरचना किस प्रकार की है; तथा
- इसको प्रयोग करने के नियम आदि।

7.3 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का उद्भव एवं विकास (Origin and Development of Colon Classification Scheme)

डॉ. रंगनाथन को सन 1924 में मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा लंदन भेजा गया वहाँ उन्हें अनेक पुस्तकालयों के निरीक्षण का अवसर मिला। उस समय अनेक वर्गीकरण प्रणालियॉ प्रचलित थी जिनका अध्ययन करने के पश्चात डॉ. रंगनाथन ने अनुभव किया कि उक्त वर्गीकरण प्रणालियाँ ज्ञान जगत को ठीक प्रकार से वर्गीकृत करने में सक्षम नहीं है। एक मनीषी एवं दूरदृष्टा की भाँति इन्होंने यह जान लिया कि ऐसे ज्ञान को, जो अनन्त है, अपरिमेय है, तथा निरंतर गतिमान एवं वर्धनशील है, को वर्गीकृत करने के लिए ऐसी वर्गीकरण प्रणाली की आवश्यकता है जो ज्ञान की इस निरंतर वृद्धि से उत्पन्न नये–नये विषयों को वर्गीकृत कर उसे सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने की क्षमता रखती हो। इन्हें इस बात का

आभास था कि परिगणनात्मक पद्धति द्वारा वर्गीकरण कार्य इतनी दक्षता से नहीं किया जा सकता जितना कि वैश्लेषी–संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति के द्वारा।

डॉ. रंगनाथन की विचारधारा सर्वथा नवीनता लिए हुए और विस्तारशीलता के गुण पर आधारित थी जैसे न्यूटन ने एक सेब के फल को पेड़ से नीचे गिरने को आधार बनाकर एक नया सिद्धांत बना डाला उसी प्रकार रगनाथन ने सैफरिज में लंदन डिपाटमेंटल स्टोर पर बच्चों को खिलौने बनाने वाले यंत्र को देखकर यह अनुमान लगाया कि जिस प्रकार एक खिलौना बेचने वाला एक ही खिलौने को धातु की रस्सियों, नटों, बोल्टों से मनचाहा रूप दे सकता है। उसी प्रकार अरैबिक अंकों तथा रोमन अक्षरों को आधार बनाकर विभिन्न योजक चिन्हों की सहायता से अनेक प्रकार के जटिल एवं मिश्रित विषयों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं। इसी विचारधारा से प्रेरित होकर वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए सर्वप्रथम योजक चिन्ह कोलन (:) का प्रयोग किया गया था। 1925 में इंग्लैण्ड से लौटते समय अपने यात्राकाल में डॉ. रंगनाथन ने शिप लाइब्रेरी की पुस्तकों को इसी विचारधारा के माध्यम से वर्गीकृत करने का प्रयास किया। इसके पश्चात सर्वप्रथम मद्रास विश्वविद्यालय पुस्तकालय की 30,000 शीर्षकों के एक मुद्रित कैटलॉग को अपने द्वारा निर्मित वर्गीकरण पद्धति द्वारा वर्गीकृत किया।

कुछ समय बाद रंगनाथन को यह आभास हो गया कि कोलन युक्ति अत्यधिक उपयोगी है। अतः इन्होंने विषय विशेषज्ञों का सहयोग प्राप्त कर इसकी अनुसूचियों के निर्माण का कार्य जारी रखा। सन 1927 में अनुसूचियों के निर्माण का कार्य पूरा कर लिया गया। इनके प्रयोग करने के नियम भी बनाए गए। इसके पश्चात् 1928–31 तक पाठकों की प्रतिक्रियाओं का सूक्ष्म अध्ययन कर अनेक अनुसूचियों में आवश्यक सुधार एवं बदलाव किये गये। फलस्वरूप 1932 में यह पद्धति मुद्रण के लिए तैयार हो गई। प्रथम संस्करण 1933 में प्रकाशित हुआ था।

7.3.1 प्रथम संस्करण (1933)

प्रथम संस्करण सन 1933 में प्रकाशित हुआ था यह अत्यंत सूक्ष्म संस्करण था। इस संस्करण में केवल द्विबिन्दु (:) संयोजी चिन्ह ही प्रयोग किया गया था इसीलिए इसका नाम द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति रखा गया। इसमें मिश्रित अंकनों जैसे रोमन बड़े एवं छोटे अक्षर (Capital and small letters), अरैबिक अंकों तथा योजक चिन्ह के रूप में केवल द्विबिन्दु (Colon) का प्रयोग किया गया है। इसमें सामान्य विभाजनों (Common sub-divisions), भौगोलिक विभाजनों (Geographical divisions) तथा भाषा विभाजनों के लिए विशिष्ट अनुसूचियाँ दी गई थीं। पंक्तियों में ग्राह्यता का गुण प्राप्त करने के लिए अष्टक विधि (Octave device) का प्रयोग किया गया। इसके अलावा इसमें दशमलव खण्डन विधि, भौगोलिक विधि, कोलन विधि, कालक्रम विधि, विषय विधि, अध्यारोपण विधि, वरेण्य श्रेणी विधि तथा अंगीकृत श्रेणी विधि का प्रयोग किया गया। ग्रंथ संख्या तथा दशा संबंधों का

प्रावधान भी इस संस्करण में किया गया था।

7.3.2 द्वितीय संस्करण (1939)

डॉ. एस.आर. रंगनाथन द्वारा मिर्मित सिद्धांतों के आधार पर प्रथम संस्करण का मूल्यांकन किया गया तथा जो भी कमियाँ इंगित की गईं इन्हें इस द्वितीय संस्करण में दूर कर दिया गया। इस संस्करण में प्रथम बार पाँच मूलभूत श्रेणियों (PMEST) को वर्गीकरण का आधार बनाया गया। इस संस्करण में एक चतुर्थ भाग को जोड़कर 3,000 उदाहरणों को सम्मिलित किया गया।

7.3.3 तृतीय संस्करण (1950)

तृतीय संस्करण सन 1950 में प्रकाशित किया गया था। इस संस्करण में प्रत्येक मुख्य वर्ग के लिए पाँच मूलभूत श्रेणियों के अर्थ में पृथक–पृथक पक्ष परिसूत्र (Fact Formula) दिया गया तथा प्रत्येक के लिए संयोजी चिन्ह कोलन ही रखा गया।

7.3.4 चतुर्थ संस्करण (1952)

सन 1952 में प्रकाशित इस संस्करण के प्रत्येक श्रेणी के संयोजी चिन्ह कोलन के स्थान पर पृथक–पृथक संयोजी चिन्हों का प्रयोग किया गया, जो इस प्रकार है –

व्यक्तित्व	– Personality	(P)	कोमा	(,)
पदार्थ	– Matter	(M)	सेमीकोलन	(;)
ऊर्जा	– Energy	(E)	कोलन	(:)
स्थान	– Space	(S)	डाट	(.)
काल	– Time	(T)	डाट	(.)

इस संस्करण में आवर्तन (Rounds) and स्तर (Levels) की अवधारणा को भी सम्मिलित किया गया।

अभ्यास प्रश्न 1

1. रंगनाथनकृत वर्गीकरण पद्धति का नाम कोलन क्लासिफिकेशन क्यों है?
2. कोलन क्लासिफिकेशन का प्रथम संस्करण कब प्रकाशित हुआ था?
3. पाँच मूलभूत श्रेणियों हेतु पृथक–पृथक संयोजी चिन्हों का प्रयोग किस संस्करण में किया गया?
4. रंगनाथन को किस वर्ष लंदन मद्रास विश्वविद्यालय भेजा गया था?

7.3.5 पंचम संस्करण (1957)

यह संस्करण सन 1957 में प्रकाशित हुआ था। इस संस्करण में नियमों तथा अनुसूचियों दोनों में ही अनेक परिवर्तन किए गए। जिन अनुसूचियों में संशोधन करना पड़ा वे कृषि, ललित कलाएँ, कानून तथा भौगोलिक एकल से संबंधित हैं। सन 1956 के बाद अनेक भारतीय राज्यों के पुनर्गठन के कारण भौगोलिक एकल संख्याओं में परिवर्तन एवं संशोधन करना आवश्यक हो गया था।

7.3.6 षष्टम संस्करण (1960)

इस संस्करण का प्रकाशन सन 1960 में किया गया था। इस संस्करण में नियमों से संबंधित अध्यायों वाले भाग को पुनः व्यवस्थित किया गया। इसके अलावा स्थान तथा काल के द्वितीय स्तर (Second level of space and time) तथा ऊर्जा सामान्य एकलों (Energy common Isolates) का प्रावधान किया गया। अनेक ग्रीक अक्षरों के प्रयोग को समाप्त करने का प्रयास किया गया।

7.3.6.1 षष्टम संशोधित संस्करण (1963)

यह संस्करण षष्टम संस्करण में आवश्यक संशोधन करके सन् 1963 में प्रकाशित हुआ था। अधिकांश विश्वविद्यालय में यही संस्करण अध्ययन एवं अध्यापन हेतु उपयोग किया जा रहा है। अध्ययन सामग्री के द्विबिन्दु वर्गीकरण से संबंधित इकाई का लेखन इसी सामग्री पर आधारित है। इस संस्करण में नियम भाग व अनुसूचियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये। इसके प्रारंभ में जोड़े गए परिशिष्ट (Annnexure) में षष्टम संस्करण में किये गये संशोधनों, परिवर्तनों एवं मुद्रण की त्रुटियों को पृष्ठवार इस प्रकार दिया गया है–

1. पृष्ठ 1.51 पर दिये गये नियम 40 को बदलकर भौगोलिक अनुसूची को चार भागों में विभाजित कर दिया है। संबंधित नियम हेतु परिशिष्ट पृष्ठ 18 से 21 को देखा जा सकता है।
2. ऐतिहासिक पुरुषों की जीवनी के वर्गांक निर्मित करने के लिए V9y7 (पृ. 1.116) को संशोधित किया गया है। संशोधित नियम परिशिष्ट के पृष्ठ 23 पर दिये गये हैं।
3. स्थान एकल द्वितीय स्तर (S2) के अनुभाग पर भी एकल संस्थाओं (पृ. 2.17) को बदलकर उनके स्थान पर परिशिष्ट पृष्ठ 23 पर नई एकल संख्याएँ दी गई हैं।
4. इसी प्रकार पृष्ठ 2.88 पर मुख्य वर्ग M (Useful Arts) की एकल संख्या M3 से M18 तक की संख्याओं को बदलकर उनके स्थान पर संशोधित एकल संख्याओं को पृष्ठ 25 पर दिया गया है। इसके अतिरिक्त M7 Textile के लिए संशोधित परिसूत्र (Formula) भी दिया गया है।
5. पृष्ठ 2.108 पर मुख्य वर्ग V History के अंतर्गत एकल संख्या 191 Diplomacy से 1954 Disarmament तक की सात संख्याओं को बदलकर उनके स्थान पर परिशिष्ट के पृष्ठ 26 पर V:19 अतिथेय वर्ग (Host Class) मान लिया गया है तथा इसके लिए (P) पक्ष के रूप में उस देश को जिसकी ओर विदेश नीति उन्मुख है तथा (P2) पक्ष के रूप में विदेश नीति के विषयों को विषय विधि (Subject Divice)

से प्राप्त करने का नियम है। यहाँ (P2) पक्ष के लिए कतिपय अतिरिक्त एकल संख्याएँ भी दी गई हैं, कुछ अन्य संशोधन भी किए गए हैं।

7.3.7 सप्तम् संस्करण (1987)

यह ऐसा संस्करण है जिसके प्रकाशन से पूर्व ही डॉ. रंगानाथन का स्वर्गवास (1972) में हो गया था। इसको दो भागों में प्रकाशित करने की योजना थी लेकिन सिर्फ प्रथम खण्ड ही प्रकाशित हो सका है। यह संस्करण पूर्ण वैश्लेषी–संश्लेषणात्मक (Analytico-Synthetic) पद्धति है। इस संस्करण में पूर्व संस्करणों की तुलना में अनेक प्रकार के संयोजी चिन्ह भी प्रयोग किये गये हैं, जैसे–Asterisk (*), Ampersand (&), Double inverted comma ("), Equal sign (=), Plus (+), Minus (–) इत्यादि।

पूर्ण संस्करण में ऊर्जा पक्ष के कई एकल संख्याओं को ऊर्जा पक्ष से हटाकर पदार्थ पक्ष में सूचीबद्ध किया गया है। इसी प्रकार पदार्थ पक्ष को तीन भागों में विभक्त किया गया है– Matter material, Matter property, Matter method। इसके दूसरे खण्ड में नियमों एवं अनुक्रमणिका को समाहित कर प्रकाशित करने की योजना थी लेकिन ऐसा हो नहीं सका। यही कारण है कि सातवें संस्करण का अध्ययन–अध्यापन एवं पुस्तकालयों में इसका व्यावहारिक उपयोग नहीं हो सका।

7.4 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की संरचना (Structure of Colon Classification Scheme)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति (6th revised edition) एक पूर्णतः पक्षात्मक पद्धति (Faceted scheme) पर आधारित वर्गीकरण पद्धति है। इसके वर्गांक मुख्यतः दो चरणों से गुजरने के बाद निर्मित किये जाते हैं– (1) विषयों को पक्षों में विश्लेषण कर उनको पाँच मूलभूत श्रेणियों में परिवर्तित करना एवं (2) विषयों के पक्षों को निर्धारित संयोजी चिन्हों के साथ संश्लेषित करना।

इस पद्धति का 6ठवाँ संशोधित संस्करण तीन भागों में विभाजित कर मूर्तरूप दिया गया है। विवरण इस प्रकार है–

(क) भाग 1 : नियम (Rules)

(ख) भाग 2 : अनुसूचियाँ (Schedules) एवं अनुक्रमणिका (Indexes)

(ग) भाग 3 : आद्य ग्रंथों एवं धार्मिक ग्रंथों की अनुसूचियाँ (Schedules of classics and sacred books)

इस वर्गीकरण पद्धति के पृष्ठों का विभाजन एवं व्यवस्थापन सामान्य पुस्तकों से भिन्न पुस्तक के निचले भाग पर अंकित किया गया है। प्रथम भाग पृष्ठ 2.1 से 1.172, दूसरा भाग 2.1 से 2.124 तथा तृतीय भाग पृष्ठ 3.1 से प्रारंभ होकर 3.126 तक व्यवस्थित

है। पृष्ठ संख्या का प्रथम अंक संबंधित भाग का प्रतीक है तथा दशमलव शून्य के बाद वाले अंक वास्तविक पृष्ठ संख्या को इंगित करता है।

7.4.1 प्रथम भाग – नियम (Rules)

इस प्रथम भाग में अनुसूची के प्रयोग संबंधी नियमों को प्रथम अध्याय से लेकर आठवें अध्याय तक इस प्रकार उल्लिखित किया गया है–

अध्याय–1 इस अध्याय में आवाहन संख्या (Class Number) को विस्तार से समझाया गया है। देखें पृ. 1.3 से 1.4 तक।

अध्याय–2 इस अध्याय में वर्ग संख्या की परिभाषा एवं वर्ग संख्या से संबंधित नियमों को समझाया गया है। देखें पृ. 1.5 से 1.8 तक।

अध्याय–3 यह अध्याय ग्रंथ संख्या (Book Number) से संबंधित है। इसमें ग्रंथ संख्या निर्धारित करने की विभिन्न विधियों को विस्तार से समझाया गया है। देखें पृ. 1.9 से 1.17 तक।

अध्याय–4 इस अध्याय में संग्रह संख्या (Collection Number) को विस्तृत रूप से समझाया गया है। देखें पृ. 1.18 से 1.19 तक।

अध्याय–5 इस अध्याय में पक्ष, मुख तथा युक्तियों की अवधारणाओं का परिचय है जिसमें वर्ग संख्या निर्मित करते हैं तथा पक्षों में केंद्र बिन्दुओं का निर्माण किया जाता है। देखें पृ. 1.20 से 1.34 तक

अध्याय–6 इस अध्याय में संक्षेपणों का वर्णन किया गया है जिसमें छात्र द्विबिन्दु वर्गीकरण में प्रयुक्त संक्षेपण को आसानी से समझ सकें। देखें पृ. 1.35 से 1.36 तक।

अध्याय–7 इस अध्याय के अंतर्गत वर्गीकरण के उपसूत्रों को विस्तार से समझाया गया है। देखें पृ. 1.37 से 1.38 तक।

अध्याय–8 सहायक क्रम प्राप्त करने के नियमों एवं सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन इस अध्याय में किया गया हैं देखें पृ.1.39 से 1.40 तक।

प्रथम भाग नियमों के अंतर्गत ही

अध्याय–1–5 इन अध्यायों में मुख्य वर्गों (Main Class), सामान्य एकलों (Common Isolate), स्थान एकलों (Space Isolate) एवं भाषा एकलों (Language Isolate) से संबंधित नियमों को विस्तृत रूप से समझाया गया है। देखें पृ.1. 41 से 1.54 तक।

अध्याय–6 इस अध्याय में दशा संबंध (Phase Relation) : अंतर विषय (Intra subject relation) अंतःपक्ष (Intra facet relation) एवं अंतः पंक्ति संबंधों (Intra array relation) को समझाया गया है। देखें पृ. 1.55 से 1.58 तक।

अध्याय–7 इस अध्याय में वरेण्य ग्रंथ विधि (Classic Book Method) को समझाया गया है। इस विधि के माध्यम से एवं इससे संबंधित अन्य क्षेत्रों के वरेण्य ग्रंथों को सहायक क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है। देखें पृ.1.59 से 1.61 तक।

इसके अतिरिक्त इस भाग में अध्याय 9z (Generalia) से अध्याय Z (Law) के अंतर्गत संबंधित मुख्य वर्गों के प्रयोग संबंधी नियमों को पृथक–पृथक अध्यायों में विस्तृत तरीके से समझाया गया है। देखें पृ. 1.62 से 1.122 तक

इस भाग के अंत में अनुक्रमणिका (Index) दी गयी है।

7.4.2 द्वितीय भाग – अनुसूचियाँ एवं अनुक्रमणिका

इस भाग में वर्गीकरण की अनुसूचियाँ (Schedules of Classification) दी गई हैं। इसके अंतर्गत वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त की जाने वाली एकल संख्याओं का उल्लेख किया गया है। अनुसूचियों में एकल संख्याएँ प्रायः प्राकृतिक भाषा के पदों (Terms) के लिए प्रयोग की जाने वाली कृत्रिम संख्या (Artificial language) में होती है जिनका प्रयोग किसी भी वर्गीकरण प्रणाली में वर्गों को सहायक अनुक्रम प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस भाग के प्रारंभ में अध्याय–02 पुस्तक संख्या (Book Number) को निर्मित करने के विभिन्न पक्ष विभाजकों की अनुसूचियाँ दी गयी हैं। एक ही विशिष्ट विषय को, एक से अधिक पुस्तकों को एवं विभिन्न खण्डों की पुस्तकों को पृथक–पृथक व्यक्तित्व प्रदान करने की दृष्टि से ग्रंथांक के परिसूत्र का विशेष महत्व है। देखें पृ.2.3

अन्य अध्यायों का विवरण निम्नानुसार है–

अध्याय–1 यह अध्याय मुख्य वर्गों (Main Classes) से संबंधित है। इसमें ज्ञान जगत को द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के अनुसार विभिन्न मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है।

प्रत्येक मुख्य वर्ग के लिए प्रतीक चिन्ह प्रदान किए गए हैं। इस अध्याय के माध्यम से संबंधित पाठक को एक नजर में सभी मुख्य वर्गों के बारे में जानकारी मिल जाती है। देखें पृ.2.4

अध्याय–2 इस अध्याय में सामान्य एकलों (Common Isolate) के प्रकारों को दर्शाया गया है। दूसरे शब्दों में यह अध्याय सामान्य एकलों को दर्शाने वाली अनुसूची है। देखें पृ.2.5 से 2.6 तक।

अध्याय–3 यह अध्याय समय पक्ष को परिलक्षित करता है। इस अनुसूची में कालक्रम विभाजन को दिखाया गया है।

उदाहरण : (N=1900-1999 (बीसवीं शताब्दी), M=1800-1899 (19वीं शताब्दी)

इस अध्याय में काल के द्वितीयक स्तर की एकल संख्याओं को दर्शाया गया है। जैसे "c" day time, "d" NIght, "n1" Spring, "n3" Summer आदि। देखें पृ.2.7

अध्याय–4 यह अध्याय भौगोलिक विभाजन से संबंधित है इसके अंतर्गत विश्व के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के लिए एकल संख्याएँ दी गई हैं।

जैसे :	एशिया	–	4	जापान	–	42
	भारत	–	44	दिल्ली	–	4451
	ग्रेट ब्रिटेन	–	56	आसाम	–	4461
	यूनाइटेड स्टेट	–	73	न्यूयॉर्क	–	7311

द्वितीय स्तर के अंतर्गत प्राकृतिक विभाजन से संबंधित एकल संख्याएँ संशोधन परिशिष्ट पृष्ठ 26 पर दी गयी है। 2.17 पर दी गयी एकल संख्याओं को विस्तृत कर दिया गया है।

जैसे :	g7	=	Mountain	P1	=	River
	p6	=	Lake	e	=	Geosphere
	r	=	Ocean	f	=	Forest
	gl	=	Valley			
	e5	=	Delta			

इसी अध्याय के अन्त में भौगोलिक एकल संख्याओं की वर्णक्रम में व्यवस्थित अनुक्रमणिका दी गयी है। देखें पृ.2.8 से 2.25 तक।

अध्याय–5 यह अध्याय भाषा एकल से संबंधित है। मुख्य वर्ग O Literature तथा P Linguistics के लिए [P] पक्ष की एकल संख्याएँ इसी अध्याय से लेने का नियम है।

अध्याय–6 इस अध्याय में दशा संबंध से संबंधित तालिका दी गयी है। प्रत्येक प्रकार के संबंध को प्रकट करने के लिए पृथक–पृथक प्रतीक चिन्ह दिये गये हैं। इस तालिका के माध्यम से एक विषय का दूसरे विषय के साथ संबंध प्रदर्शित किया जाता है ये संबंध दो विषयों के मध्य, एक विषय के दो पक्षों

के मध्य तथा एक पक्ष की दो एकल संख्याओं के बीच प्रदर्शित किये जा सकते हैं। देखें पृ.2.28

अध्याय 9a Generalia Bibliography से अध्याय Z Law तक मुख्य वर्गों को विभाजित एवं सूचीबद्ध किया गया है। प्रत्येक मुख्य वर्ग में संबंधित विषय की अनुसूचियाँ दी गई हैं। इनका प्रयोग पुस्तकों के वर्गांक निर्मित करने हेतु किया जाता है। ये वर्गांक पुस्तक के विषय का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरे शब्दों में जब वर्गीकार किसी पुस्तक को वर्गीकृत करता है तो वर्गांक निर्मित करने हेतु एकल संख्याओं को संबंधित विषय की अनुसूची से लिया जाता है। द्वितीय भाग के अंत में अनुसूचियों के प्रयोग संबंधी निर्देश तथा उसमें प्रयुक्त पदों की एक अनुक्रमणिका दी गई है। इनको वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है।

अन्य अनुक्रमणिकाएँ (Other Indexes)

उपर्युक्त अनुक्रमणिका के अतिरिक्त भी इस पद्धति में अन्य अनुक्रमणिकाएँ हैं जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है–

1. नियम भाग के अंत में, नियम भाग में प्रयुक्त विभिन्न पदों से संबंधित अनुक्रमणिका पृष्ठ 1.123 पद दी गई है। पद के सामने जिस अध्याय व उसके अनुभाग से संबंधित पद प्रयुक्त हुआ है उसका उल्लेख किया गया है इसका व्यवस्थापन वर्णानुक्रम में है।
2. भौगोलिक एकलों की अनुक्रमणिका भी अध्याय 4 के बाद पृष्ठ 2.18 पर दी गई है।
3. मुख्य वर्ग I Botany के [P] पक्ष (Natural groups of plants) के लिए प्रयुक्त एकलों की एक अनुक्रमणिका पृष्ठ 2.61 पर दी गई है।
4. मुख्य वर्ग K Zoology के [P] पक्ष (Natural groups of animals) के लिए वर्णानुक्रम में व्यवस्थित अनुक्रमणिका पृष्ठ 2.76 पर दी गई है।
5. द्विबिन्दु वर्गीकरण के भाग 3 में उल्लिखित वरेण्य श्रेणी ग्रंथों (Classics) तथा पवित्र धर्म ग्रंथों (Sacred Books) के लिए भी एक अनुक्रमणिका पृष्ठ 3.54–3. 126 पर दी गई है। साथ में वर्गांक भी दिया गया है।

7.4.3 तृतीय भाग – आद्य ग्रंथों तथा धार्मिक ग्रंथों की अनुसूचियाँ (Schedules of Classics and Sacred Books)

अंतिम तृतीय भाग में भारतीय धर्म ग्रंथों, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति तथा भारतीय भाषाशास्त्र इत्यादि विषयों के बने बनाए वर्गांक दिये गये हैं। ये ग्रंथ भारत या अन्य विदेशी पुस्तकालयों में भी उपलब्ध है अतः इनके निर्मित वर्गांक देना कई दृष्टियों से उपयोगी हैं।

अभ्यास प्रश्न 2

निम्नखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

5. द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के पाँचवें एवं छठवें संस्करण का प्रकाशन कब हुआ था?
6. द्विबिन्दु वर्गीकरण के 7वें संस्करण को कितने भागों में प्रकाशित करने की योजना थी।
7. द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के द्वितीय भाग में क्या दिया गया है?
8. ग्रंथ संख्या को प्रथम भाग के किस अध्याय में वर्णित किया गया?

7.5 द्विबिन्दु वर्गीकरण में प्रयुक्त अंकन (**Notation Used in Colon Classification**)

वर्गीकरण पद्धतियों में सैद्धांतिक पक्ष को व्यक्त करने हेतु जिन संकेतों या चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उसे अंकन कहते हैं। वास्तव में बिना अंकन के किसी वर्गीकरण पद्धति की कल्पना नहीं की जा सकती। इस पद्धति में मिश्रित अंकनों (mixed notations) का प्रयोग होने के कारण ही यह पक्षात्मक एवं वैश्लेषी–संस्लेशित पद्धति के रूप में प्रतिस्थापित हो सकी है।

इस पद्धति में प्रयुक्त किए गए अंकनों का विवरण निम्नलिखित है–

1. रोमन वर्णमाला (बड़े) – 26
   A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z
2. रोमन वर्णमाला (छोटे) – 23 (i, l, o को छोड़कर)
   a b c d e f g h j k m n p q r s t u v w x y z
3. भारतीय–अरैबिक संख्या – 10
   0 1 2 3 4 5 6 7 8 9
4. ग्रीक वर्णमाला के अक्षर – 02
   D å
5. विराम चिन्ह – 06
   Comma अल्प विराम (,)
   Semi colon अर्द्ध विराम (;)
   Colon द्विबिन्दु (:)
   Dot बिन्दु (.)
   Single inverted comma (‘)
   विपर्यस्त अल्प विराम (–)
   Hyphen बड़ी रेखा
6. छोटा कोष्ठक (Circular Brackets) – 02

आरंभिक कोष्ठक (Starter) (( )

बंधकार कोष्ठक (Arrester) ( ))

7. एरो (Arrow) – 02

आगे की ओर (Forward) (®)

पीछे की ओर (Backward) (¬)

नोट– द्विबिन्दु वर्गीकरण के 7वें संस्करण में उपर्युक्त के अतिरिक्त भी अनेक अंकनों का प्रयोग किया गया है।

अभ्यास प्रश्न 3

निम्नखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

9. रोमन वर्णमाला (छोटे) कितने प्रयुक्त किये गये हैं?

10. बड़ी रेखा (Hyphen) प्रयुक्त हुई है या नहीं?

7.6 ज्ञान जगत का विभाजन (Mapping of Universe of Knowledge)

ग्रंथालय जगत के विद्वान डॉ. रंगनाथन महोदय ने ज्ञान जगत को विभाजित करके विभिन्न विषयों में परिवर्तित किया है जिन्हें मुख्य वर्ग कहते हैं। इसके लिए उन्होंने आंशिक व्याप्ति (Partial Comprehension) की संज्ञा दी है। विभिन्न गुणों के आधार पर प्रत्येक मुख्य वर्ग (Main Class) को पक्षों (Facets) में विभाजित एवं पक्ष–क्रम के सिद्धांतों के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। इसके पश्चात् सभी पक्षों को एकलों (Isolate) में विभाजित किया है एवं एकल को उप–एकलों में विभाजित किया गया है।

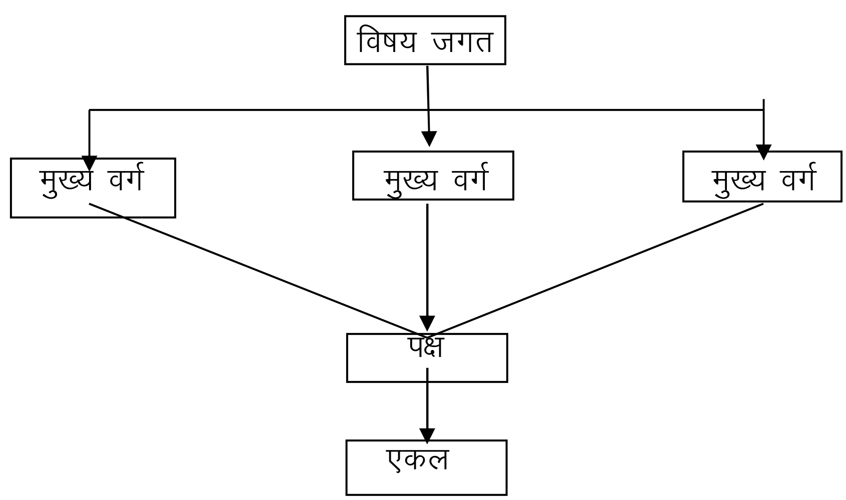

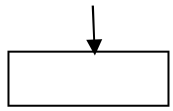

उप–एकल

सैद्धांतिक रूप से ज्ञान को तीन व्यापक वर्गों में विभक्त किया गया है–

z	सामान्य वर्ग (Generalia)
A	प्राकृतिक विज्ञान (Natural Sciences)
MZ	मानविकी एवं समाज विज्ञान (Humanities and Social Sciences)

इन व्यापक वर्गों को आंशिक व्यापक वर्गों में विभाजित किया है–

A	प्राकृतिक विज्ञान (Natural Sciences)
AZ	गणितीय विज्ञान (Mathematical Sciences)
BZ	भौतिक विज्ञान (Physical Sciences)
G	जीव विज्ञान (Biology)
MZ	मानविकी एवं समाज विज्ञान (Humanities and Social Sciences)
MZ A	मानविकी (Humanities)
NX	साहित्य एवं भाषा शास्त्र (Literature and Language)
å	समाज विज्ञान (Social Sciences)

व्यापक मुख्य वर्गों की सम्मिलित तालिका को निम्न प्रकार से विभाजित कर दर्शा सकते हैं–

अंकन	मुख्य वर्ग	(Main Class)
z	सामान्य वर्ग	Generalia
1	ज्ञान जगत	Universe of Knowledge
2	पुस्तकालय विज्ञान	Library Science

3	पुस्तक विज्ञान	Book Science
4	पत्रकारिता	Journalism
A	प्राकृतिक विज्ञान	Natural Science
AZ	गणितीय विज्ञान	Mathematical Sciences
B	गणित	Mathematics
BZ	भौतिकीय विज्ञान	Physical Sciences
C	भौतिकी	Physics
D	अभियांत्रिकी	Engineering
E	रसायन शास्त्र	Chemistry
F	प्रौद्योगिकी	Technology
G	जीव विज्ञान	Biology
H	भू–विज्ञान	Geology
HX	खनिकर्म	Mining
I	वनस्पति विज्ञान	Botany
J	कृषि	Agriculture
K	जन्तु विज्ञान	Zoology
KX	पशुपालन	Animal Husbandry
L	चिकित्सा विज्ञान	Medicine
LX	औषधि विज्ञान	Pharmacognosy
M	उपयोगी कलाएँ	Uuseful Arts
D	आध्यात्मिक अनुभव व रहस्यवाद	Spiritual Experience & Mysticism
MZ	मानविकी एवं समाज विज्ञान	Humanities and Social Sciences
MZ A	मानविकी	Humanities

N	ललित कलाएँ	Fine Arts
NZ	साहित्य एवं भाषा	Literature and Language
O	साहित्य	Literature
P	भाषाविज्ञान	Linguistics
Q	धर्म	Religion
R	दर्शन	Philosophy
S	मनोविज्ञान	Psychology
å	समाज विज्ञान	Social Sciences
T	शिक्षा	Education
U	भूगोल	Geography
V	इतिहास	History
W	राजनीति शास्त्र	Political Science
X	अर्थशास्त्र	Economics
Y	समाजशास्त्र	Sociology
YX	सामाजिक कार्य	Social work
Z	विधि	Law

7.6.1 प्रामाणिक वर्ग (Canonical Classes)

डॉ. रंगनाथन महोदय ने मुख्य वर्गों का विभाजन करने के उपरांत कुछ मुख्य वर्गों को प्रामाणिक वर्गों में विभाजन किया है। यह विभाजन पौराणिक परंपराओं को आधार बनाकर किया गया है। मुख्य वर्ग B – गणित, C – भौतिक विज्ञान, H – भू–गर्भ विज्ञान, N – ललित कलाएँ, R –दर्शन में इस प्रकार के विभाजन को मान्यता दी गई है।

B	**गणित**	**Mathematics**
B 1	अंक गणित	Arithmetic
B 2	बीज गणित	Algebra

B 3	विश्लेषण	Analysis
B 4	अन्य विधियाँ	Other Methods
B 5	त्रिकोणमिती	Trignometry
B 6	ज्यामिती	Geometry
B 7	बल–विज्ञान	Mechanics
B 8	भौतिक–गणित	Physico-Mathematics
B 9	खगोल शास्त्र	Astronomy
C	**भौतिकी**	**Physics**
C 1	सिद्धांत	Fundamentals
C 2	पदार्थ के गुण	Properties of Matter
C 3	ध्वनि	Sound
C 4	ऊष्मा	Heat
C 5	प्रकाश, तरंगे	Light, Radiation
C 6	विद्युत	Electricity
C 7	चुम्बक विज्ञान	Magnetism
C 8	ब्रम्हाण्डीय परिकल्पना	Cosmic Hypothesis
H	**भू–विज्ञान**	**Geology**
H 1	खनिज विज्ञान	Mineralogy
H 2	शैल विज्ञान	Petrology
H 3	संरचना विज्ञान	Structural Geology
H 4	गणित भू–विज्ञान	Dynamic Geology
H 5	स्तरित शैल विज्ञान	Stratigraphy

H 6	पुरा जन्तु विज्ञान	Palaeontology
H 7	आर्थिक भू–विज्ञान	Economic Geology
H 8	ब्रम्हाण्डीय परिकल्पना	Cosmic Hypothesis
N	**ललित कलाएँ**	**Fine Arts**
NA	स्थापत्य कला	Architecture
NB	नगर नियोजन	Town Planning
ND	मूर्ति कला	Sculpture
NQ	चित्रकला	Painting
NR	संगीत	Music
R	**दर्शन**	**Philosophy**
R 1	तर्क शास्त्र	Logic
R 2	ज्ञान मीमांसा	Epistemology
R 3	तत्वमीमांसा	Metaphysics
R 4	नीति शास्त्र	Ethics
R 5	सौंदर्य शास्त्र	Aesthetics

7.6.2 आधार वर्ग (Basic Class)

आधार वर्ग सामान्यतः किसी एक मुख्य वर्ग (Main class) या प्रामाणिक वर्ग (Cononical class) को कहते हैं। जैसे नीति शास्त्र (Ethics) प्रामाणिक वर्ग है लेकिन मुख्य वर्ग औषधि विज्ञान (Pharmacognosy) अनेक आधारवर्गों का एकत्रीकरण है।

LX	औषधि विज्ञान	Pharmacognosy
LX 3	औषधि सिद्धांत	Pharmacology
LX 8	औषधालय	Pharmacy

किसी भी आधार वर्ग के अध्ययन के लिए उसमें सम्मिलित प्रामाणिक वर्ग का अध्ययन बहुत आवश्यक है जिसके लिए यहाँ पर आधार वर्ग की संज्ञा दी गई है।

7.7 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आपको द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के उद्भव एवं विकास के साथ–साथ इसके समस्त पहलुओं की जानकारी हो गई होगी। इस इकाई में द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की संरचना को विस्तारपूर्वक समझाया गया है तथा 7वें संस्करण की भी जानकारी संक्षिप्त में दी गई है। चूंकि छात्रों को 6वें संस्करण (संशोधित) से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान कराया जाना है। इसलिए इसी बात को ध्यान में रखकर इस इकाई की रचना की गई है। इस पद्धति की विशेषता इसका व्यापक अंकन है। व्यापक अंकन के कारण ही यह पक्षात्मक पद्धति का उत्तम उदाहरण है।

7.8 शब्दावली (Glossary)

पक्ष (Facet)	–	एकलों का वह समूह जो मूलभूत श्रेणी के आधार पर निर्मित हुआ है।
एकल विचार (Isolate Idea)	–	एकल विचार को अभिव्यक्त करने वाला पद।
अंकन (Notation)	–	वर्गीकरण पद्धतियों में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले कृत्रिम संकेत।
अनुसूची (Schedules)	–	विषय जगत के समस्त विषयों एवं उनके विभाजनों, उप–विभाजनों को तार्किक क्रम में सूचीबद्ध कर प्रस्तुत करना।

7.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Answer of Questions for Exercise)

अभ्यास प्रश्न 1

1. इस वर्गीकरण पद्धति के प्रथम संस्करण में केवल कोलन ही संयोजी चिन्ह के रूप में प्रयुक्त हुआ था।
2. सन 1933 में।
3. चतुर्थ संस्करण (1952)
4. सन् 1924 में

अभ्यास प्रश्न 2

5. क्रमशः 1957 एवं 1960
6. दो भागों में
7. अनुसूचियाँ एवं अनुक्रमणिका
8. अध्याय 3 में

अभ्यास प्रश्न 3

9. कुल 23
10. हाँ हुई है।

7.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra
5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon classification, 6th revised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. and Singh, Niranjan (1987). An evaluative introduction to the seventh edition of the Colon Classification, Granthalaya Vigyan, Jaipur. Vol.28-29 (1-2), p.97-106.
8. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical colon classification, 2nd rev. ed., Sterling Publishers, New Delhi.
9. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
10. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical colon classification, P.K.Publishers, Agra.

7.11 निबंधात्मक प्रश्न (Essay type Questions)

1. द्विबिन्दु वर्गीकरण के उद्‌भव एवं विकास का वर्णन करें।
2. द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की संरचना पर प्रकाश डालिए।
3. द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त अंकनों को विस्तार से समझाइए।

इकाई – 8 मूलभूत श्रेणियों का परिचय एवं प्रयोग

Unit–8 : Introduction and use of Five Fundamentals Categories FFC

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 पाँच मूलभूत श्रेणियों का प्रयोग
8.3.1 व्यक्तित्व पक्ष
8.3.2 पदार्थ पक्ष
8.3.3 ऊर्जा पक्ष
8.3.4 स्थान पक्ष
8.4.5 काल/समय पक्ष
8.4 आवर्तन एवं स्तर
8.4.1 आवर्तन
8.4.11 व्यतित्व पक्ष के आवर्तन–प्रथम
8.4.12 द्वितीय आवर्तन
8.4.13 तृतीय आवर्तन
8.4.2 ऊर्जा पक्ष के आवर्तन
8.4.3 पदार्थ पक्ष के आवर्तन
8.4.4 स्तर की अभिव्यक्ति
8.4.41 व्यक्तित्व पक्ष के स्तर
8.4.42 स्थान पक्ष के स्तर
8.4.43 काल पक्ष के स्तर
8.5 वैचारिक पद्धतियाँ तथा विशिष्ट वर्ग
8.5.1 वैचारिक पद्धतियाँ
8.5.1.1 पद्धति पक्ष के लिए कालक्रम विधि का प्रयोग
8.5.2 विशिष्ट वर्ग
8.5.3 पद्धति, विशिष्ट वर्ग एवं परंपरागत वर्गों का अनुक्रम

8.6 पाँच मूलभूत श्रेणियों के आधार पर वर्गीकरण की प्रक्रिया
8.7 सारांश
8.8 शब्दावली

8.9 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
8.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें
8.11 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

पाँच मूलभूत श्रेणियाँ रंगनाथनकृत द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की विशेष उपलब्धि एवं विशेषता है। रंगनाथन के अनुसार एक विषय के एक से अधिक पहलू होते हैं किंतु पाँच से अधिक नहीं। ये पाँच पहलू ही किसी विषय के पक्ष कहलाते हैं। किसी विषय का वर्गीकरण उसमें उपस्थित विशेषताओं के आधार पर किया जाता है। दूसरे शब्दों में किसी विषय को उसमें निहित विशेषताओं के आधार पर पाँच पक्षों में विभाजित किया जा सकता है, ये पाँच पक्ष ही पाँच मूलभूत श्रेणियाँ कहलाती हैं। विश्व के अनेक पुस्तकालय विज्ञान विशेषज्ञों ने इनसे पृथक एवं अनेक मूलभूत श्रेणियों की ओर इंगित किया लेकिन अन्त में रंगनाथन द्वारा निर्धारित पाँच मूलभूत श्रेणियों में ही अपनी सहमति प्रदान की गई। ये मूलभूत श्रेणियाँ– व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, स्थान तथा काल हैं। इन पाँच श्रेणियों की पृथक पहचान हेतु पृथक–पृथक संयोजी चिन्ह निर्धारित किये गये हैं। इन्हें इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

क्र. सं.	मूलभूत श्रेणी (FundamentaCategory)	पक्ष के लिए प्रयुक्त संकेत (Symbol for Facet)	संयोजक चिन्ह (Connecting Symbol)
1.	व्यक्तित्व (Personaity)	[P]	अल्प विराम (,) Comma
2.	पदार्थ (Matter)	[M]	अर्द्ध विराम (;) Semi colon
3.	ऊर्जा (Energy)	[E]	द्विबिन्दु (:) Colon
4.	स्थान (Space)	[S]	बिन्दु (.) Dot
5.	काल (Time)	[T]	सिंगल इनवर्टेड कोमा (') Single inverted comma

उपर्युक्त श्रेणियों को संक्षेप में पी एम ई एस टी (PMEST) से पुकारा जाता है। इन्हें एकल भी कह सकते हैं। किसी भी विषय में एक से अधिक पक्ष हो सकते हैं। इनका व्यवस्थापन अमूर्त से मूर्त की ओर किया जाता है अर्थात वर्गीकरण करते समय इन पक्षों की पहचान शीर्षक में विपरीत क्रम अर्थात TSEMP में की जानी चाहिए।

समस्त पाँच श्रेणियों में व्यक्तित्व पक्ष सबसे अधिक मूर्त है। सबसे अधिक महत्व का होने के बावजूद भी इसकी पहचान करना कठिन है। जबकि समय/काल एवं स्थान को समझाना सरल है। किसी मुख्य वर्ग/विषय में काल एवं भौगोलिक क्षेत्र की पहचान स्वतः

ही हो जाती है। ऊर्जा पक्ष को पहचानने के लिए थोड़ी समझ की आवश्यकता होती है। यह पक्ष किसी क्रियाकलाप पक्ष की अभिव्यक्ति को स्पष्ट करता है। जबकि पदार्थ पक्ष किसी चीज, सामग्री या वस्तु के होने से स्पष्ट किया जाता है। व्यक्तित्व पक्ष को समझना आसान नहीं है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि काल, स्थान, ऊर्जा एवं पदार्थ पक्षों को पहचानने के बाद इन्हें अलग कर दीजिए। इनको अलग करने के पश्चात जो तत्व शेष रह जाते हैं वे सभी व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्ति को स्पष्ट करते हैं।

8.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आपको यह ज्ञात हो जाएगा कि –

- मूलभूत श्रेणियाँ क्या होती हैं;
- पाँच मूलभूत श्रेणियों के नाम, उनके संयोजी चिन्ह तथा संकेताक्षर;
- मूलभूत श्रेणियों के प्रयोग की विधियाँ;
- विभिन्न मूलभूत श्रेणियों को प्रस्तुत करने में आवर्तन; (Rounds) एवं स्तर (Levels) की अवधारणा का वर्णन आदि।

8.3 पाँच मूलभूत श्रेणियों का प्रयोग (Use of Five Fundamental Categories)

रंगनाथन महोदय को 'पाँच' शब्दों से कुछ अधिक ही लगाव था। उन्होंने कई पहलुओं में पाँच वर्गों या प्रकारों का अनुप्रयोग किया है। मूलभूत श्रेणियों के बारे में उनका मत था कि जिस तरह एक शरीर की रचना पाँच तत्वों– क्षित, जल, पावक, गगन, समीरा से मिलकर होती है उसी प्रकार एक विषय में भी पाँच से अधिक तत्व। पक्ष नहीं हो सकते हैं। इसी अवधारणा को आधार मानते हुए रंगनाथन द्वारा निर्धारित पाँच मूलभूत श्रेणियों का वर्णन उदाहरण सहित किया जा रहा है–

8.3.1 व्यक्तित्व पक्ष (Personality Facet)

मनुष्य के व्यक्तित्व में अनेकों अवयवों एवं गुणों के अनुसार ही विषयों के व्यक्तित्व पक्ष में भी अनेक अवयवों एवं गुणों का मेल होता है। डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने व्यक्तित्व पक्ष की पहचान के लिए अवशेष विधि (Method of Residue) का अनुपालन किया है। इस विधि के अनुसार मूल श्रेणी में काल, भौगोलिक विभाजन, ऊर्जा और पदार्थ श्रेणियों की अभिव्यक्ति के पश्चात जो शेष बचता है वह व्यक्तित्व श्रेणी की अभिव्यक्ति होती है। इसे संयोजी चिन्ह कोमा (,) से चिन्हित किया जाता है। यहाँ पर कुछ मुख्य वर्गों में विद्यमान व्यक्तित्व पक्ष को सूचीबद्ध कर बताया गया है–

मुख्य वर्ग (Main Class)	अंकन (Notation)	व्यक्तित्व पक्ष (Personality Facet
Engineering	D	कार्य (Work)
Chemistry	E	दृव्य (Substances)
Technology	F	दृव्य (Substances)
Biology	G	अंग (Organ)
Botany	I	पौधों के समूह (Families of Plants)
Agriculture	J	फसलें (Crops in agriculture)
Medicine	L	मानव शरीर के अंग (Organs of human body)
Economics	X	व्यापार (Business in Economics)
Sociology	Y	सामाजिक समूह (Social groups)
Law	Z	समुदाय/विषय Community/ Subject

उदाहरण :

1.	University library	234
2.	Human Lungs	L45
3.	Rural Sociology	Y31
4.	Secondary Schools	T2
5.	Organic Chemistry	E5
6.	Money	X61
7.	Sound	C3
8.	Abnormal Psychology	S6

8.3.2 पदार्थ पक्ष (Matter Facet)

इस पक्ष की पहचान करना आसान होता है इसमें दृव्य, वस्तु अथवा पदार्थों को सम्मिलित किया गया है तथा इसका संयोजी चिन्ह सेमीकोलन (;) है।

Library Science	**2**
University library	234

1.	Thesis in University library	234 ; 494
2.	Sound Book	2 ; 13
	Economics	**X**
	Money	X61
3.	Gold money	X61 ; 1
4.	Paper money	X61 ; 4

8.3.3 ऊर्जा पक्ष (Energy Facet)

इस पक्ष में हमेशा कार्य, क्रिया आदि होने का आभास होता है। अतः किसी भी विषय में उन एकलों को सम्मिलित किया जाता है जो समस्या, क्रियाकलाप, समाधान एवं गतिविधियाँ आदि को दर्शाती है। इसके लिए संयोजी चिन्ह कोलन (:) निर्धारित किया गया है।

उदाहरण :

1.	Classification in library	2:51
2.	Circulation service in Public library	22:7
3.	Physical Chemistry	E:2
4.	Constitution of Great Britain	V56:2
5.	Disease in human being	L:4
6.	Rural culture	Y31:1
7.	Teaching in secondary schools	T2:3

8.3.4 स्थान पक्ष (Space Facet)

स्थान पक्ष में भौगोलिक क्षेत्रों का वर्णन दिया गया है। इस पक्ष को पहचानना बहुत ही आसान है। इसके अंतर्गत पृथ्वी के उन राजनैतिक तथा प्रशासनिक स्थानों को सम्मिलित करते हैं जहाँ लोग निवास करते हैं। इस श्रेणी में विश्व के किसी नदी, पहाड़, गाँव, नगर, प्रदेश, देश, महादीप आदि की स्थिति की जानकारी मिलती है। इसका संयोजी चिन्ह डॉट (.) है। किसी–किसी मुख्य वर्ग में भौगोलिक विभाजन को व्यक्तित्व पक्ष (P) के रूप में भी उपयोग किए गए हैं।

उदाहरण :

1.	History of India	V44	(India (44) व्यक्तित्व पक्ष के रूप में आया है।
2.	British law	Z56	(Great Britain (56) व्यक्तित्व पक्ष के रूप में आया है।
3.	Libraries in America	2.73	
4.	Agriculture in India	J.44	

5. Social activities in Japan Y : 3.42
6. National library of China 213.41
7. Adult education in Rajasthan T3.4437

8.3.5 काल / समय पक्ष (Time Facet)

किसी विषय का ऐसा पक्ष जिसके द्वारा समय को अभिव्यक्त किया जाता है उसे काल पक्ष कहते हैं इसमें समय की अवधि, वर्तमान, भविष्य तथा भूत की जानकारी प्राप्त होती है। इस पद्धति में समय एकल (Time Isolate) को अलग से सूचीबद्ध किया गया है जिसे कालक्रमिक विधि (Chronological Device) कहते हैं। इसके लिए संयोजी चिन्ह इन्वर्टेड कोमा (') निर्धारित किया गया है।

काल पक्ष या काल एकल की आवश्यकता अधिकांश मुख्य वर्गों में काल को बोध कराने के लिए होती है। इसके लिए काल एकल सारणी 3 का प्रयोग किया जाता है, जो पृष्ठ 2.7 पर दी गई है।

जैसे–

M	=	19वीं शताब्दी (1800–1899 AD)
N	=	20वीं शताब्दी (1900–1999 AD)
M80	=	1880
N47	=	1947
n7	=	Winter
n5	=	Autumn
N95←N47	=	1947–1995
N47←	=	Before 1947
N47→	=	After 1947

उदाहरण :

1. Economic Geography of China in 20th Century U6.41 'N
2. History before 19th Century V 'M←
3. Future of Agriculture (2018) J 'P18→
4. History of Research libraries from 1947-2010 236 'P10←N47

नोट– काल पक्ष का प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष के रूप में भी देखने को मिलता है। जैसे–

5. Premchand (b.1880) O152, 3M80
   यहाँ पर प्रेमचंद की जन्म तिथि 1880 के लिए M80 प्रयुक्त हुआ है, जो साहित्य मुख्य वर्ग के पक्ष परिसूत्र (Facet Formula) के अनुसार P3 है। इसी प्रकार कामन आइसोलेट में m-periodical के सामने P,P2 दिया गया है। यहाँ पर P स्थान के लिए है। एवं P2 काल के लिए जैसे– (P), (P2)
6. Journal of Physics (Published from India, 1965) Cm44, N65

अभ्यास हेतु शीर्षक (**Titles for Exercise**) 1

1. Infections disease in lungs
2. Rice crops
3. Elementary school library
4. Cataloguing of patent in research libraries
5. Analytical chemistry
6. Teaching in college in 1998
7. News papers in regional library
8. Dairying
9. Disease in poultry
10. Genesis of diamond
11. Industrial electro-chemistry
12. Television
13. Silk weaving
14. Classificatioin of thesis in university library
    in Rajasthan in 1975

8.4 आवर्तन एवं स्तर (**Round and Levels**)

8.4.1 आवर्तन (**Rounds**)

किसी विषय के अंतर्गत उसके किसी पक्ष का प्रयोग एक से अधिक बार होता है तो उसे आवर्तन कहते हैं। किसी विषय के वर्गांक में स्थान पक्ष एवं काल पक्ष के अतिरिक्त व्यक्तित्व पक्ष, पदार्थ पक्ष तथा ऊर्जा पक्ष की एक से अधिक बार आवृति होती है अर्थात यह पक्ष अपने वांछित अनुक्रम में प्रयोग होने के साथ ही यदि विषय की आवश्यकता है तो पक्षों का प्रयोग दो या तीन बार हो सकता है। प्रत्येक आवर्तन (Round) ऊर्जा पक्ष (E) पर समाप्त होता है तथा ऊर्जा पक्ष (Energy Facet) के बाद दूसरा आवर्तन 2P से शुरू होता है

जो पुनः ऊर्जा पक्ष पर समाप्त होता है तथा तीसरा आवर्तन 3P से शुरू होता है। आवर्तन के अंतर्गत एक पक्ष (Facet) एक से अधिक बार आता है लेकिन यह लगातार नहीं आता इनके बीच कोई दूसरा पक्ष होता है। व्यक्तित्व (P), ऊर्जा (E), तथा पदार्थ (M) पक्षों के आवर्तनों को निम्न प्रकार से दर्शाया गया है।

आवर्तन (Round)	**व्यक्तित्व पक्ष (Peronality Facet**	**पदार्थ पक्ष (Matter Facet)**	**ऊर्जा पक्ष (Energy Facet)**
प्रथम आवर्तन	P		M
E			
द्वितीय आवर्तन	2P		2M
2E			
तृतीय आवर्तन	3P		3M
3E			

इसे इस प्रकार भी प्रदर्शित कर सकते हैं–

(P) (M) (E) (2P) (2M) (2E), (3P) (3M) (3E),.........etc.

8.4.11 व्यक्तित्व पक्ष के आवर्तन (Rounds of Personality)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में व्यक्तित्व पक्ष के तीन आवर्तन का प्रयोग छठवें संस्करण में देखने को मिलता है।

प्रथम आवर्तन

व्यक्तित्व पक्ष को मुख्य वर्ग में प्रथम पक्ष के रूप में लिया गया है। डॉ. रंगनाथन के अनुसार आधार वर्ग (Basic Class) के साथ बगैर किसी योजक चिन्ह के व्यक्तित्व पक्ष का प्रयोग ही प्रथम आवर्तन है।

उदाहरण :

Human Nerves System	L 7
Non-Flowering Plant	I 1
University Education	T 4

8.4.12 द्वितीय आवर्तन

व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय आवर्तन सदैव ऊर्जा पक्ष के बाद ही संभव है। [E] पक्ष के

बाद जहाँ पर भी [P] पक्ष की अभिव्यक्ति स्पष्ट होती है तो वह द्वितीय आवर्तन [2P] कहलाता है।

[2P] इस पक्ष का अलग से कहीं भी प्रयोग नहीं कर सकते हैं। इसका प्रयोग सदैव [E] पक्ष के बाद होता है जो संयुक्त पक्ष [E] [2P] कहलाता है। सामान्यतः ऊर्जा पक्ष के अंक को अलग करने के लिए इसका प्रयोग होता है। [E] पक्ष तथा [2P] पक्ष के मध्य किसी प्रकार के योजक चिन्ह का प्रयोग नहीं होता है।

उदाहरण :

Fever Disease in Skin L87:414

(यहाँ पर 4-Disease (E) पक्ष तथा Fever (2P) पक्ष हैं जिन्हें बगैर योजक चिन्ह के [E] पक्ष व [2P] पक्ष की एकल संख्याओं से जोड़ा है जो 414-Fever Disease को प्रदर्शित करती है) इसी प्रकार–

General Disease in Lung L45:41

8.4.13 तृतीय आवर्तन

व्यक्तित्व पक्ष के तृतीय आवर्तन में [2E] पक्ष के तुरंत बाद बगैर किसी संयोजी चिन्ह के [P] पक्ष का प्रयोग होता है जिसे संयुक्त पक्ष [2E] [3P] या [2E] cum [3P] पक्ष कहते हैं।

उदाहरण :

1. Treatement of Infection Disease in Lever by X-Ray L291:42:6253
   यहाँ पर 6 treatment [2E] पक्ष एवं 253 X-Ray [3P] पक्ष है अतः 6253 X-Ray treatment को प्रदर्शित करता है यहाँ [2E] पक्ष के साथ [P] पक्ष का प्रयोग तीसरा आवर्तन कहलाता है। इसी प्रकार–
2. Storing of green manure for rice crops J381:21:8

8.4.2 ऊर्जा पक्ष के आवर्तन (Round of Energy)

व्यक्तित्व पक्ष की तरह ऊर्जा पक्ष में भी एक से अधिक आवर्तन हो सकते हैं। प्रथम आवर्तन के लिए [E] पक्ष तथा द्वितीय आवर्तन के लिए [2E] पक्ष कहते हैं। इन दोनों को ऊर्जा पक्ष के संयोजक चिन्ह (Connecting Symbol) द्विबिन्दु (:) से जोड़ा जाता है। डॉ. रंगनाथन के अनुसार द्वितीय आवर्तन [2E] पक्ष का प्रयोग तब तक नहीं कर सकते जब तक कि प्रथम आवर्तन [E] का प्रयोग न हो अतः सदैव [E] पक्ष के बाद ही [2E] पक्ष का प्रयोग किया जाता है। अधिकांश मुख्य वर्गों (Main Classes) में ऊर्जा पक्ष के प्रथम आवर्तन का

प्रयोग समस्या पक्ष के रूप में तथा द्वितीय आवर्तन का प्रयोग समस्या के समाधान, निराकरण व रोकथाम के लिए हुआ है। जो कुछ सीमित मुख्य वर्गों में प्राप्त होता है जैसे–

J	Agriculture,	KX	Animal Husbandry,	L	Medicine
S	Psychology	तथा Y	Sociology		

उदाहरण : प्रथम आवर्तन [P] [E]

1. Human heart disease L 32 : 4
2. Green manure for wheat crops J 382 : 21
3. Soil for crops J : 1

उदाहरण : द्वितीय आवर्तन [P] : [E] [2P] : [2E]

1. Treatment of Lung L 45 : 4 : 6
   (चिकित्सा सदैव रोग की होती है इसलिए [E] पक्ष की एकल संख्या 4-Disease के बाद 6-Treatment का प्रयोग हुआ है जो [2E] पक्ष की एकल संख्या है)
2. Consumption for soil for seed crops J 38 : 21 : 7

8.4.3 पदार्थ पक्ष के आवर्तन (Round of Matters)

सदैव पदार्थ पक्ष [M] के आवर्तन का प्रयोग [E] पक्ष के बाद ही होता है। जब पदार्थ पक्ष [M] का प्रयोग ऊर्जा पक्ष [E] के बाद होता है तो यह उसका दूसरा आवर्तन [2M] कहलाता है। अगर [2E] पक्ष के बाद [M] पक्ष का प्रयोग होता है तो वह उसका तीसरा आवर्तन [3M] कहलाता है।

जब गहन वर्गीकरण की आवश्यकता होती है तब पदार्थ [M] पक्ष के आवर्तन का प्रयोग होता है। C Physics, G Biology, I Botany, K Zoology तथा L Medicine आदि मुख्य वर्गों में [M] पक्ष के आवर्तन का प्रयोग हुआ है।

[E] पक्ष के बाद [M] पक्ष के आवर्तन में उपयोग होने वाली एकल संख्याओं को संयोजी चिन्ह सेमीकोलन (;) से जोड़ते हैं।

उदाहरण : द्वितीय आवर्तन MC [P] : [E] [2P] ; [M]

Reflection of light in glass	C5 : 22 ; 15
Iron metabolism of cell	G11 : 33 ; 182
Fat Katabolism of cell	K92 : 332 ; 94

उदाहरण : तृतीय आवर्तन

Treatment of diabetes by saline water injection L 293 : 46 : 616 ; 411 71

8.4.4 स्तर की अभिव्यक्ति

किसी भी मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष की उपलब्धता जब निरंतर एक से अधिक बार होती है तब वह मूलभूत श्रेणी का स्तर कहलाता है। अतः किसी मूलभूत श्रेणी के किसी पक्ष (Facet) का प्रयोग एक से ज्यादा स्तरों में किया जाता है। उस स्तर के मूलभूत श्रेणी का स्तर कहते हैं। व्यक्तित्व [P] स्थान [S] तथा काल [T] की अभिव्यक्ति कई स्तरों पर हो सकती है, पदार्थ [M] पक्ष के स्तरों का प्रयोग गहन वर्गीकरण में किया गया है पर द्विबिन्दु वर्गीकरण के छठवें संस्करण में इसका उपयोग नहीं किया गया है। ऊर्जा [E] पक्ष के स्तर नहीं होते हैं।

स्तर (Level)	**व्यक्तित्व पक्ष (Personality Facet)**	**स्थान पक्ष (Space Facet)**	**काल पक्ष (Time Facet)**
प्रथम स्तर	P	S	T
द्वितीय स्तर	P2	S2	T2
तृतीय स्तर	P3	-	-
चतुर्थ स्तर	P4	-	-

8.4.41 व्यक्तित्व पक्ष के स्तर (Level of Personality Facet)

व्यक्तित्व पक्ष विषय के समष्टि को प्रदर्शित करने वाला पक्ष होता है। इसके लिए मुख्य वर्ग के तुरंत बाद स्थान दिया गया है। पाँच मूलभूत श्रेणियों में [P] पक्ष के लिए प्रथम पक्ष के स्थान पर रखा गया है। यह पक्ष विषय का सार भाग होता है। व्यक्तित्व पक्ष के स्तर उन्हें कहते हैं जिसका प्रयोग इसके अन्य भाग को व्यक्त करने के लिये किया जाता है।

उदाहरण :

	[P],[P2][P3],[P4]
A Bibliography of thesis Published in India up to 1977	a 394, 144, N7
Abhigyan Shakuntalam by kalidas (his 10th work)	O15, 2D40, 22

Godan by Premchand
(born 1880, his 77th work) O152, 3M80, 125

व्यक्तित्व पक्ष का प्रयोग मुख्य रूप से a Generalia Bibliography O Literature, N Fine Art तथा Z Law में हुआ है।

8.4.42 स्थान पक्ष के स्तर (Level of Space Facet)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में [S] पक्ष का प्रयोग मुख्य रूप से दो स्तरों में होता है। यह स्तर भौगोलिक क्षेत्रों से संबंधित होते हैं तथा अलग–अलग विशेषताओं को प्रकट करते हैं। जैसे–

देश पक्ष के लिए संयोजी चिन्ह डॉट (.) का प्रयोग होता है।

1. प्रथम स्तर – राजनीतिक खण्डों (Political Divisions) के लिए। जैसे–अफ्रीका, एशिया, भारत आदि।
2. द्वितीय स्तर – प्राकृतिक विशेषता (Physical Features) के लिए। जैसे–नदी, पर्वत, झील आदि।

साधारणता [S] पक्ष का पहला स्तर [S] अथवा [S_1] एवं दूसरा स्तर [S_2] के रूप में प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

1. Physical geography of mountain — U2. g7(इसमें S_2 का सीधा प्रयोग हुआ है)
2. Climate of Udaipur city — U 287 . 4437.U
3. Temperature of Rajasthan — U 287 . 4437
4. Mountains of Rajasthan — U2. 4437 . g7

8.4.43 काल पक्ष के स्तर (Level of Time Facet)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में समय पक्ष का प्रयोग दो स्तर (Levels) पर किया गया है। प्रथम स्तर [T] तथा द्वितीय स्तर [T_2] कहलाता है। [T_2] पक्ष का प्रयोग [T] पक्ष के बिना भी किया जा सकता है।

उदाहरण :

[T] [T_2]

1. Rainfall in Jaipur during winter of 1995 — U 287 . 447J 'N95 'n7

2.	Climate of Mumbai during summer	U 287 . 4431 . B' N7

8.5 वैचारिक पद्धतियाँ तथा विशिष्ट वर्ग (**Systems and Specials**)

वैचारिक पद्धतियाँ (Systems) तथा विशिष्टताएँ (Specials) का प्रचलन ज्ञान जगत के कुछ परंपरागत वर्गों में देखा गया है। जिसमें इन्हें एक अलग वर्ग के रूप में स्थान दिया जा सकता है। वाग्मय आवश्यकता के नजरिये से इस प्रकार के विषयों पर बहुत अधिक मात्रा में पाठ्य–सामग्री प्राप्त होती है। यही कारण है कि मुख्य वर्ग के रूप में स्थान प्राप्त करने का उचित आधार है। लेकिन आधार विषय उनका आधार वर्ग ही होगा।

इस प्रकार की अवधारणा को प्रारंभ में School of thought कहा जाता था लेकिन डॉ. रंगनाथन ने 1952 में इसे विशिष्ट वर्ग एवं वैचारिक पद्धतियाँ (Special and System) की संज्ञा दी है।

8.5.1 वैचारिक पद्धतियाँ (**Systems)**

डॉ. रंगनाथन के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण विचारधाराओं के द्वारा ही एक विषय का प्रतिपादन होता है। जिसके अनुसार इन विचारधाराओं की जानकारी प्रदान करने के लिए प्रयुक्त होने वाले पद को पद्धतियाँ (System) कहते हैं। किसी विषय को प्राप्त करने की पद्धतियाँ उतनी ही होंगी जितने कि उसके अभिगम होंगे तथा प्रत्येक अभिगम के अंतर्गत विषय के पूरे क्षेत्र पर विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए –

अर्थशास्त्र में साम्यवादी दृष्टिकोण, चिकित्सा में आयुर्वेद, यूनानी, हौम्योपैथी आदि विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियाँ हैं।

उदाहरण :	X	(ECONOMICS	L	(MEDICINE)	
	XA	System		LA	System
	XB	War Economics	LB	Ayurveda	
	XM	Cooperative		LC	Sidha
	XM2	Sociolism		LD	Unani
	XN	Communism		LL	Homoeopathy
	X N19	Technology		L M	Naturopathy

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि पद्धति की रचना में कालक्रम विधि (Chronological Device) का प्रयोग किया गया है। आधार विषय को मुख्य वर्ग से अलग कर

स्पष्ट करने के लिए आधार विषय (Basic Class) में क्रियाकलाप के अंक को जोड़ दिया जाता है जो प्रादुर्भाव के वर्ष को स्पष्ट करता है।

8.5.11 पद्धति पक्ष के लिए कालक्रम विधि का प्रयोग (Use of Chronological Device for System Facet)

कालक्रम विधि (Chronological Device) का प्रयोग पद्धति पक्ष में मुख्य वर्ग के योजक चिन्ह के साथ पद्धति के उद्भव, विकास अथवा आविष्कार वर्ष को शताब्दी, दशाब्दी अथवा वर्ष अंक का प्रयोग करके पूर्ण करते हैं।

उदाहरण :	CM Kinetic Theory	(उन्नीसवीं शताब्दी में आविष्कृत पद्धति)
	CM 6Ether Theory	(उन्नीसवीं शताब्दी के छठे दशक में आविष्कृत पद्धति)
	CM 65 Electromagnetic Thoery	(उन्नीसवीं शताब्दी के छठे दशक के पाँचवें वर्ष में आविष्कृत पद्धति)

अतः शताब्दी में आविष्कृत प्रथम पद्धति को शताब्दी अंक से उसी शताब्दी में आविष्कृत दूसरी पद्धति को दशाब्दी अंक से तथा उसी दशाब्दी में आविष्कृत तीसरी पद्धति को वर्ष अंक से व्यक्तित्व प्रदान किया जाता है।

8.5.2 विशिष्ट वर्ग (Specials)

किसी भी मुख्य वर्ग के वे वर्ग जिन्हें विशिष्ट वर्ग की संज्ञा दी जाती है जिसमें विशेषज्ञ (Specialist) विशिष्टता प्राप्त करते हैं अर्थात ऐसा वर्ग जो अपनी विशिष्ट विशेषताओं के कारण विशिष्ट बन जाता है।

उदाहरण :	**X**	**(Economics)**	**L**	**(Medicine)**
	X9A	Specials	L9A	Specials
	X9B	Small Scale	L9C	Child
	X9D	Large Scale	L9E	Old age
	X9S	Private	L9F	Female
	X9W	Public	L9X	Industrial

8.5.3 पद्धति, विशिष्ट वर्ग एवं परंपरागत वर्गों का अनुक्रम (Sequence of Systems, Specials and Traditional Classes)

पद्धति, विशिष्ट वर्ग तथा परंपरागत वर्गों का अनुक्रम निश्चित करने के लिए डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने अनेक नियमों का निर्माण किया है–

1. विषय के सभी पक्षों से पहले पद्धति पक्ष को व्यवस्थित करना चाहिए यहाँ तक कि व्यक्तित्व (Personality) पक्ष के सभी स्तरों से पहले पद्धति पक्ष को व्यवस्थित करना चाहिए।
2. विशिष्ट वर्ग (Special) के लिए पद्धति (System) पक्ष के बाद स्थान प्राप्त होगा लेकिन इसका प्रयोग करते समय यह ध्यान रखना होगा कि इसका प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष के सभी स्तरों से पूर्व हो।
3. वर्गांक में पद्धति पक्ष, विशिष्ट वर्ग पक्ष तथा व्यक्तित्व पक्ष तीनों उपस्थित हों तो वर्गांक को अलग–अलग करने के लिए संयोजक चिन्ह कौमा (,) का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण :

Homoeopathy treatment for old age Kidney	LL,9E, 51 : 4 : 6
Naturopathic treatment for Lever	LM, 291 : 4 : 6
Basic Education at Elementary School	TN3, 15

8.6 पाँच मूलभूत श्रेणियों के आधार पर वर्गीकरण की प्रक्रिया (Process of classification based on FFC)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति एक वैश्लेषी–संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति है। इसका तात्पर्य वर्गीकरण करते समय सर्वप्रथम किसी भी पुस्तक का विषय वस्तु निर्धारित कर विभिन्न पक्षों में विश्लेषण (Facet Analysis) किया जाता है। विश्लेषण करते समय निरर्थक शब्दों को छोड़ दिया जाता है, जैसे Introduction, Principles, on, of, the इत्यादि पदों को छोड़ दिया जाता है। सार्थक एवं अर्थयुक्त शब्दों को चुनकर उनके संबंधित पक्षों के नाम से चिन्हित किया जाता है। इसके पश्चात इन संबंधित पक्षों की एकल संख्याएँ संबंधित अनुसूचियों या सारणियों से लेकर पाँच मूलभूत श्रेणियों के लिए निर्धारित प्रतीकों के सामने प्रदर्शित कर दी जाती हैं तथा संयोजी चिन्हों के साथ जोड़ दिया जाता है।
उदाहरण :

Cataloguing of Periodicals in University libraries of Punjab in 2016

उपर्युक्त शीर्षक में अनावश्यक शब्दों को हटाने के बाद जो सार्थक शब्द बचते हैं वे निम्नलिखित हैं–

Catalouging Periodicals University libraries Punjab 2016

इन सार्थक शब्दों का पक्ष विश्लेषण करने के पश्चात संबंधित पक्ष का चिन्ह लगाने पर इस प्रकार रखा जाएगा–

[E]	[M]	[P]	[S]	[T]
Cataloguing	Periodicals	University libraries	Punjab	2016

इसके पश्चात् इन पक्षों की एकल संख्याएँ लिखकर उस मुख्य वर्ग के पक्ष परिसूत्र के अनुसार क्रमबद्ध करते हैं।

Cataloguing	[E]	=	55
Periodicals	[M]	=	46
University library	[P]	=	234
Punjab	[S]	=	4436
2016	[T]	=	P16

इन्हें PMEST के अनुक्रम में इस प्रकार रखा जाएगा –

[P]	[M]	[E]	[S]	[T]
University libraries	Periodicals	Cataloguing	Punjab	2016
234	46	55	4436	P16

उपर्युक्त अंकनों को उनके लिए निर्धारित संयोजी चिन्हों के साथ जोड़कर वर्गांक इस प्रकार निर्मित किया जाएगा–

234 ; 46 : 55.4436 ‘P16

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise) 2

15. Behaviouristics psychology of women
16. Basic elementary school
17. Curriculum for Wardha education

18. Co-operative banks
19. Ayurvedic treatment of heart
20. Hindi Poetry

8.7 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपको यह ज्ञात हो गया होगा कि पाँच मूलभूत श्रेणियों किसे कहते हैं तथा एक विषय की रचना में इनका क्या महत्व होता? इस इकाई को पाँच मूलभूत श्रेणियाँ तथा पद्धतियाँ एवं विशिष्ट वर्ग के शीर्षकों को भी उदाहरण सहित समझाया गया है। विषयों का पक्ष विश्लेषण (Analysis) कर इनके लिए निर्धारित संयोजी चिन्हों के साथ जोड़कर वर्गांक संश्लेषित किये जाते हैं। इसके इकाई में पक्षों के आवर्तन एवं स्तरों को भी उदाहरण सहित समझाया गया है।

8.8 शब्दावली (Glossary)

पक्ष	–	एकलों का वह समूह जो पाँच मूलभूत श्रेणियों से संबंधित होता है।
एकल विचार	–	पाँच मूलभूत श्रेणियों में से एक की अभिव्यक्ति करने वाला एकल।
पदार्थ	–	इसके अंतर्गत वस्तु, सामग्री आदि हो सकती है।
ऊर्जा	–	यह पक्ष क्रिया, प्रतिक्रिया एवं किसी कार्य को करने की ओर इंगित करता है।
आवर्तन	–	एक मूलभूत श्रेणी किसी विषय में एक से अधिक बार प्रयोग होती है लेकिन यह निरंतर नहीं होती है।
स्तर	–	किसी एक मूलभूत श्रेणी का एक से अधिक बार निरंतर प्रयोग होना।

8.9 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

अभ्यास शीर्षक 1

1. L45:42
2. J381
3. 231
4. 236;48:55
5. E:3
6. T45:3‘N98
7. 214;44
8. KX311:7
9. KX351:4
10. HI71:16
11. F:6
12. D65,45
13. MJ75:13
14. 234;494:51.4437‘N75

अभ्यास शीर्षक 2

1. SN1, 55
2. TN3, 15
3. TN3 : 2
4. XM, 62
5. LB, 32 : 4 : 6
6. O152, 1

8.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra
5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon classification, 6th revised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.

6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. and Singh, Niranjan (1987). An evaluative introduction to the seventh edition of the Colon Classification, Granthalaya Vigyan, Jaipur. Vol.28-29 (1-2), P.97-106.
8. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical colon classification, 2nd rev. ed., Sterling Publishers, New Delhi.
9. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
10. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical colon classification, P.K.Publishers, Agra.

8.11 निबंधात्मक प्रश्न (**Essay type Questions**)

1. पाँच मूलभूत श्रेणी की व्याख्या करते हुए उदाहरण सहित विस्तार से समझाइए।
2. मूलभूत श्रेणियों में आवर्तन एवं स्तर की व्याख्या कीजिए।
3. पाँच मूलभूत श्रेणियों के आधार पर वर्गीकरण प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाइए।

इकाई- 9 वर्गीकरण के नौ चरण

Unit–9 : Nine steps of Classification

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 अभिधारणा उपागम

9.3.1 अभिधारणा उपागम के लाभ

9.4 वर्गीकरण के 9 चरण

9.4.0 अपरिष्कृत शीर्षक

9.4.1 अभिव्यंजक शीर्षक

9.4.2 मूल पद शीर्षक

9.4.3 विश्लेषित शीर्षक

9.4.4 परिवर्तित शीर्षक

9.4.5 मानक पदों में शीर्षक

9.4.6 पक्ष अंकों में शीर्षक

9.4.7 वर्गांक

9.4.8 सत्यापन

9.5 सारांश

9.6 शब्दावली

9.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

9.8 निबंधात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना (Introduction)

किसी भी कार्य को संपन्न करने हेतु व्यवस्थित एवं तार्किक क्रम अपनाना श्रेयष्कर होता है। ग्रंथों का वर्गीकरण सुगम एवं सहायक क्रम व्यवस्था में विषयानुसार किया जाता है। वर्गीकरण का अभिप्राय एवं उद्देश्य पुस्तकालयों में पाठ्य–सामग्रियों को सुगम, सहायक एवं तार्किक क्रम में व्यवस्थित करना होता है जिससे आवश्यकतानुसार वांछित ग्रंथ को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त किया जा सके। ग्रंथ पुस्तकालय में वापस प्राप्त होने पर इसे पुनः उसी स्थान पर व्यवस्थित किया जा सके। विषयों के पक्ष, दृष्टिकोण, स्वरूप तथा लक्ष्य बहुआयामी होते हैं। उन्हें पृथक–पृथक दृष्टिकोणों में देखा जा सकता है। इसलिए वर्गीकरण पद्धति की योजना इस तरह के सिद्धांतों पर आधारित एवं निर्मित होनी चाहिए जो वर्गीकरण प्रक्रिया को आसानी से संपन्न करने में सक्षम हो। वैसे सामान्यतः देखा जाए तो वर्गीकार किसी भी विषय शीर्षक का वर्गांक सीधे ही प्रदान कर देता है। इसके लिए वह कई चरण का प्रयोग नहीं करता लेकिन वास्तव में वर्गीकरण के समस्त चरणों का अनुपालन स्वतः ही हो जाता है क्योंकि वर्गीकार के मस्तिष्क में वर्गांक बनाते समय समस्त प्रक्रिया चल रही होती है।

9.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आप यह बताने में सक्षम होंगे कि –

4. अभिधारणा उपागम से क्या तात्पर्य है।
5. इसके लाभ कौन–कौन हैं?
6. वर्गीकरण प्रक्रिया के नौ चरणों का क्रियान्वयन कैसे किया जाता है?

9.3 अभिधारणा उपागम (Postulation Approach)

पुस्तकालयों में पुस्तकों के वर्गीकरण में निम्नलिखित तीन प्रक्रियाएँ निहित होती हैं– ग्रंथों के विषयों के अनेक पक्षों को सुरक्षित करने के लिए उनके विषय–वस्तुओं का विश्लेषण करना, चुनी हुई सुनिश्चित विचारधाराओं को तर्कपूर्ण एवं सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना तथा तत्पश्चात ग्रंथों को विषयानुसार उपयुक्त एवं वास्तविक वर्गांक प्रदान करना। ग्रंथों के विषय–वस्तु के विश्लेषण में अभिधारणात्मक अभिगम/उपागम का अनुप्रयोग करने में सहायक अनुक्रम को सुनिश्चित करने में प्रचुर सहायता एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

9.3.1 अभिधारणा उपागम के लाभ (Advantages of Postulational Approach)

अभिधारणाओं के अनुप्रयोग निर्धारित विचारों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने में अति सहायक हैं। इसके कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं–

1. इस क्रम को अपनाने से किसी नवीन विषय को इस व्यवस्था में उपयुक्त स्थान बिना संरचना के अस्त व्यस्त किये दिया जा सकता है।
2. इनके प्रयोग से विचारों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना आसान हो जाता है।
3. प्रायोगिक वर्गीकरण का कार्य व्यवस्थित रूप से पूर्ण हो जाता है।
4. यह वर्गीकरण प्रक्रिया में आने वाली संभावित भ्रांतियों का निवारण करने में सहायता प्रदान करती है।
5. अभिधारणाएँ प्रयुक्त विभिन्न पक्षों का एक ऐसा क्रम प्रस्तुत करती है, जो वर्गीकरण प्रक्रिया को यंत्रवत बना देती है।

9.4 वर्गीकरण के नौ (09) चरण (Nine steps of Classification)

पुस्तकालय में वर्गीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है। ग्रंथों का वर्गीकरण वर्गीकार द्वारा किया जाता है। इस कार्य को निर्धारित नियमों, सिद्धांतों एवं अभिधारणाओं के अनुसार किया जाए तो वर्गीकरण प्रक्रिया ठीक से संपन्न हो सकती है। डॉ. एस.आर. रंगनाथन द्वारा वर्गीकरण के 9 चरणों/सोपानों का उद्भव किया गया जो इस जटिल प्रक्रिया में कुछ हद तक सुगमता को प्राप्त किया जा सकता है। एक नए वर्गीकार के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक चरण की प्रक्रिया को सावधानीपूर्वक प्रयोग करें। व्यावहारिक वर्गीकरण के नौ सोपान/चरण निम्नलिखित हैं–

9.4.0 अपरिष्कृत शीर्षक (Raw Title)

इसका तात्पर्य मुख पृष्ठ से प्राप्त हूबहू शीर्षक।

जैसे– Classification of Patents in Research libraries in Rajasthan in 1998.

9.4.1 अभिव्यंजक शीर्षक (Expressive Title)

यह वर्गीकरण प्रक्रिया का द्वितीय चरण है। इस चरण में उन सभी शब्दों को शीर्षक से हटा दिया जाता है, जो सार्थक नहीं होते अर्थात वे विषय वस्तु को अभिव्यक्त नहीं करते जैसे–A, An, The, of, From, in इत्यादि।

उपर्युक्त शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाएगा –

Classification Patents Research libraries Rajasthan 1998

9.4.2 मूल पद शीर्षक (Kernel Title)

अभिव्यंजक शीर्षक से अनावश्यक शब्दों को हटाकर एक वचन रूप में बदलकर प्राप्त किया गया शीर्षक जो कि कोमा के साथ इस प्रकार लिखते हैं–

Classification, Patents, Research libraries, Rajasthan, 1998

9.4.3 विश्लेषित शीर्षक (Analyzed Title)

मूल पद शीर्षक के साथ पक्ष (Facet) का प्रतीक चिन्ह लगाकर प्राप्त शीर्षक विश्लेषित शीर्षक कहलाता है। जैसे–

Classification [E], Patents [M], Research libraries [P], Rajasthan [S], 1998 [T], Library [BC]

9.4.4 परिवर्तित शीर्षक (Transformed Title)

इस चरण में शीर्षक को सही अनुक्रम में अर्थात PMEST के क्रम में परिवर्तित किया जाता है। जैसे–

Library Science [BC], Research libraries [P], Patents [M], Classification [E], Rajasthan [S], 1998 [T]

9.4.5 मानक पदों में शीर्षक (Title in Standard Terms)

परिवर्तित शीर्षक सोपान के बाद मानक पदों में शीर्षक का तात्पर्य है कि जिन पदों को संबंधित वर्गीकरण पद्धति में किया गया हो, उन्हीं पदों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे यदि शीर्षक में 'Treatment' लिखा होता तो इसके लिए द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इसके लिए Theraputics का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार मुख्य वर्ग पुस्तकालय विज्ञान में सार्वजनिक पुस्तकालय के लिए Local library दिया गया है। इससे समय की बचत होती है।

9.4.6 पक्ष अंकों में शीर्षक (Title in Facet Number)

वर्गीकरण पद्धति की अनुसूचियों में मूल वर्ग संख्या अथवा एकल संख्या, जो भी उपयुक्त हो उनसे प्राप्त की गई, उनसे प्राप्त किया गया शीर्षक। जैसे– 2(BC), 36(P), 48(M), 55(E), 4436(S), N98(T)

9.4.7 वर्गांक (Class Number)

वर्गीकरण प्रक्रिया का यह अंतिम चरण है। मूलभूत श्रेणियों को व्यक्त करने वाले संयोजी चिन्हों को लगाकर अंतिम वर्गांक निर्मित किया जाता है। जैसे–

236; 48 : 55.4436 'N98

9.4.8 सत्यापन (Verification)

इस चरण में यह सत्यापन किया जाता है कि निर्मित वर्गांक में कोई त्रुटि तो नहीं हो गई। पुनः इस प्रकार लिखा जाएगा –

2(BC) 36(P) 48(M) 55(E) 4436(S) 1998(T)

इसी प्रकार अन्य शीर्षकों में यही प्रक्रिया को अपनाकर अभ्यास किया जा सकता है।

9.5 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आपको यह ज्ञात हो गया होगा कि वर्गीकरण कार्य में अभिधारणा क्या है। इस इकाई में वर्गीकरण प्रक्रिया के 9 सोपानों का उदाहरण सहित समझाया गया है। वर्गीकरण सोपानों की प्रक्रिया बहुत कुछ वर्गीकरण पद्धति की संरचना पर भी निर्भर करती है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुस्तकालय वर्गीकरण में अभिधारणा उपागम की बहुआयामी विषयों को क्रम में व्यवस्थित करने के लिए आवश्यकता होती है। वर्गीकरण के नौ सोपानों की सहायता से एक नया वर्गीकार भी किसी शीर्षक को आसानी से वर्गीकृत करके वर्गांक प्रदान कर सकता है।

9.6 शब्दावली (Glossary)

अभिधारणा	–	किसी परिघटना के स्वीकृत तथा मान्य व्यक्तव्य को कहते हैं।
अपरिष्कृत शीर्षक	–	ग्रंथ के मुख पृष्ठ पर दिया गया जैसे का तैसा शीर्षक।
मानक पद	–	जो पद वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त किए गए हों।

9.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए.

पब्लिशर्स, जयपुर।

2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra
5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical colon classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.
8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical colon classification, P.K.Publishers, Agra.

9.8 निबंधात्मक प्रश्न (Essay type Questions)

1. अभिधारणा उपागम क्या है तथा इसके लाभों की चर्चा करें।
2. वर्गीकरण प्रक्रिया के 9 चरणों को उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

चतुर्थ खण्ड

कोलन क्लासीफिकेशन

6 वाँ संशोधित संस्करण भाग दो

इकाई – 10 : विभिन्न युक्तियों का परिचय एवं प्रयोग

Unit– 10 : Introduction and uses of various Devices

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना
10.2 उद्देश्य
10.3 युक्तियाँ/विधियाँ
10.3.1 युक्तियों के प्रकार
10.3.11 कालक्रम युक्ति/विधि
10.3.12 भौगोलिक युक्ति
10.3.13 विषय युक्ति
10.3.14 स्मृति सहायक युक्ति
10.3.15 वर्णानुक्रम युक्ति
10.3.16 अध्यारोपण युक्ति
10.3.17 अंगीकृत श्रेणी युक्ति
10.3.18 वरेण्य ग्रंथ युक्ति
10.4 सारांश
10.5 शब्दावली
10.6 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
10.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें
10.8 निबंधात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना (Introduction)

ज्ञान जगत में निरंतर वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि प्रत्यक्ष रूप से विषय जगत को प्रभावित करता है। विषय जगत को लिपिबद्ध किया जाता है, ग्रंथों में और इन ग्रंथों को पुस्तकालय में उपलब्ध कराया जाता है। ज्ञान जगत एवं विषय जगत में विस्तार के कारण ही वर्गीकरण पद्धतियों ने जन्म लिया। ज्ञान जगत के इन विषयों को वर्गीकरण की अनुसूची में एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है तथा आने वाले विषयों को भी पद्धति में स्थान देने का प्रावधान रखा जाता है। इस कार्य के लिए वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न विधियों का प्रावधान किया गया है जिससे उसमें उपस्थित एकलों का अनुक्रम बिना किसी क्रम को बदले विषयों या विचारों की प्रणाली में उचित स्थान दिया जा सके। अंकन पद्धतियों में पर्याप्त वर्धनशीलता एवं ग्राहयता के गुणों को सम्मिलित करने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन विधियों के प्रयोग को यदि वरीयता देनी हो तो सर्वप्रथम उपलब्ध विधि का प्रयोग करना चाहिए। कभी–कभी वर्गांक निर्मित करते समय एक से अधिक विधियों का भी प्रयोग करना पड़ सकता है। विधियों का उपयोग वैश्लेषी–संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति में किसी पक्ष के दृष्टिकोणों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। डॉ. रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इन विधियों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है।

10.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप यह बताने में सक्षम होंगे कि –

1. युक्तियाँ क्या होती हैं?
2. युक्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं?
3. युक्तियों के उपयोग से श्रृंखला एवं पंक्तियों में ग्राह्यता।

10.3 युक्तियाँ/विधियाँ (Devices)

विधियों या युक्तियों का आशय उन प्रावधानों एवं एकलों में लचीलेपन तथा ग्राहयता से है कि जब किसी मुख्य वर्ग से संबंधित शीर्षक का वर्गीकरण किया जाना हो लेकिन शीर्षक में ऐसा दृष्टिकोण दिया गया हो जो वहाँ पर न हो। ऐसी स्थिति में उस दृष्टिकोण से संबंधित अंकन को लाकर नियमानुसार जोड़ने की सुविधा एवं प्रावधान हो। कुछ लोगों ने दशा संबंध को भी इसमें सम्मिलित किया है। रंगनाथन की द्विबिन्दु वर्गीकरण

पद्धति में अनेक प्रकार की विधियों का प्रयोग किया गया है जिससे पक्ष की वर्ग संख्या में वृद्धि हो जाती है। ये विधियाँ/युक्तियाँ इस प्रकार हैं– कालक्रम युक्ति, भौगोलिक युक्ति, विषय युक्ति, स्मृति सहायक युक्ति, वर्णानुक्रम युक्ति, अध्यारोपण युक्ति तथा अंगीकृत श्रेणी युक्ति। वर्गीकार के लिए उपर्युक्त युक्तियाँ ही प्रायोगिक दृष्टिकोण से उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं। उपर्युक्त युक्तियों के अतिरिक्त भी कुछ युक्तियाँ इस प्रकार हैं– परिगणनात्मक युक्ति, वरेण्य ग्रंथ युक्ति, पक्ष युक्ति, दशमलव भिन्न युक्ति, रिक्त स्थान युक्ति, खण्ड युक्ति तथा दशा संबंध युक्ति। यहाँ पर प्रारंभ में वर्णित सात महत्वपूर्ण युक्तियों का ही वर्णन किया जा रहा है।

10.3.1 युक्तियों के प्रकार (Types of Devices)

वर्गीकरण प्रक्रिया में प्रयोग की जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण युक्तियों का वर्णन यहाँ पर किया जा रहा है–

10.3.11 कालक्रम युक्ति/विधि (Chronological Device)

इस विधि के अनुसार कालक्रम विशेषताओं के आधार पर मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष या पंक्ति में नवीन एकलों को निर्मित किया जा सकता है। द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में इस युक्ति का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है। कालक्रमिक विशेषता को प्रदर्शित करने का आधार संबंधित वस्तु, सत्ता के जन्म, उद्भव व प्रारंभ के काल या उसके प्रथम आविष्कार, प्रथम खोज व अनुसंधान के प्रथम वर्ष को माना जाता है। कालक्रम की प्रतीक संख्या के रूप में कलैण्डर के अनुसार शताब्दी (Century), दशक (Decate) एवं वर्ष (Year) का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाता है। अनेक स्थानों पर इसका प्रयोग प्रभावी दशक (Effective decade) अथवा अंतिम प्रभावी दशक (Latest Effective Decade) के रूप में करने के निर्देश दिये गये हैं। कालक्रमिक युक्ति को प्रयोग करने संबंधी नियम, नियम भाग तथा अनुसूचियों में यथा स्थान पर दिये गये हैं। यदि नियम नहीं दिया गया है तो जो भी उपयुक्त हो उसे प्रयोग में लाना चाहिए। इस युक्ति का प्रयोग गणित, भौतिकी, चिकित्सा शास्त्र, धर्म, मनोविज्ञान, शिक्षा, इतिहास तथा अर्थशास्त्र आदि मुख्य वर्गों में अधिक किया जाता है। इस युक्ति के प्रयोग को उदाहरणों द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है–

यदि किसी घटना/आविष्कार के लिए शताब्दी का उपयोग किया गया हो तो उस स्थान पर काल पक्ष के अंक के प्रयोग से शताब्दी को व्यक्त किया जा सकता है।

जैसे– Homoeopathy LL (1700 से 1799 के लिए शताब्दी अंक L को मुख्य वर्ग L Medicine के साथ प्रयोग किया गया है।)

इसी प्रकार– Naturopathy LM (1800–1899 AD के मध्य आविष्कार)

Decimal Classification 2:51M

Scheme (DDC)	
Universal एक अन्य Decimal Classification लगाकर Scheme (UDC)	2:51M96 (1896 में आविष्कृत वर्गीकरण पद्धति–इसे वर्ष अंक व्यक्तित्व प्रदान किया गया है ताकि एक ही दशक में आविष्कृत दो पद्धतियों में अंतर किया जा सके)

उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि जहाँ शताब्दी अंक के द्वारा ही किसी विषय को व्यक्तित्व प्रदान किया जा सकता हो वहाँ दशाब्दी या वर्ष अंक लगाना आवश्यक नहीं है तथा जहाँ दशाब्दी अंक लगाने से ही व्यक्तित्व प्रदान किया जा सके वहाँ वर्ष अंक लगाकर वर्गांक को लम्बा बनाना अनावश्यक है। किन्तु एक ही दशाब्दी में उत्पन्न दो विषयों में अंतर करने की दृष्टि से, एक के साथ वर्ष अंक लगाना आवश्यक है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति कालक्रम में युक्ति का प्रयोग अनेक मुख्य वर्गों में हुआ है। उदाहरणार्थ–

1. मुख्य वर्ग O Literature के [P3] पक्ष में लेखक की प्रतीक संख्या (Author Number) बनाने में–

William Shakespeare (English dramatist, born in 1564 AD)	O111,2J64
Kalidas (Sanskrit poet born in 40 AD)	O15,1D40

2. मुख्य वर्ग V History के [P2] पक्ष में राजनीतिक दलों (Political Parties) के वर्गांक बनाने में–

Congress Party of India (Established 1885)	V44,4M85
Janata Party (India) (Established 1977)	V44,4N77

3. मुख्य वर्ग Q Religion में अन्य धर्मों (Other religions) के वर्गांक बनाने में–

Arya Samaj	Q29M8
New Church	Q68L4

4. मुख्य वर्ग B Mathematics में इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग Equation, Function, Series इत्यादि से संबंधित वर्गांक बनाने के लिए किया गया है।

Goldbatch's theorem	B13,5K
Abelian equation	B239M

5. मुख्य वर्ग P Linguistics के [P2] पक्ष में भाषा के सोपानों (Stages) के लिए शताब्दी अंक का प्रयोग किया गया है–

Modern English	P111,J
Epic Sanskrit	P15,B

6. मुख्य वर्ग N Fine Arts के [P] पक्ष में विभिन्न कलाओं के (Style Facet) के वर्गांक बनाने के लिए भी शताब्दी अंक का प्रयोग किया गया है–

Norman sculpture	ND56,D
Hellenic theatre	NT51,C

7. अनेक मुख्य वर्गों में प्रयुक्त वैचारिक पद्धतियों (System Facets) के वर्गांकों के निर्माण करने में–

Basic education	TN3
Technocracy	XN19

सामान्य एकलों में इस युक्ति के प्रयोग को पूर्व में ही इकाई 11 में समझाया जा चुका है।

10.3.12 भौगोलिक युक्ति (Geographical Device)

किसी मुख्य वर्ग में विद्यमान एकलों को तीक्ष्ण बनाने अथवा आवश्यकता पड़ने पर नई एकल संख्याओं का निर्माण करने में भौगोलिक युक्ति (GD) का प्रयोग किया जाता है। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में भौगोलिक क्षेत्रों की स्थिति प्रदर्शित करने के लिए एक अनुसूची दी गई है। इसके अतिरिक्त विभिन्न मुख्य वर्गों में भौगोलिक विधि के लिए प्रयोग करने का विवरण स्पष्ट किया गया है। डॉ. रंगनाथन के अनुसार भौगोलिक युक्ति का प्रयोग द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की अनुसूची में पंक्ति व श्रृंखला (Array and Chain) में असीमित ग्राह्यता के लिए किया गया है। इस युक्ति के प्रयोग के लिए किसी प्रकार के संयोजी चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती अपितु संबंधित भौगोलिक एकल संख्या को नियंत्रक वर्ग संख्या (Host Class Number) के साथ सीधा जोड़ दिया जाता है। इस युक्ति का प्रयोग इस वर्गीकरण पद्धति में अनेक मुख्य वर्गों में हुआ है।

उदाहरणार्थ–

1. मुख्य वर्ग V History व Z Law में [P] पक्ष को (GD) से प्राप्त किया गया है–

History of Rajasthan	V4437
British law	Z56

2. प्रामाणिक वर्ग N Fine Arts का [P] पक्ष भी (GD) से निर्मित होता है–

Indian architecture	NA44
American paintings	NQ73

3. मुख्य वर्ग Q Religion में Q8 को पहले (GD) से और फिर (FD) (Favoured Category Device) से विभाजित कर अन्य धर्मों के वर्गांक बनाने के निर्देश हैं–

Sikhism	Q8441

4. मुख्य वर्ग R Philosophy में R8 Other Philosophy के अंतर्गत दूसरे देशों के दर्शन शास्त्रों के वर्गांक (GD) से बनाने का प्रावधान है–

Russian philosophy	R858

	British philosophy	R856
5.	मुख्य वर्ग Y Sociology में विभिन्न क्षेत्रीय समुदायों (Territorial groups) के वर्गांक निर्मित करने के लिए (Y7) को (GD) से विभाजित करने के निर्देश हैं–	
	British society	Y756
	Indian society	Y744
6.	इसी प्रकार मुख्य वर्ग S Psychology में भी विभिन्न क्षेत्रीय समुदायों में रहने वाले व्यक्तियों के मनोविज्ञान से संबंधित वर्गांक, एकल संख्या S7 को (GD) के आधार पर विभाजन कर बनाया जा सकता है। उदाहरणार्थ–	
	Psychology of Chinese	S741
7.	मुख्य वर्ग a=Generalia bibliography में [P3] पक्ष को भी (GD) से प्राप्त किया जाता है–	
	A bibliography of reference books published in India	a47,144
8.	अनेक पूर्ववर्ती सामान्य एकल (ACI) के [P] पक्ष भी (GD) से प्राप्त किये गये हैं–	
	Encyclopaedia Britannica	k1,L
	Indian National conference on medical science	Lp44
9.	पूर्ववर्ती सामान्य एकल (ACI) w Biography (Collective) तथा x Works (Collective) के लिए भी [P] पक्ष (GD) से प्राप्त किया गया है–	
	Biography of Indian astronomers	B9w44
	Collected works of German chemists	Ex55
10.	मुख्य वर्ग z Generalia में विषयों को जहाँ भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर ही विशिष्टता प्रदान करनी हो वहाँ (GD) का प्रयोग किया जा सकता है–	
	Orientalia	z4
	Indology	z44

10.3.13 विषय युक्ति (Subject Device)

विषय युक्ति वह युक्ति है जिसके द्वारा वैश्लेषी–संश्लेषित पद्धति में किसी भी पंक्ति में किसी भी एकल को निर्मित करने के लिए तथा विषय विशेष को तीक्ष्णता प्रदान करने के लिए उसकी विशेषताओं के आधार पर प्रथकीकरण किया जाता है। इस युक्ति के अंतर्गत विभिन्न युक्तियों तथा एकल संख्याओं का प्रयोग पंक्ति तथा श्रृंखला में असीम ग्राह्यता लाता है। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में प्रायः समस्त मुख्य वर्गों में विषय युक्ति का प्रयोग हुआ है। इस युक्ति के द्वारा आवश्यकता पड़ने पर या फिर अनुसूची में दिये गये

निर्देशों के आधार पर किसी दूसरे मुख्य वर्ग से एकल संख्या का प्रयोग दूसरे मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष के साथ कर सकते हैं। इन्हें छोटे कोष्ठक में रखा जाता है। इस युक्ति के प्रयोग के नियम, नियम भाग व अनुसूचियों में यथा स्थान पर दिये गये हैं। अतः जहाँ निर्देश न भी दिये गये हों तथा शीर्षक की मांग है तो वहाँ पर भी विषय युक्ति का प्रयोग कर सकते हैं।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इस विधि का प्रयोग अनेक मुख्य वर्गों में उपयुक्त विषयों को प्राप्त करने के लिए किया गया है। जैसे–

1. मुख्य वर्ग 2 Library Science में विशिष्ट पुस्तकालयों (Special Libraries) के वर्गांक बनाने के लिए–

Science library	24 (A)
Agriculture library	24(J)

2. मुख्य वर्ग S Psychology में व्यवसाय से संबंधित व्यक्तियों के मनोविज्ञान (Vocational psychology) संबंधित वर्गांक बनाने के लिए–

Psychology of Chemists	S4(E)
Psychology of Zoologists	S4(K)

3. मुख्य वर्ग X Economics में विभिन्न प्रकार के कारखानों (Industries) के वर्गांक प्राप्त करने के लिए–

Agricultural industry	X8(J)
Cycle industry	X8(D5125)

4. मुख्य वर्ग Z Law में विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों (Religious sects) के कानून संबंधी वर्गांकों को प्राप्त करने के लिए–

Hindu law	Z(Q2)
Christian law	Z(Q6)

5. मुख्य वर्ग Y Sociology में विभिन्न समुदायों (Communities) के लिए–

Christians	Y73(Q6)
Bengalis	Y73(P157)

6. विषय विधि का प्रयोग विशिष्ट प्रकार के भौगोलिक क्षेत्रों के अनुसार विश्व तथा उसके अन्य भागों को विभाजित करने के लिए भी किया गया है–

Muslim countries	1(Q7)
Gold producing countries	1(H7118)

7. अनेक मुख्य वर्गों में विषय विधि का प्रयोग (P2) पक्ष को प्राप्त करने के लिए भी किया गया है–

Hindu ethics	R4,(Q2)
Philosophy of religion	R3,(Q)

8. मुख्य वर्ग V History में भी अतिथेय वर्ग V : 19 के लिए [P2] पक्ष के रूप में विदेश नीति के विषयों को (SD) के द्वारा प्राप्त किया गया है–

India's economic relations with China	V44 : 1941, (X)

9. मुख्य वर्ग D Engineering में विभिन्न प्रकार की मशीनों (Other machinery) के वर्गांक प्राप्त करने के लिए [P2] पक्ष की एकल संख्या 8 Machine tool को (SD) के द्वारा विभाजित किया गया है–

Computer	D65,8(B)
Translating machine	D65,8(P : 795)

10. किसी विषय के विशिष्ट पहलू का, विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन करने के लिए भी (SD) का प्रयोग [E] पक्ष के रूप में किया गया है –

Educational psychology	T : (S)
Bio-physics	G : (C)
Mathematical economics	X : (B)
Mathematical bio-physics	G : (C) : (B)

11. विषय विधि का प्रयोग [E] पक्ष की एकल संख्याओं को विभाजित कर विशिष्टता प्रदान करने में भी किया गया है–

Teaching of Indian music	T : 3 (NR44)
Right to education in democracy	W6 : 58(T)

कोष्ठक अंकन (Packeted notation) का प्रवर्तन किये जाने के बाद (SD) का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। मुख्य वर्ग M Useful Arts में इसका सहधर्मी (Analogous) प्रयोग किया गया है। यहाँ विषय विधि के संयोजक चिन्ह, लघु कोष्ठक का प्रयोग नहीं किया गया है–

Gramophone	MC3(यहाँ C3=Sound है)
Horology	MB9(यहाँ

B9=Astronomy है)

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise) 1

1. Russian theatre
2. Italian Painting
3. Modern English
4. Herald of library science (India,1962)
5. Bahaism
6. Biography of Melvil Dewey
7. Psychology of Engineers
8. Religious library
9. Muslim law
10. China economic relations with Japan

10.3.14 स्मृति सहायक युक्ति (Mnemonic Device)

ऐसी युक्ति जो स्मृति को बनाए रखने में सहायता करती है सभी मुख्य वर्गों में एक ही विचार को प्रदर्शित करने के लिए एक विशिष्ट अंक का प्रयोग करना ही स्मृति सहायक युक्ति कहलाती है। दूसरे शब्दों में वर्गांक में एक ही विचार या धारणा या उससे मिलते–जुलते विचारों के लिए किसी एक ही सुनिश्चित अंक का प्रयोग, यदि सभी मुख्य वर्गों में किया जाता है तो अंकों के इस प्रकार के प्रयोग को 'स्मृति सहायक अंक युक्ति' कहते हैं। इन अंकों का प्रयोग सभी पक्षों में देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए 1 अंक का प्रयोग, ईश्वर, विश्व, एक आयाम इत्यादि के लिए किया गया है। उदाहरणार्थ–

1.	World history	V1
	God in religion	Q:31
	One dimension geometry	B61
2.	Plant anatomy	I:2
	Anatomy of animal	K:2
	Human anatomy	L:2
3.	Plant physiology	I:3
	Animal physiology	K:3
	Human physiology	L:3
4.	Biological pathology	G:4
	Human disease	L:4
	Social Pathology	Y:4

इसी प्रकार E पक्ष की एकल संख्या 5 Ecology, 6 Treatment, 7 Development का भी स्मृति सहायक प्रयोग अनेक मुख्य वर्गों में हुआ है।

10.3.15 वर्णानुक्रम युक्ति (Alphabetical Device)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में वर्णानुक्रम युक्ति का तात्पर्य किसी मुख्य वर्ग की विशिष्ट अनुसूचियों के किसी भी पंक्ति के एकलों के लिए एकल अंकों का निर्माण उस एकल विचार संबंधी सत्ता के नाम का प्रथम, प्रथम दो या प्रथम तीन या आवश्यकता हो तो तीन से अधिक अक्षरों को रोमन दीर्घ अक्षरों में लिख कर किया जाता है। डॉ. रंगनाथन के अनुसार इस युक्ति का प्रयोग उस स्थिति में ही किया जाना चाहिए जब वर्गकार को किसी अन्य विधि से सहायक अनुक्रम प्राप्त न हो सके। इस युक्ति का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, तकनीकी नामों, ब्राण्डनामों, व्यापारिक संस्थानों, संस्थाओं, व्यावसायिक संघों, कृषि उपजों के नामों इत्यादि के लिए किया जाता है। इसके प्रयोग हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमाणित नामों का प्रयोग किया जाता है।

1. मुख्य वर्ग D Engineering में विभिन्न कंपनी के वाहनों के ब्राण्ड नामों के लिए वर्णानुक्रम युक्ति का प्रयोग–

Atlas cycle	D5125A
Hero cycle	D5125H
Hercules cycle	D5125HE

2. मुख्य वर्ग J Agriculture में कृषि उपज की किस्मों के लिए वर्णानुक्रम का प्रयोग–

Basmati rice	J381B
Parmal rice	J381P
Dasheri Mango	J3751D

3. स्थान एकल की संख्याओं को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए वर्णानुक्रम युक्ति का प्रयोग–

Jiwaji University	T4.44,e4,J
Birds of Himalayas	K96:12.4g7H
Agriculture in Deltas of Ganga	J44.e5G

4. वर्णानुक्रम युक्ति का प्रयोग मुख्य वर्ग z Generalia में उस व्यक्ति के लिए, जिसे किसी भी एक वर्ग में स्थान नहीं दिया गया है उसे स्पष्ट करने के लिए किया गया है–

Gandhiana	zG
Nehruana	zN

5. इसी प्रकार मुख्य वर्ग a bibliography में प्रकाशक व पुस्तक विक्रेताओं के नामों को भी वर्णानुक्रम युक्ति के द्वारा व्यक्तित्व प्रदान किये जाने के निर्देश दिये गये हैं–
   Bibliography of English books published by National Publishing House a3111,3N

10.3.16 अध्यारोपण युक्ति (Super-imposition Device)

इस युक्ति के द्वारा किसी मुख्य वर्ग में एक ही पक्ष (Facet) के अंतर्गत उल्लिखित दो एकल संख्याओं को वर्गांक में एक साथ प्रदर्शित किया जा सकता है। एकल संख्याओं को संयोजी चिन्ह छोटी आड़ी रेखा (–) (Hyphen) से जोड़ा जाता है। इनमें से एक एकल प्रधान होता है तथा दूसरा गौण। जो एकल पहले सूचीबद्ध है वह पहले आएगा वह भले ही शीर्षक में बाद में आया हो।

उदाहरण–

Bone of nose	L41-82
Hair of head	L18-881
Working class women	Y15-49
Bones of leg	L134-82
Psychology of blind children	S1-68
Female higher education	T4-55
Rural urban culture	Y31-3:1
British territory in Africa	V6-56

10.3.17 अंगीकृत श्रेणी युक्ति (Favoured category Device)

एक ही प्रकार की वस्तुओं को उन पर प्रकाशित प्रलेखों की ह्रासमान संख्या के अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। पुस्तकालय में जिस विषय पर सबसे अधिक प्रकाशित सामग्री उपलब्ध है अथवा प्रकाशन की संभावना है या जिसकी अधिक साहित्यिक आवश्यकता हो उसे इष्ट विषय मानकर, अन्य समान वस्तुओं में प्राथमिकता के क्रम में व्यवस्थित किया जाता है तथा अन्य को ह्रासमान संख्या के अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। इस युक्ति के अनुसार मुख्य वर्ग J Agriculture में फल देने वाले पौधों तथा खाद्य बीज देने वाले पौधों को व्यवस्थित किया गया है।

उदाहरण–

1.

Fruit crops	J37	Seed crops	J38
Apple	J371	Rice	J381
Orange	J372	Wheat	J382
Musa	J373	Oat	J383
Grape	J374	Rye	J384

2. KX Animal husbandry में उपयोगी पशुओं का प्राथमिकता के क्रम में व्यवस्थित किया गया है। जैसे–

Milk producing animals	KX31	
Cow		KX311
She buffalo		KX312
She goat		KX313

10.3.18 वरेण्य ग्रन्थ युक्ति (Classic Device)

अद्वितीय कृतियाँ जिन्हें पढ़कर असीम प्रेरणा मिलती है। ऐसी मौलिक कृति को वरेण्य कृति माना जाता है जिसे पढ़कर उस पर अन्य ग्रंथ लिखने की प्रेरणा मिलती है। वरेण्य ग्रंथ विधि द्वारा एक मौलिक कृति पर लिखी गई अनेक व्याख्याओं, टीकाओं/भाषान्तरों को मूलकृति के साथ ही व्यवस्थित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में इस विधि के द्वारा किसी वरेण्य कृति के सभी संस्करणों (Editions), अनुवादों (Translations), रूपान्तरों (Adaptations) को तथा उन पर लिखी गई विभिन्न टीकाओं, व्याख्याओं, व्याख्याओं के सभी संस्करणों को तथा इन पर भी लिखी गई अन्य टीकाओं, उपटीकाओं को फलकों में एक साथ व्यवस्थित करना संभव है।

इस युक्ति का प्रयोग करते समय वरेण्य कृति के, मूल विषय के वर्गांक के साथ x में जोड़ दिया जाता है। x के बाद लेखक की प्रतीक एकल संख्या को जोड़ दिया जाता है तथा लेखक पक्ष के साथ कृति (Work Number) की प्रतीक एकल संख्या को जोड़ा जाता है। लेखक पक्ष व कृति पक्ष को [P] पक्ष के स्तरों के रूप में प्रयोग किया जाता है। कृति

पक्ष के वर्गांक प्राप्त करने के लिए, मुख्य वर्ग O Literature के कृति पक्ष अर्थात [P4] पक्ष के लिए दिये गये नियमों का पालन करना चाहिए।

उदाहरण–

Chark Samhita LBx1,1

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise) 2

1. Middle class Hindus
2. Tribal youth
3. Middle class rural women
4. Constitution of India
5. Maruti car
6. HIndi grammar
7. World geography
8. History of world
9. Honda motorcycle
10. Structure of democratic state

10.4 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप यह जान चुके होंगे कि युक्तियों की भूमिका वर्गांक निर्माण में कितनी अधिक है। इन युक्तियों से पंक्तियाँ एवं श्रृंखला में ग्राह्यता बढ़ जाती है। इस इकाई में युक्तियों का तात्पर्य को बताया गया है तथा प्रमुख युक्तियों की अवधारणाओं को समझाते हुए उनसे संबंधित समुचित उदाहरण भी दिये गये हैं तथा छात्र स्वतः ही उदाहरणों से संबंधित वर्गांकों का विश्लेषण कर युक्तियों के प्रयोग की जानकारी कर सकते हैं।

10.5 शब्दावली (Glossary)

युक्ति – वर्गीकरण पद्धति में एक विशेष प्रावधान या व्यवस्था जो वर्गांक निर्माण में सहायक हो।

विषय युक्ति – एक मुख्य वर्ग के साथ दूसरे मुख्य वर्ग के एकलों का मुख्य वर्ग सहित लघु कोष्ठक में जोड़ना।

स्मृति सहायक युक्ति	–	समान अवधारणा वाले एकलों के लिए निर्धारित अंकों में समानता जो याद रखने में सहायक हों।
अध्यारोपण युक्ति	–	एक ही अनुसूची में दो एकल अंकों का होना।
भौगोलिक युक्ति	–	विषयों के साथ भौगोलिक क्षेत्रों का बिना किसी संयोजी चिन्ह के साथ प्रयोग।

10.6 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

अभ्यास शीर्षक 1

1. NT58
2. NQ52
3. P111,J
4. 2m44,N62
5. Q78M5
6. 2wM51
7. 54(D)
8. 24(Q)
9. Z(Q7)
10. V41:1942,(x)

अभ्यास शीर्षक 2

1. Y53-73(Q2)
2. Y12-72
3. Y15-31-53
4. V44:2
5. D5133M
6. P152:2
7. U1
8. V1
9. D5135H
10. W6:2

10.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra
5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical colon classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.
8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical colon classification, P.K.Publishers, Agra.

10.8 निबंधात्मक प्रश्न (**Essay type Questions**)

1. युक्ति की अवधारणा को समझाते हुए युक्तियों के विभिन्न प्रकारों के नाम लिखिए।
2. विषय युक्ति एवं भौगोलिक युक्ति का उदाहरण सहित वर्णन करें।
3. वर्णानुक्रम एवं स्मृति सहायक युक्तियों की उदाहरण सहित व्याख्या करें।

इकाई – 11 : सामान्य एकलों का परिचय एवं प्रयोग

Unit–11 : Introduction and use of Common Isolate

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 परिभाषाएँ
11.4 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों के प्रकार
11.4.1 पूर्ववर्ती सामान्य एकल
11.4.11 स्थान पक्ष से पूर्व प्रयोग होने वाले
11.4.12 स्थान पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले
11.4.13 काल पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले
11.4.2 परवर्ती सामान्य एकल
11.4.21 परवर्ती ऊर्जा सामान्य एकल
11.4.22 परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकल
11.4.22.1 स्थानीकृत संस्थाएँ
11.4.22.2 अस्थानीकृत संस्थाएँ
11.5 सारांश
11.6 शब्दावली
11.7 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
11.8 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें
11.9 निबंधात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना (Introduction)

कोई भी एकल विचार अथवा विचार स्वरूप जो किसी भी विषय के अंग, स्वरूप, दृष्टिकोण होते हैं लेकिन एक प्रमुख अथवा किसी विषय विशेष का स्थान प्राप्त करने अथवा मान्य करने के योग्य नहीं होते हैं। उन्हें एकल विचार कहा जाता है। सामान्य एकल ऐसा एकल विचार होता है जिसका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग के साथ करने पर हमेशा एक ही अर्थ व्यक्त हो तथा किसी भी प्रकार का परिवर्तन न हो। दूसरे शब्दों में सामान्य एकल ऐसी एकल संख्याएँ होती हैं, जिनका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग, प्रामाणिक वर्ग एवं इनके किसी भी पक्ष (Facet) के साथ किया जा सकता है। द्विबिन्दु वर्गीकरण भाग 2 पृष्ठ 2.5 पर सामान्य एकलों की एक तालिका दी गई है तथा इसके प्रयोग संबंधी नियम भाग 1 पृष्ठ 1.45 पर दिये गये हैं। सामान्य एकल/सर्वमान्य एकल की अभिव्यक्ति वर्गीकरण पद्धति में किसी भी स्थान पर समान पद के लिए अनेक विद्वानों ने विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं– ऐसे एकल जिनका प्रयोग किसी भी विषय के साथ, बिना किसी निर्देश के तथा उसी संयोजी चिन्ह के साथ किया जाता है।

11.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपको ज्ञात होगा कि–

- सामान्य एकल किसे कहते हैं?
- ये एकल कितने प्रकार के होते हैं?
- इनका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है; तथा
- स्थानीकृत तथा अस्थानीकृत संस्थाओं को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है?

11.3 परिभाषाएँ (Definitions)

1. डॉ. रंगनाथन के अनुसार ''सामान्य एकल को मुख्य वर्ग में किसी भी विषय के साथ संलग्न किया जा सकता है तथा इसके पृथक अंकन से एक ही प्रकार का अर्थ स्पष्ट होता है। अर्थात् इस प्रकार के सामान्य एकल को किसी भी वर्गांक के साथ जोड़ा जा सकता है।'' "A Common Isolate is an isolate idea, denoted by the same isolate term and represented by the same isolate number in more or less every class having it."
2. डब्ल्यू.सी.बी.सेयर्स का मत है कि ''विभिन्न विशेषताओं के आधार पर विभिन्न रूपों में निहित विषय की विशेषताओं का संकेत देने वाले एकल को ही सामान्य एकल कहते हैं।''

इन परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों के लिए सामान्य एकल की विचारधारा आवश्यक है। अधिकांशः वर्गीकरण पद्धतियों में इन दृष्टिकोणों को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए सामान्य एकल की व्यवस्था की गयी है। सामान्य एकल में निम्न विशेषताएँ होती हैं–

1. सामान्य एकल को किसी भी मुख्य वर्ग के साथ प्रयोग कर सकते हैं।
2. सामान्य एकल किसी एक पद को एक ही शब्द या अंकन द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।
3. सामान्य एकल ज्ञान का सूक्ष्म से सूक्ष्म अंश है।
4. सामान्य एकल को विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है।

11.4 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों के प्रकार (Common Isolates in Colon Classification)

डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों का अध्ययन करने के बाद द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति को एक वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। इनके द्वारा द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के प्रथम संस्करण (1933) में सामान्य एकल के लिए सामान्य उप–विभाजन (Common Sub-Division) के नाम को प्रयोग किया था। चौथे संस्करण (1952) में दो अलग–अलग सारणियों का प्रयोग किया गया जिसे पूर्ववर्ती (Anteriorising) तथा परवर्ती (Posteriorising) सामान्य एकल कहते हैं। पाँचवें संस्करण (1957) में सामान्य एकल (Common Isolate) छठवें संस्करण (1960) में इसका बहुत ही व्यवस्थित ढ़ंग से प्रयोग किया गया है। सातवें संस्करण (1987) में इसको और अधिक विस्तार प्रदान किया गया है। सामान्य एकल को निम्न 2 भागों में विभाजित किया गया है तथा इनके लिए रोमन छोटे अक्षरों का प्रयोग किया गया है।

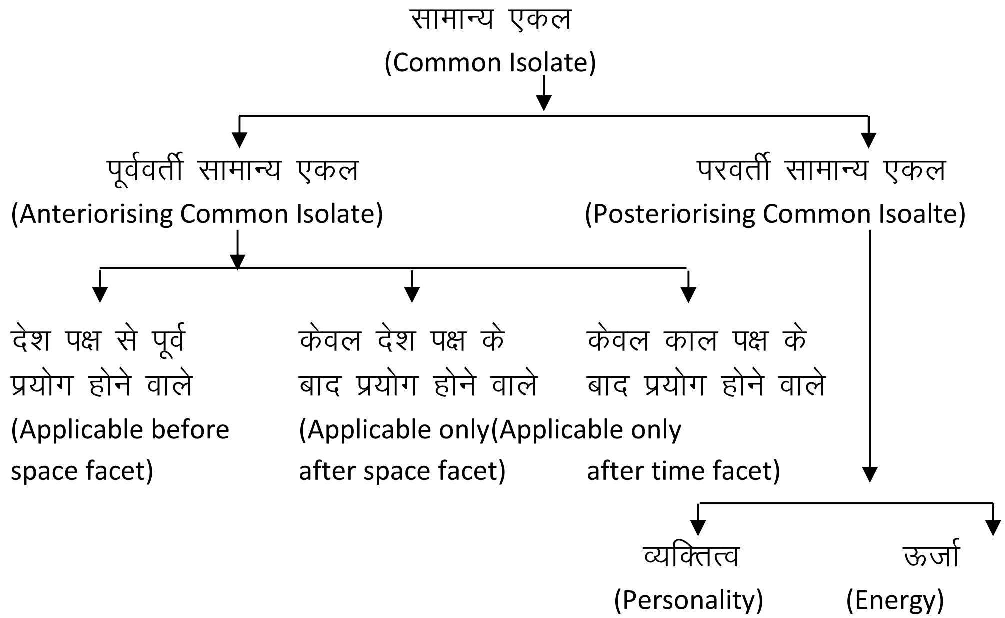

11.4.1 पूर्ववर्ती सामान्य एकल (Anteriorising Common Isolate-ACI)

ये ऐसे सामान्य एकल होते हैं जिनको किसी भी मुख्य वर्ग के साथ जोड़ा जा सकता है। इसके लिए किसी भी संयोजी चिन्ह (Connecting symbol) की आवश्यकता नहीं होती है।

उदाहरण :

1.	Bibliography of chemistry books	Ea
2.	Journal of physics	Cm
3.	Biological instruments	Ge
4.	Geographical Atlas	Uf
5.	Encyclopaedia of library science	2k
6.	Chemical abstract	Eam

इनको तीन वर्गों में विभक्त किया गया है।

11.4.11 स्थान पक्ष से पूर्व प्रयोग होने वाले (Applicable before space Facet)

ये ऐसे पूर्ववर्ती सामान्य एकल हैं जिनका प्रयोग सामान्यतः स्थान पक्ष से पूर्व किया जाता है। इनके प्रयोग से पूर्व मुख्य वर्ग, व्यक्तित्व, पदार्थ एवं ऊर्जा पक्ष हो सकते हैं। सामान्य एकल पीरियोडिकल, सीरियल्स एवं कॉन्फ्रेंस प्रोसीडिंग एवं एन्साइक्लोपीडिया के

सामने पक्ष परिसूत्र P,P_2 दिया गया है। यहाँ P के स्थान पर प्रकाशन स्थान आएगा तथा कब से प्रारंभ हो रहा है अर्थात् प्रकाशन वर्ष कोमा (,) के बाद P_2 के रूप में आयेगा।

उदाहरण :

7.	Journal of International law, published from India, started in 1964	Z1m44,N64
8.	Journal of Indian history published from Jaipur in 1996	V44m44,N96
9..	Bibliography of mathematics period covered upto 1955	BaN5
10.	National conference on human disease (New Delhi, 1997)	L:4p44,N97

p conference proceedings के सामने पक्ष परिसूत्र दिया गया है जिसका p स्थान की अभिव्यक्ति करता है तथा कोमा के बाद P_2 को कालक्रम विधि (CD) से प्राप्त किया जाता है। उपर्युक्त उदाहरण इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

11.	A bibliography of reference books on India education	T.44a47

यहाँ T.44 Indian education के लिए प्रयुक्त हुआ है। Bibliography के लिए सामान्य एकल से a जोड़ा गया है। यह Generalia bibliography मुख्य वर्ग का भी प्रतीक है। शीर्षक की मांग को देखते हुए तथा नियम में प्रावधान के आधार पर a के साथ Generalia bibliography के [P] पक्ष की एकल संख्या 47 Reference book के लिए जोड़ा गया है। इसी प्रकार–

12.	Current book on Indian history	V44a66
13.	A catalogue of manuscripts on Indian philosophy available in Indian libraries	R6912,244
14.	Hindi books on physics published in U.K.	Ca312,156
15.	History of libary science in India	2v44

नियमानुसार [P] व [P2] पक्षों के लिए संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया जाता है।

16.	Encyclopaedia Britannica	k1, L68

उपर्युक्त विश्वकोश में संपूर्ण विश्व से संबंधित सूचना संग्रहीत है अतः [P] पक्ष के रूप में भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या 1 World का प्रयोग किया गया है। इस विश्वकोश के प्रथम प्रकाशन का वर्ष 1768 है अतः [P2] पक्ष को कालक्रम विधि (CD) से प्राप्त कर एकल संख्या L68 का प्रयोग हुआ है।

17.	Encyclopaedia of Libary and Information Science	2k
18.	International encyclopaedia of Medical Sciences	Lk1

प्रथम उदाहरण में विश्वकोश में विषय को सर्वप्रथम दिया गया है। तत्पश्चात सामान्य एकल k का प्रयोग किया गया है।

दूसरे उदाहरण में विषय के साथ सामान्य एकल k के [P] पक्ष का प्रयोग किया गया है। [P] पक्ष के रूप में 1 World का प्रयोग किया गया है। (यह वह भौगोलिक क्षेत्र है, जिसके संबंध में विश्वकोश में सूचना दी गई है)

m = periodical (इसके अंतर्गत दैनिक पत्र तथा साप्ताहिक, पाक्षिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक पत्र पत्रिकाएँ आती हैं)

पक्ष परिसूत्र : m [P], [P2]

[P] = वह देश (Country) है, जहाँ से पत्र, पत्रिका प्रकाशित हुई है। इसे (GD) से प्राप्त किया जाता है।

[P2] = प्रकाशन का वर्ष (Year of Publication) अर्थात् प्रकाशन का वह वर्ष जिसमें पत्र, पत्रिका का सर्वप्रथम प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसे (CD) से प्राप्त किया जाता है।

19.	Journal of International law	Z1m
20.	Journal of Political science (Published from Jaipur)	Wm44
21.	Herald of Libary Science (Published from Varanasi, from 1962)	2m44, N62
22.	Journal of French history	V53m
23.	Modern law Review (Published from U.K.,since 1899)	Zm56, M99
24.	Indian journal of economics (Started from 1956)	Xm44, N56

n = Serial (क्रमिक रूप से प्रकाशित होने वाले प्रकाशन)

पक्ष परिसूत्र : n [P], [P2]

इसके प्रयोग के नियम भी सामान्य एकल k के समान ही हैं।

उदाहरण :

25. Statesman year book n1, M65
(Issued from U.K., year 1865)

उपरोक्त उदाहरण में :

n = सामान्य एकल (यहाँ इसका प्रयोग वार्षिकी के लिए हुआ है)

1 = [P] पक्ष– इस पक्ष में प्रकाशन का स्थान न देकर, उस भौगोलिक क्षेत्र का अंक दिया गया है जिसके संबंध में वार्षिकी में सूचना दी गई है। उपरोक्त वार्षिकी संपूर्ण विश्व के बारे में सूचना देने वाली वार्षिकी है अतः इसके लिए भौगोलिक क्षेत्र के रूप में 1 = world का प्रयोग हुआ है।

M65= [P2] पक्ष– इस पक्ष के अंतर्गत उस वर्ष की प्रतीक एकल संख्या दी गई है, जिस वर्ष में वार्षिकी का सर्वप्रथम प्रकाशन हुआ।

26. International year book on education Tn1
27. India–a reference annual (Started from 1953) n44, N53

सामान्य एकल n का प्रयोग Directory के लिए भी किया जाता है।

उदाहरण :

28. Directory of plastic manufacturers F52n
29. Directory of Rajasthan State n4437

p = Conference proceedings (सम्मेलन कार्यवाही)

पक्ष परिसूत्र : p [P], [P2]

[P] = Geographical area of purview (वह भौगोलिक क्षेत्र जहाँ के प्रतिनिधियों को सम्मेलन में मुख्य रूप से सम्मिलित किया गया है) इसे (GD) से प्राप्त किया जाता है।

[P2] = इस पक्ष में सम्मेलन के वर्ष को दिया जाता है। इसे (CD) से प्राप्त किया जाता है।

[P2] पक्ष को कालक्रम विधि से प्राप्त करने का प्रावधान है–

(i) यदि सम्मेलन क्रमिक रूप से आयोजित नहीं किया जाता रहा है तो वर्ष की प्रतीक संख्या को तीन अंकों में देना चाहिए।

(ii) यदि सम्मेलन क्रमिक रूप से आयोजित किया जाता रहा है, तो सम्मेलन के प्रारंभ होने का दशक या शताब्दी अंक दिया जाना चाहिए।

उदाहरण :

30. International conference of Biologists Gp1

31. Proceedings of Indian pharmatists LX3p44, N86
(Conference held at Shimla, year 1986)

यहाँ सम्मेलन का क्षेत्र भारत तक ही सीमित है अतः [P] पक्ष के रूप में 44 भारत का प्रयोग हुआ है। इसे क्रमिक रूप से आयोजित होने वाला सम्मेलन नहीं माना है अतः इसके लिए सम्मेलन के प्रारंभ होने की प्रतीक एकल संख्या को तीन अंकों अर्थात् वर्ष अंकों में दिया गया है।

32. Annual conference of IASLIC 24p44,N5
(Held at Jaipur, 1985)

उक्त सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला सम्मेलन है अतः इसके लिए सम्मेलन के प्रथम बार आयोजित होने वाले वर्ष (1955) को आधार मानकर दशाब्दी अंकों का प्रयोग किया गया है, जो N5 है।

इसके विपरीत जब सम्मेलन क्रमिक रूप से आयोजित होने वाला न हो तो सम्मेलन के वर्ष को तीन अंकों में प्रयोग करेंगे।

33. National conference on Hindu law
(Held at Bombay, year 1964)
Z(Q2)p44, N64

34. Conference of librarians of Punjab
(Held at Amritsar, year 1982)
2p4436, N82

यद्यपि सम्मेलन अमृतसर में आयोजित हुआ है किंतु इसका विस्तार क्षेत्र पंजाब है अतः [P] पक्ष के रूप में 4436 पंजाब का प्रयोग हुआ है। सम्मेलन क्रमिक रूप से आयोजित न होने के कारण [P2] पक्ष को, वर्ष अंकों के रूप में दिया गया है।

v–History (इतिहास)

पक्ष परिसूत्र : v [S] '[T]

[S] पक्ष में उस भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या को दिया जाता है जहाँ संबंधित विषय का इतिहास प्रदर्शित करना है। इस पक्ष के लिए एकल संख्या सारणी 4 (Space Isolate Table 4) से प्राप्त की जानी चाहिए।

उदाहरण :

35.	History of library science in Asia	2v4
36.	History of mathematics in China	Bv41
37.	History of kingship in the world	W4, 1v1

[T] पक्ष के रूप में उस काल की प्रतीक संख्या प्राप्त की जाती है, जिस काल से संबंधित विषय का इतिहास प्रदर्शित करना है। इसे काल एकल सारणी (Time Isolate Table 3) से प्राप्त करना चाहिए। [T] पक्ष को अंतिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में प्राप्त करने का नियम है।

38.	History of Ayurveda in India upto 1976	LBv44 'N7-
39.	History of book science in Germany brought upto 1945	3v55 'N5
40.	History of wrestling in Greece upto 1060 AD	MY245v51 'E7
41.	History of monarchy in Europe, period covered upto 1500 AD	W4v5 'J1

यदि किसी विषय का इतिहास, केवल एक ही वर्ष का दर्शाना है तो संबंधित वर्ष की प्रतीक एकल संख्या को तीन अंकों में प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण :

42.	History of foreign trade in Pakistan during 1975	X : 54v44Q7 'N75

इसी प्रकार यदि इतिहास किसी विशिष्ट दशक का ही प्रदर्शित करना है तो वहाँ भी संबंधित दशक की प्रतीक संख्या ही प्रयोग में लानी चाहिए न कि अंतिम प्रभावी दशक की।

43.	History of journalism in Europe during 1990's	4v5 'N9
44.	History of library development in U.S.A. during 1960's	2v73 'N6

w = Biography (जीवनी)

Biography को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है–

(i) General biographies (सामान्य जीवनियाँ)

(ii) Individual biographies (व्यक्तिगत जीवनियाँ)

दोनों प्रकार की जीवनियों के लिए पृथक–पृथक परिसूत्र दिये गये हैं–

(i) General biographies or Collective biographies (सामान्य अथवा सामूहिक जीवनियाँ)

इस श्रेणी में किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के एक से अधिक व्यक्तियों की जीवनियों को वर्गीकृत किया जाता है। जैसे–भारतीय वैज्ञानिकों की जीवनी। यह एक व्यक्ति की जीवनी नहीं है अपितु भारत के अनेक वैज्ञानिकों की जीवनियों का संग्रह है। इसका पक्ष परिसूत्र निम्न प्रकार है–

w [P], [P2]

[P] पक्ष में उस भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या को दिया जाता है जिस देश या क्षेत्र के वे व्यक्ति हैं। इसे (GD) से प्राप्त किया जाता है। [P2] पक्ष में सबसे कम आयु के व्यक्ति (Youngest born) के जन्म वर्ष को, अंतिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में देने का नियम है (नियम 21w5 पृष्ठ 1.47 को देखा जा सकता है)

उदाहरण :

45.	Biographies of Indian librarians (Youngest born in 1939)	2w44, N3
46.	Biographies of American scientists (Youngest born in 1959)	Aw73, N5
47.	Biographies of German Zoologist (Youngest born in 1925)	Kw55, N3
48.	Biographies of Indian Social workers (youngest born in 1907)	YXw44, N1

सामान्य जीवनी में जहाँ [P2] पक्ष के संबंध में सूचना उपलब्ध न हो वहाँ [P] पक्ष का ही प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण :

49.	Biographies of cartographers of Japan	U11w42
50.	Biographies of Indian palmists	D : 8627w44

यदि जीवनी किसी एक विषय से संबंधित व्यक्तियों की न हो तो w को ही मुख्य वर्ग मानकर उसके साथ भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या का उल्लेख [P] पक्ष के रूप में किया जाता है।

उदाहरण :

51.	Biographies of Indians	w44
52.	International who's who	wn1
53.	Indian who's who	wn44

ये वार्षिक प्रकाशन है अतः w के साथ सामान्य, एकल n का प्रयोग करना आवश्यक है।

(ii) Individual biographies (व्यक्तिगत (एक व्यक्ति की) जीवनी)

ऐसी जीवनी जो सामूहिक न होकर, किसी व्यक्ति विशेष से ही संबंधित हो, इस श्रेणी में रखी जाती है। इसका परिसूत्र निम्न प्रकार है –

w [P]

[P] पक्ष में व्यक्ति का जन्म वर्ष (CD) से प्राप्त कर तीन अंकों अर्थात् वर्ष अंकों में दिया जाता है।

उदाहरण :

54.	Biography of Dr. S.R.Ranganathan (Library scientist, born in 1892)	2wM92
55.	Biography of C.V. Raman (Indian Physicist born in 1895)	CwM95

व्यक्तिगत जीवनी के साथ ही परिसूत्र में आत्मकथा (Auto-biography) तथा पत्र या पत्र व्यवहार (Letters or Correspondence) से संबंधित वर्गांक निर्मित करने का भी प्रावधान है।

56.	Letters of Melville Dewey (born in1851)	2wM51, 4
	Auto-biography of John Kepler (A great astronomer, born in 1571)	B9wJ71, 1

Biographies of persons related with a geographical area (किसी भौगोलिक क्षेत्र के इतिहास से संबद्ध व्यक्तियों की जीवनियाँ)

ऐसे व्यक्तियों की जीवनियों (जिन्होंने अपने राष्ट्र, प्रदेश तथा इलाके के इतिहास के

विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है) के लिए सामान्य एकल w के स्थान पर y7 Case study का प्रयोग करना चाहिए। ऐसे सभी व्यक्तियों की जीवनी को मुख्य वर्ग History के अंतर्गत वर्गीकृत करना चाहिए तथा [P] पक्ष के रूप में संबंधित देश, प्रदेश अथवा क्षेत्र की एकल संख्या (GD) से प्राप्त करनी चाहिए। इस प्रकार प्राप्त वर्गांक के साथ सामान्य

एकल y7 का प्रयोग कर संबंधित व्यक्ति के जन्म का वर्ष (CD) से प्राप्त कर सीधा जोड़ देने का नियम है। (नियम V9y7, परिशिष्ट पृष्ठ 23).

ऐसे व्यक्तियों की जीवनी का वर्गांक बनाते समय उनके पद की प्रतीक संख्या नहीं लगाई जानी चाहिए।

y7 के लिए वही परिसूत्र प्रयोग में लाया जाएगा जो w के लिए दिया गया है। अर्थात् y7 का परिसूत्र सामान्य एकल w के समान ही होगा।

उदाहरण :

57.	Biography of Jawahar Lal Nehru (Late Prime Minister of India, born in1889)	V44y7M89
58.	Life of Kennedy (Former U.S.A. President, born in 1917)	V73y7N17
59.	Correspondence of Hilter (born in 1892)	V55y7M92,4

Biographies of friends, relatives and associates of an important person (महत्वपूर्ण व्यक्ति के संबंधियों तथा सहयोगियों की जीवनियाँ)

ऐसे व्यक्ति की जीवनी जिसका महत्व केवल किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के साथ मित्र के रूप में या संबंधी के रूप में, या किसी अन्य रूप से संबद्ध होने के कारण है, तो ऐसे व्यक्ति की जीवनी का वर्गांक उस महत्वपूर्ण व्यक्ति की जीवनी का ही वर्गांक होगा। वस्तुतः ऐसे व्यक्तियों की जीवनी का अध्ययन करने में पाठक इस कारण से रुचि रखता है कि उनकी जीवनियाँ, उस महत्वपूर्ण व्यक्ति के जीवन के विषय में, विशेष सूचना प्रदान कर सकती है।

उदाहरण :

60.	Biography of Smt. Kamla Nehru (Wife of Jawahar Lal Nehru, born in 1889)	V44y7M89

w के स्थान पर y7 का प्रयोग मुख्य वर्ग D Spiritual Experience and Mysticism में भी आध्यात्मिक व रहस्यवादी व्यक्तियों के लिए किया जाता है। इस संबंध में इस पुस्तक के अध्याय 15 में मुख्य वर्ग D के अंतर्गत व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

61.	Life of Kabir (Hindu mystic, born in 1398)	D 2y7H98

Biographies of literary persons (साहित्यिक लेखकों की जीवनियाँ)

विभिन्न साहित्यों से संबंधित लेखकों की जीवनियों को संबंधित साहित्य के अंतर्गत ही वर्गीकृत करना चाहिए। विभिन्न प्रकार के साहित्यिक विषयों से संबंधित व्यक्तियों की जीवनियों को विषय विधि (SD) के द्वारा विशिष्टता प्रदान की जा सकती है।

62.	Biographies of historical novelists	O,3w(V)
63.	Biographies of Hindi idealistic poets	O152,1w(R321)

x = Works (Collection or Selection)

लेखकों की रचनाओं के संग्रह या संकलन के लिए सामान्य एकल x का प्रयोग किया जाता है।

x का परिसूत्र भी w के समान ही है। x के लिए भी परिसूत्र दो प्रकार से दिये गये हैं –

प्रथम प्रकार का परिसूत्र ऐसे संग्रहों या संकलनों के लिए दिया गया है जो किसी एक व्यक्ति के न होकर अनेक व्यक्तियों की रचनाओं से संग्रहीत है। इन्हें works in general कहते हैं। इसका परिसूत्र निम्न प्रकार है–

x [P], [P2]

[P] पक्ष को (GD) से प्राप्त किया जाता है। (GD) के द्वारा उस भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या प्राप्त की जाती है, जिस क्षेत्र के लेखकों की रचनाओं का संग्रह है।

64.	Collected works of Indian Scientists	Ax44

यहाँ विषय के साथ सामान्य एकल x का प्रयोग कर, संग्रह को प्रदर्शित किया गया है। x के लिए [P] पक्ष (GD) से प्राप्त किया गया है।

[P2] पक्ष को (CD) से प्राप्त किया जाता है। (CD) के द्वारा सबसे कम आयु के लेखक के जन्म वर्ष की प्रतीक एकल संख्या को अंतिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में प्रयोग किया जाता है।

[P] तथा [P2] पक्षों के लिए संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया जाता है।

65.	Collected works of Russian Zoologists (Youngest born in 1950)	Kx58, N5
66.	Works of Indian Mathematicians (Youngest born in 1973)	Bx44, N7

उपरोक्त उदाहरणों में सबसे कम आयु के व्यक्ति का जन्म वर्ष, [P2] पक्ष के रूप में (LED) के रूप में प्राप्त किया है।

एक व्यक्ति की रचनाओं के संग्रह (Individual works)

दूसरे प्रकार का परिसूत्र व्यक्तिगत संग्रहों को प्रदर्शित करने के लिए दिया गया है, जो निम्न प्रकार है–

x [P]

[P] पक्ष

इसका परिसूत्र भी w Biography के समान ही है। [P] पक्ष को (CD) से प्राप्त किया जाता। (CD) के द्वारा लेखक का जन्म वर्ष तीन अंकों (वर्ष अंकों) में प्राप्त करने का नियम है।

उदाहरण :

67.	Works of Ramanujan (Indian Mathematician, born in 1887)	BxM87
68.	Collected works of Dr. Melvil Dewey (born in 1851)	2xM51

विशिष्ट प्रकार के साहित्यिक संग्रह को विषय विधि (SD) के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

उदाहरण :

69.	Collected Hindi dramas on social change	O152,2x(Y:3)

ऐसे पूर्ववर्ती सामान्य एकल जिनका परिसूत्र नहीं दिया गया है–

अनुसूची में स्थान पक्ष से पूर्व प्रयुक्त होने वाले अनेक ऐसे सामान्य एकल दिये गये हैं, जिनका कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है। इनका प्रयोग मुख्य वर्ग तथा स्थान पक्ष से पूर्व प्रयुक्त किसी भी पक्ष के साथ, अर्थात् [P], [M] तथा [E] पक्षों के साथ, बिना किसी संयोजक चिन्ह के सीधा किया जा सकता है।

इस श्रेणी में सामान्य एकलों में c = Concordance, d = Table, e = formula तथा y1 से y8 (y7 को छोड़कर) सम्मिलित हैं।

सामान्य एकल e Formulas का प्रयोग instruments के अर्थ में भी किया जाता है।

उदाहरण :

70.	Biological instruments	Ge
71.	Mathematical formulas	Be

सामान्य एकल y1 Programme of instructions का प्रयोग इस प्रकार के अर्थ में किया जाना चाहिए, जहाँ किसी प्रकार के शिक्षण हेतु निर्देश दिये जा रहे हैं।

72.	A guide book for cooking	MA3y1
73.	Learning cricket–a guide	MY2141y1

11.4.12 स्थान पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले (Applicable only after Space Facet)

ये ऐसे पूर्ववर्ती सामान्य एकल हैं जिनका प्रयोग केवल स्थान पक्ष (Space Facet) के बाद ही हो सकता है।

उदाहरण :

74.	Report of Ministry of Health, Govt. of India	L44r
75.	Quarterly statistics of lung disease in Japan in 2017	L45:4.42sP17
76.	Report on Indian education	T.44p
77.	Annual statistics of heart disease in Canada, 1992	L32:4.72sN92
78.	Quarterly statistics of Belgium foreign trade	X:54.5961s

11.4.13 काल पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले (Applicable only after Time Facet)

इन सामान्य एकलों को केवल काल/स्थान (Time) पक्ष के बाद ही प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

79.	Report of Indian labour commission (1960)	X:9.44 'N60t
80.	Statistics of rural crimes in India during 1992–1999	Y31:45.44'N99 ¬ N92s
81.	Survey report of Indian higher education in 2016	T4.44'P16t4
82.	Concordance of William Shakespeare	O111,2J64c

83.	Population tables	Y : 5d
84.	A guide book for Water Polo	MY256y1
85.	Case studies in rural crimes	Y31 : 45y7
86.	Geometrical instruments	B6e
87.	Guide to televeision engineering	D65,45y1
88.	Syllabus of economic management	X : 8y2
89.	Manual of referece service	2 : 7y8

दो पूर्ववर्ती सामान्य एकलों का एक साथ प्रयोग

आवश्यकता पड़ने पर दो पूर्ववर्ती सामान्य एकलों का एक साथ प्रयोग किया जा सकता है। (नियम 2032, पृष्ठ 1.43)

उदाहरण :

90.	A bibliography on history of education	Tva

यहाँ–

Tv = History of education, तथा

Tva = A bibliography on history of education हुआ।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise) 1

11. Biography of Chinese
12. History of medical science in India
13. International encyclopaedia of physics
14. Journal of Education (Published from Delhi, started in 1978)
15. Biography of Dewey
16. Bibliography of thesis in library science
17. International conference on economics held at Jaipur in 2010
18. Report on Indian agriculture
19. Annual statistics on female disease in India, 1999
20. Report of Indian Education Commission, 1972

11.4.2 परवर्ती सामान्य एकल (Posteriorising Common Isolate-PCI)

ये सामान्य एकल संयोजी चिन्हों के साथ प्रयुक्त होते हैं तथा दो प्रकार के होते हैं– परवर्ती ऊर्जा एवं परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकल।

11.4.21 परवर्ती ऊर्जा सामान्य एकल (Posteriorising Common Isolate-Energy)

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग किसी भी पक्ष के बाद ऊर्जा पक्ष के संयोजक चिन्ह द्विबिन्दु (:) के साथ किये जाने के कारण ही इसे ऊर्जा सामान्य एकल कहते हैं इसका कोई पक्ष परिसूत्र नहीं है।

उदाहरण :

1.	Historical research	V:f
2.	Measuring rainfall	U2855:b6
3.	Geographical surveys	U:u
4.	Experimental Astrophysics	B9:6:f3
5.	Critical evaluation of the Kothari Commission Report (1964)	T.44'N64t:g
6.	Designing of dresses	M8:b2
7.	Discussions on teaching of Geography through mother toungue in Basic Secondary Schools	TN3,2:3(U),31:f4

उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऊर्जा सामान्य एकलों का प्रयोग मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष के साथ किया जा सकता है। इसी प्रकार–

8.	Literary criticism	O : g
9.	Critical study of English Literature	O111:g
10.	Critical study of English dramas	O111,2:g
11.	Critical study of Shakespeare	O111,2J64:g
12.	Critical study of King Lear of Shakespeare	O111,2J64,11:g
13.	Experiments on rice farming	J381:f3
14.	Astronomical observations	B9:f2
15.	Weighing of cotton yarn	M71; 1:c1
16.	Discussion on Muslim culture	Y73(Q7):1:f4
17.	Calculating lunar days	B92:142:b1
18.	Criticism of work of Dr.S.R.Ranganathan	2xM92:g

Energy Common Isolates को, विषय विधि (SD) के द्वारा विस्तार प्रदान किया जा सकता है–

उदाहरण :

19. Psychological elements in the Hamlet of Shakespeare O111,2J64,11:g(S)
20. Morals in Sanskrit poetry O15,1:g(R4)
21. Love in Nirala's Poetry O152,1N05:g(S:55)
22. Women psychology in Punjabi fiction O152,3:g(S55)
23. A study of rural scenes in Prem Chand's novels O152,3M80:g(Y31)

11.4.22 परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकल (Posteriorising Common Isolate-Personality)

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग किसी संस्थान, संघ व्यावसायिक प्रतिष्ठान, सरकारी विभागों इत्यादि को वर्गीकृत करने के लिए किया जाता है।

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष (Personality Facet) के संयोजी चिन्ह कोमा (,) से किया जाता है। इनका प्रयोग सामान्यतः स्थान पक्ष के बाद किया जाता है।

उदाहरण :

24. Library profession in Great Britain 2 . 56, b
25. Scientific institutions of USSR A . 58, d
26. Mathematical society (America) B . 73, g
27. Astronomical observatory at Jaipur B9.4437.J,f2
28. Chamber of commerce in India X5.44,k
29. Institutions of higher education in Rajasthan T4.4437,d

11.4.22.1 स्थानीकृत संस्थाएँ (Localised Bodies)

किसी संस्था, संस्थान, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, संघ, सरकारी विभागों आदि को व्यक्त करने के लिए इन सामान्य एकलों का प्रयोग कोमा (,) के साथ किया जाता है। यदि संस्था, संस्थान अथवा संघ स्थानीकृत (Localised) है, तो [P] पक्ष को वर्णाक्रम विधि (AD) से प्राप्त किया जाता है।

उदारहण : [CI] [P]

30. Roorkee Engineering University D . 44, t4, R
    Haryana Agriculture University, Hissar J . 44, t4, H

उपरोक्त दोनों, उच्च शैक्षणिक संस्थाएँ (Higher education institutions) है अतः PCI– Personality Common Isolate t4 = Higher का प्रयोग किया गया है। ये संस्थाएँ स्थानीकृत (Localised) है, अतः t4 के लिए [P] पक्ष (AD) से प्राप्त किया गया है इसलिए

संस्था के नाम के नाम के प्रथम अक्षर को अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षर में लिखकर अभिव्यक्त किया गया है।

11.4.22.2 अस्थानीकृत संस्थाएँ (Non-localised Bodies)

ऐसी संस्थाएँ जो स्थानीकृत नहीं हैं, अर्थात जिनको स्थान विशेष के आधार पर विशिष्टता प्रदान नहीं की जा सकती है, उन्हें कालक्रम विधि (CD) के द्वारा विशिष्टता प्रदान की जाती है। (CD) का प्रयोग [P] पक्ष के रूप में किया जाता है।

कालक्रम विधि (CD) के प्रयोग में, प्रथम अंक शताब्दी अंक होता है, जिसे अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षरों में लिखा जाता है। अतः स्थानीकृत (Localised) तथा अस्थानीकृत (Non-localised) संस्थाओं के अंतर को स्पष्ट करने की दृष्टि से (CD) के प्रयोग से पूर्व अरेबिक अंक ''9'' का प्रयोग करने का नियम है। दूसरे शब्दों में अंक ''9'' का प्रयोग इसलिए किया जाता है ताकि स्थानीकृत (Localised) संस्था के लिए (AD) तथा अस्थानीकृत (Non-localised) संस्था के लिए (CD) के प्रयोग का अंतर स्पष्ट हो सके।

उदाहरण :

31. Indian Library Association [CI] [P]
    (Founded in year 1933) 2.44, g, 9N

उपरोक्त संघ स्थानीकृत नहीं है, अतः इसके लिए [P] पक्ष (CD) से प्राप्त किया गया है। (CD) के रूप में 1933 के लिए शताब्दी अंक N का प्रयोग पर्याप्त समझा गया है। शताब्दी अंक N से पूर्व अरेबिक अंक ''9'' का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया गया है।

[P2], [E] तथा [T] पक्षों का प्रयोग

आवश्यकता पड़ने पर PCI–Personality Common Isolate के साथ मुख्य वर्ग V History के [P2], [E] तथा [T] पक्षों का प्रयोग किया जा सकता है। (नियम 272, पृष्ठ 1.48)।

इस पक्ष परिसूत्र को निम्न प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है–

[CI], [P], [P2] : [E] '[T] अर्थात सर्वप्रथम Personality Common Isolate, फिर इसके लिए [P] पक्ष या तो (AD) या (CD) से प्राप्त करके लगाना चाहिए तत्पश्चात् मुख्य वर्ग V History के [P2] व [E] पक्षों से उपयुक्त एकल संख्या प्राप्त करके लगायी जा सकती है तथा आवश्यकता पड़ने पर [T] पक्ष का भी प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :

32. Functions of the Vice-Chancellor of [CI] [P] [P2] [E]
    [T]

Panjab University during 1994 T.44, d, P, 12 : 3 'N94

उपरोक्त उदाहरण में–

T4.44 = University education in India

d = Common Isolate (इसे संस्था के लिए प्रयुक्त किया गया है)

P = Panjab University के नाम का प्रथम अक्षर। इसे स्थानीकृत संस्था होने के कारण (AD) से प्राप्त किया गया है और यह सामान्य एकल d पक्ष के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

12 = Vice-chancellor. यह [P2] पक्ष है जो नियमानुसार मुख्य वर्ग V History के [P2] पक्ष से लिया गया है।

3 = Functions, यह [E] पक्ष है। इसे भी मुख्य वर्ग V History के [E] पक्ष से लाया गया है।

N94 = 1994. यह [T] पक्ष है। यह एक सामान्य पक्ष है। इसे भी V History के परिसूत्र की भांति प्रयोग में लाया गया है।

33. Constitution of the Senate of the Jiwaji University, Gwalior T4.44, d, J, 3 : 2

34. Powers and function of the President of Indian Library Association (Founded in year 1933) 2.44, g, 9N, 1 : 3

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise) 2

1. Experiments on rice farming
2. Medical observation
3. Critical study of works of Melvil Dewey
4. Critical study of Prem Chand Novels
5. Medical Profession in India
6. Jiwaji University, Gwalior
7. American Library Association

8. Colon Classification Scheme : A Critical valuation
9. Research on Psychology
10. Discussiion on teaching in Secondary Schools

11.5 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको सामान्य एकल क्या हैं, उनके प्रकार तथा अनुप्रयोग के नियम एवं सूत्रों का ज्ञान हो गया होगा। इस इकाई में पूर्ववर्ती एवं परवर्ती सामान्य एकलों को आवश्यकतानुसार विश्लेषण करते हुए उदाहरणों सहित समझाया गया है। वास्तव में सामान्य एकलों की सहायता से वर्गीकरण की प्रक्रिया आसान हुई है तथा अनुसूची के आकार में वृद्धि को भी नियंत्रित किया जा सका है।

11.6 शब्दावली (Glossary)

सामान्य एकल – ऐसे एकल जिनका प्रयोग बिना किसी निर्देश के किया जा सकता है। ये अपना अर्थ भी कभी परिवर्तित नहीं करते।

पूर्ववर्ती सामान्य एकल – बिना संयोजी चिन्ह के साथ प्रयुक्त होते हैं।

परवर्ती सामान्य एकल – निर्धारित संयोजी चिन्ह के साथ ही प्रयुक्त किये जाते हैं।

11.7 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

अभ्यास प्रश्न 1

1. w41
2. Lv44
3. Ck1
4. Tm44,N78
5. 2wM51
6. 2a494
7. Xp1,P10
8. J.44r
9. L9F:4.44sN99

10. T.44 'N72t

<u>अभ्यास प्रश्न 2</u>

1. 381 : f3
2. L : f2
3. 2xm51 : g
4. O152, 3M80 : g
5. L.44, b
6. T4.44, d, J
7. 2.73, g, 9N7
8. 2.51N3 : g
9. S : f
10. T2:3:f4

11.8 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra
5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical colon classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.
8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical colon classification, P.K.Publishers, Agra.

11.9 निबंधात्मक प्रश्न (**Essay type Questions**)

1. सामान्य एकलों को परिभाषित करते हुए उनके प्रकारों की चर्चा करें।
2. पूर्ववर्ती सामान्य एकलों को उदाहरण सहित समझाइए।
3. परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकलों की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

इकाई – 12 दशा सम्बन्ध का वर्ग संख्या निर्माण में प्रयोग

Unit–12 : Use of Phase Relations in Formation of Class Number

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना
12.2 उद्देश्य
12.3 दशा संबंधों के स्तर एवं प्रकार
13.3.1 अंतर–विषयी दशा संबंध
13.3.2 अंतर–पक्ष दशा संबंध
13.3.3 अंतर–पंक्ति दशा संबंध
12.4 सारांश
12.5 शब्दावली
12.6 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
12.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें
12.8 निबंधात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना (Introduction)

विषय जगत की रचना का इतिहास देखें तो पता चलता है कि प्रारंभ में इतने विषय नहीं थे अर्थात् विषयों के इतने नामों से नहीं जाना जाता है। कुछ विषय ऐसे हैं जो दूसरे विषयों से अलग होकर अपनी पहचान बनाई है तथा कुछ विषय विलय होकर अस्तित्व में आए हैं। जटिल एवं मिश्रित विषयों की रचना भी दो पृथक विचारों से मिलकर ही बनते हैं। ज्ञान जगत में विभिन्न विषयों का समन्वय होता है। ये विभिन्न विषय एक–दूसरे से संबंधित होते हैं नवीन विषयों का सृजन भी विषयों के संपर्क में आने से होता है। इसलिए विषयों के सूक्ष्म विश्लेषण के कारण डॉ.रंगनाथन ने सरल, जटिल एवं मिश्रित विषयों की धारणा का प्रतिपादन किया। इन धारणाओं में से प्रत्येक को 'दशा' भी कहा जाता है। इन दशाओं को एक साथ मिलाने को दशा संबंध कहते हैं। दशा संबंध विषय जगत के क्षेत्र में विषयों के निर्माण की एक विधि है। इसके अंतर्गत वे वर्ग विषय हैं जो दो या दो से अधिक वर्गों के पारस्परिक संबंधों से निर्मित होते हैं। संघटक वर्गों का दशा (Phase) तथा इनके संबंधों को दशा संबंध (Phase Relation) कहते हैं। दशा संबंध दो या अधिक मुख्य वर्गों, मुख्य वर्ग के एक या उसी पक्ष के एकलों के मध्य या फिर एकलों की उसी पंक्ति (Array) के बीच हो सकता है।

12.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको ज्ञात होगा कि –

- दशा संबंध का क्या तात्पर्य है?
- दशा संबंध कितने स्तरों में होता है?
- दशा संबंध कितने प्रकार के होते हैं; तथा
- दशा संबंधों से संबंधित शीर्षकों को वर्गीकृत करने की विधियाँ आदि।

12.3 दशा संबंधों के स्तर एवं प्रकार (Levels and Types of Phase Relation)

डॉ. एस.आर.रंगनाथन ने दशा संबंधों के निम्नलिखित प्रकार एवं स्तर बताए हैं –

1. अंतर विषयी दशा संबंध (Inter Subject Phase Relation)
2. अंतर पक्ष दशा संबंध (Intra Facet Phase Relation)
3. अंतर पंक्ति दशा संबंध (Intra Array Phase Relation)

उपर्युक्त दशा संबंधों के स्तरों के प्रत्येक के पाँच प्रकार के संबंध बताए गए हैं। इन्हें नीचे दी गई सारणी से समझा जा सकता है–

क्र. सं.	दशा संबंधों के प्रकार	Intra class/ Subject	Intra Facet	Intra Array
1.	General	a	j	t
2.	Bias	b	k	u
3.	Comparison	c	m	v
4.	Difference	d	n	w
5.	Influence	g	r	y

नोट– छठवें संस्करण में इनके लिए संयोजी चिन्ह शून्य (0) का प्रयोग होता है जबकि सीसी के 7वें संस्करण में संयोजी चिन्ह शून्य के स्थान पर Ampersond (&) निर्धारित किया गया है तथा दशा संबंध टूल फेज रिलेशन जोड़ दिया गया है जिसको पाँचवा स्थान दिया गया है।

12.3.1 अंतर–विषयी दशा संबंध (Inter Subject Phase Relation)

इस प्रकार के दशा संबंध में दो या दो से अधिक विभिन्न विषयों को एक साथ रखकर, उनके मध्य विभिन्न प्रकार के संबंध प्रदर्शित किये जाते हैं। ये दो या दो से अधिक विषय, मूल विषय अथवा संयुक्त विषय दो ही प्रकार के हो सकते हैं। जैसे–

(i) किसी एक मूल विषय का किसी दूसरे मूल विषय के साथ संबंध।
(ii) किसी एक मूल विषय का किसी दूसरे संयुक्त विषय के साथ संबंध।
(iii) किसी संयुक्त विषय का किसी अन्य मूल विषय के साथ संबंध।
(iv) किसी संयुक्त विषय का किसी अन्य संयुक्त विषय के साथ संबंध।

मूल विषय (Basic Subjects) ज्ञान जगत को विभाजित करने वाली प्रथम क्रम की पंक्ति है अर्थात् किसी वर्गीकरण प्रणाली के मुख्य वर्ग व प्रामाणिक वर्ग (Canonical Classes) मूल वर्ग होते हैं। जैसे–

2 Library Science, D Engineering, B6 Geometry, R4 Ethics, C6 Electricity

12.3.11 अंतर–विषयी सामान्य संबंध (Inter Subject General Relation)

इस प्रकार के संबंध दो विषयों के मध्य दर्शाया गया हो और उन संबंधों का विषय न किसी प्रकार के झुकाव, तुलना, अंतर एवं न ही प्रभाव पर आधारित हो तो ऐसा संबंध सामान्य संबंध कहलाता है। इसका प्रतीक a है तथा संयोजी चिन्ह के रूप में शून्य का प्रयोग होता है।

उदाहरण :

1. Relation between Religion and Philosophy — Q oa R

2. Relation between Mathematics and Engineering B oa D
3. Relation between Education and Sociology T oa Y

12.3.12 अंतर–विषयी झुकाव वाला संबंध (Inter Subject Bias Relation)

इस संबंध के अंतर्गत एक विषय का झुकाव दूसरे विषय की ओर होता है अर्थात् किसी मूल विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाए कि अन्य मूल विषयों से संबद्ध लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हो। इस प्रकार के संबंधों को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है –

उदाहरण :

1. Education for Sociologists T ob Y
2. Mathematics for Engineers B ob D
3. Philosophy for Religious groups R ob Q

12.3.13 अंतर–विषयी तुलना संबंध (Inter Subject Difference Relation)

इस संबंध का आधार दोनों विषयों के साथ तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है। इसके लिए संयोजी चिन्ह oc निर्धारित किया गया है।

उदाहरण :

1. Comparision between Mathematics & Engineering B oc D
2. Philosophy and Religion-A comparision R oc Q
3. Comparative study of Physics and Chemistry C oc E

12.3.14 अंतर–विषयी अंतर संबंध (Inter Subject Difference Relation)

जब दोनों विषयों के संबंध आपस में अंतर पर आधारित हों तो अंतर–विषयी अंतर संबंध स्थापित होता है इसके लिए संयोजी चिन्ह od निर्धारित किया गया है।

उदाहरण :

1. Difference between Mathematics and Engineerings B od D
2. Difference between History and Political Science V od W
3. Difference between Science and Religion A od Q

12.3.15 अंतर–विषयी प्रभाव संबंध (Inter Subject Influence Relation)

जब दो विषयों में से एक विषय दूसरे विषय को प्रभावित करे तो वह प्रभाव संबंध के अंतर्गत होता है। यहाँ पर यह अवश्य ध्यान रखें कि जो विषय प्रभावित होता है वह पहले आएगा तथा जो विषय प्रभावित करता है वह बाद में प्रयुक्त होगा। इसका संयोजी चिन्ह og निर्धारित किया गया है।

उदाहरण :

1.	Sociology influencing Education	T og Y
2.	Influence of Mathematics on Engineering	D og B
3.	Influence of Political Science on History	V og W

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise) 1

1. Influence of Religion on Philosophy
2. Relation between Physics and Mathematics
3. Difference between Useful arts and Fine arts
4. Make a comparision between Political Science and Law
5. Influence of Education on Sociology
6. Agriculture for Botanists

12.3.2 अंतर पक्ष दशा संबंध (Inter Facet Phase Relation)

जब दो मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष (Facet) को दो समकक्ष एकल संख्याओं में परस्पर संबंध स्थापित किया गया हो तो वह अंतर पक्ष दशा संबंध कहलाता है। इस प्रकार का संबंध दो भिन्न पक्षों में दर्शाया जाता है तथा यह संबंध P, M, E, S पक्ष की दो एकल संख्याओं के मध्य हो सकता है।

12.3.21 अंतर पक्ष सामान्य संबंध (Inter Facet General Relation)

इस प्रकार के संबंध में, झुकाव, तुलना प्रभाव व अंतर प्रदर्शित नहीं होता इसीलिए इन्हें सामान्य संबंध के अंतर्गत रखा जाता है। इसका प्रतीक चिन्ह oj निर्धारित किया गया है।

उदाहरण :

1.	Relation between Anatomy and Physiology	G:2 oj 3
2.	Relation between Hinduism and Jainism	Q 2 oj 3
3.	Relation between India and Africa	U.44 oj 6
4.	Relation between tort and crime	Z,44 oj 5
5.	Relation between Academic and special library	23 oj 4

12.3.22 अंतर पक्ष झुकाव संबंध (Inter Facet Bias Relation)

यदि किसी एक मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष की दो एकल संख्याओं के मध्य संबंध तो हो लेकिन उसमें झुकाव प्रदर्शित हो रहा है तो इस प्रकार का संबंध कहलाता है।

इसका प्रतीक चिन्ह ok निर्धारित किया गया है।

उदाहरण :

1.	Anatomy biased towards Physiology	G:2 ok 3
2.	Indian history biased towards Chinese history	V44 ok 41
3.	Libraries for Educators	2 ok T

12.3.23 अंतर पक्ष तुलनात्मक संबंध (Inter Facet Comparison Relation)

अंतर पक्ष तुलनात्मक संबंध के अंतर्गत किसी एक मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष की दो एकल संख्याओं के मध्य तुलना की अभिव्यक्ति होती है। इसका प्रतीक चिन्ह om है।

उदाहरण :

1.	Comparative study of Anatomy and Physiology	G:2 om 3
2.	British law and Indian law-A comparison	Z56 om 44
3.	Comparitive study of Hindu and Muslim religion	Q2 om 7
4.	Academic and special library-make a comparison	23 om 4

12.3.24 अंतर पक्ष अंतर संबंध (Inter Facet Difference Relation)

इसके अंतर्गत एक मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष की दो एकल संख्याओं के बीच अंतर स्पष्ट करने पर यह संबंध होता है। इसका प्रतीक चिन्ह on है।

उदाहरण :

1.	Difference between British law and Indian law	Z56 on 44
2.	Difference between Anatomy and Physiology	G:2 on 3
3.	Difference between paper currency and gold currency	X61; 1 on 4

12.3.25 अंतर पक्ष प्रभावी संबंध (Inter Facet Influence Relation)

मुख्य वर्ग के किसी पक्ष की दो समकक्ष एकल संख्याओं में से एक का प्रभाव दूसरी संख्या पर प्रदर्शित हो रहा हो तो वह अंतर पक्ष प्रभावी संबंध कहलाता है। इसका प्रतीक चिन्ह or है।

उदाहरण :

1.	Influence on Anotomy by Physiology	G:2 or 3
2.	Consumption influenceing economic production	X:2 or 1
3.	Influence of British law on Indian law	Z44 or 56
4.	Influence of Academic library on special library	24 or 3
5.	Influence of Analytical Chemistry on Physical Chemistry	E:2 or 3

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise) 2

1. Relation between pre-secondary and secondary education
2. Relation human anatomy and physiology
3. Human physiology for pathologists
4. Foreign trade between Indian and U.K.-A comparisn
5. Influence of public library on academic library
6. Difference between machanical and nuclear engineering

12.3.3 अंतर–पंक्ति दशा संबंध (Inter Array Phase Relation)

जब एक ही मुख्य वर्ग के किसी एक ही पक्ष (Facet) के दो एकल (Isolate) या दो उप–एकलों (Sub-isolate) के मध्य संबंध होता है तो इसे अंतर–पंक्ति दशा संबंध कहते हैं। इन्हें एक पक्ष के दो श्रृंखला एकलों के मध्य संबंध भी कह सकते हैं। यह संबंध भी पाँच प्रकारों में वर्णित किया गया है। विवरण नीचे दिया जा रहा है–

12.3.31 अंतर–पंक्ति सामान्य संबंध (Inter Array General Relation)

जब दो श्रृंखला एकलों (Chain isolates) में संबंध सामान्य प्रकार के हों तो ये संबंध अंतर–पंक्ति सामान्य संबंध कहलाते हैं। इसका प्रतीक चिन्ह ot है।

उदाहरण :

1.	Relation between ground ecology and water ecology	G:551 ot 5
2.	Rural and urban sociology	Y 31 ot 3
3.	Relation between classification and cataloguing	2 : 51 ot 5
4.	Relation between human hand and finger	L 167 ot 8
5.	Brick and stone	D 33 ot 4

12.3.32 अंतर–पंक्ति झुकाव वाले संबंध (Inter Array Biased Relation)

जब एक मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष में प्रयुक्त दो श्रृंखला एकलों या उप–एकलों के मध्य संबंध तो हो लेकिन यह एक ओर झुकाव व्यक्त करता हो तो वह अंतर–पंक्ति झुकाव युक्त संबंध कहलाता है। इसका प्रतीक चिन्ह ou है।

उदाहरण :

1.	Rural sociology for urbanites	Y 31 ou 3
2.	Chitfund for industrial bank	X 622 ou 8

12.3.33 अंतर–पंक्ति तुलनात्मक संबंध (Inter Array Comparison Relation)

जब एक मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष के दो श्रृंखला एकलों या उप–एकलों का तुलनात्मक संबंध हो तो वह अंतर पंक्ति तुलनात्मक संबंध कहलाता है। इसका प्रतीक चिन्ह ov है।

उदाहरण :

1.	Comparison of psychology between man & woman	S 51 ov 5
2.	Comparison between Urdu and Persian literatures	O 164 ov 8
3.	Common noun and proper nouns-compared	P, 312 ov 3

12.3.34 अंतर–पंक्ति अंतर संबंध (Inter Array Difference Relation)

जब एक मुख्य वर्ग के एक पक्ष की दो श्रृंखला एकलों या उप–एकलों का अंतर व्यक्त हो रहा हो तो यह अंतर–पंक्ति अंतर संबंध कहलाता है। इसका प्रतीक चिन्ह ow है।

उदाहरण :

1.	Difference between rural and ruban sociology	Y 31 ow 3
2.	Difference between male and female education	T 51 ow 5
3.	Difference between common and proper noun	P, 312 ow 3

12.3.35 अंतर–पंक्ति प्रभावी संबंध (Inter Array Influence Relation)

जब एक मुख्य वर्ग एक ही पक्ष के एक ही श्रृंखला एकलों एवं उप–एकलों की दूसरी श्रृंखला एकलों या उप–एकलों को प्रभावित करे तो वह अंतर–पंक्ति प्रभावी संबंध कहलाता है। लेकिन जो प्रभावित एकल होता है वह पहले आएगा तथा जो प्रभावित करता है वह एकल बाद में आएगा। इसका प्रतीक चिन्ह oy है।

उदाहरण :

1.	Influence by rural culture on urban culture	Y 33 oy 1
2.	Influence of business tax on indirect tax	X71, 34 oy 9
3.	Influence of rainfall on dry conditions	U2856 oy 5
4.	Influence of female education on male education	T 51 oy 5

अभ्यास हेतु शीर्षक (Examples for Examples) 3

1. Relation between education of blind and dumb
2. Party-in-power influenced by the party in oposition in democracy
3. University and research libraries-differentiated

4. Comparative study of lecture method and discussion method of teaching science
5. House of Parliament (India)-A comparative study of their powers and functions

12.4 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपको दशा संबंधों के स्तरों एवं उनके प्रकारों की पूरी जानकारी हो गई होगी। इस इकाई में दशा संबंधों के समस्त पहलुओं को उदाहरण सहित समझाया गया है। वास्तव में विषयों के आविर्भाव में ऐसे दृष्टिकोणों का अपना महत्व होता है जिसमें पारस्परिक संबंधों की अभिव्यक्ति होती है। अनुसूचियों के अंतर्गत इनका प्रावधान करना न तो संभव है न ही उपयुक्त। अतः ऐसी स्थिति में दशा संबंध की अवधारणा का प्रावधान सुविधाजनक होता है। इससे एकलों की पुनरावृत्ति भी नहीं होती तथा अनुसूची के आकार में वृद्धि पर भी नियंत्रण रखा जा सकता है।

12.5 शब्दावली (Glossary)

पंक्ति – एक मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष के अंतर्गत श्रृंखला एकल या उप–एकल।

दशा संबंध – विभिन्न विषयों, पक्षों एवं पक्षों के एकलों में विभिन्न प्रकार के संबंध दशा संबंध कहलाते हैं।

12.6 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

अभ्यास शीर्षक 1

1. R og Q
2. C oa B
3. M od N
4. W oc Z
5. Y og T
6. J ob I

अभ्यास शीर्षक 2

1. T 1 oj 2
2. L : 2 oj 3
3. L : 3 ok 4
4. X : 54.44 om 56
5. 23 or 2
6. D 6 on 7

अभ्यास शीर्षक 3

1. T,522 ot 5
2. W6, 41 oy 5
3. 234 ow 6
4. T : 3(A), 97 ov 8
5. V44, 31 ov 2:3

12.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra
5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical colon classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.
8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.

9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical colon classification, P.K.Publishers, Agra.

12.8 निबंधात्मक प्रश्न (Essay type Questions)

1. दशा संबंध की अवधारणा को समझाते हुए इसके स्तर एवं प्रकारों के नाम लिखिए।
2. अंतर विषय दशा संबंधों को उदाहरणों सहित समझाइए।

पंचम खण्ड

कालन क्लासीफिकेशन 6 वाँ संशोधित संस्करण - भाग 3

इकाई – 13 मुख्य वर्ग *A* से *F* तक वर्गांक निर्माण

Unit–13: Formation of Class Number from Main Class A-F

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना
13.2 उद्देश्य
13.3 मुख्य वर्ग प्राकृतिक विज्ञान–A
13.4 मुख्य वर्ग सामान्य कृतियाँ–a
13.5 मुख्य वर्ग पुस्तकालय विज्ञान–2
13.6 मुख्य वर्ग गणित–B
13.7 मुख्य वर्ग भौतिक विज्ञान–C
13.8 मुख्य वर्ग अभियांत्रिकी–D
13.9 मुख्य वर्ग रसायन विज्ञान–E
13.10 मुख्य वर्ग प्रौद्योगिकी–F
13.11 वर्गीकृत शीर्षक
13.12 अभ्यास हेतु शीर्षक
13.13 सारांश
13.14 शब्दावली
13.15 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
13.16 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना (Introduction)

इस इकाई में 8 मुख्य वर्गों का वर्णन किया गया है। सभी मुख्य वर्गों को उनके लिए निर्धारित पक्ष परिसूत्र के अनुसार शीर्षकों को वर्गीकरण करने की विधियों को बहुत ही सरल ढंग से उदाहरण सहित समझाया गया है। इस इकाई में पुस्तकालय विज्ञान, भौतिकी, गणित, अभियांत्रिकी आदि मुख्य वर्गों का वर्णन किया गया है।

13.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको ज्ञात होगा कि –

- सामान्य वांगमय सूची मुख्य वर्ग की पुस्तकालय विज्ञान में उपयोगिता क्या है?
- मुख्य वर्ग रसायन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कैसे एक–दूसरे के पूरक हैं।
- पारंपरिक वर्गों का निर्माण कैसे होता है; तथा
- इस इकाई में उल्लिखित विषयों के वर्गांक निर्माण की विधियाँ आदि।

13.3 मुख्य वर्ग प्राकृतिक विज्ञान (Main Class-Natural Science-A)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में मुख्य वर्ग प्राकृतिक विज्ञान का सांकेतिक चिन्ह A निर्धारित किया गया है। लेकिन इस मुख्य वर्ग को इस संस्करण (छठवें) में विस्तारित नहीं किया गया है। इसलिए इस मुख्य वर्ग के अंतर्गत उन पुस्तकों को वर्गीकृत किया जाता है जिन्हें विज्ञान की किसी अन्य शाखाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जाता है। इस मुख्य वर्ग से संबंधित कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

1. Books on Science – A
2. History of Science – Av
3. Bibliography of Scientific books – Aa
4. Encyclopaedia of Natural Science – Ak
5. Biography of Scientists – Aw
6. Journal of Science (Published from India, started in 1974) – Am44, N74

इसी प्रकार अन्य शीर्षकों को वर्गीकृत किया जा सकता है।

13.4 सामान्य वांगमय सूची (General Bibliography-a)

सामान्य वांगमय सूची के अंतर्गत ऐसी सूची को वर्गीकृत करने का प्रावधान है जिसमें अनेक विषयों से संबंधित जानकारी मिलती है। इसके अंतर्गत किसी पुस्तकालय से संबंधित, किसी क्षेत्र विशेष में प्रकाशित होने वाले ग्रंथ, किसी रूप विशेष में प्रकाशित तथा किसी भाषा विशेष में प्रकाशित ग्रंथों को रखा गया है। जैसे–संदर्भ ग्रंथों की सूची, सरकारी प्रकाशनों की सूची, किसी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों की सूची आदि। इन्हें किसी विषय के साथ नहीं रखा जा सकता इसीलिए इस मुख्य वर्ग को सामान्य वांगमय सूची कहा गया है। इसका पक्ष परिसूत्र निम्नलिखित है–

a[P], [P_2] [P_3], [P_4]

<u>Facet</u>

P	-	Material
P_2	-	Kind
P_3	-	Area/Country/Publisher/Book seller
P_4	-	Period/Origin

उदाहरण :

	[P]
Braille bibliography	a18
Bibliography of Manuscript	a12
Bibliography of maps	a17
Catalogue of film roll	a1512
List of sound book	a13

2 By Script

एकल संख्या 2 भाषा के अनुसार विभाजित किया गया है।

उदारहण :

Bibliography in French script	a2122
Bibliography in Latin script	a212
Bibliography of books published in Urdu script	a2168

3 By Language

एकल संख्या 3 को भाषा एकल संख्या से विभाजित किया गया है।

उदारहण :

Bibliography in Hindi language	a3152
Bibliography in Latin language	a312
Catalogue in English language	a3111
Bibliography in Sanskrit language	a315

8 By social group of Readers

एकल संख्या 8 को मुख्य वर्ग Sociology के [P] पक्ष से विभाजित कर विस्तारित किया गया है।

उदारहण :

Books for youth	a43–8+12=a43–812
Books for women	a43–8+15=a43–815
Books for urban society	a43–8+33=a43–833
Bibliography of children books	a8+11=a811

95 Translation

इस एकल संख्या के अंतर्गत ऐसी पुस्तकों की सूचियों के शीर्षकों को वर्गीकृत किया जाता है जिनको एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया गया होता है। सर्वप्रथम एकल संख्या 95 को पुस्तक की मूलभाषा से विभाजित करते हैं तत्पश्चात उस भाषा से विभाजित करते हैं जिस भाषा में अनुवाद किया गया है तथा दोनों भाषा एकल संख्याओं के अंतर्गत छोटी आड़ी रेखा (–) का प्रयोग करते हैं।

उदारहण :

Bibliography of English books translated into Hindi	a95 111–152
Bibliography of Persian books translated into Greek	a95 164–13
Bibliography of Sanskrit books translated into English	a95 15–111

[P2] तथा [P3] पक्ष

[P] पक्ष की एकल संख्या 1 List of publication in a geographical area है। किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में प्रकाशित प्रकाशनों की वागंमय सूची का वर्गांक प्राप्त करने के लिए पृष्ठ 1.63 पर दिये गये नियमों के अनुसार आवश्यकतानुसार भौगोलिक क्षेत्र की एकल संख्या को भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त कर 1 के साथ जोड़ा जाता है। [P2] तथा [P3] के बीच में कोई संयोजक चिन्ह का प्रयोग नहीं होगा।

उदारहण :

Bibliography of reference books published in America	mc	[P],	[P2]	[P3]
	a	47,	1	73
Catalogue of periodicals available in libraries of Rajasthan	a	46,	2	4437
Bibliography of printed books published in Great Britain	a	14,	1	56
Sanskrit manuscript in Asiatic society of Bengal	a	12–315, 1446AS		

[P4] पक्ष

इस पक्ष को कालक्रमिक विधि (CD) से प्राप्त किया जाता है। इस पक्ष के पूर्व विराम चिन्ह (,) का प्रयोग किया जाएगा।

उदारहण :

Catalogue of thesis published in Lucknow upto 1995	a494,1445292,N95
Catalogue of printed books published in India, 2012	a14,144,P12
Catalogue of printed books of World Book Fair, 2018 (Delhi)	a14,54481,P18

Catalogue of periodical available in Jiwaji University
Library, Gwalior (Founded in 1964)
a46,2448151,N64

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Bibliography of Doctorate thesis in Indian University, 1960s.
2. Bibliography in German language.
3. Bibliography of books published in Urdu script.
4. Microfilm bibliography.
5. Bibliography of books published in Tamil script
6. Bibliography of Hindi books translated into Russian language
7. Books for rural society
8. Books for old person
9. Books for break-up marriage
10. Bibliography of Dutch language

13.5 मुख्य वर्ग पुस्तकालय विज्ञान (Library Science)

इस मुख्य वर्ग में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान से संबंधित पाठ्य–सामग्री, पुस्तकालय में होने वाले विविध कार्यों एवं गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र (Facet Formula)

2[P]; [M] : [E] [2P]
[P] Library
[M] Material
[E][2P] Problem/Activities

[P] पक्ष

इस पक्ष में विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों को सूचीबद्ध किया गया है।

उदाहरण :

World library	21
National library	213
Public library (Local library)	22
Academic library	23
University library	234

Research library	236

विभिन्न प्रकार के विशिष्ट पुस्तकालयों को व्यावसायिक पुस्तकालय (24) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। इसके साथ विशिष्ट विषय को जोड़ने के लिए विषय विधि (Subject Device) का प्रयोग करने के निर्देश हैं। चार व्यावसायिक पुस्तकालयों से वर्गांक बने बनाए गए हैं।

उदाहरण :

Agriculture library	24 (J)
Medical library	24 (L)
Religious library	24 (Q)
Science library	24 (A)
Library of law discipline	24 (Z)

[P]; [M] पक्ष

पुस्तकालय विज्ञान के [M] पक्ष को Generalia Bibliography के [P] पक्ष से लाकर प्रयोग करने के निर्देश हैं। इसे अर्द्धविराम Semi colan (;) के साथ जोड़ा जाएगा।

उदाहरण :

Reference books in University libraries	234; 47
Periodicals in special libraries	24; 46
Thesis in medical libraries	24(L); 494
Patents in science libraries	24(A); 48

[P]; [M] : [E] [2P] पक्ष

इस पक्ष में पुस्तकालय की गतिविधियों एवं क्रिया–कलापों आदि कार्यों का उल्लेख है। इससे द्विबिन्दु (:) के साथ जोड़ा जाएगा।

उदाहरण :

Principles of book selection	2 : 1
Procedure of book selection	2 : 81
University library administration	234 : 8
Documentation of news paper	2;44 : 97
Accessioning of thesis in college libraries	233;494 : 84
Cataloguing of books in special libraries	24;43 : 55

किसी वर्गीकरण पद्धति एवं सूची संहिता को वर्गीकृत करने के लिए प्रथम संस्करण के वर्ष को कालक्रमिक विधि (Chronological Device) के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा।

उदाहरण :

Dewey Decimal Classification (DDC)	2:51M
Library of Congress Classification (LC)	2:51N
Colon Classification (CC)	2:51N3

Bibliographic Classification (BC)	2:51N34
ALA Cataloguing Rules (1876)	2:55M7
Classified Catalogue Code (CCC)	2:55N34

यदि किसी विषय के पुस्तकालय वर्गीकरण का वर्गांक बनाना हो तो उस विषय को [E] [2P] के 2P2 पक्ष के रूप में विषय विधि (SD) द्वारा लाया जाना चाहिए। विषय विधि का वर्गांक लिखने से पूर्व 9 का प्रयोग कोमा (,) के साथ किया जाएगा। जैसे–

Classification of agriculture literature according to Dewey Decimal Classification	2:51M, 9(J)

इसी प्रकार :

Indexing and abstracting of Physics literature	2:97, 9(C)

अन्य उदाहरण :

University libraries in India	234.44
National library of America	213.73
Future of Pubic libraries in Rajasthan	22.4437 'P18

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. District library
2. Regional library
3. Insurance library
4. Periodicals in public libraries
5. Documentation of reference service in libraries for the blind
6. Pamphlets in economic libraries
7. Classification of political science literature in college libraries according to colon classification
8. Circulation of books in university libraries
9. Research libraries in India
10. Cataloguing of news paper library

13.6 मुख्य वर्ग गणित (Main Class Mathematics-B)

गणित विषय को विशेषताओं के आधार पर विभाजित न करके इसे प्रामाणिक वर्ग (Canonical Division) के आधार पर विभाजित किया गया है। विभिन्न प्रामाणिक वर्गों के पृथक–पृथक पक्ष परिसूत्र भी दिए गए हैं।

प्रामाणिक विभाजन (Canonical Division)

B1	Arithmatic
B2	Algebra
B3	Analysis
B4	Other methods
B5	Trignometry
B6	Geometry
B7	Mechanics
B8	Physico-mathematics
B9	Astronomy

B1 Arithmatic

प्रत्येक प्रामाणिक वर्ग को उपवर्गों में विभाजित कर आवश्यकतानुसार परिसूत्र भी दिये गये हैं।

B13 Integer (theory of numbers)

इसके अंतर्गत परंपरागत रूप से पूर्णांकों के तत्वों का अध्ययन किया जाता है। B13 को Higher Arithmatic पद से भी निर्दिष्ट किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र– B13[P], [P2] : [E] [2P]

Number defined by factor properties	B132
Number defined by partition properties	B135

[P2] पक्ष

इसमें Special equation, Special forms तथा Special arithmatic functions को कालक्रम विधि (CD) से प्राप्त किया गया है। इसके अंतर्गत विशिष्ट प्रकार की Theory, Form तथा Equation को उसके आविष्कार की तिथि के आधार पर निर्मित किया जाता है।

उदाहरण :

Set theory; primality and divisibility	B13, 1
Distribution theory	B13, 2
Diophantine equation	B13, 3

Special equation by (CD)

उदाहरण :

Pell's equation	B13, 3K
Form including partition	B13, 5

Special forms by (CD)

उदाहरण :

Gold bach's theorem	B13, 5L
Waring's problem	B13, 5L 5
Goldbach's theorem of integers	B13, 5L

[E] [2P] पक्ष

इसमें विधियों (Methods) का उल्लेख किया गया है।

उदाहरण :

Integer : Elementary arithmatical method	B13 : 1
Theory of numbes algebraic method	B13 : 2
Method of probability	B13 : 28

B15, B16, B18 को भी B13 की तरह ही विभाजित किया जाएगा।

उदाहरण :

Primality and divisibility of algebraic number	B15, 1
Complex and hyper complex number	B16
Transcendental number	B18

B2 Algebra

B2 Algebra के विभाजनों में B25 Higher algebra है।

पक्ष परिसूत्र– B25[P], [P2] : [E] [2P]

[P] पक्ष

उदाहरण :

Binary higher algebra	B252
Quaternary algebra	B254

P2 पक्ष

उदाहरण :

Linear higher algebra	B25, 1
Cubic	B25, 3

[E] [2P]

उदाहरण :

Special invariant	B25 : 18
Quadratic transformation	B25 : 2

विशिष्ट प्रकार के Transformation के वर्गांक कालक्रम विधि CD द्वारा निर्मित किये जा सकते हैं।

उदाहरण :

Cremona transformation	B25: 8M

(M उस शताब्दी का प्रतीक है जिसमें Cremona transformations के सिद्धांत का आविष्कार हुआ)

B3 Analysis

B3 Analysis के अंतर्गत द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में केवल B33 differential and integral calculus का ही पृथक से परिसूत्र दिया गया है।

पक्ष परिसूत्र– B33 [P], [P2], [P3] : [E] [2P]

[P]	पक्ष	Equation
[P2]	पक्ष	Degree

[P3]	पक्ष	Order
[P4]	पक्ष	Problem

उदाहरण :

Ordinary linear differential equation	B331, 1
Simultaneous quadratic differential equation	B332, 2
Ordinary linear first order differential equation	B331, 1, 1
Simultaneous quadratic second order differential equation	B332, 2, 2
Number solution of ordinary differential second order equation	B331, 1, 2:1
Graphic soulution of cubic total differential sixth degree equation	B333, 3, 6:6

B37 Real Variable एवं B38 Complex variable के लिए भी अनुसूची में अलग से परिसूत्र की व्याख्या की गयी है।

B37 Real Variable

पक्ष परिसूत्र– B37[P] : [E] [2P]

उदाहरण :

Single real variable	B371
Two real variable	B372
Integral real variable	B37 : 1
Riemann theory of integral variable	B37 : 1 M5

B38 Complex variable

पक्ष परिसूत्र– B38[P] : [E] [2P]

उदाहरण :

Complex variable	B38
Single complex variable	B381
Essential singularty of complex variable	B38:45
Exceptional value of complex variable	B38:59

B6 Geoetry

पक्ष परिसूत्र– B6[P] : [E] [2P]

उदाहरण :

Curve of the second degree	B 622
Algebric curve in general	B 627
Geometry of five dimensions	B 65
Geometry with aid of victors	B 6:34
Projective geometry including differential	B 6:7
Higher differential geometry	B 6:35

Enumerative line geometry	B 61:1

B7 Mechanics

पक्ष परिसूत्र– B7[P] : [E] [2P]

उदाहरण :

Solid mechanics	B71
Pendulum	B7196
Floating body	B7:291
Intertia particle	B711:11
Fundamental principle of mechanics	B7:1
Kinetics	B7:32
Kinetics theory of gas	B78:32
Vibration of mechanics	B7:5

B9 Astronomy

पक्ष परिसूत्र– B9[P] : [E] [2P]

[P] पक्ष (इस पक्ष में पृथ्वी, सूर्य, तारे, ग्रह, सैटेलाइट आदि का उल्लेख है

[E] [2P] पक्ष Problem (इसमें समय की गणना, मानक समय, ग्रहों की स्थिति आदि को दर्शाया गया है)

उदाहरण :

Earth	B91
Sun	B93
Artificial satellites	B97894
Year as a unit of time	B9:11
Solar month	B93:123
Right ascension	B9:513
Reduction of centre of earth	B91:52
Dip of horizon	B9:5212

[E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 6 Physical astronomy है। इसमें सूर्य, चंद्र, तारे आदि के भौतिक स्थिति, गति, संरचना एवं तापमान आदि विषयों को समायोजित किया गया है।

उदाहरण :

Brightness of Stars	B96:652
Age of earth	B91:67
Movement of stars	B96:611
Orbit of Venus	B942:72
Radiation of Sun	B93:643
Constitution of milky-way	B9641:68

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Modem algeba
2. Co-ordinate geometry of three dimensions
3. Galois theory of special equation
4. Ordinary linear differential equation
5. Complex variable of an infinite series
6. Motion of Solids in liquids and gases
7. Rotation of earth on its axis.
8. Elliptic integers of algebraic functions.
9. Pell's equation of integers.
10. Spectroscopy of stars
11. Foundation of five dimension geometry
12. Kinetics of viscous liquid

13.7 मुख्य वर्ग भौतिक विज्ञान (Main Class Physics-C)

भौतिक शास्त्र में पदार्थ के गुण ध्वनि, ऊर्जा, प्रकाश, विद्युत एवं चुम्बकत्व आदि की अवस्थाओं, आकार, प्रकृति, गुणों एवं संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। गणित की भांति ही भौतिक विज्ञान को भी द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में अनेक परंपरागत वर्गों (Canonical Classes) में विभाजित किया गया है।

C1	Fundamentals
C2	Properties of matter
C3	Sound
C4	Heat
C5	Light, Radiation
C6	Electricity
C7	Magnetism
C8	Cosmic hypothes

आवश्यकतानुसार अलग–अलग परंपरागत वर्ग हेतु अलग–अलग परिसूत्र दिये गये हैं।

C1 Fundamentals

इसका कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है।

उदाहरण :

Matter	C13
Weight	C11
Energy	C14
Space	C15

C2 Properties of Matter

पक्ष परिसूत्र– C2[P] : [E] [2P]

[P] पक्ष के अंतर्गत पदार्थ के विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन है।

[E] [2P] पक्ष में पदार्थ के गुणों से संबंधित समस्याओं का वर्णन है।

उदाहरण :

Properties of glass	C215
Shape of crystal	C216:25
Pressure of gas	C28:7
Structure of crystal	C216:8
Diffusion of gases	C28:93

C3 Sound

पक्ष परिसूत्र– C3[P] : [E] [2P]

[P] पक्ष में ध्वनि के विभिन्न प्रकारों को दिया गया है।

[E] [2P] पक्ष में ध्वनि से संबंधित समस्याओं को दिया गया है।

उदाहरण :

Infra sound	C32
Generation of sound	C3:1
Velocity of audible sound	C31:21
Nature of infra sound	C32:8

C4 Heat

पक्ष परिसूत्र– C4[E] [2P]

[E] [2P] इस पक्ष में ऊष्मा की समस्याओं का उल्लेख किया गया है।

उदाहरण :

Absorpiton of heat	C4:27
Radiation	C4:25
Thermodynamics	C4:7
Nature of heat	C4:8

C5 Light, Radiation

पक्ष परिसूत्र– C5[P]:[E][2P]

[P] पक्ष के अंतर्गत प्रकाश के प्रकार एवं विभिन्न प्रकार की किरणों एवं [E][2P] पक्ष के अंतर्गत, प्रकाश के फैलाव, इनके प्रभावों अवशोषण, प्रकृति इत्यादि विषय शामिल किये गये हैं।

उदाहरण :

Green light	C515
Blue light	C516
Ultra Violet rays	C52
Gamma rays	C54
Velocity of light	C51:21

Diffraction of X rays	C53:55
Special theories by CD	
Wave	C5:8K9
Electromagnetic	C5:8M6
Quantum	C5:8N
Raman's effect in light	C51:8N28

(Raman's effect in light में 8 के साथ N28 का प्रयोग CD के द्वारा किया गया है। वैज्ञानिक रमन द्वारा 1928 में प्रकाश के प्रभावों पर किये गये आविष्कार के वर्ष को N28 के रूप में दिखाया गया है)।

C6 Electricity

पक्ष परिसूत्र– C6[P] [E] [2P]

[P] पक्ष में विद्युत के प्रकार को दर्शाया गया है।

[E] [2P] पक्ष समस्याओं से संबंधित है।

उदाहरण :

Two phase electricity	C6242
Statical electricity	C63
Three phase electricity	C6243
Generation of electricity	C6:1
Propagation of two phase electricity	C6:2
Photo electricity	C6:45

C7 Magnetism

पक्ष परिसूत्र– C7[P] : [E] [2P]

उदाहरण :

Dia magnetism	C72
Para magnetism	C73
Intensity of magnetism	C7:2

C8 Cosmic Hypotheses

इसको विभाजित नहीं किया गया है।

उदाहरण :

Matter	C83
Time	C86

विशिष्ट वर्ग (Specials)

Atom	C9B2
Nucleus	C9B3
Proton	C9B35
Neutron	C9B31

पद्धतियाँ (Systems)

Gravitation theory	CK
Theory of relativity	CN

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Lamps and lighting
2. Scattering light on liquids
3. Sound velocity
4. Propagation of sound through metals
5. An Indian journal of pure and applied physics (Bangalore, 1973)
6. Conduction of weak currents through metals
7. Propagation of sound through gases
8. Volume of liquids
9. Generation of three phase electric current
10. Low potential two phase electricity according to electromagnetic theory.

13.8 मुख्य वर्ग अभियांत्रिकी (Main Class Engineering-D)

अभियांत्रिकी के परंपरागत विभाग सिविल एवं मैकनिकल हैं। सिविल अभियांत्रिकी एक भ्रामक पद है इरीगेशन, ड्रैनेज, बिल्डिंग तथा ट्रांसपोर्ट–ट्रैक आदि इसी के अंतर्गत आते हैं किंतु द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इन्हें पृथक–पृथक एकल संख्याएँ प्रदान की गई हैं। इसी प्रकार म्यूनिसिपल तथा सैनेटरी अभियांत्रिकी को भी महत्वपूर्ण मानते हुए पृथक एकल संख्याएँ प्रदान की गई हैं।

पक्ष परिसूत्र– D[P], [P2] : [E] [2P]

[P]	Work	
[P2]	(1)	Part (for all except D6)
	(2)	Field of application for D6
[E] [2P]		Problem

[P] पक्ष

उदाहरण :

Text book for road transport	D41
Steam engine	D641
River irrigation engineering	D26
Water supply engineering	D85

Mechanical engineering	D6
Air way	D43
Refuse disposal	D886
Sewage	D86

[P] पक्ष की एकल संख्या 8 म्यूनिसिपल अभियांत्रिकी के अंतर्गत जल वितरण, जल प्रदूषण एवं जल शुद्धिकरण के तरीके दिये गये हैं इनको नियमानुसार रसायन शास्त्र की एकल संख्या से विभाजित करना है।

उदाहरण :

Purification of water	D855
Purification of water by chemical treatment	D8553
Purification of water by chlorine	D8553171

[P2] पक्ष

[P] पक्ष की एकल संख्याओं के लिए [P2] पक्ष अलग–अलग दिया गया है।

For 2 irrigation के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Head work of a river	D26,2
Surplus work for tank	D27, 3
Flood protecting and river training work	D26, 8
Surplus work	D2, 3

For 3 Building के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Earth work in a building	D32, 1
Brick floor in a building	D33, 3
Cemented wall	D35, 41
Steel and other metal pillar	D38, 45

411 Road के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Earth work of a road	D4112, 1
Wood paved earth work	D4111, 1
Foundation of earth for roads	D4112, 2
Macadam surface	D4113, 3

415 Railway के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Standard gague	D41533
Underground railway road	D4154
Mountain	D4156

Sleeper	D415, 33
Platform	D415, 87
Rail	D415, 35
Lighting at the railway platform	D4152, 87
Narrow gauge railway curves	D41531, 5

416 Bridge के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Masonary work	D4163
Reinforced concrete	D4166
Canitilever	D41698
Tunnels	D4194
River training work	D415, 8
Foundation of wooden bridge	D4161, 2
Piers in a steel brigdge	D4168, 4

42 Waterway के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Inter-oceanic canal	D424
Ocean	D425
Submarine	D4254
Lock	D42, 4
Earth work in inland canal	D421, 1
Lock River	D423, 4
Signals for submarines	D4254, 94

5 Vehicles के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Chair vehicle	D5112
Motor cycles	D5135
Spring in the chair	D5112, 5
Body of motor car	D5135, 6

6 Mechanical engineering के लिए [P2] पक्ष

उदाहण :

Illumination	D6, 5
Machinery	D6, 6
Electric lift	D66, 71
Machine tool	D6, 8

[P2] 8 other machinery को विषय विधि (SD) के द्वारा विभाजित करने के निर्देश हैं इसी आधार पर नीचे लिखे वर्गांक निर्मित किये गये हैं।

उदाहरण :

Information retrieving	D6, 8 (2:55)
Computer	D65, 8(B)
Translating machine	D65, 8(P:795)
Excavating machine	D6, 3(D2:1)
Printing machine	D6, 8(M14)
Refrigerating machine	D6, 8(MC421)
Electronic claculator	D65, 8(MB1)

64 Heat engine के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

External combustion engine	D641
Turbine	D645
Oil engine	D6465
Diesel enigne fuel	D6466, 15
Fuel	D64, 15
Engine room	D64, 12

65 Electronic Engineering के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण :

Wireless	D65, 4
Location	D65, 41
Television	D65, 45
Telegraphy	D65, 47

66 Electrical Engineering के लिए [P2] पक्ष

उदाहरण–

Electric engines	D66, 114
Generating room	D66, 12
Chimney for electrical work	D66, 1194
Hydraulic	D66, 1135

[E] [2P] पक्ष

इससे संबंधित एकल संख्यायें अनुसूची में दी गई हैं इनका प्रयोग [P] पक्ष की किसी भी एकल संख्या के साथ किया जा सकता है।

उदाहरण :

Construction of over head transmission wires	D66, 21:7
Design for the body of steam boat	D523, 6:4
Maintenance of electric lift	D66, 71:82
Working of a television	D65, 45:83
Maintenance of railway platform	D415, 87:82
Designing river dams	D26, 8:4

Special Common Isolates (विशिष्ट सामान्य एकल) [E] पक्ष की एकल संख्या 66 के लिए अनुसूची के पृष्ठ 2.45 पर कुछ विशिष्ट सामान्य एकल दिये गये हैं इनका प्रयोग बिना संयोजक चिन्ह के साथ किया जाता है।

A Energy meter	D 66 e 5
A Volt meter	D 66 e 21
A Watt meter	D 66 e 41
A Voltage detector	D 66 e 211
A Ohm meter	D 66 e 11

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Specifications of sub marines signals
2. Storage of weak current
3. A work book of transmission
4. Underground water supply
5. Guru Nanak Engineering College, Ludhiana
6. Radio Engineering
7. Inter oceanic canal harbour
8. Wheat cleaning machines
9. Telephony
10. Electronic clocks

13.9 मुख्य वर्ग रसायन विज्ञान (Main Class Chemistry-E)

रसायन विज्ञान में द्रव्यों के संयोजन, बनावट उनके गुणों तथा रासायनिक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र– E [P], [P2] : [E] [2P], [2P2]

[P]	Substance
[P2]	Composition
[E] [2P]	Problem
[2P2]	Method

[P] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्याओं में अकार्बनिक द्रव्यों एवं कार्बनिक द्रव्यों को शामिल किया गया है।

[P] पक्ष की एकल संख्या 1 Inorganic Substance है। इसे अनेक समूहों में बाँटा

गया है। एकल संख्या 1 को विभाजित करने वाला अंक उस ग्रुप का प्रतीक है जिसके अंतर्गत वह द्रव्य आता है तथा दूसरा एकल अंक आवर्त सारणी से लिया गया है।

उदाहरण : 100 Helium (He)

इसमें 1 = Inorganic substance, प्रथम शून्य ग्रुप का प्रतीक अंक तथा दसूरा शून्य आवर्त का प्रतिनिधित्व करने वाला अंक है।

पूर्ण तत्व अंक बनाने के लिए Element number के साथ संयोजकता संख्या (Valency number) को जोड़ना पड़ता है।

Zinc	= 12+3 = 123
Helium	= 10+0 = 100
Hydrogen	= 11+1 = 111

[P2] पक्ष

यह पक्ष [P] पक्ष के द्रव्य अंक 5, 6, 7 व 8 के लिए ही दिया गया है।

उदाहरण :

Salt	E4
Aluminium	E131
Acid	E3
Protein	E92Z2
Vitamin	E97
Ethen	E5, 281
Organic acid	E5, 3
Amino compound	E5, 51

[E] [2P] पक्ष

Physical chemistry	E:2
Analysis of alloy	E 192 : 3
Composition of water	E 210 : 3
Photochemistry	E : 25
Volumetric analysis	E : 35
Chemical thermodynamics	E : 24

[2P2] पक्ष

इस पक्ष का प्रावधान [E] पक्ष की एकल संख्या 3 Analytical chemistry के लिए ही किया गया है।

उदाहरण :

Semi-micro analytical chemistry	E:3, 2
Commercial analytical chemistry	E:3, 6
Gravimetric	E:3, C1
X-ray	E:3, E53
Turbidimetry	E:3, E82

Mass spectroscopy	E:3, T5

E9G BioChemistry एक Special पक्ष है इसे P पक्ष का विस्तार माना गया है।

उदाहरण :

Specials	E9A
Biochemistry	E9G
Biochemistry of fats	E9G, 94
Biochemic analysis of colorimetry of gold	E9G, 118:3, E1

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Acid of Benzene
2. Photochemistry of sulphur
3. Colormetry of gold
4. Chemical analysis of alloy
5. Analytical chemistry of copper
6. Bio-substance
7. Automatic weight of sodium
8. Law of osmosis
9. Chemistry of gases
10. Oxidation of zinc

13.10 मुख्य वर्ग प्रौद्योगिकी (Main Class Technology-F)

यह मुख्य वर्ग रासायनिक प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिक प्रौद्योगिकी तक सीमित हैं। इसके अंतर्गत रसायन शास्त्र एवं प्रौद्योगिकी दोनों का अध्ययन किया जाता है। इस मुख्य वर्ग में रासायनिक पदार्थों के उपयोग का अध्ययन किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र : F [P] : [E] [2P]

[P] Substance

[E][2P] Problem and Process

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत प्रौद्योगिकी से संबंधित पदार्थ आते हैं जो E Chemistry के [P] पक्ष के समान हैं। इसलिए इस मुख्य वर्ग में [P] पक्ष से संबंधित दिये गये एकलों के अतिरिक्त अन्य एकल E रसायन शास्त्र से लिए जाएंगे।

उदाहरण :

Petrol technology	F5552

Artificial silk technology	F573
Coal technology	F551
Liquid soap technology	F949695
Food technology	F53
Industrial wine making	F547
Poison technology	F594
Technology of washing	F94966
Fuel gas technology	F558

[E] [2P] पक्ष

प्रौद्योगिकी मुख्य वर्ग का यह पक्ष प्रक्रियाओं एवं समस्याओं दोनों से संबंधित है। अनुसूची में दिये गये निर्देश के अनुसार [E] [2P] पक्ष की एकल संख्याओं को मुख्य वर्ग E Chemistry से लाकर प्रयोग किया जाएगा। मुख्य वर्ग की [E] पक्ष की एकल संख्या 8 Manipulation के विभाजन ही प्रयोग में लाने हैं अर्थात अंक 8 को दुबारा नहीं लिखा जाएगा।

उदाहरण :

Distillation of wine	F547 : 35
Direct food	F53 : 71
Dehydration of Methane	F611 : 2
Absorption of Ammonia	F1129 : 97
Fermentation of petrol	F5552 : 7
Indicator process of coal making	F551 : 5
Filtration of alcohal	F54 : 92

यदि वर्गांक में समस्या एवं प्रक्रिया दोनों को एक साथ उपयोग करना हो तो पहले प्रक्रिया (Process) तथा बाद में समस्या (Problem) पक्ष आता है। इन दोनों को ही संयोजी चिन्ह कोलन (:) से जोड़ा जाता है। प्रक्रिया को वर्णानुक्रम (AD) से स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरण :

XYZ process of distillation of wines	F547:X:35
ABC process of fermentation of petrol	F5552:A:7

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Classification of aluminium technology
2. Filtering process of beer
3. ABC process of oxidation of poison
4. Zink mettalurgy
5. Painting of noble metals
6. Medicated technology

7. Wax technology
8. Manufacturing of edible oils
9. Steel alloy
10. Chlorine, its manufacturing and uses

13.11 वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Bibliography of Hindi books for old age
   a3152 – 61
2. National Agriculture Library
   213 – 4 (J)
3. Reference Service in University libraries in India
   234 : 7.44
4. Graphic solution of cubic integral equations of first order
   B335, 2, 1:6
5. Solar month
   B93 : 123
6. Solidification of liquids
   C4 : 511; 5
7. Window of brick house
   D53, 7
8. Maintenance of railway platform
   D415, 87 : 82
9. Methane nitro compound
   E611, 57
10. Perfume technology
    F94972

13.12 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Methods of complex variables
2. Intergers : geometrical method
3. Linear transformation
4. State library
5. Foundation of geometry
6. Pumping machine

7. Bridge of railway tunnels
8. Narrow gauge
9. Direct current electricity
10. Reflection of gamma rays
11. Ultra sound
12. Earth work
13. Consultation of thesis in university library
14. Inter-oceanic canal harbour
15. Macro analytical chemistry
16. Prime mover and its adjuncts
17. Broadcasting
18. School, college library
19. Classification of patents in university library
20. Bibliography of thesis in library science

13.13 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् सामान्य वांगमय सूची, पुस्तकालय विज्ञान, गणित, भौतिक विज्ञान, अभियांत्रिकी, रसायन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषय से संबंधित शीर्षकों को वर्गीकृत करने की विधियों का ज्ञान हो गया होगा। प्रमाणिक वर्गों तथा उनके लिए पृथक–पृथक पक्ष परिसूत्र का भी अध्ययन कर लिया होगा। इस इकाई में उपर्युक्त समस्त विषयों से संबंधित शीर्षकों को उदाहरण सहित सरल ढंग से समझाया गया है।

13.14 शब्दावली (Glossary)

मुख्य वर्ग	–	ज्ञान जगत में किसी विशेष शाखा को अथवा विषय का प्रमाणिक वर्ग मुख्य वर्ग कहलाता है।
प्रमाणिक वर्ग	–	ज्ञान–जगत में किसी विशेष शाखा का पुनः विभाजन जो समय के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।
पक्ष	–	एकल विचार को अभिव्यक्त करने वाला पद पक्ष कहलाता है।

13.15 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class number of Titles for Exercise)

1. B 13 : 38
2. B 13 : 6
3. B 25 : 1
4. 215
5. B 6 : 91
6. D6, 8(D85)
7. D4194, 6
8. D41531
9. C623
10. C 54 : 22
11. C 35
12. D416, 1
13. 234; 494 : 61
14. D424, 8
15. E : 3, 1
16. D66, 11
17. D65, 43
18. 232 – 3
19. 234; 48 : 51
20. 2a 494

13.16 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra

5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon Classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical Colon Classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.
8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical Colon Classification, P.K.Publishers, Agra.

इकाई – 14 मुख्य वर्ग G से L तक वर्गांक निर्माण

Unit–14 : Formation of Class Number from Main Class G-L

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 मुख्य वर्ग जीव विज्ञान–G

14.4 मुख्य वर्ग भू–विज्ञान– H

14.5 मुख्य वर्ग खनिज विज्ञान–HX

14.6 मुख्य वर्ग वनस्पति शास्त्र–I

14.7 मुख्य वर्ग कृषि विज्ञान –J

14.8 मुख्य वर्ग प्राणि शास्त्र–K

14.9 मुख्य वर्ग पशुपालन–KX

14.10 मुख्य वर्ग आयुर्विज्ञान–L

14.11 मुख्य वर्ग औषधि विज्ञान–LX

14.12 अभ्यास हेतु शीर्षक

14.13 सारांश

14.14 शब्दावली

14.15 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक

14.16 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना (Introduction)

इस इकाई में 6 प्राथमिक मुख्य विषय एवं 3 द्वितीयक मुख्य विषय को सम्मिलित किया गया है। जैसे जीव विज्ञान, भू–विज्ञान, कृषि विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, प्राणि शास्त्र एवं मानव शरीर रचना विज्ञान प्राथमिक मुख्य विषय हैं तथा खनिज विज्ञान, पशुपालन एवं औषधि विज्ञान द्वितीयक मुख्य विषय हैं। इस इकाई में विज्ञान संबंधित विषयों को सम्मिलित किया गया है।

14.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप यह जान पाएंगे कि–

- जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं प्राणि विज्ञान में अंतर क्या है तथा समानता क्या है?
- खनिज विज्ञान, पशुपालन एवं औषधि विज्ञान द्वितीयक मुख्य विषय क्यों हैं; तथा
- पशुपालन मुख्य वर्ग में यूटीलिटी पंक्ति एवं पार्ट पंक्ति को कैसे उपयोग किया जाएगा।

14.3 मुख्य वर्ग जीव विज्ञान (Main Class Biology)—G

जीव विज्ञान में जीवन संबंधी विषयों का जैविक घटनाक्रम के रूप में सामान्य अध्ययन किया जाता है। जीव विज्ञान विषय में जंतु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान दोनों विषय समाहित होते हैं।

पक्ष परिसूत्र– G [P] : [E] : [2P]

[P] पक्ष Organ and special groupings – इस पक्ष के अंतर्गत जीवन के उन मूलभूत तत्वों का उल्लेख है।

[E] [2P] पक्ष Problem – इस पक्ष के अंतर्गत जीव विज्ञान में सामान्य जीवन संबंधी समस्याओं को लिया है।

उदाहरण :

Cell Biology/Cytology	G11
Tissue Biology/Histology	G12
Protista Biology/Microbiology	G91

95 Ecological Group

एकल संख्या के अंतर्गत ऐसे जीवों के वर्ग हैं जो विशेष प्रकार के प्राकृतिक वातावरण में उत्पन्न होने के कारण विशिष्टता लिए हैं, जैसे समुद्री जीव, पर्वतीय, जीव, जंगल जीव आदि। इन जीवों को वहाँ के वातावरण का प्रभाव अधिक प्रभावित करता है। यही कारण है कि वहाँ के वातावरण के अनुरूप ही इनका जीवन बनता व पनपता है, जैसे–

उदाहरण :

G9518	=	Mountain life
G9551	=	Underground life
G9553	=	Belt water life
G955	=	Hydro Biology

[E] [2P] **पक्ष–** इस पक्ष के अंतर्गत जीव विज्ञान में सामान्य जीवन संबंधी समस्याओं को लिया है।

उदाहरण :

Natural history of coastal life	G 95531 : 12
Anatomy of cells	G 11 : 2
Classification of cells	G : 11
Structure of tissues	G 12 : 2

[E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 346 के अंतर्गत निर्देश के अनुसार 341 Inanition, 345 Water fasting तथा 346 Fasting को 33 Metabolism की भांति विभाजित किया है। संख्या 33 Metabolism के सभी उपविभाजनों 341, 345, 346 के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :

Physical effects of fasting	G : 346C
Physical effect of fasting of tissue	G 12: 346C

[E] [2P] पक्ष का प्रयोग : जब [E] पक्ष में एकल संख्या 33 Metabolism या इनके उपविभागों या 341 Inanition या 345 Water fasting या 346 Fasting का प्रयोग किया जाये तो इसके साथ [2M] पक्ष का प्रयोग किया जा सकता है।

[2M] पक्ष का अनुसूची में पृथक से उल्लेख नहीं है किंतु यह मुख्य वर्ग E Chemistry के [P] पक्ष के समान ही है। दूसरे शब्दों में [E] Chemistry के [P] पक्ष का प्रयोग मुख्य वर्ग G Biology में [M] पक्ष के रूप में किया जाता है। [M] पक्ष को विषय विधि (SD) के रूप में भी प्राप्त किया जा सकता है।

उदाहरण :

Chemical effect of alkaloid on tissues	G 12 : 33E; 92
Chemical effect of nitrogen on tissue	G 12 : 33E; 150

[E] [2P] के संदर्भ में नियम संख्या G25 की व्याख्या अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस नियम के अनुसार इस पक्ष की एकल संख्या 12 से 18 तथा 5 व उसके उपविभागों का जब भी प्रयोग किया जाये, इनके तुरंत बाद [S] पक्ष का प्रयोग किया जा सकता है। वास्तव में यह उपयुक्त भी है, क्योंकि जीवन के प्राकृतिक इतिहास (Natural History) तथा परिस्थितिकी (Ecology) आदि का अध्ययन बिना स्थान एकल के अर्थहीन एवं अधूरा लगता है।

उदाहरण : BC [E] [2P] [S]

Fauna and flora of India	G : 12.44
Marine ecology of Pacific Ocean	G 9555 : 5.97
Plants and animals of world for everybody	G : 13.1

4 Pathology के लिए [2P] पक्ष

[E] पक्ष की एकल संख्या 4 Pathology (Disease) है। इसके [2P] पक्ष का अनुसूची में उल्लेख नहीं किया है इसे मुख्य वर्ग L Medicine के 4 Disease के लिए दिये गये [2P] पक्ष की भांति विभाजित करने के निर्देश अनुसूची में दिये गये हैं। [2P] पक्ष के अंतर्गत रोगों के विभिन्न कारकों का उल्लेख मुख्य वर्ग L Medicine में पृष्ठ 2.84 पर किया गया है।

डॉ. रंगनाथन ने [2P] पक्ष की एकल संख्या को [E] पक्ष की एकल संख्या के साथ बिना किसी संयोजक चिन्ह् के सीधे जोड़ने का निर्देश दिया है।

उदाहरण :

Pathology of cells	G 11 : 4

Infection disease of genes	G 116 : 42

[E] [2P] की अन्य एकल संख्याएँ 5 Ecology, 6 Genetic, 7 Development तथा 8 Manipulation हैं। उदाहरण :

Forest Conservation	G 95124 : 527
Effect of seasons on centrosome	G 1122 : 556

विशिष्ट वर्ग (Specials)

मुख्य वर्ग के अंत में कुछ विशिष्ट वर्गों (Specials) का उल्लेख है। डॉ. रंगानाथन ने विशिष्ट वर्गों (Specials) को [P] पक्ष का विस्तार माना है और इन्हें [P] पक्ष के सभी स्तरों के पूर्व रखने का प्रावधान किया है। [SpF] तथा [P] पक्ष के लिए संयोजक चिन्ह, (,) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण : [SpF] [P]

Embryo cells	G9B, 11
Child cells	G9C, 11

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Ecology of Hydro-biology
2. Cytology Genetics and Molecular biology
3. Delta life of Egypt in pictures
4. Principles of Genetics
5. Life in Indian Forests
6. Fatigue in old age tissue
7. Anatomy of adolescent tissues
8. Fungus disease in life on land sea
9. Effect of heat on underground life
10. Fauna and Flora of Himachal Pradesh

वर्गीकृत शीर्षक (Titles Classified)

1. Desert life – G95121
2. Life of land sea – G 95534
3. Anatomy of cells – G 11:2
4. Popular description of forest life – G 95124 : 13
5. Chemical effect of poison on cells – G11:33E; (F594)
6. Ecological classification of life – G:515
7. Development of season on centrosome – G1122 : 556
8. Old age tissues – G9E, 12
9. Virus disease of child tissue – G9C, 12 : 423
10. Natural history of forest life – G95124 : 12

14.4 मुख्य वर्ग भू–विज्ञान (Main Class Geology)—H

भू–विज्ञान पृथ्वी के इतिहास का अध्ययन करता है तथा पृथ्वी के अंदर उत्पन्न वस्तुओं जैसे खनिज, चट्टानों आदि का तथा भू–गर्भ में होने वाली विभिन्न प्रकार की हलचलों आदि का अध्ययन करता है।

इसके मुख्य वर्ग को अनेक प्रामाणिक वर्गों में बाँटा गया है। जैसे–

H1 – खनिज विज्ञान (Mineralogy)

H2 – चट्टान विज्ञान (Petrology)

H3 – संरचनात्मक भू–विज्ञानिकी (Structural Geology)

H4 – गतिशील भूविज्ञान (Dynamic Geology)

H5 – स्तरिकी, स्तरक्रम विज्ञान (Stratiography)

H6 – जीवाश्म विज्ञान (Palaeontology)

H7 – आर्थिक भू–विज्ञान (Economic Geology)

H8 – ब्रह्माण्डीय परिकल्पना (Cosmic Hypothesis)

H1 – खनिज विज्ञान (Mineralogy)

पक्ष परिसूत्र– H1 [P] : [E] : [2P]

[P] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग E Chemistry के समान है। साथ ही कुछ अतिरिक्त एकल संख्याएँ भी दी गई हैं। अतिरिक्त एकल संख्याएँ 9 Precious stones (कीमती पत्थर)

तथा इसके विभाग हैं। इन अतिरिक्त एकल संख्याओं के प्रावधान से सभी कीमती पत्थर (Precious stones) को एक स्थान पर लाना संभव हो सका है।

[E] [2P] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्या '1 Preliminaries' के अंतर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार इसे मुख्य वर्ग G Biology की भांति विभाजित करना है। अन्य एकल संख्याओं का अनुसूची में उल्लेख है।

उदाहरण :

Classification of Precious stones	H19 : 11

यहाँ H19 Precious stones [P] पक्ष है। 11 Classification [E][2P] पक्ष है। इसे मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष की एकल संख्या 1 Preliminaries के अनुसार विभाजित कर प्राप्त किया है।

उदाहरण :

Popular description of Topaz	H195 : 13
Genesis of Gold	H118 : 16
Artificial Production of Diamond	H191 : 164

H2 – चट्टान विज्ञान (Petrology)

इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार का चट्टानों का अध्ययन किया गया है।

पक्ष परिसूत्र :

इसका परिसूत्र H1 Mineralogy के समान ही है। [E][2P] की एकल संख्याएँ 8 Crystallography को छोड़कर H1 के समान ही है।

उदाहरण :

Occurence of Igneous Rock	H21 : 155
Sedimentary rocks in Picture	H23 : 14
Popular description of volcanic rocks	H211 : 13

H3 – संरचनात्मक भू–विज्ञानिकी (Structural Geology)

इनका कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है केवल विभाजन दिये गये हैं।

उदाहरण :

Structural geology of mountain building	H36

H4 – गतिशील भूविज्ञान (Dynamic Geology)

इसके अंतर्गत पृथ्वी की आंतरिक गतिविधियों तथा बाह्य प्रभावों से होने वाले परिवर्तनों जैसे ज्वालामुखी, ग्लेशियर, गर्म पानी के सोते, पृथ्वी का धंस जाना व ऊपर उठ जाना तथा पृथ्वी पर वर्षा, बाढ़, वायु तथा पेड़ पौधों से होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। इसका भी कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है, केवल विभाजन दिये गये हैं।

उदाहरण :

Slow depression of Earth	H4131
Geysers in Himachal	H412.4445

H5 – स्तरिकी, स्तरक्रम विज्ञान (Stratiography)

इसके अंतर्गत पृथ्वी के निर्माण के बाद भूगर्भ शास्त्रीय युगों में विभाजित पृथ्वी की सतहों का उल्लेख है। इसका भी कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है।

उदाहरण :

Quanterrary strategraphy of Europe	H55.5
Cambrain stratiography of the World	H521.1

H6 – जीवाश्म विज्ञान (Palaeontology)

इस प्रामाणिक वर्ग का प्रयोग 'Palaeozoology के लिये किया जाना चाहिए। Palaeobotany से संबंधित प्रलेख मुख्य वर्ग I Botany के अंतर्गत वर्गीकृत किये जाते हैं। H6 Palaeontology के साथ मुख्य वर्ग K Zoology के [P] पक्ष से किसी प्राणी की एकल संख्या को लेकर जोड़ा जा सकता है।

उदाहरण :

Bird Fossils	H696

इस प्रामाणिक वर्ग में काल पक्ष का प्रयोग आवश्यक है। काल पक्ष की संख्याएँ काल एकल सारणी (Time isolate table) से नहीं ली जानी चाहिए अपितु इन्हें प्रामाणिक वर्ग H5 Stratigraphy से लेना चाहिए। H5 के स्थान अंक A का प्रयोग करना चाहिए।

H = A

H51 = A1

H533 = A33 इत्यादि।

भूगर्भशास्त्रीय समय (Geological times) की गणना शताब्दी या सहस्त्राब्दी में नहीं की जा सकती क्योंकि वैज्ञानिक विकास व परिवर्तनों की प्रक्रिया इतनी धीमी होती है कि समय गणना की सामान्य इकाइयाँ इनको मापने के लिए सक्षम नहीं है। नीचे के उदाहरणों में [T] पक्ष नियमानुसार दर्शाया गया है।

उदाहरण :

Cainozoic reptiles	H 694.1 'A4
Fossils of Palaozoic primates	H69707.1 'A55

H7 — आर्थिक भू–विज्ञान (Economic Geology)

इसमें कच्चे धात्वीय पदार्थों, भूमिगत पानी तथा ऐसे पदार्थों का अध्ययन किया जाता है जिनका आर्थिक दृष्टि से महत्व है। कच्चे धात्वीय पदार्थों में वे सभी प्रकार की धातुएँ शामिल हैं, जिनसे कीमती व उपयोगी धातु इतनी मात्रा में उपलब्ध हो कि इन्हें भूमि से निकालना लाभप्रद साबित हो सके।

डॉ. रंगनाथन के अनुसार उपयोगकर्ता की दृष्टि से आर्थिक महत्व की इन सभी धातुओं को प्रामाणिक वर्ग H7 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

पक्ष परिसूत्र : H7[P] : [E][2P] यह परिसूत्र H1व H2 के समान ही है।

[P] पक्ष इस पक्ष मुख्य वर्ग E Chemistry, H1 Mineralogy तथा F Technology के समान है। इस पक्ष के अंतर्गत हम आर्थिक महत्व की सभी धातुओं को रखेंगे। किसी धातु का आर्थिक महत्व उस धातु में धात्वीय गुणों की पर्याप्त मात्रा में उपस्थिति से आंका जाता है।

उदाहरण :

Mineral resources of India	H7.44
Dimond deposits of South-West Africa	H791.642

[E][2P] पक्ष यह पक्ष प्रामाणिक वर्ग H1 Mineralogy के समान ही है तथा H1 के अंतर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार [E][2P] पक्ष की कुछ एकल संख्याओं को मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Popular description of iron ore deposits in Bihar	H7182:13.4473
Hidden Wealth of the Earth from Pakistan	H7.44Q7
Prospecting for fuel gases	H7558:15

H8 – ब्रह्माण्डीय परिकल्पना (Cosmic Hypothesis)

इस प्रामाणिक वर्ग में न तो परिसूत्र दिया गया है न ही कोई विभाजन। विशिष्ट प्रकार की परिकल्पनाओं को कालक्रम विधि (CD) के द्वारा व्यक्तित्व प्रदान किया जा सकता है।

उदाहरण :

Biblical Account of the Origin of the Earth	H813
Lord Kelvin's theory about the age of Earth,1899	H8M9

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Cenozoic Caves
2. Study of volcanic rocks of Iran
3. Hot water springs of India
4. Artificial production of Dimanods
5. Occurence of Coal in India
6. Palezoic Hydrozoa
7. Coal deposits of Orissa
8. Oil resources of Asia
9. Classification of Gold
10. Underground water in Ganga Delta

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Structure of pearl crystals	H198:82
2.	Prospecting of bedded iron ore	H234821:15
3.	Earthquake in Qvetta	H4132:44Q7591
4.	Action of flood	H4223
5.	Mosozoic bird fossils	H696,1 'A3
6.	Mammals of Jurassic age	H697,1 'A33
7.	Underground water in Pakistan	H7210.44Q7

8.	Gold deposit of India	H7118.44
9.	Rivers in Punjab	H4227.4436
10.	Classification of diamonds	H191:11

14.5 मुख्य वर्ग खनिज विज्ञान (Main Class Mining)—HX

विभिन्न प्रकार के खनिजों का खनन (Mines) तथा विविध प्रक्रियाओं द्वारा उमें मिली अशुद्धताओं को दूर कर उन्हें उपयोगी बनाने का कार्य खनिकर्म (Mining) के अंतर्गत आता है।

पक्ष परिसूत्र– HX [P], [P2] : [E] [2P]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत शुद्ध धात्वीय पदार्थों को रखा जाता है। यह पक्ष E Chmistry, H1 Mineralogy तथा F Technology के [P] पक्षों के समान है। कच्चे धात्वीय पदार्थ में अनेक अशुद्ध पदार्थ मिले रहते हैं अतः [P] पक्ष के अंतर्गत उस धातु को रखा जाना चाहिए जिसे निकालना आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद साबित हो। मुख्य वर्ग E Chemistry में इस प्रकार के पदार्थों का विस्तार का उल्लेख है।

[P2] पक्ष

इस पक्ष में विभिन्न प्रकार की खानों तथा उनके विभिन्न भागों का उल्लेख किया गया है।

[E] [2P] पक्ष

इस पक्ष में उन प्रक्रियाओं का उल्लेख है जिनका प्रयोग खनिकर्म में होता है।

उदाहरण :

Lighting the underground road in coal mines	HX551, 4:55
Excavation in Gold mines	HZ118 : 11
Magnetic separation of iron	HX182 : 27

उपर्युक्त उदाहरणों में कहीं–कहीं [P] पक्ष मुख्य वर्ग F Technology से प्राप्त किया गया है। अन्य पक्षों की एकल संख्याएँ अनुसूची से ली गई हैं।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Cooling arrangements in tunnels of copper mines
2. Health measures for miners
3. Accidents in coal mines
4. Washing of coal
5. Iron ore dressing
6. Accidents in coal mines
7. Drilling for oils
8. Radium mines in Punjab
9. Copper pits
10. Lighting arrangement in mines of Pakistan

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Platinum mines	HX1879
2.	Tunnel	HX, 3
3.	Underground vehicle	HX, 5
4.	Oil well drilling	HX555 : 13
5.	Ventilation facilities in zink mines	HX123 : 53
6.	Heating of mines	HX551 : 54

14.6 मुख्य वर्ग वनस्पति शास्त्र (Main Class Botany)—I

वनस्पति शास्त्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के प्राकृतिक वर्गों (Natural groups of plants), उनकी संततियों (Families of plants) तथा उनसे संबंधित अन्य पहलुओं व समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र– I [P], [P2] : [E] [2P]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत वनस्पतियों के प्राकृतिक वर्गों तथा उनकी संततियों का विस्तार से उल्लेख है। मोटे तौर पर संपूर्ण वनस्पति संसार को दो भागों में बांट दिया गया है–

(अ) **पुष्पहीन वनस्पति अथवा बिना फूल वाले पौधे (Cryptogamia or Non Flowering Plants)**

I1 – Cryptogamia

I2 – Thallophyta

I3 – Bryophyta

I4 – Pteridophyta

(ब) **सपुष्प वनस्पति अथवा फूल वाले पौधे (Phanerogamia or Flowering Plants)**

I5 – Phanerogamia

I6 – Gymnosperm

I7 – Monocotyledon

I8 – Dicotylendon

संक्षेप में 11 से 14 Cryptogamia (पुष्पहीन वनस्पति) तथा 15 से 18 Phanerogamia (सपुष्प वनस्पति) है। प्रत्येक श्रेणी की वनस्पतियों की वंशावलियों का उल्लेख अनुसूची में विस्तार से किया गया है।

उदाहरण :

Rose plant= I8311

Brown algae = I225

Orchidaceae plant = I715

95 Ecological Group

इसके अंतर्गत निर्देश के अनुसार वातावरण से प्रभावित होने वाले पौधों के वर्ग, मुख्य वर्ग G Biology के [P] पक्ष की एकल संख्या 95 के विभागों की भांति ही होंगे। अर्थात I95 = Grouping of Ecological Plants हुआ। इस श्रेणी की अन्य वनस्पतियों के वर्गांक बनाने के लिए I95 के लिए उपविभाजन हमें G Biology के Ecological groups से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Desert plants	I95121
Mountain plants	I9518
Plant of forests	I95124

[P] पक्ष के अंतर्गत उल्लिखित सभी पेड़ पौधों के नामों की एक अनुक्रमणिका (Indexe), सारणी (Schedules) के ठीक बाद पृष्ठ संख्या 2.61 पर दी गयी है, जो वर्णानुक्रम में व्यवस्थित है।

[E] [2P] पक्ष

इस पक्ष में पौधों के विभिन्न भागों (Organs) का उल्लेख है। जैसे–जड़, पत्ती, तना, फूल आदि।

उदाहरण :

A rose flower	I 8311, 16
A study of plant tissues	I, 12
Stem of flowering plants	I5, 14
Plant leaf of Thallophyta	I2, 15

पौधों के कार्यशील अंगों (Functional system of organs) से संबंधित वर्गांक बनाने के लिए मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष से एकल संख्या 2 से 8 का आवश्यकतानुसार प्रयोग किये जाने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Respiratory system of plants	I, 4
Nervous system of plants	I, 7
Bark of bryophyta plant	I3, 87

यहाँ [P2] पक्ष की एकल संख्या '87 Skin' तथा '4 Respiratory system' है। इन्हें निर्देशानुसार मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष से प्राप्त किया गया है।

[E] [2P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार [E][2P] पक्ष, मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष के समान ही है। अर्थात मुख्य वर्ग I Botany के लिए संपूर्ण [E][2P] पक्ष G Biology के समान ही होगा। दूसरे शब्दों में I Botany का [E][2P] पक्ष, मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष से लाकर प्रयोग करना होगा। अनुसूची में केवल एक अतिरिक्त एकल संख्या 8 Paleobotany दी गयी है।

उदाहरण :

Plant genetics	I : 6
Anatomy of flowers	I5, 16:2
Respiration in plants	I, 4:3

Non flowering plants of Himalayan Region	I1:12.44

उपरोक्त उदाहरणों में [E][2P] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष से ली गई है।

I Botany में वैशिष्ट्य (Specials) पक्ष का प्रयोग भी मुख्य वर्ग G Biology के समान ही है।

उदाहरण :

Studies in plant embryo	I9B
Studies of old age plant	I9E

इस मुख्य वर्ग में यदि [2M] की आवश्यकता हो तो E Chemistry मुख्य वर्ग से एकल संख्या लाकर प्रयोग की जा सकती है।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Physiology of flower
2. Classification of plant life
3. Conservation of forest plants of Madhya Pradesh
4. Nitrogen metabolism in plants
5. Fossils of Bryophyta
6. Nervous system in plants
7. Plant life of India
8. Plant nutrition
9. Morphology of green algae
10. Bacterial disease in coastal plants

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Algae	I 22
2.	Seed of gymnospherm	I 6,178
3.	Plant development	I : 7
4.	Physiology of the roots of flowering plants	I 5, 13 : 3
5.	Skin of rosales	I 831, 87
6.	Climber plants	I 953

14.7 मुख्य वर्ग कृषि विज्ञान (Main Class Agriculture)—J

यह मुख्य वर्ग उपयोगी पौधों का अध्ययन करता है। इसमें भूमि को कृषि योग्य बनाने के तरीकों, उसकी जुताई, बुवाई, रोगों की रोकथाम के उपायों तथा संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र– J [P], [P2] : [E] [2P] : [2E] [3P]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के उपयोगी पौधों का विस्तार से उल्लेख है। [P] पक्ष की एकल संख्या तीन प्रकार की पंक्तियों (Utility array, Part array and Genus and Species numbers) से मिलकर बनती है। प्रत्येक अंक पौधे की एक विशेषता का प्रतीक है।

(1) उपयोगिता की प्रति एकल पंक्ति (Utility array)

इस एकल संख्या के अंतर्गत पौधों की उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला गया है। पौधों की प्राथमिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर इस अंक का निर्माण हुआ है इसलिए इसे प्रथम क्रम की पंक्ति (First order array) कहा जाता है। पौधे के अनेक उपयोग हो सकते हैं अतः पौधे की सर्वाधिक प्राथमिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर उपयुक्त अंक का निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार Utility array से कोई अंक लेकर जब पौधे का वर्गांक बनाया जाता है तो उसे Utility number कहते हैं, जो पौधे की उपयोगिता बताता है। यह पौधे की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता बताने वाले अंक हैं।

अनुसूची के अनुसार पौधों की संभावित उपयोगिता निम्नलिखित बताई गई है–

J 1 Decoration	पौधे का उपयोग सजावट के लिए
J 2 Feed	पौधे का उपयोग पशु आहार के लिए
J 3 Food	पौधे का उपयोग मानव आहार के लिए
J 4 Stimulant	पौधे का उपयोग स्फूर्तिदायक पदार्थ के रूप में
J 5 Oil	पौधे का उपयोग तेल के रूप में; तथा
J 6 Drug	पौधे का उपयोग औषधि के रूप में, इत्यादि।

इस प्रकार [P] पक्ष की एकल संख्या का निर्माण करने के लिए सर्वप्रथम उपयोगिता पंक्ति का अंक प्रयोग में लाया जाता है। उपरोक्त वर्गांक पौधे के विभिन्न उपयोगों के दर्शाने वाले वर्गांक बने।

(2) पौधे के विशिष्ट भागों का प्रतीक एकल पंक्ति (Part Array)

[P] पक्ष को प्रदर्शित करने वाला दूसरा अंक Part array से लिया जाता है। Part array का भी अनुसूची में [P] पक्ष के अंतर्गत उल्लेख है। इसके अंतर्गत पौधे के उन सभी उपयोगी भागों का उल्लेख है जो मनुष्य के किसी न किसी उपयोग में आते हैं। पौधे के ये भाग, पौधे के जड़, तना, पत्ती, फूल, फल आदि हो सकते हैं। पौधे के एक भाग के अनेक उपयोग हो सकते हैं जैसे पत्ती (Leaf) पालक, मैथी इत्यादि रूप में भोजन के रूप में मानव उपयोग करते हैं। चाय के रूप में पेय तथा पीपरमेण्ट के रूप में औषधि, घास के रूप में पशु आहार इत्यादि। बीज (Seed) के भी अनेक उपयोग हैं कॉफी के रूप में पेय, मूंगफली तथा सरसों रूप में खाध पदार्थ तथा रुई के रूप में वस्त्र रेशा।

Utility array + Part array से जो वर्गांक निर्मित होते हैं उनसे पौधों के विभिन्न भागों के उपयोग का पता चलता है। उदाहरण के लिए [P] पक्ष की एकल संख्या 3 Food के साथ Part array की एकल संख्याएँ जोड़ने से पौधों की खाध पदार्थों के रूप में उपयोगिता प्रदर्शित करने वाले निम्नलिखित वर्गांक बनाए जा सकते हैं–

J 3 Food crops	खाद्य पदार्थ के रूप में प्रयुक्त होने वाला पौधा
J 31 Sap as a food	पौधे के रस का खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग
J 33 Root as a food	पौधे की जड़ का खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग
J 37 Fruit as a food	पौधे के फल का खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग
J 38 Seed as a food	पौधे के बीज का खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग

उपर्युक्त उदाहरणों में वर्गांक का प्रथम अंक 3 Food, Utility array से तथा दूसरा अंक Part array से लिया गया है। दोनों अंक पौधे की अलग–अलग विशेषताएँ (Characteristics) बताते हैं। प्रथम अंक पौधे का उपयोग (Utility) तथा दूसरा अंक पौधे का उपयोग में आने वाला भाग (Part) को दर्शाता है।

इसी प्रकार–

J 4 Stimulant plants	ऐसे पौधे जिनसे स्फूर्तिदायक पदार्थ प्राप्त होते हैं।
J 41 Sap as a stimulant	पौधे का रस स्फूर्ति प्रदान करने वाले पदार्थ के रूप में
J 45 Leaf as a stimulant	पौधे की पत्ती स्फूर्ति प्रदान करने वाले पदार्थ के रूप में
J 48 Seed as a stimulant	पौधे का बीज स्फूर्ति प्रदान करने वाले पदार्थ के रूप में

यहाँ अंक 4 Utility number तथा संलग्न अंक Part number है। इन्हें क्रमशः Utility array तथा

Part array से प्राप्त किया गया है।

इसी प्रकार–

J 5 Oil producing plants खाद्य व अन्य तेलों के रूप में प्रयुक्त पौधे

J 54 Stem used for producing oil तना, जिनसे तेल प्राप्त होता है

J 57 Fruit used for producing oil फल, जिससे तेल प्राप्त होता है।

J 58 Seed used for producing oil बीज, जिससे तेल प्राप्त होता है।

यहाँ अंक 5 Oil का प्रतीक है। अर्थात् ऐसी कृषि उपज जिससे उपयोगी तेल प्राप्त होता है। यह Utility number है तथा इसके साथ प्रदर्शित दूसरे अंक पौधे के विभिन्न भाग हैं। जिन्हें Part array से लिया गया है।

J 6 Medicinal plants	औषधि के रूप में प्रयुक्त पौधा
J 62 Bulb as drug	पौधे के कंद का औषधि के रूप में उपयोग
J 64 Stem as drug	पौधे के तने का औषधि के रूप में उपयोग
J 66 Flower as drug	पौधे के फल का औषधि के रूप में उपयोग

उपर्युक्त उदाहरणों में मुख्य वर्ग को विभाजित करने वाला प्रथम अंक Utility array का तथा दूसरा अंक Part array का है। दोनों से मिलकर बना वर्गांक पौधे के विभिन्न भागों का उपयोग बताते हैं।

(3) Genus and species number (वंश तथा जाति अंक)

Utility array तथा Part array को विभाजित करने वाला तीसरा अंक Genus या Species number कहलाता है। Utility array तथा Part array से प्राप्त पौधे एक ही विशेषता वाले होते हैं अतः इन्हें विशिष्ट बनाने के लिए इनके पुनः विभाजित करने की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में एक सी विशेषता वाले पौधों में पृथकता लाने की दृष्टि से वरेण्य श्रेणी विधि (FD) के द्वारा इन्हें प्राथमिकता के क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। क्रम संख्या इण्डो अरेबिक अंक 1,2,3............ लगाकर प्रदर्शित की जाती है, यही Genus या Species number है।

J 37 ऐसे पौधों को जिनका फल खाने के उपयोग में आता है, इन्हें Species number के द्वारा निम्न प्रकार से विशिष्टता प्रदान की गई है–

J 371 Apple

J 372 Orange

J 373 Musa इत्यादि

इसी प्रकार–

J 58 ऐसे पौधे जिनके बीज से तेल प्राप्त होता है, उन्हें भी Species number के द्वारा विशिष्टता प्रदान की गई है–

J 581 Groundnut

J 582 Coconut

J 583 Sesame इत्यादि

उपर्युक्त उदाहरणों में वर्गांक J58 के साथ जोड़े गये अंक 1,2 व 3 Species number के प्रतीक हैं। इस प्रकार एक ही श्रेणी के उपयोगी पौधों को एक तीसरे अंक (Species number) के द्वारा विशिष्टता प्रदान की गयी है। Species number जोड़ने से संपूर्ण पौधे (Whole plant) का वर्गांक निर्मित होता है। संक्षेप में–

[BC]+Utility number+Part array+Species number=Whole plant

(4) Cultivar number

एक विशिष्ट प्रकार के पौधे को आवश्यकता पड़ने पर Cultivar number से पुनः विभाजित कर विशिष्ट किस्म वाली फसल का पौधा बनाया जा सकता है। इसके लिए वर्णाक्रम विधि (AD) के प्रयोग का प्रावधान है।

चावल एक विशिष्ट प्रकार का पौधा है, किंतु यदि चावल की विशिष्ट किस्मों को प्रदर्शित करनाहो तो इसे वर्णाक्रम विधि (AD) के द्वारा किया जा सकता है।

उदाहरण :

J 381 = Rice

J 381 B = Basmati Rice (बासमती चावल, चावलों की एक खास किस्म है)

इसी प्रकार–

J 3751 D = Dasheri Mango (दसेरी आम, आमों की एक खास किस्म है)

[P2] पक्ष

परिसूत्र में तो [P2] पक्ष का प्रावधान है, किंतु अनुसूची में इसकी एकल संख्याएँ पृथक से नहीं दी गयी हैं। अतः इस पक्ष के लिए एकल संख्याएँ [P] पक्ष के लिए दी गई Part array से लाकर उपयोग में लायी जा सकती है।

उदाहरण :

Root of Mango tree	J 3751, 3
Stem of rubber plant	J 711, 4

उपरोक्त उदाहरणों में [P2] पक्ष की एकल संख्याएँ [P] पक्ष के अंतर्गत दी गई Part array से ली गई है।

[E] पक्ष

[E] पक्ष का अनुसूची में उल्लेख है।

उदाहरण :

Disease in groundnut crop	J 581 : 4
Manure of leaf vegetables	J 35 : 2
Soil for wheat crop	J 382 : 1

[E][2P] पक्ष तथा [2E][3P] पक्ष

[E] पक्ष की एकल संख्याओं के लिए [2P] पक्ष पृथक–पृथक दिया गया है। परिसूत्र के अनुसार [E] पक्ष की एकल संख्या 2 Manure, 3 Propagation, 4 Disease तथा 7 Harvesting के लिए [2P] पक्ष पृथक–पृथक दिया गया है। [E] पक्ष के साथ [2P] पक्ष को सीधा जोड़ने का नियम है।

[E] पक्ष की एकल संख्या 1 Soil के लिए [2E] पक्ष

[E] पक्ष की एकल संख्या 1 Soil के लिए [2P] पक्ष अनुसूची में नहीं दिया गया है। जबकि इसके लिए [2E] पक्ष का अनुसूची में उल्लेख है।

उदाहरण :

Conservation of soil for groundnut crop	J 581 : 1 : 7
Improvement of soil for pulse crop	J 377 : 1 : 6

[E] पक्ष की एकल संख्या 2 Manure के लिए [2P] पक्ष

2 Manure का [2P] पक्ष, खाद के रूप में प्रयुक्त, विभिन्न पदार्थों व उसके विभिन्न प्रकारों को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में लाया गया है।

उदाहरण :

Fertilizer for pulse crop	J 388 : 24
Potassic fertiliser for cotton	J 781 : 243

उपर्युक्त उदाहरणों में [E] पक्ष की एकल संख्या 2 Manure के लिए, [2P] पक्ष का प्रयोग अनुसूची के अनुसार किया गया है। [2P] पक्ष की एकल संख्याओं को [E] पक्ष के साथ सीधा जोड़ दिया गया है।

2 Manure के लिए [2E] पक्ष अनुसूची में दिया गया है।

उदाहरण :

Storage of green manure	J : 21 : 8
Application of municipal refuse for fruit crops	J 37 : 23 : 3

[E] पक्ष की एकल संख्या 3 Propagation के लिए [2P] पक्ष

3 Propagation के लिए [2P] पक्ष Plant array के समान है अर्थात् [2P] की एकल संख्याएँ Part array से ली जाती है

[E] पक्ष के लिए [2E] पक्ष का भी अनुसूची में उल्लेख है।

उदाहरण :

Propagation of cotton crop	J 381 : 3
Transplanting of rose stem	J 561 : 34 : 5
Storage of seed for millet farming	J 387 : 38 : 8

उपर्युक्त उदाहरणों में 3 Propagation के लिए [2P] पक्ष को Part array से प्राप्त किया गया है उदाहरण 3 में एकल संख्या 8 Seed, उदाहरण 2 में 4 Stem को [2P] पक्ष के रूप में Part array से लिया गया है। [2E] पक्ष अनुसूची के अनुसार है।

[E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के लिए [2P] पक्ष

अनुसूची में दिये गये निर्देशानुसार [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के लिए [2P] पक्ष,

मुख्य वर्ग L Medicine के समान ही है। वहाँ [2P] पक्ष में रोग के विभिन्न कारकों को दिया गया है। इन्हें नियमानुसार एकल संख्या 4 के साथ जोड़कर विभिन्न रोगों के कारणों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं। नियमानुसार [E] पक्ष के साथ [2P] पक्ष को सीधा जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण :

Bacterial disease in rice	J 381 : 424
Parasites in orange	J 372 : 43

यहाँ 4 Disease के लिए प्रयुक्त [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ, मुख्य वर्ग L Medicine से ली गई है।

[E] पक्ष की एकल संख्या 7 Harvesting के लिए [2P] पक्ष

7 Harvesting के लिए [2P] पक्ष Part array से प्राप्त करने का निर्देश है।

उदाहरण :

Threshing of wheat	J 382 : 78 : 4

उपर्युक्त उदाहरण में 7 Harvesting के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्या की एकल संख्या 8 को part array से लिया गया है।

[2E][3P] पक्ष

इस पक्ष का अनुसूची में उल्लेख है। इसका प्रयोग [E] पक्ष की किसी भी एकल संख्या के लिए किया जा सकता है।

उदाहरण :

Cleaning of tea leaf	J 451 : 75 : 5
Cold storage of apples	J 371 : 77 : 84
Storage of Potato	J 341 : 74 : 8

उपर्युक्त उदाहरणों में 7 Harvesting के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्या Part array के समान ही है अर्थात् [P] पक्ष में दिये गये Part array के अंकों को ही 7 Harvesting के लिए, [2P] पक्ष के रूप में प्रयोग में लाया गया है।

[2E][3P] पक्ष की एकल संख्याओं का प्रयोग अनुसूची के अनुसार है।

Special and Systems (विशिष्ट वर्ग एवं प्रामाणिक वर्ग)

मुख्य वर्ग के अंत में Specials and Systems पक्षों की एकल संख्याओं का उल्लेख है। वर्गांक में पक्षों का अनुक्रम निम्न प्रकार से होगा अर्थात् सबसे [SmF], इसके बाद [SpF] तथा सबसे बाद में [P] पक्ष को रखा जाता है। इसके लिए संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Dry farming of cabbage crop	J9D, 3513
Dry forestry of fruit crop	JB, 9D, 37
Soiless farming of foliage	J95, 15

यहाँ [SpF] को [P] पक्ष से पूर्व तथा [SmF] को [SpF] से भी पूर्व रखा गया है तथा नियमानुसार संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया गया है।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Uses of sugarcane
2. Yields of Oranges
3. Tea plantation in Assam
4. Transplantation of Tomatoes
5. Grape growing in Kashmir
6. Stem of Bamboo tree
7. Harvesting of food crops
8. Fertilizers for medicinal plants
9. Storage of wheat
10. Application of potassic fertiliser for green vegetables

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Coffee	J 481
2.	Hot to grow oranges	J 372
3.	Stem of tea crop	J 451, 4
4.	Disease in wheat crop	J 382 : 4
5.	Fertilizer manure for garlic crop	J 621 : 24
6.	Transplanting of onions	J 321 : 397 : 5
7.	Storage of green manure	J : 21 : 8

8.	Use of saffron	J 662 : 76 : 97
9.	Propagation of grapes	J 374 : 3
10.	Cleaning of tobacco leaves	J 452 : 75 : 5

14.8 मुख्य वर्ग प्राणि शास्त्र (Main Class Zoology)—K

यह मुख्य वर्ग जल, थल व नभ में रहने वाले सभी जीव जन्तुओं, पशु–पक्षियों तथा कीड़े–मकौडों इत्यादि का अध्ययन करता है। जीवाश्म विज्ञान (Paleontology) वर्ग H6 Paleontology के अंतर्गत किया गया है।

पक्ष परिसूत्र– K [P], [P2] : [E] [2P]

उपयोगी पशुओं को छोड़कर, संपूर्ण प्राणि जगत को, उनकी शारीरिक संरचना तथा अन्य विशेषताओं के आधार पर अनेक वर्गों व उपवर्गों में बांटा गया है। प्रत्येक वर्ग के प्राणी को वंशावली के आधार पर उपविभाजित किया गया है। इस मुख्य वर्ग में प्राणी जगत की समस्याओं का भी अध्ययन किया गया है। नियम भाग में दिये गये निर्देश के अनुसार इसका परिसूत्र मुख्य वर्ग I Botany के समान ही है, जो निम्न प्रकार है–

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत पशु–पक्षियों के प्राकृतिक वर्गों (Natural groups) का उल्लेख है। प्राणियों को उनकी मूलभूत विशेषताओं के आधार पर प्रमुख रूप से दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

उदाहरण :

1. Invertebrates (Non-chordata) (बिना रीढ़ की हड्डी वाले पशु)
2. Vertebrates (Prochordata) (रीढ़ की हड्डी वाले पशु)

K1 Invertebrates है। वस्तुतः K2 से K8 के सभी पशु इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

K9 के अंतर्गत Prochordatas and vertebrates को रखा गया है। इन सभी पशुओं में रीढ़ की हड्डी पाई जाती है। अतः ये सभी रीढ़ की हड्डी वाले पशुओं की श्रेणी में आते हैं।

[P] पक्ष के अंतर्गत उल्लिखित सभी प्राणियों के नामों की एक अनुक्रमणी {Index), सारणी (Schedules) के ठीक बाद पृष्ठ 2.73 पर दी गई है, जो वर्णानुक्रम में व्यवस्थित है।

[P2] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्याओं का अनुसूची में उल्लेख नहीं है। पशुओं के अधिकांश अंग,

मानव अंगों के समान ही होते हैं, अतः मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष की एकल संख्याओं का, यहाँ [P2] पक्ष के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :

Tongue of snake	K 94, 213
Leg of a frog	K 9325, 134
Skin of a crocodile	K 946, 87
Eyes of a fish	K 92, 185

यहाँ [P2] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग L-Medicine के [P] पक्ष से ली गई है।

[E][2P]

इस पक्ष के अंतर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार यह पक्ष मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष के समान ही है। केवल निम्नलिखित दो एकल संख्याएँ अतिरिक्त दी गई हैं।

591 Relation to young ones

595 Courting

उदाहरण :

Water fasting of animals	K : 345
Conservation of wild life	K 9954 : 527
Classification of fishes	K 92 : 11
Nest of birds	K 96 : 571
Fauna of equatorial zones	K : 12.191
Animal life of Asia	K : 12.4

उपर्युक्त उदाहरणों में [E][2P] पक्ष की एकल संख्यायें अनुसूची में दिये गये निर्देशानुसार मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष से ली गई है।

Specials (विशिष्ट वर्ग)

[SpF] पक्ष का उसी प्रकार प्रयोग किया जा सकता है जैसा कि मुख्य वर्ग G Biology में किया गया है। इसकी एकल संख्यायें न तो अनुसूची में दी गई हैं और न ही इस संबंध में नियम भाग में कुछ लिखा गया है।

उदाहरण :

Old age mammals	K9E, 97
Young one of animals	K9C
Animal embryos	K9B

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. State control of forest animals
2. Skin disease of wild animals
3. A list of wild animals of Rajasthan
4. Popular description of flying animals
5. Bones of verteberates
6. Biological study of animals
7. Fauna of Uttar Pradesh
8. Abode for young ones of birds
9. New born of crorodile
10. Snakes of India

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Feathers of the aves	K96, 881
2.	Digestive system of birds	K96, 2
3.	Eyes of invertebrates	K1, 185
4.	Uterus of the mammals	K97, 553
5.	Classification of fishes	K92 : 11

14.9 मुख्य वर्ग पशुपालन (Main Class Animal Husbandary)–KX

इस मुख्य वर्ग के अंतर्गत उपयोगी पशुओं का अध्ययन किया जाता है। पशुओं का वर्गीकरण उनकी उपयोगिता की दृष्टि से किया गया है। पशुओं के भरण, पोषण, स्वास्थ्य, प्रजनन इत्यादि समस्याओं के साथ ही उनके उत्पादनों तथा उत्पादनों के संग्रहण, शीत भण्डारण, उपयोग व संबंधित समस्याओं का अध्ययन भी इस मुख्य वर्ग के अंतर्गत किया गया है।

पक्ष परिसूत्र– KX [P], [P2] : [E] [2P] : [2E] [3P]

परिसूत्र : नियम भाग में दिये गये निर्देश के अनुसार इस मुख्य वर्ग का परिसूत्र तथा एकल संख्याओं का निर्माण मुख्य वर्ग J Agriculture के समान किया गया है।

इस मुख्य वर्ग का परिसूत्र तथा एकल संख्याओं के निर्माण {Formation of foci) का तरीका मुख्य वर्ग J Agriculture के समान ही है।

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत उपयोगी पशुओं का उल्लेख है। इस पक्ष का निर्माण दो प्रकार की पंक्तियों से मिलकर हुआ है। प्रथम पंक्ति (Utility array) पशु की उपयोगिता को दर्शाती है, तथा द्वितीय पंक्ति {Part array) पशु के अंगों व उनसे प्राप्त पदार्थों की उपयोगिता को बताती है।

उपरोक्त दोनों पंक्तियों से निर्मित एकल संख्या उपयोगी पशु जगत को उनके उपयोग की दृष्टि से, भिन्न–भिन्न श्रेणियों में विभाजित करती है। एक श्रेणी के पशुओं को एक निश्चित क्रम प्रदान करने की दृष्टि से वरेण्य विधि (FD) का प्रयोग किया जाता है। (FD) से प्राप्त यह तीसरा अंक, पशु अंक (Animal number) कहलाता है।

उपरोक्त दोनों प्रकार की पंक्तियों से निर्मित एकल संख्याओं को उदाहरणों द्वारा नीचे समझाया जा रहा है।

1. उपयोगिता की प्रतीक एकल पंक्ति (Utility Array)

यह पशु को उसकी उपयोगिता की दृष्टि से विभाजित करने वाली प्रथम पंक्ति की एकल संख्या है। इस पंक्ति की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग J Agriculture में दी गई Utility array के समान है। केवल एकल संख्या 2, 4 व 5 में संशोधन किया गया है।

उदाहरण :

KX 1 ऐसे पशु जिनका उपयोग सजावट के लिए होता है।

KX 3 ऐसे पशु जिनसे भोज्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।

KX 5 ऐसे पशु जो घरेलू व पालतू है।

KX 6 ऐसे पशु जिनसे औषधि प्राप्त होती है।

KX 7 ऐसे पशु जिनसे वस्त्र रेशा प्राप्त होता है, इत्यादि।

2. पशु के विशिष्ट अंगों की प्रतीक एकल पंक्ति (Part Array)

पशु के अनेक अंग होते हैं जिनकी अलग–अलग उपयोगिता हो सकती है। [S] पक्ष का निर्माण करने वाली दूसरी पंक्ति की एकल संख्या है।

Utility array को Part array से विभाजित करने पर जो एकल संख्या प्राप्त होती है वह पशु के विशिष्ट अंग के उपयोग को प्रदर्शित करने वाली होती है।

उदाहरण :

KX 3 ऐसे पशु जिनसे मानव को भोज्य पदार्थ प्राप्त होते हैं (यहाँ एकल संख्या 3 Utility array से ली गई है, जिसका अर्थ है Food)

एकल संख्या Food को पुनः Part array से विभाजित किया जाता है। Part array के अंतर्गत पशुओं द्वारा प्राप्त होने वाले उपयोगी पदार्थों की एकल संख्याओं का उल्लेख है। Utility array तथा Part array से मिलकर जो एकल संख्या निर्मित होती है, उससे एक विशिष्ट श्रेणी का वर्गांक बनता है।

उदाहरण :

KX31 ऐसे पशु जिनसे निकलने वाला तरल पदार्थ (Secretion) खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोगी है। इस श्रेणी में दुधारू पशु जैसे– गाय, भैंस इत्यादि आदि होते हैं।

KX33 ऐसे पशु जिनका मांस (Flesh) खाने के काम में आता है। इस श्रेणी में पशुओं में सुअर, बकरा, मछली इत्यादि आते हैं।

KX35 ऐसे पशु जिनका अण्डा (Egg) भोजन के काम आता है। इस श्रेणी में अण्डा देने वाले पशु जैसे– मुर्गी, बतख इत्यादि आते हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में Utility array 3 Food है। यह प्रथम पंक्ति की एकल संख्या है। इसके साथ Part array की एकल संख्याएँ क्रमशः 1 Secretion, 3 Food and 5 Egg लगाकर भोजन के लिए उपयोगी पशुओं को पुनः पृथक–पृथक श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

इसी प्रकार–

KX44 यातायात के उपयोग में लाये जाने वाले पशु जैसे–घोड़ा, बैल, ऊँट इत्यादि। यहाँ Utility array 4 Traction तथा Part array 4 whole animal है। (यातायात में पूरा पशु काम आता है)

KX54 पालतू पशु–जैसे कुत्ता, बिल्ली, तोता इत्यादि। (यहाँ Utility array 5 pet तथा Part array 4 whole animal है।)

KX61 ऐसे प्राणी जिनके द्वारा बनाया गया तरल पदार्थ औषधि के काम आता है। जैसे–मुधुमक्खी (यहाँ Utility array 6 Drug तथा Part array 1 Secretion (शब्द) है।)

KX78 ऐसे पशु जो वस्त्र रेशा देते हैं। जैसे–भेड, लोमड़ी इत्यादि। (यहाँ Utility array 7 Fabric तथा Part array 8 Hair है।)

उपर्युक्त उदाहरणों में भी Utility array को Part array से विभाजित कर उपयोगी पशुओं को अनेक श्रेणियों में बांटा गया है।

3. Animal Number (पशु अंक)

Utility array तथा Part array के साथ एक तीसरा एकल अंक (Animal number) जोड़ने से विशिष्ट प्रकार के पशु की प्रतीक एकल संख्या बनती है। दूसरे शब्दों में Utility array तथा Part array से निर्मित एक सी विशेषता वाले पशुओं को प्राथमिकता के आधार पर निश्चित क्रम में रखा जाता है। इस क्रम को वरेण्य श्रेणी विधि (FD) से प्राप्त किया जाता है। इस कार्य के लिए उपरोक्त दोनों पंक्तियों के साथ एक तीसरा अंक जोड़ा जाता है। इसे इण्डो अरेबिक अंकों के रूप में 1,2,3 के क्रम में लगाया जाता है, जिससे एक ही के उपयोग में आने वाले पशुओं को एक निश्चित क्रम प्रदान किया जा सके। क्रम निश्चित करने का आधार पशु की सर्वाधिक लोकप्रियता व उपयोगिता का माना जाना चाहिए।

इस प्रकार Utility array + Part array + Animal number से मिलकर जो तीन अंकों में एक संख्या निर्मित होती है वह विशिष्ट प्रकार के पशुओं की प्रतीक होती है। इससे इस मुख्य वर्ग के [P] पक्ष का निर्माण होता है।

उदाहरण :

KX31 दूध देने वाले पशु अनेक हैं इन्हें प्राथमिकता के क्रम में रखने पर–

KX311 Cow

KX312 She buffalo

KX313 She goat

KX33 मांस देने वाले पशुओं में प्राथमिकता का क्रम निम्न प्रकार निश्चित किया गया है–

KX331 Beaf cattle

KX332 Fish

KX441 यातायात के लिए उपयोगी पशुओं में Bull प्रथम स्थान पर तथा Horse दूसरे स्थान पर रखा गया है–

KX 441 Bull

KX442 Horse

[P2] पक्ष

यह पक्ष पशु के अंगों से संबंधित है। इसका प्रावधान नियम भाग में तो किया गया है किंतु अनुसूची में इसकी एकल संख्याओं का कोई उल्लेख नहीं है। पशु के अंगों से संबंधित एकल संख्याओं को आवश्यकतानुसार मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष से प्राप्त किया जा सकता है।

उदाहरण :

Skin of she buffalo	KX312, 87
Lungs of dog	KX541, 45
Hair of fox	KX788, 881
Lungs of dog	KX541, 45

उपर्युक्त उदाहरणों में [P2] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष (Organ facet) से ली गई है।

[E][P2] पक्ष

इस पक्ष में पशुओं की समस्याओं का उल्लेख है।

उदाहरण :

Classification of fish	KX332 : 915
Morphology of ducks	KX352 : 2
Training of dogs	KX541 : 8
Breeding of hens	KX351 : 6

[E] पक्ष की एकल संख्या 1 Feeding, 4 Disease तथा 7 Harvesting (Produce) के लिए पृथक–पृथक [2P] पक्ष दिया गया है।

[E] पक्ष की एकल संख्या 1 Feding के लिए [2P] पक्ष

1 Feeding के लिए [2P] पक्ष को विषय विधि (SD) से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Grain for pets	KX5 : 1 (J38)
Grass feed for cows	KX311 : 1 (J251)
Barley feed for she goat	KX313 : 1 (J386)
Feeding of pulses to horses	KX442 : 1 (J388)

1 Feeding के लिए [2E] पक्ष

इस पक्ष के लिए एकल सख्याएँ अनुसूची में दी गई हैं।

उदाहरण :

Storage of leaf feed for she goat	KX313 :1 (J25) : 8
Administering feed to goat	KX333 : 1 : 7
Preparation of feed for hens	KX351 : 1 : 3

[E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के लिए [2P] पक्ष

अनुसूची में दिये गये निर्देशों के अनुसार 4 Disease के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग (Medicine) से समान ही होगीं।

उदाहरण :

Fungus disease in pets	KX5 : 433
Fever of pets	KX5 : 414
Tuberculosis in hens	KX351 : 421

उपर्युक्त उदाहरणों में [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष मुख्य वर्ग L Medicine से प्राप्त किया गया है।

4 Disease के लिए [2E] [3P] पक्ष को भी मुख्य वर्ग L Medicine से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Treatment of tuberculosis in hen	KX351 : 421 : 6
Treatment of fever of pets	KX5 : 414 : 6

[E] पक्ष की एकल संख्या 7 Produce के लिए [2P] पक्ष

7 Produce के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्याओं को दो भागों में विभाजित किया गया है–

(i) **[P] पक्ष की एकल संख्या 31 के लिए [2P] पक्ष**

[P] पक्ष की एकल संख्या 31 दूध देने वाले पशुओं की प्रतीक है। इन पशुओं के उत्पादन दूध, घी, पनीर इत्यादि होते हैं। 31 के लिए दिये गये [2P] पक्ष में इन्हीं पदार्थों का उल्लेख है।

उदाहरण :

Products of milk	KX31 : 71
Cow's milk	KX311 : 71
She buffalo's ghee	KX312 : 74

यहाँ 1 Milk तथा 4 Ghee [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ हैं, अतः इन्हें [E] पक्ष की एकल संख्या 7 Produce के साथ सीधा जोड़ दिया गया है।

(ii) **[P] पक्ष की एकल संख्या 35 के लिए [2P] पक्ष**

[P] पक्ष की एकल संख्या 35, अण्डे देने वाले पशुओं की प्रतीक है। इनके उत्पादन अण्डे की जर्दी इत्यादि होते हैं। अतः 35 के लिए दिए गए [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ 5 Egg तथा 6 Yolk ही दी गई है।

उदाहरण :

Eggs of hen	KX351 : 75
Egg Yolk of a duck	KX352 : 76

[2E][3P] पक्ष : अनुसूची में दिये गये निर्देशों के अनुसार [2E][3P] पक्ष मुख्य वर्ग J Agriculture के समान है।

उदाहरण :

Cold storage of eggs of hens	KX351 : 75 : 84
Cleaning of bee's honey	KX611 : 71 : 5
Storage of eggs	KX35 : 75 : 8
Uses of butter milk	KX31 : 75 : 97

उपर्युक्त उदाहरणों से [2E][3P] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग J Agriculture के [2E][3P] पक्ष से प्राप्त की गई है।

Specials (विशिष्ट वर्ग)

इसकी एकल संख्याएँ न तो अनुसूची में दी गई हैं न ही इस संबंध में नियम भाग में कुछ लिखा गया है फिर भी इस पक्ष का उसी प्रकार प्रयोग किया जा सकता है जैसा कि मुख्य वर्ग G Biology में किया गया है।

उदाहरण :

Hen's chicken	KX9C, 351
Lamb of sheep	KX9C, 783
She goat's embryo	KX9B, 313
A young calf	KX9C, 311

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Prevention of tuberculosis in poultry
2. Dairy farming in Denmark
3. Anatomy of oil producing fish
4. Barley feed for she goat
5. Uses of animal flesh
6. Uses of milk and milk products
7. Diagnosis of infections disease of sheep
8. Breeding of lac insects
9. Cold storage of milk products
10. Administering feed to she buffalo

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Cow feeding	KX311 : 1
2.	Training of parrot	KX546 : 8
3.	Virus diseases among the fowls	KX351 : 423
4.	She buffalo's ghee	KX312 : 74
5.	Egg of duck	KX352 : 75

6.	Encyclopaedia on animal husbandry (1960)	KXk1, N60
7.	Morphology of horses	KX442 : 2
8.	Storage of leaf feed for she buffalo	KX312 : 1(J25) : 8
9.	Abstract of domestic animals	KXam
10.	Journal of animal husbandry (Published from India, 1985)	KXm44, N85

14.10 मुख्य वर्ग आयुर्विज्ञान (Main Class Medicine)—L

इस मुख्य वर्ग के अंतर्गत मानव शरीर विज्ञान संबंधी सभी विषयों को सम्मिलित किया गया है। जैसे मानव के विभिन्न अंग प्रत्यंगों तथा उनसे संबंधित रोग, रोगों के निदान, उनकी रोकथाम के उपाय तथा चिकित्सा के तरीके इत्यादि।

पक्ष परिसूत्र– L [P] : [E] [2P] : [2E] [3P]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत मानव शरीर के विभिन्न अंग–प्रत्यंगों तथा उनका निर्माण करने वाले तत्वों का उल्लेख है। इस पक्ष को Organ Facet कहा है।

इस पक्ष की एकल संख्याओं को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा गया है –

(i) Basic and Regional organs of human body (मानव शरीर के मूलभूत एवं क्षेत्रीय अंग)

इन्हें L1 विभाजनों के रूप में दिया गया है। जैसे–

L 11 Cells

L 12 Tissues

L 18 Head

L 185 Eye इत्यादि

(ii) Functional organs of human body (मानव शरीर के कार्यशील अंग)

[P] पक्ष की एकल संख्या 2 से 8 के अंतर्गत मानव शरीर के कार्यशील अंगों को रखा गया है। इन्हें प्रमुख 7 तंत्रों में विभाजित किया गया है तथा प्रत्येक तंत्र के कार्यशील अंग प्रत्यंगों को उसके उप विभागों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण :

L 2 Digestive System (पाचन तंत्र)

इस तंत्र के अंतर्गत आने वाले सभी अंगों व उप अंगों को L2 के विभाजन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसे–

L 21 Mouth

L 214 Tooth

L 24 Stomach
L 25 Intestine

L 291 Lever इत्यादि

L3 Circulatory system (रुधिर संचार तंत्र)

इस तंत्र के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं –

L 32 Heart

L 35 Blood

L4 Respiratory system श्वास–प्रश्वास तंत्र)

L 41 Nose

L 44 Bronchi

L 45 Lungs इस तंत्र के प्रमुख अंग हैं।

L5 Genito-Urinary system (प्रजनन एवं मूत्र संस्थान तंत्र)

इस तंत्र के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं –

L 51 Kidney

L 54 Sexual Organ इत्यादि आते हैं।

L6 Ductless Glands (वाहिनीहीन ग्रंथियाँ)

इसके अंतर्गत अनेक प्रकार की ऐसी ग्रंथियों का उल्लेख है जिनमें नलिका नहीं होती। जैसे–

L 62 Spleen glands

L 65 Thyroid glands इत्यादि।

L7 Nervous system (नाड़ी संस्थान तंत्र)

यह भी शरीर का एक महत्वपूर्ण तंत्र है। इसमें–

L 72 Brain

L 73 Spinal cord

L 74 Nerves इत्यादि प्रमुख हैं।

L8 Other system (अन्य तंत्र)

अन्य तंत्रों के अंतर्गत शरीर के अनेक महत्वपूर्ण भागों का उल्लेख है, जिन्हें उपर्युक्त किसी तंत्र के अंतर्गत नहीं रखा गया है। जैसे–

L 82 Bone

L 83 Muscle

L 86 Connective tissue

L 87 Skin

L 881 Hair

L 883 Nail इत्यादि।

Auto-bias Device/Super Imposition (अध्यारोपण विधि)

इस विधि के प्रयोग के द्वारा [P] पक्ष की दो एकल संख्याओं को एक साथ प्रयोग में लाया जा सकता है। प्रमुख अंग की प्रतीक एकल संख्या को पहले रखा जाता है तथा गौण अंग या भाग का प्रतीक एकल संख्या को उसके बाद में। दो एकल संख्याओं को छोटी आड़ी रेखा (Hyphen) से जोड़ा जाता है। इस प्रकार इस विधि के द्वारा प्रमुख अंग के साथ–साथ उससे संबंधित अन्य भागों को भी प्रदर्शित किया जा सकता है।

उदाहरण :

Bone of nose	L 2123-87
Veins of eyes	L 185-36
Hair of head	L 18-881
Cheek skin	L 41-82

उपर्युक्त उदाहरणों Eyes, Head, Nose, Check इत्यादि प्रमुख अंगों की एकल संख्याओं को पहले तथा Veins, hair, bone तथा Skin गौण अंगों की एकल संख्याओं को बाद में रखा गया है। संयोजक चिन्ह Hyphen के प्रयोग द्वारा एक ही पक्ष की दो एकल संख्याओं को साथ–साथ प्रदर्शित किया गया है।

[E] [2P] पक्ष

यह पक्ष मानव के स्वास्थ्य तथा उसके विभिन्न अंगों की संरचना व क्रियाओं आदि से संबंधित अनेक बातों का अध्ययन करता है।

3 Physiology

यहाँ दिये गये निर्देशों के अनुसार 3 Physiology के उप विभाजन मुख्य वर्ग G Biology के [E] पक्ष में दिये गये 3 Physiology से प्राप्त करने होगें।

उदाहरण :

Katabolism in human body	L : 332
Physical effect of substances on human body	L : 33C

उपर्युक्त उदाहरणों में 3 Physiology के उप विभाजन मुख्य वर्ग G Biology से प्राप्त किये गये हैं।

विशिष्ट वर्ग L9F (Female) के लिये अनुसूची में अतिरिक्त एकल संख्याएँ दी गई हैं जिनका प्रयोग L9F के साथ ही किया जा सकता है, अन्यत्र नहीं।

उदाहरण :

Artificial abortion	L9F : 345
Pathology of pregnancy	L9F : 314

उपर्युक्त उदाहरणों में [E] [2P] के लिये प्रयुक्त सभी एकल संख्याएँ स्त्री जाति की Physiology से संबंधित है, अतः L9F के साथ ही प्रयुक्त किया गया है।

4 Disease रोग

[E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease है। मानव शरीर में रोग अथवा व्याधि उत्पन्न करने वाले अनेक कारक हो सकते हैं। ऐसे कारकों का उल्लेख [E] पक्ष्ज्ञ में [2P] पक्ष के रूप में, अनुसूची में पृष्ठ 2.84 व 2.85 पर किया गया है। [E] पक्ष के साथ [2P] पक्ष की एकल संख्याओं को बिना किसी संयोजक चिन्ह से सीधा जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण :

Brain haemorrhage	L 72 : 413
Non-functioning of kidney	L 51 : 456

उपर्युक्त उदाहरणों में [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease है। इसके साथ जोड़ी गई एकल संख्यायें [2P] पक्ष की हैं, जो रोग के कारक के रूप में प्रस्तुत की गई हैं अर्थात् 56 Non-functioning तथा 13 Haemorrhage ये सभी पद रोग के कारक हैं, अतः इनकी एकल संख्याओं को [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के साथ सीधा जोड़ दिया गया है।

इसी प्रकार–

निम्नलिखित रोगों के वर्गांक नीचे दिये गये अनुसार बनेंगे–

Functional disorders of intestines	L 25 : 45
Structural abnormality of face	L 181 : 471
Infectious diseases of lungs	L 45 : 42

5 Public health and hygien जन स्वास्थ्य

इसके अंतर्गत जन स्वास्थ्य से संबंधित सभी पक्षों का उल्लेख है। अतः इसमें जन्म एवं मृत्यु संबंधी आंकड़े, सरकार द्वारा जन स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद वस्तुओं पर नियंत्रण, व्यापक रूप से फैलने वाली बीमारियों की रोकथाम इत्यादि विषयों को रखा गया है।

523 Food, Beverages के अंतर्गत दिये गये निर्देश के अनुसार इसे मुख्य वर्ग [E] Chemistry तथा F Technology के [P] पक्ष की एकल संख्याओं से विभाजित किया जा सकता है।

उदाहरण :

State control of vitamins for health	L 52397

यहाँ [E] पक्ष की एकल संख्या 523 को एक अन्य एकल संख्या 97 Vitamins से विभाजित किया गया है। 97 Vitamins को मुख्य वर्ग E Chemistry के [P] पक्ष से लिया गया है।

54 Prevention of disease in general

[E] पक्ष की एकल संख्या 54 का प्रयोग व्यापक रूप से फैलने वाली बीमारियों जैसे–हैजा, चेचक, मलेरिया इत्यादि को रोकथाम के लिए ही किया जाना चाहिए, अन्य साधारण बीमारियों के लिए नहीं।

एकल संख्या 54 के अंतर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार 54 को [E] पक्ष की एकल संख्या

4 Disease की भांति विभाजित करना है।

उदाहरण :

Malaria control programme L 35 : 54261

मलेरिया एक ऐसी बीमारी है जो जन स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित करती है तथा इसकी व्यापक पैमाने पर रोकथाम करनी होती है, अतः इसे L 35 : 54261 के अंतर्गत वर्गीकृत करना उपयुक्त होगा न कि L 35 : 4261 : 5 के अंतर्गत

यहाँ L 35 = Human blood

L 35 : 54 = Prevention of blood disease in general

L 35 : 54261 = Prevention of Malaria हुआ।

उपर्युक्त उदाहरण में 54 के साथ जोड़ी गई एकल संख्या 261, मलेरिया रोग (L 35 : 4261) से बने बनाये वर्गांक के [E] पक्ष में [2P] पक्ष है, जो रोग के कारक के प्रतीक के रूप में दी गई है।

उदाहरण :

Woolen clothes for health L : 577 , 2

परिशिष्ट पृष्ठ 25 पर M7 Textiles के लिये दिये गये [M] पक्ष में, 2 Wool है अतः प्रामाणिक वर्ग M7 के [M] से अंक 2 लेकर, निर्देशानुसार L : 577 के साथ [M] पक्ष के संयोजक चिन्ह सेमीकोलन (;) से जोड़ दिया गया है।

[2E] [3P] पक्ष

[2E] [3P] पक्ष का प्रावधान [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के लिए विशेष रूप से किया गया है। इसे Handling Facet कहा गया है। इस पक्ष के अंतर्गत रोगों की देखभाल (Nursing), रोगों के कारणों (Etiology), निदान (Diagnosis), परीक्षण के तरीकों (Methods of pathological investigation), रोकथाम के उपायों (Preventive steps) तथा उपचार के तरीकों (Methods of Treatment) इत्यादि का उल्लेख है।

[2E] [3P] पक्ष का प्रावधान 4 Diesease के लिए ही किया गया है अतः इसका प्रयोग [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के बिना कभी भी नहीं किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में [2E] [3P] पक्ष से पूर्व [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease का प्रयोग अनिवार्य है। बिना रोग की प्रतीक एकल संख्या के [2E] [3P] पक्ष का प्रयोग करना गलत होगा।

उदाहरण :

Surgery of appendicitis L 27219 : 415 : 7

यहाँ बीमारी (Disease) पद लुप्त है फिर भी सर्जरी (Surgery) (जो एक [2E] पक्ष है), से पूर्व रोग की प्रतीक एकल संख्या 4 का प्रयोग अनिवार्य रूप से लिया है।

इसी प्रकार–

Heart operation	L 32 : 4 : 7
Causes of infection disease of lungs	L 45 : 42 : 2
Diagnosis of hernia by X-ray	L : 473 : 3253

[3M] पक्ष

[2E] [3P] पक्ष के बाद [M] पक्ष का प्रयोग [3M] कहलाता है। मुख्य वर्ग L Medicine में इस पक्ष का प्रयोग, [2E] [3P] पक्ष की एकल संख्याओं के लिये, चिकित्सा के तरीकों में, किसी विशेष प्रकार के पदार्थ का उपयोग को दर्शाने के लिये किया जा सकता है।

उदाहरण :

Treatment of disease by saline water injection L : 4 : 616; 41171

यहाँ विशेष पदार्थ से बने Injection की प्रतीक संख्या 41171=Salt को [3M] पक्ष के रूप में प्रयोग में लाया गया है। इसे मुख्य वर्ग E Chemistry के [P] पक्ष से लाया गया है। [2E] [3P] पक्ष के बाद प्रयोग होने के कारण इसे [3M] पक्ष कहा गया है।

विशिष्ट चिकित्सा पद्धतियाँ एवं विशिष्ट वर्ग की चिकित्सा (Systems and Specials)

इस मुख्य वर्ग में अनेक चिकित्सा पद्धतियों का उल्लेख है जैसे– आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी इत्यादि। इनका निर्माण कालक्रम विधि (CD) के आधार पर किया गया है।

उदाहरण :

LB = Ayurvedic system of medicine (आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति)

यहाँ L मुख्य वर्ग Medicine तथा B द्वितीय Millennium BC का प्रतीक अंक है जिसमें आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का अविष्कार हुआ।

चिकित्सा की दृष्टि से अनेक विशिष्ट वर्गों की चिकित्सा का भी अनुसूची में उल्लेख है।

उदाहरण :

L9B (Embryo) भ्रूण

L9C (Child) बच्चा

L9D (Adolescent) युवा

L9F (Female) स्त्री इत्यादि।

चिकित्सा की दृष्टि से उपरोक्त वर्ग विशिष्ट वर्ग है। इन वर्गों के निर्माण का आधार मनुष्य के शरीर के विकास की अवस्था तथा शारीरिक संरचना व वातावरण आदि है।

प्रयोग के नियम

(1) [SmF] अथवा [SpF] पक्ष के बाद [P] पक्ष का प्रयोग संयोजक चिन्ह कोमा (,) से किया जाता है।

उदाहरण :

Ayurvedic medicine for heart	LB, 32

(2) [P] पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले अन्य पक्षों का प्रयोग उनके लिये निर्धारित संयोजक चिन्हों के साथ किया जाता है।

उदाहरण :

Ayurvedic treatment of lung disease	LB, 45 : 4 : 6

(3) [SmF] तथा [SpF] पक्षों का एक साथ प्रयोग हो तो सबसे पहले [SmF] उसके बाद [SpF] तथा बाद में मुख्य वर्ग में प्रयुक्त [P], [E] [2P] तथा [2E] [3P] पक्षों का प्रयोग होगा।

[SmF] [SpF] व [P] पक्षों के लिए संयोजक चिन्ह कोमा (,) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Ayurvedic treatment of heart disease	LB, 32 : 4 : 6

यहाँ सर्वप्रथम [SmF] का प्रयोग हुआ है। मुख्य वर्ग के अन्य पक्षों का प्रयोग उनके लिये निर्धारित संयोजक चिन्हों के साथ हुआ है।

यदि [SmF] पक्ष तथा [SpF] पक्ष दोनों न हो तो [P] पक्ष का प्रयोग होता है।

उदाहरण :

Treatment of heart disease	L 32 : 4 : 6

(4) [SmF] अथवा [SpF] पक्ष के साथ मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष का सीधा प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :

Children disease	L9C : 4
Treatment of children disease	L9C : 4 : 6

इसी प्रकार [SmF] के साथ भी मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष का सीधा प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :

Ayurvedic medicine	LB
Treatment of disease of Ayurveda	LB : 4 : 6
Treatment of heart disease by Ayurveda	LB,32 : 4 : 6

(5) एक से अधिक Systems के प्रयोग को LA के द्वारा दर्शाया जाता है।

उदाहरण :

Treatment of skin disease by Ayurveda and Unani systems	LA, 87 : 4 : 6

यहाँ दो Systems के एक साथ प्रयोग होने पर सामान्य पद्धति (General classification=LA) का प्रयोग किया गया है।

(6) Allopathy को Favoured system माना गया है। अतः इस पद्धति के लिए मुख्य वर्ग के प्रतीक चिन्ह L का प्रयोग ही पर्याप्त होगा।

उदाहरण :

Treatment of blood disease by allopathy	L 35 : 4 : 6

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Tuberculosis of bone
2. Transplantation of kidney

3. Unani cure for child rickets
4. Examination of urine for yellow fever
5. Human respiration
6. Ayurvedic cure for nutrition deficiency
7. Heart operation
8. Dental surgery
9. Human respiration
10. Amputation of leg of a war soldier

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Eradication of smallpox in general	L:54231
2.	State control of wine for public health	L:524547
3.	Tuberculosis of bones	L82:421
4.	Birth control	L9F:394
5.	Inflamation in eyes	L185:415
6.	Pain in joints	L192:417
7.	Diagnosis of hernia	L:473:4
8.	Treatment of shoulder pains by injection	L161:417:616
9.	Symptoms and diagnosis of child disease	L9C:4:3

14.11 मुख्य वर्ग औषधि विज्ञान (Main Class Pharmacognosy)–LX

मुख्य वर्ग औषधि विज्ञान के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की औषधियों के संबंध में अध्ययन किया जाता है। ये औषधियाँ पशुओं वनस्पतियों तथा खनिज से प्राप्त की जाती हैं। इस मुख्य वर्ग को परंपरागत वर्गों में बांटा गया है–

पक्ष परिसूत्र– LX [P] : [E] [2P]

Lx3	Pharmacology	औषधि शास्त्र या औषधि विज्ञान
Lx5	Pharmacopocia	औषधि कोश, भेषण संग्रह
Lx8	Pharmacy	औषधि शाला, औषधि निर्माण विज्ञान

LX3 Pharmacology (औषधि शास्त्र या औषधि विज्ञान)

इस वर्ग के अंतर्गत औषधियाँ तथा उनसे होने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है–

पक्ष परिसूत्र– LX3 [P] : [E] [2P]

[P] पक्ष – E Chemistry मुख्य वर्ग [P] पक्ष के समान ही इस मुख्य वर्ग का [P] पक्ष है। अतः इस मुख्य वर्ग के [P] पक्ष के लिए E Chemistry मुख्य वर्ग के [P] पक्ष से एकल संख्याएँ लेने के निर्देश हैं।

[E] [2P] पक्ष – इस पक्ष के अंतर्गत औषधियों के प्रभावों का उल्लेख है। [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष को नियम भाग में दिये गये निर्देशानुसार विषय विधि (SD) से प्राप्त करना होगा।

[E] [2P] पक्ष [E] पक्ष के एकल निम्न हैं–

2 = Stimulation

3 = Depression

5 = Irritation

6 = Desnulescence

7 = Osmosis

8 = Replacement

91 = Antibiotication

उदाहरण :

Pharmacology of stimulating drugs	LX3:2
After effects of antibiotics	LX3:91
Fluoride drugs stimulation in teeth	LX3170 : 2(L214)
Benzoids depression in kidneys	LX371 : 3(L51)
Stomach irritation caused by iron	LX3182 : 5(L24)

इन उदाहरणों में [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष को विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त किया है। विषय विधि से मानव शरीर के उन अंग, प्रत्यंगों से संबंधित एकल संख्याओं को प्राप्त किया जाता है जिन पर औषधि का प्रभाव पड़ रहा है। जिसे L Medicine मुख्य वर्ग से लाते हैं।

LX5 Pharmacopoeia

परिसूत्र – LX5[P], [P2]

इसमें औषधियों की मानक सूची (List of standards for drugs) संबंधी विषयों को दिया गया है–

Facet	Term	(In) By
[P]	Nation (राष्ट्र)	By GD (Geographical Division)
[P2]	Kind (प्रकार)	By Enumeration

[P] पक्ष – नियम भाग–1 के निर्देशानुसार इस प्रामाणिक वर्ग के [P] पक्ष के लिए भौगोलिक विधि (Geographical Division) से एकल संख्या प्राप्त करने का प्रावधान है।

[P2] पक्ष – इस पक्ष का अनुसूची में उल्लेख [P] पक्ष के स्रोत के रूप में प्रयोग में लाया जाता है जिसमें कुल 3 एकल संख्याओं द्वारा दर्शाया है।

1. Official
2. Secondary/Unofficial source book/list
3. Tertiary

उदाहरण :

British Pharmacopocia (BP)	LX556, 1
Un-official source-book of Indian drugs	LX544, 2

LX8 Pharmacy - इसका न तो कोई परिसूत्र दिया है और न ही कोई उप विभाजन।

उदाहरण :

Pharmacy : A theory	LX8
Indian pharmacy	LX8.44

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Intestine depression by magnesium chloride
2. American Society for Pharmacology, 1979
3. Eastern Phamacists in India
4. A text book of British Pharmacy

5. Acidic effects on human skin
6. Heart depression by potassium
7. Universal pharmacopoeia
8. Pharmaceutical Journal (UK, 1941)
9. American Pharmaceutical Codex
10. Tertiary source book of British drugs

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Stimulation	LX3:2
2.	Acidit effects on human skin	LX33:5(L87)
3.	Antibiotication	LX3:91
4.	Lung depression of potassium	LX3112:3(L45)
5.	Tertiary source book on Indian drugs	LX544, 3

14.12 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Classification of plants and animals in India
2. Floods in Assam
3. Surface transport for Gold mines
4. Agriculture in India
5. Cold storage of Cow butter
6. Treatment of teeth of old age people with naturopathy
7. Bio physics
8. Hot spring of Rajgir
9. Deep boring of pit for mining of iron
10. Stem of Mushroom
11. Evolution of life
12. Artificial production of cholk
13. Ventilation for tunnels
14. Japanese Algae
15. Improvement of soil for cultivation of tea
16. Chemical analysis of cell
17. Crystallography of metamorphic rocks
18. Flooding tunnels for copper mines
19. Creepers
20. Preservation of fruits with vaccuum technique
21. Tubercular implication of cell

22. Mineral resource of India
23. Mines in India
24. Disease of roots of flowering plants
25. Disease of snakes
26. Life on mars
27. Underground water
28. Underground roads for iron mines
29. Prevention of disease of flowering plants in India
30. Treatment of Horses
31. Metabolism of salt water
32. Classification of Igneous rocks
33. Copper mining/mines
34. Morphology of hair root of creepers
35. Training of dog for military purpose
36. Effect of heavenly bodies in life
37. Iron ore in India
38. Ventilation for underground roads for iron mines
39. Preventive steps against virus disease of growth of ring in desert plant
40. Child medicine in Ayurveda
41. History and Biology
42. Chemical Crystallography
43. Legal implications for ventilation for underground roads for iron mines
44. Morphology of flowers
45. Treatment of diseases of lungs of child with homoeopathy
46. Functional disorder of tissue
47. Artifical production of diamond
48. Hair root for creepers
49. Treatment of disease of tuberculosis of lungs of child in Homeopathy
50. Microscopic analysis of antiobiotics

14.13 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपको इसमें सम्मिलित किये गये 9 मुख्य वर्गों से संबंधित उदाहरणों का वर्गीकरण करने का तरीका मालूम हो गया होगा। इसमें मुख्य वर्ग HX, KX एवं LX को द्वितीयक मुख्य वर्ग की श्रेणी में रखा गया है क्योंकि इनकी उत्पत्ति प्राथमिक मुख्य विषय क्रमशः H, K एवं L से हुई। प्रस्तुत इकाई में सम्मिलित समस्त मुख्य वर्गों से संबंधित उदाहरणों को आसान ढंग से विश्लेषित कर समझाया गया है।

14.14 शब्दावली (Glossary)

मुख्य वर्ग	–	ज्ञान जगत में किसी विशेष शाखा को अथवा विषय का प्रमाणिक वर्ग मुख्य वर्ग कहलाता है।
प्रमाणिक वर्ग	–	ज्ञान–जगत में किसी विशेष शाखा का पुनः विभाजन जो समय के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।
पक्ष	–	एकल विचार को अभिव्यक्त करने वाला पद पक्ष कहलाता है।

14.15 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class number of Titles for Exercise)

1. G:13.44
2. H4223.4461
3. HX118, 8
4. J.44
5. KX311:73:84
6. LM, 9E, 214:4:6
7. G:(C)
8. H4112.4453
9. HX182, 2:4
10. I2375, 11
11. GI:66
12. H235225:164
13. HX, 3:35
14. I22:12.42
15. J451:1:6
16. G11:(E3)
17. H22:8
18. HX113, 3:45
19. I952
20. J37:7(C2:76)
21. G11:421
22. H7.44
23. HX.44

24. I953, 13:4
25. K94251:4
26. G1:(B943)
27. H7210
28. HX182, 4
29. I5:4:5.44
30. KX442:4:6
31. G9553.33
32. H21:8115
33. HX113
34. I952, 132:2
35. KX541:8(MV41)
36. G1:5599
37. H7182.44
38. HX2182, 4:53
39. I95121, 148:423:5
40. LB,9C
41. G Oa V
42. H1:82:(E)
43. HX182, 4:53:(Z)
44. I5, 16:2
45. LL, 9C, 45:4:6
46. G12:45
47. H191:164
48. I952, 132:2
49. LL, 9C, 45:421:6
50. LX3:91 (G:19)

14.16 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.

3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.

4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra

5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon Classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.

6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.

7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical Colon Classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.

8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.

9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical Colon Classification, P.K.Publishers, Agra.

इकाई – 15 मुख्य वर्ग *M* से *Q* तक वर्गांक निर्माण

Unit–15 : Formation of Class Number from Main Class MQ

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 मुख्य वर्ग उपयोगी कलाएँ–M

15.4 मुख्य वर्ग आध्यात्मिक ज्ञान एवं रहस्यवाद– D

15.5 मुख्य वर्ग ललित कलाएँ–N

15.6 मुख्य वर्ग साहित्य–O

15.7 मुख्य वर्ग भाषा विज्ञान–P

15.8 मुख्य वर्ग धर्म–Q

15.9 अभ्यास हेतु शीर्षक

15.10 सारांश

15.11 शब्दावली

15.12 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक

15.13 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना (Introduction)

इस इकाई में छः मुख्य वर्गों– उपयोगी कलाएँ (M), आध्यात्मिक ज्ञान (D), ललित कलाएँ (N), साहित्य (O), भाषाएँ (P) एवं धर्म (Q) से संबंधित शीर्षकों के निर्माण संबंधी पक्ष परिसूत्र की व्याख्या करते हुए शीर्षकों के निर्माण प्रक्रिया को समझाया गया है। प्रत्येक मुख्य वर्ग से संबंधित शीर्षकों को उदाहरण स्वरूप वर्गांक सहित उल्लिखित किया गया है।

15.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप यह बताने में सक्षम होंगे कि–

- उपर्युक्तानुसार सम्मिलित मुख्य वर्गों में किन पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।
- साहित्य एवं भाषा में अंतर क्या है?
- भाषा एवं विषय शब्दकोशों के वर्गांक निर्माण के नियम क्या हैं? तथा
- आध्यात्मिक ज्ञान एवं रहस्यवाद मुख्य वर्ग में किन पहलुओं का अध्ययन किया जाता है आदि।

15.3 मुख्य वर्ग उपयोगी कलाएँ (Main Class Useful Arts)—M

ऐसे विषय जिनका संबंध उपयोगी कलाओं से है। इसके अंतर्गत उपयोगी कलाओं एवं खेलकूद से संबंधित तथा ऐसे विषय जिनमें विज्ञान का प्रयोग है आदि सभी वर्गों को सम्मिलित किया गया है।

इसे परंपरागत वर्गों में विभक्त कर सूचीबद्ध किया गया है तथा आवश्यकतानुसार पक्ष परिसूत्र दिये गये हैं। जैसे–

M1	Book Production
M2	Carpentry
M3	Smithy
M5	Glass industry
M7	Textile
M8	Dress making
M92	Masonry

M95	Photography
M97	Leather industry
M98	Packaging
MA	Home and hotel science

M7 Textiles, MJ 7 Rope making एवं MA Home and Hotel Science का पक्ष परिसूत्र दिया गया है अन्य परंपरागत वर्गों का परिसूत्र नहीं दिया गया है। आवश्यकता पड़ने पर इनके परिसूत्र निर्मित किये जा सकते हैं। अनुसूची में M3 Domestic Science से लेकर M98 Packaging की एकल संख्याओं को हटाकर परिशिष्ट (Annexure) के पृष्ठ 25 पर संशेधित एकल संख्याओं को दिया गया है वर्गांक निर्मित करने में इन्हीं संशोधित एकल संख्याओं का प्रयोग किया जाना चाहिए।

M7 Textiles

इससे संबंधित सभी पक्षों की एकल संख्याएँ परिशिष्ट में दी गई हैं।

पक्ष परिसूत्र– M7 [P]; [M] : [E]

[P] पक्ष

उदाहरण :

Yarn	M 71
Rope	M 72
Cloth	M 73
Carpet	M 75

[M] पक्ष

उदाहरण :

Cotton yarn	M 71; 1
Silk cloth	M 73; 3
Jute carpet	M 75; 1

[E] पक्ष

[E] पक्ष की एकल संख्याओं को दो भागों में विभक्त किया गया है।

1. [E] पक्ष, जिसका प्रयोग उसी स्थिति में किया जायेगा जब M7 के साथ [P] पक्ष का प्रयोग न किया गया हो।

उदाहरण :

Ginniong of cotton	M7; 1:2
Hemp washing	M7; 6:7

2. [E] पक्ष, जिसका प्रयोग उसी स्थिति में किया जायेगा जब [M7] के साथ [P] पक्ष का प्रयोग किया गया हो।

उदाहरण :

Wool yarn spinning	M71; 2:1
Weaving woolen cloth	M73; 2:3
Sizing silk cloth	M73; 3:6

MA Home and Hotel science

पक्ष परिसूत्र– MA [P]

इसके लिए केवल [P] पक्ष ही दिया गया है।

उदाहरण–

Elements of cooking	MA 3
Beauty culture	MA 7

MJ7 Rope making

पक्ष परिसूत्र– MJ [P] : [E] [2P]

[P] पक्ष

यह पक्ष पदार्थ से संबंधित है जो रस्सियाँ बनाने के काम आता है। अनुसूची में इसका उल्लेख है।

उदाहरण :

Jute rope making	MJ 75
A coir rope	MJ 72

[E] पक्ष

M7 [E] पक्ष में वर्णित एकल संख्याओं का प्रयोग MJ7 के लिए भी किया जाता है।

उदाहरण :

Sorting	MJ 7 : 1
Ginning	MJ 7 : 2
Washing	MJ 7 : 7

MY Physical Training

इस वर्ग के अंतर्गत विभिन्न खेलों को सम्मिलित किया गया है। जैसे– Athletics, Ballgame, Sports, Indoor amusemants इत्यादि। इसका कोई परिसूत्र नहीं है।

Volley ball	MY 2116
Football	MY 2121
Badminton	MY 2132
Hockey	MY 2143
Golf	MY 2145

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Carpentary as a useful art
2. Skating in Japan
3. Art of swimming and driving
4. Game of cricket
5. Bibliography of book production
6. Cycling
7. Printing trade in China
8. Football for school boys
9. Mountain climbing
10. Serving in hotels of India

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Tennis

MY 2131

2. Rope making
   MJ 7
3. Dyeing cotton yarn
   M71; 1:8
4. Woolen cloth textiles
   M73; 2
5. Maintenance of home
   MA 2
6. Essentials of serving
   MA 4
7. Basket ball
   MY 2115
8. Rope dyeing
   MJ 7:8
9. Cricket
   MY 2141
10. Baling of wool
    M7; 2:3

15.4 मुख्य वर्ग आध्यात्मिक ज्ञान एवं रहस्यवाद (Main Class Spiritual Experience and Mysticism)–D

इस मुख्य वर्ग के अंतर्गत आध्यात्मिक एवं रहस्यवाद से संबंधित पाठ्य–सामग्री को वर्गीकृत किये जाने का प्रावधान किया गया है।

पक्ष परिसूत्र– D[P], [P2] : [E] [2P]

[P]	Religion
[P2]	Entity
[E] [2P]	Problem

[P] पक्ष

[P] पक्ष की एकल संख्या Q Religion के [P] पक्ष से लाकर उपयोग किया जाएगा।

उदाहरण :

Jain mysticism	D3

Hindu mysticism	D2
Christian mysticism	D6

[P2] पक्ष

[P2] पक्ष का अनुसूची में उल्लेख किया गया है।

उदाहरण :

Angel in Christian mysticism	D6, 12
Concept of Sun in Christian mysticism	D6, 283

[E] [2P] पक्ष

इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के रहस्यवाद से संबंधित प्रक्रियाओं को रखा गया है।

उदाहरण :

Islamic occultism	D7 : 8
Meditation in janayoga	D3 : 36
Vision in karma	D24 : 5
Omens about river water in Hindu mysticism	D2, 256 : 9692
Manifestation of God in Islam	D6, 11 : 83

अध्यात्मवाद से संबंधित व्यक्तियों की जीवनियों के वर्गांक बनाने के लिए w के स्थान पर y7 case study का प्रयोग नियमानुसार किया जाना चाहिए। y7 के साथ संबंधित व्यक्ति की जन्मतिथि का उल्लेख किया जाता है।

उदाहरण :

Life of Aurobindoji ghose	D2y7 M72
Bibliography on Swami Vivekananda	D2y7 M64a

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Astrologers in India
2. Magic and witchcraft
3. A study of palmistry
4. Hath yoga techniques
5. Telepathy in Hindu religion
6. Concept of holy lake water in Hindu mysticism
7. Life of Raman Rishi (1879)
8. Bhaktimarga in India
9. Flying saucers
10. Christian mysticism

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Magic and witchcraft according to sufism
   D73 : 87
2. Judaic mysticism
   D5
3. Rudrapati, Hindu astrology
   D2 : 864
4. Concept of man in Hindu mysticism
   D2, 14
5. God in hindu mysticism
   D2, 11
6. Telepathy in Jainism
   D3 : 834
7. Life of Kabir (b.1398)
   Dy7H98
8. Mainfestation of Jain religion
   D3 : 83

15.5 मुख्य वर्ग ललित कलाएँ (Main Class Fine Arts)–N

यह मुख्य वर्ग भी अनेक प्रमाणिक वर्गों में विभाजित है जैसे वास्तुकला, स्थापत्य कला, चित्रकला, खुदाई का कार्य, संगीत कला एवं नृत्य कला आदि। आवश्यकतानुसार अनुसूची में पृथक–पृथक पक्ष परिसूत्र दिये गये हैं। [P] व [P2] पक्षों का सामान्य पक्षों के रूप में प्रयोग किया गया है इनको NA Architecture के अंतर्गत संयुक्त रूप से वर्णित किया गया है। अन्य प्रमाणिक वर्गों के परिसूत्रों में [P] [P2] पक्षों की एकल संख्याओं का उल्लेख

नहीं है लेकिन आवश्यकतानुसार NA Architecture के [P] व [P2] पक्षों की एकल संख्याओं का उपयोग अन्य प्रामाणिक वर्गों में नियमानुसार किये जाने का प्रावधान है।

NA Architecture

इस प्रामाणिक वर्ग का परिसूत्र इस प्रकार है –

NA[P], [P2] [P3], [P4] : [E]

[P] व [P2] पक्ष

इन पक्षों को अनुसूची में संयुक्त रूप से वर्णित किया गया है। इन्हें क्रमशः भौगोलिक विभाजन (GD) व कालक्रमिक विभाजन (CD) से प्राप्त किया जाता है।

उदाहरण–

Indian Architecture	NA 44
Chinese Architecture	NA 41
Mogul Architecture	NA 44, J
Gothic Architecture	NA 5, F
Buddhist Architecture	NA 44, C

[P3] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्या 2 Building है। नियमानुसार 22 Library building को मुख्य वर्ग 2 Library Science के [P] पक्ष से विभाजित किया गया है।

उदाहरण :

Architecture of special library buildings in mugal style	NA 44, J224
Architecture of college library bulding of tudor period	NA 561, J2233

इसी प्रकार अन्य प्रकार के भवनों की वास्तुकला के लिए (SD) का प्रावधान है। एकल संख्या 9 को (SD) से विभाजित कर अन्य प्रकार के भवनों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं।

उदाहरण :

Religious buildings of Hindus in India	NA 44, 9(Q2)
Muslim religions buildings in Great Britain	NA 56, 9(Q7)

[P4] पक्ष

इस पक्ष में भवन के विभिन्न भागों से संबंधित प्रावधान का उल्लेख है।

Painted decoration of religious buildings in Buddhistic Architecture	NA 44, C9(Q6), 995
Pillar of an Egyptian city hall	NA 677, 5, 45
Dome of Roman sepulchral monument	NA 52, D8, 65

[E] पक्ष

इस पक्ष में भवनों की बनावट, योजना, नमूने, स्थान इत्यादि का विवरण दिया गया है।

उदाहरण : इन उदाहरणों में सभी पक्ष उपस्थित हैं।

Composition of wall supports of Gothic hotel buildings	NA 5, F 44, 41:2
Planning of castles, windows in British architecture during tudor era	NA 56, J 37, 7:3
Model of pillars in Buddhistic buildings in chinese architecture	NA 56, J 37, 7:3

NB Town Planning

पक्ष परिसूत्र– NB [P], [P2] [P3], [P4] : [E]

इसमें [P] [P2] पक्ष को एकल संख्याओं को NA Architecture से लाकर उपयोग करना है। [P3] और [P4] पक्ष अनुसूची में वर्णित है एवं [E] पक्ष की संख्या NA Architecture के समान है।

उदाहरण :

Village planning in mugal India	NB 44, J1
Planning of town market in Great Britain	NB 56, 3,5
Planning of Play ground in metropolis in America	NB 73, 7, 65
Perspective of play grounds of a town in early English style	NB 561, H3, 65:6

ND Sculpture

पक्ष परिसूत्र– ND [P], [P2] [P3]; [M] : [E] [2P]

[P] [P2] पक्ष NA Architecture के समान है।

[P3] पक्ष [M] पक्ष एवं [E] [2P] पक्ष का उल्लेख अनुसूची में किया गया है।

उदाहरण :

Greek sculpture of human bust	ND 51, 18
Caltic sculpture of moon	ND 564, D282

उपर्युक्त उदाहरण में [P3] पक्ष 28 एकल संख्या को निर्देशानुसार B9 Astronomy के [P] पक्ष से विभाजित किया गया है।

अन्य उदाहरण :

Nature depicted in Babylonian sculpture	ND 47; A2
Bronze sculpture	ND; 5
Design of coins by zantine sculputre	ND 47, D71; 47
Marble sculpture in Mughal India	DD 44, J; 3
Human figure in Mughal sculpture in China	ND 41, J1

NQ Painting

पक्ष परिसूत्र– NQ [P], [P2] [P3]; [M] : [E] [2P]

इसमें [P] [P2] पक्ष NA Architecture एवं [P3] पक्ष ND Sculpture के समान है। [M] पक्ष एवं [E][2P] पक्ष अनुसूची में दिये गये हैं।

उदाहरण :

Human figure in Italian painting	NQ52, 1
Mughal paintings	NQ44, J
Buddhististic paintings on stone	NQ44, C, 4
Water colour painting of Lakes on canvas	NQ, 254, 7:3

NR (Music)

पक्ष परिसूत्र– NR [P], [P2] [P3]; [M] : [E] [2P]

[P] [P2] पक्ष NA Architecture से प्राप्त करना है। [P3], [M] एवं [E] [2P] पक्ष अनुसूची में दिये गये हैं।

उदाहरण :

Indian Music	NR 44
Italian Music	NR 52
Music in Mughal India	NR 44, J
Western Orchestral music	NR 5, 92
Buddhist stringed music	NR 44, C; 3
Notation of wind instruments of early English period	NR 561, H18; 2

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. National library building
2. Roman architecture planning
3. British art of tuddor period
4. History of Indian architecture
5. Derlling
6. State library buildings in China
7. Planning of town market in Japan
8. Indian music played on harmonium
9. Scottish style of village theatre
10. Religious building
11. Italian architecture
12. Vocal music
13. City design
14. Kathak dances of Sitara Devi

15. Buddhist iconography
16. Wood sculpture

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Architecture of public library building
   NA44, J222
2. Econography
   ND, 9(Q)
3. Renaissance paintings
   NQ5, J
4. Dramatic music in Mughal India
   NR44, J91
5. Buddhistic music
   NR44, C

15.6 मुख्य वर्ग साहित्य (Main Class Literature)–O

इस मुख्य वर्ग के अंतर्गत विश्व की प्रमुख भाषाओं से संबंधित साहित्य को वर्गीकृत किया गया है। साहित्य विविध रूपों में हो सकता है। जैसे–कविता, गद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि।

पक्ष परिसूत्र– (O)[P], [P2] [P3], [P4]

[P]	Language	(इसे भाषा सारणी से प्राप्त किया जाता है)
[P2]	Form	(अनुसूची में दिये गये हैं)
[P3]	Author	(इसे कालक्रमिक विभाजन से प्राप्त किया जाता है)
[P4]	Work	(इसे नियमानुसार Work table से प्राप्त करना है)

[P] पक्ष

मुख्य वर्ग साहित्य में [P] पक्ष भाषा पक्ष है। साहित्य में भाषा से तात्पर्य उस भाषा से होता है जिसमें वह कृति लिखी है न कि उस भाषा से जिसमें पुस्तक प्रस्तुत की गई है।

उदाहरण :

''भागवत गीता'' को अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया है लेकिन इसकी मूल कृति संस्कृत भाषा में है। इसलिए भागवत गीता को वर्गीकृत संस्कृत में करेंगे। साहित्यिक कृति को वर्गीकृत करने से पूर्व वर्गीकार को उस कृति की मूलभाषा की जानकारी पहले से होना आवश्यक है।

[P] पक्ष के लिए भाषा एकलों को प्राप्त करने के लिए भाषा सारणी (Language Table) से लेने के निर्देश अनुसूची में दिए गए हैं।

उदाहरण :

Sanskrit literature	O 15
Hindi literature	O 152
Marathi literature	O 155
Urdu literature	O 168
Italian literature	O 121
Tamil Literature	O 31
German literature	O 113
Dravidiant literature	O 3

[P2] पक्ष

कोई साहित्यिक कृति जिस रूप में लिखी गई है वह उस कृति/रचना का रूप पक्ष (form facet) कहलाता है। रचना अनेक रूपों में हो सकती है। जैसे–कविता, नाटक, उपन्यास, गद्य, पत्र इत्यादि। साहित्य में रूप पक्ष की एकल संख्याओं का उल्लेख अनुसूची में किया गया है। साहित्य में वर्गीकार को इस पक्ष के लिए ध्यान रखना होता है कि रचना का मूल रूप क्या है इसी आधार पर रचना को वर्गांक प्रदान किया जाता है। उदाहरण के लिए किसी पुस्तक का मूल रूप कहानी है तो उसका रूप पक्ष कहानी होगा चाहे उसका रूपान्तरण अन्य किसी भी रूप में प्रस्तुत क्यों न किया गया हो। रामचरित मानस जो कि तुलसी दास द्वारा रचित है। इसका मूल रूप पक्ष कविता है अतः इसके [P2] पक्ष के लिए एकल संख्या 1 कविता (Poem) का प्रयोग करना होगा यदि इस पुस्तक को गद्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो भी इसका रूप पक्ष कविता ही रहेगा क्योंकि रामचरित मानस की मूल प्रति कविता के रूप में लिखी गई है।

पक्ष परिसूत्र के अनुसार [P] पक्ष और [P2] पक्ष के लिए संयोजक चिन्ह कोमा (,) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Hindi poetry	O 152, 1
French short stories	O 122, 3
German prose	O 113, 6
Letters in Gujrati	O 156, 4
Speeches in Spanish	O 123, 5
Panjabi poetry	O 153, 1

[P3] पक्ष

कृति का लेखक [P3] पक्ष कहलाता है। पक्ष परिसूत्र के अनुसार लेखक पक्ष की एकल संख्या प्राप्त करने के लिए लेखक के जन्म वर्ष को आधार मानते हैं। लेखक की जन्मतिथि को प्राप्त करने के लिए कालक्रम विधि (CD) के द्वारा Time Isolet सारणी जो पृष्ठ 27 अंकों की प्रतीक एकल संख्या को प्राप्त किया जाता है जिसमें पहला अंक शताब्दी का, दूसरा व तीसरा अंक वर्ष का प्रतीक है।

उदाहरण :

Premchand (born 1880)	O 152, 3 M80
Jaishankar Prasad (1868)-Poet of Hindi	O 152, 1 M68
Tulsidas (born 1534)-Poet of Hindi	O 152, 1 J34

इसके [P2] तथा [P3] के मध्य किसी प्रकार के संयोजन चिन्ह को प्रयोग करने का प्रावधान नहीं है। अतः दोनों पक्षों की एकल संख्याओं को बिना किसी संयोजक चिन्ह के जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण :

Dramas of Bernard Shaw	O111, 2 M56
Short stories of Prem Chand	O152, 3 M80
Drama of William Shakespeare	O111, 2 J64

लेखक एकल प्राप्त करने के लिए वर्णक्रम विधि (AD) का प्रयोग

वह लेखक जो 1800 के बाद जन्में हो और उनकी जन्म तिथि की जानकारी न हो सके तो लेखक के जन्म की शताब्दी का अनुमान लगाकर, शताब्दी अंक को प्रथम अंक के रूप में प्रयोग करते हैं और लेखक के नाम के अंक को वर्णक्रम विधि से जोड़ा जाता है। लेखक के नाम के प्रथम एक, दो या तीन अक्षर प्रयोग में लाये जाते हैं। यह प्रथम अक्षर अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षर के रूप में शताब्दी अंक के सीधा जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण :

Poetry of Mirja Ghalib	O168, 1 M

यहाँ शायर मिर्जा गालिब की जन्म तिथि ज्ञान न होने के कारण जन्म की शताब्दी (1800–1899) ज्ञात कर शताब्दी अंक M प्रयोग किया गया है और लेखक के नाम ''मिर्जा गालिब'' के लिए बाद में M का प्रयोग किया गया है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि किसी लेखक ने एक से अधिक विधाओं में रचना की है तो सभी स्थानों पर उसकी जन्मतिथि एक ही हो। जैसे जयशंकर प्रसाद ने कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि लिखे हैं। इनकी भाषा एक होते हुए रूप पक्ष अलग–अलग हैं।

[P4] पक्ष

इसका [P4] पक्ष कृति पक्ष (work number facet) होता है। प्रत्येक लेखक द्वारा रचित उसकी रचना का एक विशिष्ट नाम होता है और इन रचनाओं को साहित्य के वर्गांक में एक क्रम संख्या प्रदान की जाती है जिससे एक लेखक की एक ही रूप में रचित सभी रचनाओं को पुस्तकालय में एक निश्चित क्रम में फलकों पर रखा जा सके और उन रचनाओं को जो क्रम संख्या दी जाती है वही कृति संख्या होती है।

कई लेखकों द्वारा एक ही रूप में अनेक पुस्तकों की रचना की जाती हैं जैसे किसी लेखक की रचनाओं की संख्या 8 है। अतः इन 8 रचनाओं में से जो भी कृति पुस्तकालय में पहले आये उसे क्रम संख्या प्रथम माना जाएगा। चाहे वह लेखक की कोई भी संख्या की कृति हो।

उदाहरण :

Ramacharit Manas by Tulsidas O152, 1 J34, 1
(Hindi poet, born in 1534, his first work)

यहाँ तुलसीदास की ''रामचरित मानस'' शीर्षक को लिया गया है जो कि उनकी पहली रचना है। यह शीर्षक में दिया गया है इसलिए रचना को क्रमांक 1 दिया गया है। जैसा कि हम जानते हैं कि तुलसीदास की 8 से कम रचनाएँ हैं अतः इनकी कृतियों को 1, 2, 3 ....8 तक अंक प्रदान किया जायेगा।

ऐसे लेखकों जिन्होंने 8 से अधिक किंतु 64 से कम रचनाएँ लिखी हैं उनकी रचनाओं को क्रमांक प्राप्त करने के लिए एक दूसरा सूत्र (Formula) प्रयोग में लाया जाता है। यह संख्या दो अंकों से मिलकर निर्मित होती है।

इस सूत्र के अनुसार 64 रचनाओं को 8 भागों में विभाजित कर दिया जाता है और प्रत्येक भाग में 8 रचनाओं के ग्रुप को रखा जाता है। इस प्रकार 8–8 समूह बन जाते हैं।

1	2	3	4	5	6	7	8	पहले
11	12	13	14	15	16	17	18	समूह में

9	10	11	12	13	14	15	16	दूसरे
21	22	23	24	25	26	27	28	समूह में

17	18	19	20	21	22	23	24	तीसरे
31	32	33	34	35	36	37	38	समूह में

25	26	27	28	29	30	31	32	चौथे
41	42	43	44	45	46	47	48	समूह में

33	34	35	36	37	38	39	40	पाँचवे
51	52	53	54	55	56	57	58	समूह में

41	42	43	44	45	46	47	48	छठवे
61	62	63	64	65	66	67	68	समूह में

49	50	51	52	53	54	55	56	सातवें
71	72	73	74	75	76	77	78	समूह में

57	58	59	60	61	62	63	64	आठवें
81	82	83	84	85	86	87	88	समूह में

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि लेखक की प्रथम रचना को 1 न लिखकर 11 लिखा गया है। (यहाँ 1 अंक, ग्रुप का सूचक है तथा 11 अंक उस ग्रुप में उस रचना के क्रम का सूचक है।)

जैसे– यदि किसी लेखक की 11वीं रचना है तो उसे 23 अंक प्रदान करेंगे क्योंकि यह द्वितीय ग्रुप की दूसरी रचना है। लेकिन 8वीं रचना को 18 अंक प्रदान करेंगे यहाँ 8वीं रचना प्रथम ग्रुप की 8वीं रचना है।

उदाहरण :

Meghdoot by Kalidas : O 15, 1 D40, 26
(born 400 AD, his 14th work)

Kamayni by Jai Shankar Prasad : O 152, 1 M68, 11
(born 1868, his 1st work)

King Lear by William Shakespeare : O 111, 2 J64, 33
(born 1564, his 19th work)

Godan by Prem Chand : O 152, 3 M80, 43
(born 1880, his 27th work)

Abhigyan Shakuntalam by Kalidas : O 15, 2 D40, 22
(his 10th work)

यदि किसी लेखक की रचनाएँ 64 से अधिक किंतु 512 से कम हों तो इसके लिए एक नया formula दिया गया है। इसे 3 संख्याओं में लिखा जाएगा–

प्रथम संख्या मुख्य ग्रुप की सूचक
दूसरी संख्या अधीनस्थ ग्रुप (Sub-group) की सूचक
तीसरी संख्या उस रचना की सूचक

उदाहरण :

Patita by Gulshan Nanda :
(born 1935, his 77th work) O 152, 3 N35, 125

इस 77वीं रचना 65 एवं 512 के बीच की रचना है। इसलिए उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक तीन अंकों में बनेगा। 77 दूसरे ग्रुप की 5वीं रचना है। अतः इसकी रचना संख्या 125 हुई।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Nationalism in Prasad's literature
2. History of English novels
3. Novels of Amrita Pritam (born 1919)
4. Poems of Nirala (Hindi poet, born in 1905 AD)
5. Biography of Hindi prose writers. (youngest born in 1965)
6. Punjabi short stories

7. Cow in Godan by Prem Chand (1880, 35)
8. Poetry of Iqbal
9. Biographies of Hindi mystic dramatists (youngest born in 1958)
10. Biography of twentiieth century prose writers

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Love in English Poetry
   O111, 1:g (S:55)

2. Criticism of Hamlet
   O111, 2 J64, 51:g
3. Punjabi literature
   O153
4. Gujrati short stories
   O156, 3
5. Rural Picturisation in the novels of Prem Chand
   O153, 3M80:g (Y31)
6. History of Russian poetry
   O142, 1v
7. Spanish drama-An evaluation
   O123, 2:g
8. Letters of Jaishankar Prasad
   O152, 4
9. Rabindra Nath Tagore (born 1861 AD)
   O157, 3 M61
10. Literary Criticism
    O : g

15.7 मुख्य वर्ग भाषा विज्ञान (Main Class Linguistics)–P

इस मुख्य वर्ग में भाषा एवं भाषा विज्ञान के विभिन्न तत्वों का वर्णन किया गया है। जैसे–वाक्य विन्यास, व्याकरण, उच्चारण आदि।

पक्ष परिसूत्र– [P], [P2] [P3] : [E] [2P]

[P] पक्ष

मुख्य वर्ग भाषा विज्ञान के [P] पक्ष की एकल संख्या के लिए अध्याय 5 Language Isolate से Language की एकल संख्या को लाया जा सकता है।

उदाहरण :

Study of Sanskrit language	P 15
Hindi language	P 152
Pali language	P 1511
French language	P 122
English language	P 111
Gujrati language	P 156
Swedish language	P 114

[P2] पक्ष

P2 पक्ष के अंतर्गत Variant तथा Stage का वर्णन है। Variant के अंतर्गत Slang, Dialect तथा Jargon इन तीन प्रकार की बोलियों से संबंधित एकल संख्याएँ दी गई हैं।

उदाहरण :

9A	Variant
9B	Slang
9D	Dialect
9J	Jargon

कुछ प्रसिद्ध भाषाओं की प्रतीक एकल संख्याओं का [P], [P2] का उल्लेख संयुक्त रूप से अनुसूची में दिया गया है।

उदाहरण :

Epic Sanskrit	P15, B
Modern German	P113, J
Classical Sanskrit	P15, C
Old French	P122, A
Modern French	P122, H

भाषा के विभिन्न रूप (Variant of a language)

''भाषा के Variant form तथा stages से संबंधित यदि कोई शीर्षक दिया गया हो तो भाषाएकल के साथ [P2] पक्ष के रूप में उस Variant form का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Hindi dialect	P152, 9D
Gujarati Jargon	P156, 9J
Hindi slang	P152, 9B
Gujrati slang	P156, 9B

किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में प्रचलित Dialect से संबंधित यदि कोई शीर्षक है तो उस Dialect एकल संख्या को उचित भौगोलिक संख्या से विभाजित करते हैं जहाँ वह Dialect प्रचलित होती है।

उदाहरण :

Gujarati Hindi – P152, 9D 4436 (4436 गुजरात के लिए)

British English – P111, 9D 56 (56 ग्रेट ब्रिटेन के लिए)

अगर Variant तथा Stage दोनों एक शीर्षक में एक साथ दिये जायें तो Stage के लिए पहले तथा Variant की एकल संख्या का प्रयोग बाद में करेंगे तथा दोनों एकल संख्याओं के बीच में अर्द्ध विराम (,) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण–

Modern Swedish	P114, H, 9D
Vedic Hindi Jargon	P152, A 9J
Modern Magadhi slang	P1517, J, 9B

[P3] पक्ष

[P3] पक्ष में Element facet में भाषा के मूल तत्वों का वर्णन किया गया है जिसके अंतर्गत स्वर, व्यंजन, अक्षर, शब्द, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, वाक्यांश आदि दिये गये हैं।

उदाहरण :

Vowels of French dialect	P122, 9D11
Collective nouns in Sanskrit stage	P15, A315
Punctuation in modern Spanish	P123, J8

[E] [2P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत भाषाओं के उच्चारण, व्याकरण, वाक्य विन्यास, वाक्य विश्लेषण तथा भाषाओं से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

उदाहरण :

Composition of stem clauses of middle English	P111, E5302:7
Meaning of phrases of compound words of ancient Malayalam	P32, A4303:4
Genders in modern Danish	P116, J:22
Pronunciation of root Sanskrit words	P15, 301:1
Grammar of Polish language	P145:2

शब्द कोश (Dictionaries)

इस मुख्य वर्ग में शब्दकोशों के वर्गांक बनाने के लिए अनुसूची में विशेष प्रावधान दिया है। अतः शब्दकोशों के वर्गांक निर्मित करते समय [P3] पक्ष को जो एकल संख्या 3 word हो छोड़ देना चाहिए क्योंकि लगभग सभी शब्दकोशों में शब्दों के ही अर्थ दिये होते हैं और एकल संख्या 3 का प्रयोग करने से वर्गांक लम्बा बन जाता है। इस सब के पीछे मुख्य उद्देश्य है कि यथा संभव वर्गांक छोटा होना चाहिए। यह नियम अन्य प्रकार के कोशों (जैसे मुहावरों आदि) के साथ प्रयोग न करके केवल शब्दों के शब्द कोशों के साथ ही प्रयोग करने का प्रावधान है अर्थात् शेष शब्दकोशों में एकल संख्या 3 को नहीं छोड़ना है।

उदाहरण :

Dictionary of Italian words	P121:4k
Dictionary of English words	P111:4k
Malayalam words dictionary	P32:4k

Phrase Sanskrit dictionary	P15, 4:4
Dictionary of Urdu proverbs	P168, 6:4

दो भाषाओं के शब्दकोश : दो भाषाओं के शब्दकोश में दो भाषाएँ होती हैं। एक मूल भाषा तथा दूसरी अनुवाद की भाषा, जिसमें शब्दों के अर्थ दिये रहते हैं। मूल भाषा को प्रदर्शित करने के लिए उसकी प्रतीक एकल संख्या [P] पक्ष के रूप में प्रयुक्त होती है जबकि अनुवाद की भाषा सामान्य एकल (k) के बाद एक अंक की जगह छोड़कर प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Hindi-Italian dictionary	P152:4k 121
Sanskrit Hindi dictionary	P15:4k 152
German-French dictionary	P113:4k 122

विषय शब्द कोश (Glossary)

किसी विशिष्ट विषय के शब्दकोश का मुख्य वर्ग संबंधित विषय के अंतर्गत माना जाता है। शब्दकोश की मूल भाषा तथा अर्थ के लिए प्रयुक्त एकल संख्या 4[E] पक्ष के रूप में विषय विधि से लाने के नियम हैं। अनुवाद की भाषा को ग्रंथ संख्या के रूप में प्रयोग में लाना चाहिए। सामान्य एकल k को विषय विधि के लिए प्रयुक्त संयोजी चिन्ह लघु कोष्ठक के बाद लिखा जाएगा।

उदाहरण :

English-Hindi dictionary of sociological term	Y:(P111:4)k 152
Hindi-Swedish dictionary of library science term	2:(P152:4)k 114
French-Hindi dictionary of legal term	Z:(P122:4)k 152
English-Urdu-Persia dictionary of scientific term	A:(P111:4)k 168

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Hindi-Urdu-Persian dictionary
2. Compound words in Bihari
3. Punctuation in ancient Tamil
4. Hindi-Urdu dictionary
5. Comparative study of Teutonic language
6. A comparative study of HIndi and Punjabi phonology
7. Old Himachali English
8. Mixed vowels in modern Irish
9. Genders in classical Sanskrit
10. Biographical dictionary of British people
11. Syllabus for French language

12. Swedish language
13. Sanskrit jargon
14. Figure of speech in drama – a linguistic study

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1. Urdu language
   P168
2. Tamil language
   P31
3. Old German
   P113, D
4. Ancient Tamil
   PB1, A
5. Modern Spanish dialect
   P123, 9D11
6. English language grammar
   P111:2
7. Dictionaryof Urdu language
   P168:4k
8. Hindi-German dictionary
   P152:4k 113
9. English-Hindi dictionary of scientific terms
   A:(P111:4)k 152
10. French-German dictionary of legal terms
    Z:(P122:4)k 113

15.8 मुख्य वर्ग धर्म (Main Class Religion)—Q

धार्मिक पहलुओं को व्यक्त करने के लिए मुख्य वर्ग Q निर्धारित किया गया है। इसके अंतर्गत विश्व के प्रमुख धर्मों, संप्रदायों उनसे संबंधित गतिविधियों, क्रियाकलापों एवं समस्याओं का वर्णन किया गया है।

पक्ष परिसूत्र– Q[P] : [E][2P]

[P] Religion (अनुसूची में दिये गये हैं)

[E][2P] Problem (अनुसूची में दिये गये हैं)

[P] पक्ष

परिवर्ती काल के सिद्धांत के आधार पर मुख्य वर्ग धर्म के अंतर्गत संसार के सभी प्रमुख धर्मों को व्यवस्थित किया गया है। विश्व में हिंदू धर्म ऐसा धर्म है जिसका उद्‌भव

सर्वप्रथम हुआ था। अतः रंगनाथन ने द्विबिन्दु वर्गीकरण की अनुसूची में हिंदू धर्म को पहले रखा है जबकि इस्लाम को सबसे बाद में।

जैसे–	Hinduism (Vedic)	Q1
	Hinduism (Post Vedic)	Q2
	Jainism	Q3
	Buddhism	Q4
	Judaism	Q5
	Christian	Q6
	Muhammadanism	Q7

भक्ति भावनाओं, मान्यताओं, कर्मकाण्डों की विभिन्नताओं के आधार पर कुछ धर्म अनेक शाखाओं, उपशाखाओं, पंथों व संप्रदायों में बँट गया है। अतः इसके वर्गांक निर्मित करने के लिए कालक्रम विधि के प्रयोग के निर्देश दिये गये हैं।

अनेक संप्रदायों के वर्गांक निर्मित करने के लिए Q29-other post vedic religion के अंतर्गत दिये गये निर्देशों के आधार पर कालक्रम विधि का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Arya Samaj	Q29M8
Bramh Samaj	Q29M8

उपर्युक्त उदाहरणों में संप्रदायों के स्थापना वर्ष के अंक (CD) से प्राप्त करके जोड़े गये हैं।

Q68 के अंतर्गत Other christian religions के वर्गांक एवं Q78 के अंतर्गत Other mohammadan religion के वर्गांक निर्मित किये गये हैं।

Q8 अन्य धर्म से संबंधित : [P] पक्ष में आने वाले 8 एकल संख्या के अंतर्गत विभिन्न देशों के धर्मों के वर्गांक बनाने के लिए भौगोलिक विधि (GD) और वरेण्य विधि (FD) को प्रयोग करने के निर्देश अनुसूची में मिलते हैं।

उदाहरण–

Religion rites in Parses's	Q8451
Pre-confucianism	Q8411
Confucianism	Q8412

[E][2P] पक्ष

इसके अंतर्गत ईश्वर मीमांसा, पौराणिक कथाएँ, धर्मोचरण, धर्मोपदेश, पवित्र धर्मस्थल, धर्मप्रचार के लिए बनाये गये संघ, संस्थान आदि आते हैं।

उदाहरण :

Hindu mythology	Q2:1
Mythologies of Jainism	Q3:1

2 Scripture जो कि [E] पक्ष की एकल संख्या है इसके अंतर्गत धर्मों के पवित्र ग्रंथों, जैसे कुरान, बाइबिल आदि को वर्गीकृत किया जा सकता है। वरेण्य विधि (FD) के द्वारा इन

धार्मिक ग्रंथों के वर्गांक बनाये गये हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के भाग 3 में बने हुए वर्गांकों का उल्लेख है।

उदाहरण :

Bible-a holy book of Christians	Q6:21

1 Hinduism (Vedic) तथा **2 Hinduism (Post vedic)** के लिए [E] पक्ष में 2 Scriptures भी एकल संख्याएँ अलग से दी गई हैं।

उदाहरण :

Rigvedic brahmanes	Q11:22
Samvedic upanishads	Q13:24

3 Theology जो कि [E] पक्ष की एकल संख्या है। इसके अंतर्गत ईश्वर के अवतार, प्रतिष्ठित साधु संत, परियाँ, धर्म के संस्थापक, जन्म, मरण, स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक, पुनर्जन्म आदि का विवरण मिलता है।

उदाहरण :

God in Jainism	Q3:31
Angels in Hinduism	Q2:32
Lord Jesus Christ	Q6:33
Guru Nanak	Q8441.33

4 Religious practices : इसके अंतर्गत ध्यान, प्रार्थना, मंत्रोचारण, भेंट, पूजा, चढ़ावा, तीर्थ यात्रा, वृत आदि आते हैं।

उदाहरण :

Pilgrimage in Hindu	Q2:4198
Yajurvedic prayers	Q12:4146

6 Religious institutions : इसके अंतर्गत मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर तथा 65 के अंतर्गत धर्म प्रचार के लिए भेजे जाने वाले शिष्ट मण्डलों का विवरण है।

उदाहरण :

Jain temples	Q3:6
Mosqus of Muslims	Q7:6

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिये वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Village god worship in hinduism
2. Day of judgement in Islam
3. Revelation and revolution in Islam
4. Ramayan : a holy book of Hindus
5. Lord Mahavir
6. Kuran : a holybook of Muslims

7. Ram Janma Bhumi temple priest
8. Haz in mohammadanism
9. God in hinduism
10. Christian fathers

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Examples)

1. Buddha
   Q4:33
2. Muslim traditions
   Q7:2G
3. Christian worship
   Q6:445
4. Jainism mythology
   Q3:1
5. Taittiriya samhita
   Q125:21
6. Japanese mahayana sects
   Q45:7
7. Faith in bhagvata among hindus
   Q2212:357
8. Universal religion
   QA
9. Religion of Russian
   Q618
10. HIndu temples in Pakistan
    Q2:6.44Q7

15.9 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Space Flight
2. Weaving of Jute carpets
3. Occult chemistry of gold
4. Painting of Picasso
5. As you like it by Shakespeare
6. Grammar of English language
7. Ajanta mural painting
8. God in hindu mysticism
9. Dramatic music in Mughal India

10. Rope dyeing
11. Cricket in India
12. Shakespearean Romance
13. Indian castle art
14. Concept of man in Islamic mysticism
15. Grammar of English abstract nouns
16. Dictionary of Hindi proverbs
17. Writers of ancient hindu scriptures
18. Lord Mohammad Sahib
19. Tamil Reader, standard, s, 1970
20. Religious Associations
21. Psychology of Hamlet
22. Jainism mythology
23. Eminent Telugu Writers through ages
24. English-Tamil dictionary of terms in veterinary science
25. Who's who in Indian writers (1979)

15.10 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आपको मुख्य वर्ग उपयोगी कलाएँ, आध्यात्मिक ज्ञान, रहस्यवाद, ललित कलाएँ, साहित्य, भाषा विज्ञान एवं धर्म संबंधित शीर्षकों के निर्माण संबंधी नियमों की जानकारी हो गई होगी। इस इकाई में उपर्युक्त मुख्य वर्गों से संबंधित उदाहरणों को बहुत ही सरल ढंग से समझाया गया है। इन उदाहरणों की सहायता से अन्य उदाहरणों को वर्गीकृत किया जा सकता है।

15.11 शब्दावली (Glossary)

मुख्य वर्ग – ज्ञान जगत में किसी विशेष शाखा को अथवा विषय का प्रमाणिक वर्ग मुख्य वर्ग कहलाता है।

प्रमाणिक वर्ग – ज्ञान–जगत में किसी विशेष शाखा का पुनः विभाजन जो समय के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

पक्ष – एकल विचार को अभिव्यक्त करने वाला पद पक्ष कहलाता है।

15.12 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

1. MD58

2. M75; 7:3
3. D (E 118)
4. NQ541,M8(B6)xP
5. O111,2J64,M
6. P111:2
7. NQ44,DxA
8. D2,11
9. NR44,J91
10. MJ7:8
11. MY2141.44
12. O111,3J64:g
13. NA44,37
14. D7,14
15. P111,317:2
16. P152,6:4
17. O15,1w(Q1:1)A2
18. Q7:33
19. P31,19(S),N70
20. Q:68
21. O111,264,51:g(S)
22. Q3:1
23. O35w
24. KX:(P111:4)k 31
25. Ow44,N7

15.13 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical guide to colon classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra

5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon Classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical Colon Classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.
8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical Colon Classification, P.K.Publishers, Agra.

इकाई – 16 मुख्य वर्ग R से Z तक वर्गांक निर्माण

Unit–16 : Formation of Class Number from Main Class R-Z

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना
16.2 उद्देश्य
16.3 मुख्य वर्ग दर्शन शास्त्र–R
16.4 मुख्य वर्ग मनोविज्ञान– S
16.5 मुख्य वर्ग शिक्षा शास्त्र–T
16.6 मुख्य वर्ग भूगोल–U
16.7 मुख्य वर्ग इतिहास–V
16.8 मुख्य वर्ग राजनीति शास्त्र–W
16.9 मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र–X
16.10 मुख्य वर्ग सामाजिक विज्ञान–Y
16.11 मुख्य वर्ग विधि शास्त्र–Z
16.12 अभ्यास हेतु शीर्षक
16.13 सारांश
16.14 शब्दावली
16.15 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक
16.16 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना (Introduction)

प्रस्तुत इकाई में 9 मुख्य वर्गों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान, शिक्षा शास्त्र, भूगोल, इतिहास, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं विधि शास्त्र को सम्मिलित किया गया है। इसमें राजनीति शास्त्र एवं इतिहास मुख्य वर्गों से संबंधित शीर्षकों को वर्गीकृत करते समय बहुत ही सावधानी बरतनी चाहिए ताकि मुख्य वर्ग का निर्धारण करते समय गलती न होने पाए।

16.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपको ज्ञात होगा कि–

- शिक्षा के कितने स्तर निर्धारित किए गए हैं?
- राजनीति शास्त्र एवं इतिहास विषय के शीर्षकों में विभेद स्थापित करना; तथा
- अर्थशास्त्र अंकन सेक्टर 9, 97 के उपयोग के तरीके आदि।

16.3 मुख्य वर्ग दर्शन शास्त्र (Main Class Philosophy)—R

मुख्य वर्ग दर्शन शास्त्र अनेक प्रामाणिक वर्गों में विभाजित है। ये वर्ग Epistimology (ज्ञान मीमांसा), Metaphysics (तत्व मीमांसा), Ethics (नीति शास्त्र), Aesthetics (सौंदर्य शास्त्र) इत्यादि है। इनमें से कुछ प्रामाणिक वर्गों के परिसूत्र दिये गये हैं।

R3 Metaphysics

पक्ष परिसूत्र– R3 [P], [P2]

[P] पक्ष

[P] पक्ष की एकल संख्याएँ तत्व मीमांसा संबंधित विभिन्न विचारधाराएँ हैं।

उदाहरण :

Materialistic Philosophy R 33

[P] पक्ष की एकल संख्या 9 Other special views के अंतर्गत विषय विधि (SD) के प्रयोग द्वारा अन्य विषय प्राप्त किये जा सकते हैं।

उदाहरण :

Humanistic Philosophy R 39 (Y)

यहाँ एकल संख्या 9 को विषय विधि से विभाजित कर वांछित विषय Y को प्राप्त किया गया है।

[P] पक्ष

[P2] पक्ष के अंतर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार इस पक्ष की समस्त एकल संख्याओं को विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए।

उदाहरण :

Philosophy of Religion	R3, (Q)
Christain Philosophy	R3, (Q6)

उपरोक्त उदाहरणों में [P2] पक्ष की एकल संख्याओं को विषय विधि के द्वारा प्राप्त किया गया है।

R4 Ethics

R4[P], [P2]

[P] पक्ष

[P] पक्ष की एकल संख्या 1 Personal Ethics है। इसमें मानवीय आचरण संबंधी एकलों का उल्लेख है। जैसे–सच्चाई, झूठ, नम्रता, अभिमान, मधुरता, क्रूरता, क्रोध, साहस, कायरता, दृढ़ता इत्यादि।

उदाहरण :

Ethics of truth and false hood	R 411

यहाँ	R4	Ethics
	R 41	Personal ethics; तथा
	R 411	Truth and falsehood

[P] पक्ष की संख्या 2 family ethics है इसमें परिवार के सदस्यों तथा संबंधियों के आचार व्यवहार संबंधी एकलों का उल्लेख है।

उदाहरण–

Ethics of Marriage	R 4217

यहाँ R4 Ethics

R42 Family ethics

R421 Ethics of husband and wife; तथा

R4217 Ethics of marriage

[P] पक्ष की एकल 3 Social ethics है। इसमें समाज के व्यक्तियों का एक दूसरे के प्रति जो व्यवहार व शिष्टाचार होना चाहिए, उससे संबंधित एकल संख्याएँ दी गई हैं। जैसे–बातचीत करते समय, यात्रा काल में, दाह संस्कार के अवसर पर, विवाहोत्सव इत्यादि के समय का शिष्टाचार इत्यादि।

उदाहरण :

Conversational etiquette R 4344

यहाँ R4 Ethics

R43 Social ethics

R434 Social etiquette

R4344 Conversational etiquette

3W=state ethics को मुख्य वर्ग W Political science के [P] पक्ष की एकल संख्याओं से विभाजित करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Ethics of monarchs R43W4

यहाँ W के साथ जुड़ी एकल संख्या 4, Monarch के लिए प्रयुक्त हुई है, जिसे मुख्य वर्ग 'W Political Science' के [P] पक्ष से लाकर जोड़ा गया है।

इसी प्रकार–

Ethics of Legislators in democracy R43W6,3

एकल सख्या 4 Professional and Business ethics को व्यवसाय की भांति विभाजित करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Ethics of medical professionals R 44L

यहाँ R4 Ethics

R44 Professional and business ethics

R44L Medical ethics

यहाँ R4 के लिए [P] पक्ष की एकल संख्या 4 को संबंधित व्यवसाय (Medical Profession) से विभाजित किया गया है। अतः चिकित्सा व्यवसाय क प्रतीक अंक L को, R44 के साथ जोड़ा गया है।

एकल संख्या 6 Ethics for lesiure and amusement को MY Physical training, sports, games की भांति विभाजित करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Ethics of Test cricket	R462141

MY2141 = Cricket है अतः R46 को एकल संख्या 2141 से विभाजित कर दिया गया है।

[P2] पक्ष

[P2] पक्ष की एकल संख्याओं का अनुसूची में उल्लेख है। जिन एकल संख्याओं का अनुसूची में उल्लेख नहीं है उन्हें विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Christain ethics	R4,(Q6)
Buddhist family morals	R42,(Q4)
Behaviour towards animals inHinduism	R47,(Q2)

R6 IndianPhilosophy

भारतीय दर्शन को Favoured System मानकर उसे विशिष्टता प्रदान की गई है। इसका कारण इस विषय पर साहित्य का पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना है।

पक्ष परिसूत्र– R6 [P], [P2][P3], [P4]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत भारतीय दर्शन की विभिन्न पद्धतियों का उल्लेख है।

R61 Hindu Philosophy

R68 Draita Philosophy

R694 Buddhistic Philosophy

[P2] पक्ष

परिसूत्र में दिये गये निर्देश के अनुसार R61 to R64 तक की एकल संख्याओं के लिए [P2] पक्ष R Philosophy के परंपरागत वर्गों से प्राप्त किया जाना चाहिए।

उदाहरण :

Symbolic logic in Nyaya Philosophy R625, 14

यहाँ Symbolic logic की द्योतक एकल संख्या 14 परंपरागत वर्ग R1 Logic से प्राप्त की गई है।

R65 to R.893 तक की एकल संख्याओं के लिए [P] पक्ष को दो भागों में बाँट दिया गया है। मूल पाठ की द्योतक एकल संख्याएँ प्रथम अष्टम (First Octave) के रूप में [P2] पक्ष के अंतर्गत वर्णित है।

उदाहरण :

Dvaita Philosophy of Mahabharata R68, 8

उपर्युक्त उदाहरण में [P2] पक्ष की एकल संख्याएँ प्रथम अष्टक से संबंधित है जिन्हें केवल R65 to R6893 के लिए प्रयोग करने के निर्देश हैं।

यदि उपरोक्त के अलावा भारतीय दर्शन के अध्ययन में R68 to R6893 तक के वर्गों के लिए दूसरे पादों (Other texts) की एकल संख्याओं की आवश्यकता हो तो उसके लिए [P2] पक्ष से दूसरे अष्टक के अंक 9 का प्रयोग करेंगे तथा संबंधित विषय R Philosophy के परंपरागत वर्गों से प्राप्त कर अंक 9 के साथ सीधा जोड़ देगें।

उदाहरण :

Ambiguity in Hindu Vedanta Philosophy R65, 9195

यहाँ Other text के लिए [P2] पक्ष की एकल संख्या 9 का प्रयोग कर Ambiguity की प्रतीक एकल संख्या 195 को नियमानुसार परंपरागत वर्ग R1 Logic से प्राप्त किया गया है।

इसी प्रकार–

Truth and falsefood in Advaita Philosophy R66, 9492

R7 Favoured System

इसके अंतर्गत उस देश के दर्शन को वर्गीकृत किया जाना चाहिए जिस पर पुस्तकालय में विशिष्ट संग्रह है। वह पुस्तकालयों की नीति पर निर्भर करता है कि वे किस देश को दर्शन को उसके अंतर्गत रखते हैं।

R8 Other System

इसके अंतर्गत दर्शन की अन्य पद्धतियों को भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर वर्गीकृत करने का प्रावधान है। इसे भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त करने के निर्देश अनुसूची में दिये गये हैं

उदाहरण :

Chinese Philosophy	R841

यहाँ 41=China है। इसे नियमानुसार (GD) से प्राप्त कर सीधा R8 के साथ जोड़ दिया गया है।

इसी प्रकार–

अन्य देशों के दर्शन संबंधी वर्गांक भी बनाये जा सकते हैं। जैसे–

British Philosophy	R856
Western Philosophy	R85
French Philosophy	R853 इत्यादि

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Scientific methods in logic
2. Logic in nyaya philosophy
3. Social morality
4. Philosophy of free thought
5. Idealistics philosophy
6. Travelling etiquettes
7. Teleology of good and evil
8. Jain Philosophy
9. Vedanta in Bhagwat Gita
10. Sources of knowledge

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Psychological philosophy	R39(S)
2.	Ethics of marriage	R4217
3.	Ethics of librarianship	R42
4.	Brahmasutra in Vaishnava philosophy	R672,5
5.	Jainism family morals	R42,(Q3)

16.4 मुख्य वर्ग मनोविज्ञान (Main Class Psychology)–S

मनोविज्ञान में मानव की मनःस्थिति, मस्तिष्क की प्रतिक्रियाओं, मनोभावों इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र– S[P] : [E] [2P]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत वे सभी व्यक्ति व समुदाय शामिल हैं जिनका अध्ययन मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में आता है। जैसे–बालक, युवा वृद्ध, विभिन्न व्यवसायों के लोग, असामान्य व्यक्ति तत्था समाज के अन्य वर्ग।

उदाहरण :

Psychology of adolescent girls	S25
New born child – a psychological study	S11
Psychological study of old age people	S38

S4 Vocational Psychology

विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन S4 के अंतर्गत आता है। S4 को विषय विधि (SD) के द्वारा विभाजित करने का नियम है। इसके अनुसार विभिन्न व्यवसायों में रत व्यक्तियों के वर्गांक निर्मित किए जा सकते हैं।

उदाहरण :

Agriculturalists – a psychological study	S4(J)
Psychological study of libary personnels	S4(2)
Psychology for engineers	S4(D)

उपर्युक्त उदाहरणों में व्यवसायों से संबंधित वर्गांकों को विषय विधि से प्राप्त किया गया है।

S5 के अंतर्गत स्त्री व पुरुषों का मनोविज्ञान तथा S6 के अंतर्गत असामान्य व्यक्तियों के मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया है।

उदाहरण :

Psychology of the deaf	S67
Psychology of women	S55
Psychology of mad people	S63

S7 Psychology of Race

S7 को मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष एकल संख्या 7 Race as a social group की भांति विभाजित करने के निर्देश अनुसूची में तथा नियम भाग पृष्ठ 1.112 पर दिये गये हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रकार की जाति, प्रजाति से संबंधित व्यक्तियों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं।

उदाहरण :

Psychology of Gypsies	S738
Pcychology of stone age man	S714
Atlantic race – a psychological study	S71965

उपर्युक्त उदाहरण में S7 के उपविभाजन, मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष में वर्गांक, Y7 से लाकर जोड़े गये हैं।

Y7 के अंतर्गत अनेक जातियों व प्रजातियों के वर्गांक (SD) के द्वारा भी निर्मित किये गये हैं। इन्हें भी S7 के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

उदाहरण :

Psychology of the Jews	S73(Q5)
Psychology of the Bangalis	S73(P157)

Y7 के अंतर्गत अनेक वर्ग भौगोलिक विधि (GD) से भी निर्मित किये गये हैं। S7 को भी इसी प्रकार (GD) से विभाजित किया जा सकता है।

उदाहरण :

Indian race – a psychological study	S744
Psychology of the Australian social group	S78

यहाँ S7 को संबंधित भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या 1 से विभाजित किया गया है। दूसरे शब्दों में S7 के लिए भौगोलिक क्षेत्र (GD) से प्राप्त किये गये हैं।

S8 Social Psychology

यदि किसी प्रजाति का मनोवैज्ञानिक अध्ययन सामाजिक दृष्टिकोण से करना है तो उसे S8 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। S8 का मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष से विभाजित करने का नियम अनुसूची में दिया गया है।

उदाहरण :

Social psychology of working class people	S849
Social psychology of the Sikhs	S873(Q8441)
Social psychology of urban people	S833

उपर्युक्त उदाहरणों में S8 के साथ संलग्न एकल संख्याएँ निर्देशानुसार मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष से लाकर जोड़ी गई है।

इसी प्रकार–

Social psychology of Sudras	S85926
Social psychology of Christains	S873(Q6)

S9 Animal Psychology

S9 के अंतर्गत पशुओं के मनोविज्ञान का अध्ययन किया जा सकता है।

उदाहरण :

Psychological study of animals	S9

[E][2P] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्या 1 Nervous reaction है जिसे मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष की एकल संख्या 7 'Nervous System' से विभाजित करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Reaction of sympathetic nerves in old persons	S38:181

उपर्युक्त उदाहरण में S38 = Psychology of old age people तथा

S38:1 = Nervous reaction in old people हुआ

Sympathetic nerve के लिए L Medicine के [P] पक्ष के अंतर्गत एकल संख्या 781 दी गई है। अतः एकल संख्या 1 Nervous reaction को 781 के अंक 81 से विभाजित कर दिया गया है।

अन्य उदाहरण :

Sense of smell in animals	S9:24
Dreams in adolescent girls-a psychological study	S25:811
Character psychology of Aryans	S68:296

[2E][3P] पक्ष

[E] पक्ष की एकल संख्या 21 Static sense तथा इसके उपविभाजनों के लिए तथा 3 Characters of consciousness तथा इसके उपविभाजनों के लिए [2E][3P] पक्ष पृथक से दिया गया है।

उदाहरण :

Reflex function of hearing in criminals	S65:23:31
Anatomical psychology of sense of selection in toddlers	S12:315:2
Pathology of fatique in the sick people	S64:34:4
Psychometry of infants	S13:3:6

Systems (पद्धतियाँ)

मुख्य वर्ग के अंत में Psychology of systems का उल्लेख है। System पक्ष की एकल संख्याएँ कालक्रम विधि (CD) के द्वारा निर्मित की गई है।

उदाहरण :

Typological study of the temperament of primitives	SN2,72:75
Behaviouristic psychology of women	SN1,55

उपर्युक्त उदाहरणों में [SmF] को [P] पक्ष से पूर्व रखा गया है तथा संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया गया है।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Endurance in abnormals
2. Psychology of Christains-individualistic study
3. Social psychology of commercial class
4. Psychology of Muslims community
5. Psychology of doctors
6. A typological study of old age people
7. Location sense in animals-Behaviourisic study
8. Sense of direction in animals
9. Social psychology of workers
10. Psychology of university teachers-study of their behaviour

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Social psychology of muslims	S873(Q7)
2.	Psychology of Gujratis	S73(P157)
3.	A psycho study of Gypsies brain	S8738:12
4.	Experimental psychology of new born	SM,11
5.	Experimental psychology of brain of abnormal female	SM,55-6:12

16.5 मुख्य वर्ग शिक्षा शास्त्र (Main Class Education)–T

मुख्य वर्ग शिक्षा शास्त्र में शिक्षा प्राप्त करने वालों की विभिन्न श्रेणी, शिक्षा के स्तर एवं समुदायों का उल्लेख किया गया है। इनके अतिरिक्त छात्रों के कार्य, शिक्षा के आकलन, शिक्षण पद्धतियाँ तथा पाठ्यक्रम आदि का भी वर्णन किया गया है।

पक्ष परिसूत्र – T[P] : [E] [2P], [2P2]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत शैक्षिक स्तरों का वर्णन किया गया है जैसे प्राथमिक, माध्यमिक, प्रौढ़, उच्च तथा विश्वविद्यालयीन शिक्षा आदि। जिन्हें शिक्षा प्रदान की जाती है उन वर्गों एवं समुदायों का भी उल्लेख किया गया है।

उदाहरण :

Secondary education	T2

Adult education	T3
Education for pre-school child	T13
Education at university level	T4
Education for deaf and dumb	T67
Education of male	T51

इस [P] पक्ष की एकल संख्या 9 अन्य वर्ग के अंतर्गत समाज के विभिन्न श्रेणियों को रखा गया है। इन्हें विषय विधि से लाने का प्रावधान है।

उदाहरण :

Education for Harijans	T9(Y5927)
Rural community	T9(Y31)
Education for Indians	T9(Y73(P15))
Education for slum dwellers	T9(Y57)

[E][P4] पक्ष

[E] पक्ष की एकल संख्या 2 Curriculum, 3 Teaching technique, 4 Student's work तथा 5 Educational measurements के लिए [2P] पक्ष को विषय विधि (Subject Division) से लाने का प्रावधान है।

उदाहरण :

Syllabus for physics in post graduate college	T45:2(C)
Teaching of English at secondry school	T2:3(P111)
Educational measurements in classification at university level	T4:5(2:51)

[E][2P], [2P2] पक्ष

यदि [E] पक्ष के साथ [2P2] का प्रयोग होता है तो इसे बिना संयोजी चिन्ह के साथ जोड़ा जाएगा। लेकिन यदि [E][2P] के साथ [2P2] पक्ष को जोड़ना हो तो (,) के साथ आएगा।

उदाहरण :

Higher education through lecture method	T4:397
University examinations	T4:55
Teaching of library classification through discussion method at university level	T4:3(2:51),98
Marking of engineering answer sheet in post graduate examinations	T45:5(D),55
Adult education through audio-visual method	T3:31

8 Management

[EI पक्ष की एकल संख्या 8 Management मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र के ऊर्जा पक्ष के अंकन 8 की भांति ही है।

उदाहरण :

Time table of secondary education	T2:896
Top management of adult education	T3:81
Attendance at university level	T4:895

भाषा शिक्षण से संबंधित निर्देश (Instructions for Language Teaching)

जब [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष भाषा से संबंधित एकलों को प्राप्त करना हो तो अनुसूची के निर्देशानुसार भाषा एकल के साथ भाषा सोपान (Stage numbe) का प्रयोग नहीं करना है। भाषा एकल मात्र ही प्रयोग में लाना है परंतु तीन परिस्थितियों में भाषा एकल संख्या के स्थान पर अनुसूची में दिये गये विशेष संख्याओं का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

मातृ भाषा (Mother language) के लिए P1

विदेशी भाषा (Foreign language) के लिए P5

वरेण्य भाषा (Classical tongue) के लिए P8

उदाहरण :

Teaching of modern English	T:3(P111)
Teaching of English as mother tongue	T:3(P1)
Teaching of Hindi language in Intermediate School in India	T25:3(P1).44
Teaching of Hindi language in China	T:3(P5).41
Syllabus of modern English language in Indian universities	T4:2(P5).44

पद्धतियाँ (Systems)

ये एकल कालक्रम विधि (CD) से निर्मित किये गये हैं। इन्हें [P] पक्ष के पूर्व रखा जाता है तथा संयोजी चिन्ह विराम चिन्ह (,) को प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Montessori school education	TN1,13
Basic elementary school education	TN3,15
Nomenclature for herbort's school	TL7:1
Games of Wardha education	TN3:65
Physical education in elementary schools through a system of manual training	TM,15:6

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Hostel life in university education in India.
2. Manual training for blind.
3. Diploma in engineering.
4. Teaching of linguistics.
5. Education for Sudras.
6. Correspondence courses in homoeopathy.
7. Board of management of basic higher education.
8. Brain test of pre school child.
9. Attendance of post graduate level.
10. Teaching of classical \Sanskrit in Kant's school.

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Board of management of basic secondary schools	TN3,2:82
2.	Object teaching in science subjects at PG level	TJ,45:3(A)
3.	Honours education in India	T43.44
4.	Teaching of higher algebra through mother tongue in intermediate	T25:3(B25),31
5.	Adult education through audio-visual method	T3:31
6.	Education for the slaves	T9(Y492)
7.	Education for the muslims	T9(Y73)(Q7)
8.	University education	T4

16.6 मुख्य वर्ग भूगोल (Main Class Geography)–U

मुख्य वर्ग भूगोल के अंतर्गत पृथ्वी की गति, उसकी भौगोलिक स्थिति, मौसम, मौसम संबंधी भविष्यवाणियों, सामुद्रिक गतिविधियों, सामुद्रिक सम्पदा, व्यापारिक मार्गों, विभिन्न देशों की मानवीय राजनैतिक व आर्थिक भूगोल तथा यात्रा वर्णनों का उल्लेख है।

पक्ष परिसूत्र– U[P]. [S] '[T]

[P] पक्ष

अनुसूची में इस पक्ष की एकल संख्याओं का उल्लेख है। रंगनाथन ने इस मुख्य वर्ग में Bio-geography (जैविक भूगोल), Political (राजनीतिक), Economic (आर्थिक), तथा Human geography (मानव भूगोल), को भी शामिल किया है।

[S] पक्ष व [T] पक्ष

इस मुख्य वर्ग के परिसूत्र में [S] व [T] पक्षों का विशेष रूप में उल्लेख किया गया है। भूगोल विषय का अध्ययन किसी देश व काल के संदर्भ में ही अधिक सार्थक लगता है।

भूगोल के अधिकांश विषयों के अध्ययन के साथ देश व काल पक्षों का प्रायः प्रयोग होता है इसी कारण परिसूत्र में [S] व [T] पक्षों का उल्लेख किया गया है।

उदाहरण :

Indian law of passport for aliens	U8 : (Z44, 155)
Industrial Geography of Germany	U672.55
Human Geography of Japan	U47.42
Voyage to the Antartica in 1994	48.983 'N94
Biogeography	U32
Geomorphology	U21
Physical geography	U2
Political geography	U5

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Atmospheric pressure in West Bengal
2. Expendition to Arctic
3. Chemical properties of Indian Ocean
4. Rainfall in Bombay during 2016
5. Longitudes of African continent
6. Oceanic trade routes of Bangladesh
7. Travels to Rajasthan
8. Natural resources of South America
9. Conquest of Himalayas
10. Oceanic currents of the Atlantic

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	British oceanography	U25.56
2.	Spring in Jammu & Kashmir	U161.4447
3.	Rainfall in Indian brought upto 1990's	U2855.44 'N9
4.	Physical geography of China	U2.41
5.	Economic geography of Japan	U6.42

16.7 मुख्य वर्ग इतिहास (Main Class History)–V

इतिहास का तात्पर्य अतीत से होता है अर्थात यह विषय अतीत/भूतकाल की

घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता है। द्विबिंदु वर्गीकरण पद्धति में इस विषय के अंतर्गत सरकार के प्रमुख अंगों उनके क्रिया–कलापों, राज्य एवं विदेशी संबंधो तथा नागरिकों के अधिकारों से संबंधी पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

पक्ष परिसूत्र– V[P], [P2] : [E] [2P] '[T]

[P] पक्ष

इस पक्ष को समुदाय पक्ष कहा जाता है। इस पक्ष के द्वारा अलग–अलग देशों की एकल संख्याएँ प्राप्त की जाती हैं क्योंकि इतिहास में स्थान का विशेष महत्व है इसीलिए इस मुख्य वर्ग के [P] पक्ष को भौगोलिक विधि से लाकर स्थान को लाकर [P] पक्ष के रूप में उपयोग किया जाता है।

उदाहरण :

History of Asia	V4
History of Japan	V42
History of India	V44
History of Pakistan	V44Q7
History of America	V73

[P2] पक्ष

किसी भी देश के अंगों को [P2] पक्ष के अंतर्गत रखा गया है जैसे– Head, Executive, Legislature, Judiciary, Political parties, Local bodies and Civil services इत्यादि। उपर्युक्त अंगों के नाम देश व प्रदेश की सरकारी तथा स्थानीय संस्थानों के संदर्भ में अलग–अलग हो सकते हैं। जैसे–

(i) Head का प्रयोग President, King, Queen तथा Chairman के लिए किया जाता है।

(ii) Executive का प्रयोग Cabinet, Council of Minister के लिए किया जाता है।

(iii) First minister का प्रयोग Prime Minister तथा Chief Minister के लिए किया जाता है।

उदाहरण :

President of India	V44,1
Queen of Great Britain	V56,1
King of China	V41,1
Chief Minsiter of Rajasthan	V4437,21
Diet of Japan	V42,3
Lok Sabha of India	V44,31
House of representative in America	V73,31
Rajya Sabha in India	V44,32

राजनैतिक दल (Political Parties)

राजनैतिक दलों के वर्गांक निर्मित करने के लिए कालक्रमिक विधि (CD) का प्रावधान है। विशिष्ट राजनीतिक दल की स्थापना जिस वर्ष की गई है या जब उस दल का जन्म हुआ है उस वर्ष की प्रतीक एकल संख्या काल एकल सारणी से लेकर राजनीतिक दल की प्रतीक संख्या 4 के साथ बिना किसी चिन्ह् के साथ जोड़ा जाता है।

उदाहरण :

Political party of India	V44,4
Indian National Congress (1885)	V44,4M85
Bhartiya Janta Party (1980)	V44,4N80
Labour Party of England(1914)	V56,4N14

स्थानीय संस्थाएँ (Local Bodies)

इनके अंतर्गत कुछ ऐसी संस्थाएँ होती हैं जो कि सरकार के स्थानीय कार्यों को संचालित करती हैं। ये तीन प्रकार की होती हैं –

(i) शहरी स्थानीय निकाय (Urban local bodies), इसके लिए एकल संख्या 61 का प्रयोग किया जाता है।

(ii) ग्रामों की बड़ी संस्थाएँ (Larger rural bodies), इसके लिए एकल संख्या 63 का प्रयोग किया जाता है।

(iii) प्राथमिक ग्रामीण संस्थाएँ (Primary rural bodies), इसके लिए एकल संख्या 64 का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Panchayats in Rajasthan	V4437, 64
Municipal Board of U.P.	V4452, 61
District Boards of M.P.	V4455, 63

अस्थाई समिति द्वारा किसी विशेष कार्य को संपन्न किया जाता है। अस्थाई समिति के वर्गांक को विषय विधि के द्वारा बनाया जाता है।

उदाहरण :

Sanitation Committee for the city of Jaipur V448253, 68(D8)

उपर्युक्त शीर्षक में [P2] पक्ष की एकल संख्या 68 Adhoc body for special function है। जिसमें विषय विधि के द्वारा विभाजित कर D8 Sanitary engineering विषय प्राप्त किया गया है।

[E] [2P] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्या 1 Policy है। जिसमें अनेक उपविभाग हैं जो निम्न हैं–

Policy	1
Home policy	11

Federal policy	12
Colonial policy	17
Foreign policy	19

उदाहरण :

Home policy of Great Britain	V56:11
Federal policy of Pakistan	V44Q7:12
Foreign policy of India	V44:19

दो देशों के बीच संबंध (Relation between two Nations)

ऐसे दो देशों के संबंध जिसका कोई विषय न हो तो ऐसे देशों के विदेशी संबंध दर्शाने के लिए पहले जिस देश के विदेशी संबंध दर्शाने हों तो पहले उस देश की प्रतीक एकल संख्या को [P] पक्ष के रूप में (GD) से प्राप्त करके [E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 19 Foreign policy को लिखने के पश्चात उस देश की प्रतीक एकल संख्या लेंगे जिसके साथ विदेशी संबंध प्रदर्शित करने हैं उस देश की एकल संख्या भौगोलिक विभाजन से लेकर 19 के साथ बिना किसी चिन्ह के सीधे जोड़ने का प्रावधान है।

उदाहरण :

India's foreign relation with China	V44:12941
Shri Lanka's foreign relation with Japan	V4498:1942

विशेष प्रकार की विदेशी नीति के लिए परिशिष्ट में प्रावधान

जब नीति किसी एक देश के संदर्भ में जिसका कोई विषय हो तो इस नीति के लिए परिशिष्ट (Annexure) में अलग से एकलों का प्रावधान है। जिन्हें विषय विधि (SD) के रूप में लेना होता है।

उदाहरण :

Bangladesh war policy	V44Q11:19 (xM)
Pakistan's peace policy	V44Q7:19 (zQ)

विदेश नीति (Foreign Policy)

ऐसे दो देश जिनका कोई विषय हो तो संबंधित विषय के लिए [P2] पक्ष के रूप में विषय विधि द्वारा प्राप्त करने का प्रावधान है। इसको जोड़ने के लिए अर्द्धविराम (,) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

History of cold war between India and Pakistan	V44:1944Q7,(zE)
India's economic relation with Great Britain	V44:1956,(X)
India-China peace policy	V44:1941,(zQ)

संविधान (Constitution)

संविधान से संबंधित विषय को (W) राजनीति विज्ञान मुख्य वर्ग के अंतर्गत वर्गीकृत न करके इसे मुख्य वर्ग इतिहास के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा।

उदाहरण :

Constitution of India	V44:2
Constitution of China	V41:2

इतिहास के स्रोत (Sources of history)

सिक्के, शिलालेख, मुहरे, पुरालेख, वंशावली, वंशचिन्ह तथा कालक्रम आदि किसी देश के इतिहास को जानने व समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं।

उदाहरण :

Study of Indian Coins	V44:73
European archaeology of 500 BC	V51:71'C499

उदाहरण :

Nomination of members of diet in Japan 1988	V42, 3:911'N88
Polling for President in Pakistan 1985	V44Q7, 1:912'N85

काल पक्ष (Time Facet)

द्विबिन्दु वर्गीकरण में V History के परिसूत्र में काल पक्ष को विशेष रूप से दिया गया है। जबकि काल पक्ष एक सामान्य पक्ष है जिसका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग में नियमानुसार प्रयोग किया जा सकता है। इतिहास में काल का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जब हम किसी देश के इतिहास का अध्ययन करते हैं तो काल पक्ष उसमें स्वतः ही जुड़ जाता है।

काल पक्ष के अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर इसे तीनों भागों में बाँटा गया है।

निश्चित कालावधि : जब समय अवधि निश्चित दी गई हो तो काल सारणी पाठ 3 से समय की प्रतीक एकल संख्या को लेकर संयोजक चिन्ह उल्टे उद्धरण चिन्ह (single inverted comma) से जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण :

History of Japan during 1970	V42 'N70

यहाँ 1970 निश्चित समय का प्रतीक है। अतः इसे काल पक्ष के रूप में प्रयोग किया गया है।

जब समयावधि एक समय से लेकर दूसरे समय तक को दर्शा रही हो तो उसे उल्टे तीर के निशान से दर्शाते हैं।

उदाहरण :

Indian history during 1857-1947	V44'N47¬ M57

उपर्युक्त शीर्षक में बाद वाला समय पहले और पहले वाला समय बाद में रखा गया इसके लिए संयोजक चिन्ह पश्चमुखी तीर का प्रयोग किया गया है जो M57 से N47 की ओर लगाया गया है। यह इंगित करता है कि इतिहास 1857 से 1947 के समय का है।

सरकार के विभिन्न अंगों के कार्य व शक्तियाँ

विभिन्न प्रकार के कार्यों को विषय विधि से लेने का नियम अनुसूची में दिया गया है। अनुसूची में [E] पक्ष की एकल संख्या 3 Function है।

उदाहरण :

State control of education in Canada	V72:3(T)
Government of Bihar and state roadways	V4473:3(X411)

सरकार का विशिष्ट वर्गों के साथ संबंध

विशिष्ट वर्गों में विस्थापित, विदेशी, पिछड़ी जाति के लोग व अल्पसंख्यक इत्यादि को लिया गया है।

उदाहरण :

Refugees and Fiji Government	V9368:44

सरकार के नागरिकों के साथ संबंध अधिकार एवं कर्तव्य

इसमें नागरिकों के अधिकार व कर्तव्यों, व्यक्ति व परिवार की स्वतंत्रता एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्ष आदि का उल्लेख किया गया है।

उदाहरण :

Liberty of divorce in India	V44:51227

उपर्युक्त शीर्षक में [E] पक्ष से प्राप्त निर्देशानुसार मुख्य वर्ग Z Law के [P2] पक्ष की एकल संख्या 12 Fiduciary relation न्यासीय संबंधों से विभाजित किया गया है। अतः एकल संख्या 12 के उपविभाजन 27 Divorce को लाकर 512 Liberty of family के साथ सीधा जोड़ा गया है।

इसी प्रकार अन्य प्रकार के अधिकारों को 58 Other rights के अंतर्गत विषय विधि से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Right to education in Germany	V55:58(T)
Right to work in Greece	V51:58(Y5)

जीवनी (Biography)

ऐसे पुरुष जिन्होंने राष्ट्र, राज्य, समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है उनकी जीवनी मुख्य वर्ग इतिहास के अंतर्गत सामान्य एकल के अंकन y7 का उपयोग करके वर्गीकृत की जाएगी तथा जन्म वर्ष को लिखे जाने का प्रावधान है। जैसे–

Biography of J.L.Nehru V44y7M89
(An Indian Prime Minister, born in 1889)

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Life of Kennedy (An American President, born in 1917)
2. History of India before 1947
3. Future history of India
4. Declaration of Lok Sabha result, 2014
5. French diplomatic policy
6. Cultural policy of USSR
7. Right to role in Nepal
8. Studies in world constitutions
9. Life of Dr.Shankar Dayal Sharma
10. India's foreign policy with Switzerland

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Indo-Bangladesh relations regarding refugees (Yz94)	
2.	History of Canada	V72
3.	History of India before 1947	V44'N47¬
4.	History of Japan after 1980	V42'N80®
5.	India's relation with America	V44:1973
6.	Parliament of India	V44,3
7.	Power and functions of President of Pak.	V44Q7,1:3
8.	Right to property in India	V44:52
9.	History of Germany between 1950-2010	V55'P10¬ N50
10.	Rajya Sabha	V44,32

16.8 मुख्य वर्ग राजनीति शास्त्र (Main Class Political Science)–W

राजनीति शास्त्र समाज शास्त्र की एक महत्वपूर्ण शाखा है। इसमें विभिन्न प्रकार के राज्यों, उनके कार्यकारी अंगों तथा उनके कार्यकलापों व समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। अनेक बार मुख्य वर्ग इतिहास तथा मुख्य वर्ग राजनीति शास्त्र के अंतर्गत आने वाले अनेक विषयों में अंतर करना कठिन होता है। ऐसी स्थिति में यह ध्यान रखना चाहिए कि सिद्धांतों के अध्ययन संबंधी विषयों को मुख्य वर्ग राजनीति शास्त्र के अंतर्गत ही वर्गीकृत करना चाहिए न कि मुख्य वर्ग इतिहास के अंतर्गत।

पक्ष परिसूत्र– W[P], [P2] : [E] [2P]

[P] पक्ष

अनुसूची में केवल [P] पक्ष की एकल संख्याओं का उल्लेख है। [P] पक्ष में राज्य की विभिन्न अवस्थाओं का उल्लेख है। इनका व्यवस्थापन परवर्ती विकास के सिद्धांत (Principle of later in evolution) के आधार पर किया गया है। जैसे–राज्य की सर्वप्रथम अवस्था अराजकतावाद (Ararchy) थी, अतः इसे अनुसूची में प्रथम स्थान दिया गया है। जैसे–जैसे राज्य का विकास होता गया उसी के अनुरूप उसकी अन्य अवस्थाओं को व्यवस्थित किया गया है। जैसे अराजकता के बाद प्रजातंत्र (Democracy) तथा इसके बाद साम्यवाद (Communism) और अन्त में राज्य की सबसे विकसित व आधुनिकतम अवस्था विश्व राज्य (World state) को रखा गया है।

[P2] पक्ष तथा [E][2P] पक्ष

अनुसूची में दिए गए निर्देशों के अनुसार [P2] तथा [E][2P] पक्ष मुख्य वर्ग V History के समान ही है। दूसरे शब्दों में [P2][व [E][2P] पक्षों की एकल संख्यायें मुख्य वर्ग V History से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

[P2] पक्ष को Part facet कहा गया है। इस पक्ष के अंतर्गत राज्य के विभिन्न अंगों का उल्लेख है।

उदाहरण :

Judiciary in Oligarchy	W5, 7
King in Monarchy	W4, 1
Political parties in Representative democracy	W61, 4
Prime Minister in Democracy	W6, 21

उपर्युक्त उदाहरणों में [P2] पक्ष की एकल संख्याओं को V History से प्राप्त किया गया है। [E][2P] पक्ष की एकल संख्यायें भी V History के समान है।

उदाहरण :

Election methods	W:91
Principles of foreign policy	W:19
Role of President in a communist state	W691, 1:3
Eleetions of lower house in a democratic country	W61, 31:91

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Power and functions of kings in limited monarchy
2. Civil rights and duties in dictatorship
3. Framework of a world government
4. Right to vote in representative democracy
5. Fundamental rights of individuals in democracy
6. Structure of village panchayat in a democratic set up
7. Primary local bodies in a primitive state
8. Ministry class people in dictatorship
9. Feudals of Rajasthan
10. State and education in a communist state

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Principles of home policy	W.11
2.	Constitution of democracy	W6:2
3.	Election of upper house in a world state	W95, 32:91
4.	King of kingship	W4,1
5.	Judiciary in oligarchy	W5,7

16.9 मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र (Main Class Economics)–X

अर्थशास्त्र विषय के अंतर्गत आर्थिक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। यह सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है। इस मुख्य वर्ग के अंतर्गत प्रबंध एवं व्यवसाय के विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन किया जाता है। जैसे–उत्पादन, उपभोग, वितरण, मुद्रा आदि।

पक्ष परिसूत्र– X[P] : [E] [2P]

[P] पक्ष

यह व्यापार (Business) पक्ष है। उसके अंतर्गत संचार व यातायात के साधनों, व्यापार के तरीकों, मुद्रा, बैंकिंग, सामाजिक वित्त, बजट, बीमा, औद्योगिक कारखानों इत्यादि का उल्लेख है।

'54 Commerce by transport को व्यापार पक्ष अर्थात [P] पक्ष की एकल संख्या 4

Transport से विभाजित करने के निर्देश हैं। 4 Transport के उपविभाग, यातायात के अनेक प्रकार के साधन हैं। जैसे '41 Land Transport' 415 Railway Transport, 42 Water Transport इत्यादि। अतः Railway Transport Business का वर्गांक X5414 बना।

यहाँ X54 Transport Business के साथ [P] पक्ष की एकल संख्या 4 Economics of Transport के उपविभाग से एकल संख्या '45 Railway Transport' लेकर जोड़ दी गई है।

इसी प्रकार–

Water transport	X42
Railway transport	X415
Roadways transport business	X5411

61 Money के लिए [M] पक्ष

61 Money के लिए अनुसूची पृष्ठ 2.112 पर पृथक से [M] पक्ष दिया गया है।

उदाहरण :

Silver money	X61; 2
Paper currency	X61; 4

7243 Business tax को [P] पक्ष के व्यापार संबंधी एकलों से विभाजित करने के निर्देश दिए गए हैं।

उदाहरण :

Tax on wholesale business	X7243518
Tax on retail business	X7243512

8(A) Industry (औद्योगिक प्रतिष्ठान)

अनेक प्रकार के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के वर्गांक विषय विधि (SD) के प्रयोग द्वारा निर्मित किये जा सकते हैं।

उदाहरण :

Coal industry	X8(F551)
Agricultural economics	X8 (J)
Paint industry	X8(F5895)
Industrial economics	X8(A)
Television industry	X8(D65, 45)

[E] [2P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत उपयोग उत्पादन, वितरण, विदेशी व्यापार प्रबंध कौशल श्रमिक समस्याओं, औद्योगिक संबंध इत्यादि विषय रखे गये हैं।

उदाहरण :

Balance of payment	X : 576
Foreign trade	X : 54

Export of televisioin sets	X8(D65,45) : 545
Value of gold currency	X61; 1:7
Foreign aid to Pakistan	X755.44Q7

[P] पक्ष की एकल संख्या 62 Bank तथा 72 Tax के लिए [E] [2P] पक्ष की अतिरिक्त एकल संख्यायें दी गयी हैं।

62 Bank के लिए पृष्ठ 2.114 पर अलग से [E] [2P] पक्ष का उल्लेख है। इन एकल संख्याओं का प्रयोग X62 Bank के लिए आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।
उदाहरण :

Cheque of commerical bank	X625 : 5
Discount in commercial banks	X625 : 3
Rate of interest in foreign banks	X6295 : 11

इसी प्रकार [P] पक्ष की एकल संख्या 72 Taxation के लिए भी [E] [2P] पक्ष में कतिपय अतिरिक्त एकल संख्याओं का अलग से प्रावधान है।
उदाहरण :

Exemption from custom duty	X7295 : 2

9 Labour problems (श्रमिक समस्याएँ) का तीन सेक्टरों में विभाजन

[E] [2P] पक्ष में एकल संख्या 9 Labour Problems (श्रमिक समस्याओं) हैं गहन वर्गीकरण की दृष्टि से इसे तीनों सेक्टरों में बाँटा गया है। आवश्यकता पड़ने पर एक ही पक्ष के इन तीनों सेक्टरों से उपयुक्त एकल संख्याओं को एक साथ प्रयोग में लाया जा सकता है। इन्हें [E] पक्ष में [2P] पक्ष के स्तरों के रूप में प्रयोग में लाया जाना चाहिए तथा संयोजक चिन्ह कोमा से जोड़ा जाना चाहिए।

किस सेक्टर की एकल संख्या को पहले रखा जाये तथा किस सेक्टर की एकल संख्या को बाद में, इसके लिए निम्नलिखित क्रम निश्चित किया गया है–

(i) सबसे पहले Still more concrete sector की एकल संख्याएँ;
(ii) उसके बाद More concrete sector की एकल संख्याएँ; तथा
(iii) सबसे बाद में Least concrete sector की संख्याएँ रखी जानी चाहिए।

उदाहरण :

Problems of labour wages	X:93(केवल एक सेक्टर का प्रयोग)
Wages of fremale labour	X:9F,3(दो सेक्टरों का प्रयोग)
Wages of unskilled female labour	X:9F,9C,3(तीनों सेक्टरों का प्रयोग)

उपरोक्त उदाहरण में–

Wages	=	93 (Least concrete sector की एकल संख्या है);
Unskilled	=	99C (More concrete sector के अंतर्गत आती है); तथा
Female	=	9F (Still more concrete sector से ली गई है)

अर्थात् तीनों एकल संख्यायें अलग–अलग सेक्टरों से ली गयी हैं किंतु वर्गांक में इन्हें ऊपर बताए गए क्रम के अनुसार ही व्यवस्थित किया गया है, जो निम्न प्रकार है –

Female labour	Unskilled	Wages
9F	99C	93

किंतु नियमानुसार प्रथम बार प्रयुक्त सेक्टर की एकल संख्या के अलावा अन्य सेक्टरों से ली गयी एकल संख्याओं के सामान्य अंक (Common digit) 9 को छोड़ देने पर सही वर्गांक निम्न प्रकार बनेगा–

X : 9F, 9C, 3 = Wages of unskilled female labour

अन्य उदाहरण :

Medical benefit to alien technical labour X : 9K5, 9T, 5854

यहाँ

9K5	=	Alien (still more concrete sector)
99T	=	Technical labour (more concrete sector)
95854	=	Medical benefit (least concete sector)

वर्गांक निर्मित करते समय, बाद वाले सेक्टरों में प्रयुक्त सामान्य अंक 9 को छोड़ दिया गया है।

प्रथम बार जिस किसी भी सेक्टर की एकल संख्या का प्रयोग हो उसे ज्यों का त्यों रखा जाता है। सामान्य अंक 9 बाद वाले सेक्टरों से ही हटाया जाता है।

97 Industrial Relation (औद्योगिक संबंध) का भी तीन सेक्टरों में विभाजन

एकल संख्या 9 की भांति ही 97 को भी तीन सेक्टरों में विभक्त किया गया है। 9 Labour problems के साथ प्रयोग करने पर 97 में से 9 का अंक छोड़ दिया जाता है।

किंतु यदि 97 के ही दो सेक्टरों का एक साथ प्रयोग होता है तो दूसरे सेक्टरों से अंक 97 हटा लिये जाते हैं।

Negotiation in strikes of city clerical staff का वर्गांक बिना कोई अंक हटाने पर X : 9H5, 99P, 979D,973 बनेगा। किंतु नियमानुसार सामान्य अंक 9 हटाने पर सही वर्गांक निम्न प्रकार बनेगा –

X : 9H5, 9P, 79D, 3

यहाँ

9H5	=	City labour (still more concrete sector of 9)
99P	=	Clerical labur (more concrete sector of 9)
979D	=	Strike (more concrete sector of 97)
973	=	Negotiation (least concrete sector of 97)

उपरोक्त उदाहरण से पता चलता है कि 9 के सेक्टरों के साथ यदि 97 के सेक्टर से कोई एकल संख्या ली जाती है तो 97 में से 9 का अंक छोड़ दिया जाता है किंतु 97 के ही दो सेक्टरों की एकल संख्याएँ एक साथ आने पर, बाद में प्रयोग होने वाले सेक्टर से 97 अंक छोड़ दिये गये हैं और केवल अंक 3 का ही प्रयोग किया गया है।
यदि 97 के ही दो सेक्टरों का एक साथ प्रयोग होता है तो प्रथम सेक्टर की एक संख्या ज्यों की त्यों लिखी जायेगी तथा दूसरे सेक्टर से अंक 97 हटा लिये जायेगें।

पद्धतियाँ एवं विशिष्ट वर्ग (System and Specials)

इस वर्ग में System and specials दोनों का प्रावधान है। इनके प्रयोग के नियम वे ही हैं जो मुख्य वर्ग L Medicine में बताये जा चुके हैं। संक्षेप में सर्वप्रथम System facet, उसके बाद Special facet तथा सबसे बाद में [P] पक्ष को रखा जाता है तथा इनके लिए संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया जाता है।
उदाहरण :

		[SmF]	[P]	
Co-operative banks		XM ,	62	
		[SpF]	[P]	
Small scale industries		X9B ,	8(A)	
		[SmF]	[SPF]	[P]
Large scale co-operative textile industry	XM ,	9D	8(M7)	
		[SPF]	[P]	[E]
Wages of female workers in a public sector coal industry		X9W ,	8(F551): 9F,3	

ऊपर दिये गये उदाहरणों में से अंतिम उदाहरण में [SPF] तथा [P] पक्ष का एक साथ प्रयोग होने पर सबसे पहले [SPF] पक्ष और फिर [P] पक्ष की एकल संख्याओं का प्रयोग हुआ है। यहाँ [E] पक्ष से दो एकल संख्या क्रमशः 9F=Female labour व 93=Wages का एक साथ प्रयोग किया है। दोनों अलग–अलग सेक्टर की एकल संख्यायें हैं अतः सबसे पहले Still more concrete sector से 9F को लिया गया है, फिर Least concrete sector से 93 को लिया गया है। यहाँ सामान्य अंक 9 को छोड़ दिया गया है।
इसी प्रकार–
Medical benefit to part time technical labour of a small scale co-operative textile industry का वर्गांक निम्नलिखित होगा–

XM, 9B, 8(M7) : 9G4, 9T, 5854

यहाँ

XM	=	Co-operative [SmF]
9B	=	Small scale [SpF]
8(M7)	=	Textile industry [P] पक्ष
9G4	=	Part time labour (still more concrete sector of 9)
99T	=	Technical labour (more concrete sector of 9)
95854	=	Medical benefit (least concrete sector of 9)

उदाहरण :

Foreign trade between India and UK X:54.44 oj56

ऐसी पुस्तक को जो तोल व माप (Weight and Measures) से संबंधित हो उसे वर्गांक X:5e प्रदान किया जाना चाहिए।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Fire accident insurance
2. Indian agricultural economy
3. Industrial development in Germany
4. Production of cosmetic goods
5. British trade unions in 19th century
6. Export of tea to European countries
7. Settlement of labour disputes in coal mines
8. Russian economic plan
9. Maternity benefit to pregnant female labour
10. Transport business co-operatives

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Standard of living	X:16
2.	Tea industry	X8(J451)
3.	Distribution of govt. bond	X7242:3
4.	Problem of labour profit sharing	X:936
5.	Dictionary of economics in English	X:(P111:4)k
6.	Small scale industry	X9B,8(A)
7.	Large scale co-operative textile industry	XM,9D,8(M7)
8.	Foreign trade between India and China	X:54.44 oj 41

9. Journal of Economics (India, 1974) Xm44,N74
10. Economics abstract Xam

16.10 मुख्य वर्ग सामाजिक विज्ञान (Main Class Sociology)–Y

सामाजिक विज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। इसके अंतर्गत समाज के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है जैसे–उम्र के आधार पर, निवास के आधार पर, व्यवसाय के आधार पर, सामाजिक क्रिया–कलापों, विकृतियों तथा आपराधिक प्रवृत्ति तथा अन्य सामाजिक वर्गों एवं सामाजिक समस्याओं का वर्णन मिलता है।

पक्ष परिसूत्र– Y[P] : [E] [2P] : [2E] [2P]

[P] पक्ष

इस पक्ष के अंतर्गत समाज के विभिन्न वर्गों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। समाज में रहने वाले विभिन्न वर्गों व समुदायों को विशेषताओं के आधार पर प्रस्तुत कर, उन्हें उनके उपवर्गों में विभाजित किया गया है जैसे–

1.	By age and sex	आयु व लिंग के अनुसार (जैसे–बच्चा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष)
2.	By Family	परिवार के अनुसार (जैसे–पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री इत्यादि)
3.	By Residence	निवास के अनुसार (जैसे–ग्रामीण, शहरी, शरणार्थी इत्यादि)
4.	By Occupation	व्यवसाय के अनुसार (जैसे–व्यापारी, श्रमिक, दास इत्यादि)
5.	By Birth or Status	जन्म, पदवी अथवा प्रतिष्ठा के अनुसार (जैसे–मध्यमवर्गीय, विदेशी, गंदी बस्ती में रहने वाले, अल्पसंख्यक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, हरिजन आदि)
6.	Abnormal and defective	असामान्य एवं दोषपूर्ण (जैसे–विकलांग, प्रतिभाशाली, मंदबुद्धि, बीमार, गूंगे बहरे, अंधे व अपराधी इत्यादि)
7.	Race as a social group	प्रागऐतिहासिक मानव वर्ग (जैसे–पाषाण युग, लौह युग का मानव, आदिकालीन मानव वर्ग, मानव, प्रजातिगत वर्ग जैसे–आर्य, भारतीय, हिंन्दू, बंगाली, विशिष्ट, भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले वर्ग जैसे–ऑस्ट्रेलियायी, चाइनीज इत्यादि)
8.	By Association	संघ के रूप में (जैसे–मैत्री समाज, गुप्त समाज)

अतः Y Sociology के 11 Child को S Psychology की भांति विभाजित करने पर निम्न वर्गांक बनेंगे–

New born child as a social gruop	Y111
Infact child as a social group	Y113

2 Family के अंतर्गत दिये गये निर्देश के अनुसार एकल संख्या 2 को R4 Ethics की भांति विभाजित करने के प्रावधान हैं।

Sociological study of step mother	Y2218
Family status of sons	Y2251

6 Abnormal and defective को भी मुख्य वर्ग S Psychology की भांति उपविभाजित करने के निर्देश हैं।

Sociological study of deaf and dumb	Y67
Blinds as a social group	Y68

73 Ethnological divisions विषय विधि (SD) के द्वारा बनाये गये हैं। इस विधि से अन्य वर्गों से संबंधित वर्गांक भी निर्मित किये जा सकते हैं।

उदाहरण :

Muslim community Y73(Q7)

यहाँ मुस्लिम धर्म की प्रतीक संख्या Q7 को विषय विधि से प्राप्त किया गया है।

Mongolin community Y73(P41)

यहाँ भाषा की प्रतीक संख्या को, भाषा सारणी अध्याय 5 से प्राप्त कर विषय विधि के रूप में प्रयोग किया गया है।

74 to 79 Territorial divisions

इन एकल संख्याओं के अंतर्गत किसी भौगोलिक क्षेत्र में रहे वाले सामाजिक वर्ग से संबंधित वर्गांक बाए जा सकते हैं। भौगोलिक सारणी 4–9 तक की एकल संख्याओं को लाकर [P] पक्ष की एकल संख्या 7 के साथ जोड़ा जाता है।

उदाहरण :

Indian social group	Y744
African sociala group	Y76

9 Others के अंतर्गत अन्य समुदायों के वर्गांक विषय विधि (SD) के द्वारा बनाने के निर्देश हैं, जैसे–

Social life of librarian Y9(2)

[E] [2P] पक्ष

यह पक्ष समाज के कार्य–कलापों, गतिविधियों तथा विभिन्न समस्याओं से संबंधित है। इसमें सभ्यता व संस्कृति, समाज के लोगों की असमान्यता, उनके कार्य–कलापों व उनकी गतिविधियों (आचरण, शिष्टाचार, समारोह, रीति–रिवाज, अंधविश्वास, त्योहार इत्यादि) तथा समाज की विपदाओं तथा विकृतियों, जैसे– नशाखोरी, धूमपान, चरित्रहीन, बेकारी, गरीबी, अपराधवृत्ति, जनसंख्या आदि से संबंधित समस्याओं का मुख्य रूप से उल्लेख है।

इस पक्ष की एकल संख्याओं के विभाजन के लिए स्थान–स्थान पर आवश्यक निर्देश दिये गये हैं, जैसे–

3 Activity के अंतर्गत दिये निर्देश के अनुसार एकल संख्या 3 को R4 Ethics के [P] पक्ष से विभाजित करना है।

उदाहरण :

Anniversary as a social activity	Y:46

उपर्युक्त उदाहरण में 3 Activity को निर्देशानुसार प्रमाणिक वर्ग R4 Ethics के [P] पक्ष से विभाजित किया गया है। R4 के [P] पक्ष की एकल संख्या 217 marriage है। इसे Y Sociology के [E] पक्ष की एकल संख्या 3 Activity के साथ जोड़ने के वर्गांक Y:3217 बना।

इसी प्रकार–

Break up of marriage in Muslim	Y73(Q7) : 32178
Inauguration of river dam	Y:348(D26,8)
Coronation of the queen of Great Britain	Y:348(V56,1)
Superstitions about devils in Muslims	Y73(Q7):35412

उपरोक्त उदाहरण में [E] पक्ष की एकल संख्या 354 को मुख्य वर्ग D के [P2] पक्ष से विभाजित किया गया है।

4 Social Pathology

[E] [2P] पक्ष में एकल 4 Social pathology है। इसके अंतर्गत समाज में व्याप्त बुराइयों, आपदाओं, विपदाओं तथा अपराध वृत्तियों से संबंधित विषयों को दिया गया है। जैसे–शराब, तम्बाकू, अफीम, जैसे नशीले पदार्थों के सेवन की आदत हानिकारक दवाओं के प्रयोग से उत्पन्न बुराइयाँ, समाज के लोगों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक व चारित्रिक पतन, गरीबी, बेकारी, अकाल, बाढ़, भूकम्प, आगजनी, दुर्घटनाओं तथा युद्ध से उत्पन्न यातनायें व पीड़ायें तथा समाज में व्याप्त अनेक उपराध वृत्तियाँ जैसे–आत्महत्या, चोरी, डकैती, बलात्कार इत्यादि।

उदाहरण :

Moral of degeneration in rural	Y31:425
Drug habits in urban people	Y33:414
Disaster caused by people in mountain dwellers	Y396:435

45 Crime

इसे मुख्य वर्ग के [P2] पक्ष से विभाजित करने का नियम है। Z Law में 5 एकल संख्या के उपविभाजन दिये हैं जिसका प्रयोग करके वर्गांक निर्मित किये जाते हैं।

उदाहरण :

Sociology of robbery	Y:45222
A social study of rape in India	Y15:45151.44
Sociology of Murders	Y:45112
Crime against property in society	Y:452
Crime against woman in society	Y:4515
Sociology of cheating	Y:45231

4 Pathology के दूसरे विभाजन हैं, 46 Short life, 48 Disunion, 49 Other ills and 495 Refugee इत्यादि।

उदाहरण :

Social pathology of refugees	Y394:4
Disuion of husband & wife	Y221:48

5 Demography

[E] [2P] पक्ष में ही एकल संख्या 5 Demography (Population study) जन सांख्यिकी है।

उदाहरण :

Over population in India	Y:52.44
Under population in USA	Y:51.73

7 Personality (व्यक्तित्व)

[E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 7 Personality को मुख्य वर्ग S Psychology के [E] पक्ष की एकल संख्या 7 Personality की भांति विभाजित करने के निर्देश हैं। अर्थात् मुख्य वर्ग Y Sociology की एकल संख्या 7 Personality के साथ S Psychology की एकल संख्या 7 Personality से उपविभाजन लेकर जोड़ दिये जाने चाहिए। दोनों ही [E] [2P] पक्ष की एकल संख्यायें हैं।

उदाहरण :

Personality of military class man	Y16-54:7
Drug habit in Youth	Y12:796
Social character of a leader	Y48:74
Social temperament of Punjabis	Y73(P153):75
Rural housing	Y31:81
Agricultural implements of Hindu community	Y73(Q2):83(J)

84 Transport-track को मुख्य वर्ग D Engineering के [P] पक्ष की एकल संख्या 4 transport-track से विभाजित करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Social study of rail roads in urban areas	Y33:8415
Stone paved roads in villages-a sociology study	Y31:84114

उपर्युक्त उदाहरणों में [E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 84 transport-track के साथ जोड़ी गयी एकल संख्यायें मुख्य वर्ग D Engineering के [P] पक्ष की एकल संख्या 4 Transport-track के उपविभाजन है।

85-Transport vehicles को भी मुख्य वर्ग D Engineering के [P] पक्ष की एकल संख्या 5 Transport vehicles से विभाजित करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Social implications of the use of motor cycles in cities	Y35:85135
Sociological study of bullock-carts in in rural areas	Y31:85121

86 ornaments को मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष की एकल संख्या 1 Basic and regional organs of human body से विभाजित करने के निर्देश हैं।

Fingering of a lady	Y15:8668
Head ornaments of tribal man	Y72:8684

उपुर्यक्त उदाहरण में 86 ornaments के साथ संलग्न एकल संख्या 68 finger की प्रतीक है। इसे निर्देशानुसार मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष से प्राप्त किया गया है। वहाँ एकल संख्या 68 Finger है। अतः निर्देशानुसार एकल 168 का प्रथम अंक 1 छोड़कर उसके उपविभाजन 68 का ही प्रयोग किया गया है।

Customs of Gujratis	Y73(P156):356
Dresses of Mongols	Y73(P41):88

[2E] [3P] पक्ष

[E] पक्ष की द्वितीय आवर्तन (Second Round Energy), [2E][3P] पक्ष कहलाता है। इसे Secondary problem facet कहा है। यह पक्ष [E] पक्ष की एकल संख्या 1 Civilisation, 3 Artivity, 7 Prosanality तथा 8 Equipment के लिये प्रथक से दिया है। इसी प्रकार 4 Social Pathology तथा 5 Demography के लिए भी [2E] [3P] पक्ष पृथक से दिया गया है।

[E] पक्ष की एकल संख्या 1, 3, 7 व 8 के लिए [2E][3P] पक्ष

उदाहरण :

Rural community development	Y31 :7 : 7
Nomenclature of agricultural Implements of dravideans	Y73(P3):83J1:1

इस पक्ष के अंतर्गत दी गई एकल संख्या 1 Nomenclature etc. को मुख्य वर्ग "G Biology" के [E] पक्ष की एकल संख्या 1 की भांति विभाजित करने के निर्देश हैं।

उदाहरण :

Popular discription of equipment of metal age people	Y718:8:13
Asylum to flood-ridden rural people	Y31:4355:65
Relief work for earthquack victims	Y :436:67
Hindu community	Y73(Q2):44:2

4 Social Pathology के लिए [2E] [3P] पक्ष की एकल संख्यायें पृथक से दी गयी है। उपरोक्त उदाहरणों में इन्हीं का प्रयोग किया गया है।

[2E] [3P] पक्ष की एकल संख्या 5 Prevention है। इसे विषय विधि (SD) से विभाजित कर रोकथाम के कुछ उपायों को उदाहरण के तौर पर अनुसूची में दिया गया है।

उदाहरण :

Prohibition by legislatives methods	Y:411:5(Z)
Prevention of rural unemployment by occupational methods	Y31:433:5(X)

उपर्युक्त उदाहरणों में [2E] [3P] पक्ष की एकल संख्या 5 Prevention को विषय विधि (SD) में विभाजित किया गया है।

[E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 5 Demography है इसके लिए भी [2E] [3P] पक्ष, [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Pathology के लिए दिये गये [2E] [3P] पक्ष के समान ही है केवल आवश्यकतानुसार शब्दावली में परिवर्तन किया जा सकता है। इस प्रकार के निर्देश अनुसूची में दिये गये हैं।

उदाहरण :

How to solve under population problem	Y:51:6
Control measure for over population problem	Y:52:5

अध्यारोपण (SID) विधि का प्रयोग

एक ही पक्ष की दो एकल संख्याओं द्वारा प्रदर्शित विशेषताओं के योग से किसी वस्तु या सत्ता को व्यक्त करने के लिए अध्यारोपण विधि का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

A study of rural youth	Y12-31
Tribal woman	Y15-72
Punjabi youth	Y12-73(P153)

Hindu youth	Y12-73(Q2)

उपर्युक्त उदाहरणों में [P] पक्ष की दो एकल संख्याओं को एक साथ लाने के लिए अध्यारोपण विधि (SID) का प्रयोग किया गया है। इसका संयोजक चिन्ह छोटी आड़ी रेखा (Hyphen) है।

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Reformation of Indian prisoners – a sociological study
2. Textile tools of Aryans
3. Corporeal punishment to theives
4. Wine drinking habits among working class-some remedies
5. Relief work for war victims
6. Divorce among Muslims
7. Marriage among Gujaratis
8. Cooking untensils of Dravidians
9. Clothes of slum dwellers
10. Unemployment in urban youth – a sociological problem

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	American primitives	Y72-773
2.	Influence of hindu culture	Y73(Q2):1:5
3.	Earning of woman	Y15:8683
4.	City housing	Y35:81
5.	Social life of scientists	Y9(A)
6.	Dravidian community	Y73(P3)
7.	Pre-adolescent child as a social group	Y115
8.	Social development in India	Y:7:7
9.	Rural culture of China	Y31:1.41
10.	Tri-colour flag of Indians	Y744:381

16.11 मुख्य वर्ग विधि शास्त्र (Main Class Law)–Z

विधि शास्त्र विषय के अंतर्गत ऐसे प्रावधान एवं व्यवस्था होती है जिसमें मानव जीवन की रक्षा हेतु प्रयास किये जाते हैं। यदि कोई सामाजिक व्यवस्था के विपरीत कार्य

करता है तो उस पर नियंत्रण की भी व्यवस्था भी इस विषय क्षेत्र में की गई है। मुख्य वर्ग विधि शास्त्र के अंतर्गत राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कानून, धर्म एवं धार्मिक संप्रदायों के कानून, अपराधों से संबंधित कानून, सामाजिक एवं प्राइवेट कानून आदि से संबंधित न्याय व उसके प्रावधानों तथा उनसे संबंधित समस्याओं का वर्णन किया गया है।

पक्ष परिसूत्र– Z[P], [P2], [P3], [P4]

[P] पक्ष

[P] पक्ष Community facet है इसकी एकल संख्यायें दो विधियों से प्राप्त की जाती हैं–

(i) किसी राष्ट्र अथवा भौगोलिक क्षेत्र के लिए, भौगोलिक विधि (GD) से।

उदाहरण :

American law	Z73
Indian law	Z44

(ii) किसी विशिष्ट प्रकार की संस्कृति, समुदाय व धार्मिक समुदाय के लिए, विषय विधि (SD) से।

उदाहरण :

Jewish law	Z(Q5)
Muslim law	Z(Q7)
Christian law	Z(Q6)

अंतरराष्ट्रीय कानून के लिए [P2] पक्ष की एकल संख्या 1 का प्रयोग किया जाता है। यदि इसका क्षेत्र संपूर्ण विश्व हो। किंतु यदि अंतरराष्ट्रीय कानून विश्व के किसी एक विशिष्ट भाग के लिए बनाया गया है तो उस विशिष्ट क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या [P] पक्ष के रूप में (GD) से प्राप्त किया जाएगा।

उदाहरण :

International law	Z1
American international law	Z7

उक्त नियम राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र राज्यों या सरकारों से संबंधित परिस्थितियों को नियंत्रित करने वाले सार्वजनिक अंतरराष्ट्रीय कानून का सूचक है।

किंतु यदि किसी पुस्तक का विषय एक से अधिक देशों में Municipal law से संबंधित है तो इसका वर्गांक अध्यारोपण विधि (SID) के द्वारा प्राप्त करना चाहिए।

उदाहरण :

Municipal law of Asian countries	Z4-1
Municipal law of American countries	Z73-1

[P] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्या 1 legal person है। वह व्यक्ति जिस पर कानून लागू होता है उस व्यक्ति के लिए उसकी उम्र व लिंग, पारिवारिक संबंध, निवास, व्यवसाय, स्तर, विषमता

तथा संघ आदि को दृष्टि से रखकर विभाजित किया जाता है क्योंकि अलग–अलग व्यक्तियों पर कानून भी अलग–अलग प्रकार का लागू होता है।
साधारण नागरिकों की तुलना में सांसद, अंतरराष्ट्रीय सेवाओं के कार्यरत कर्मचारी जैसे–राजदूत कई कानून से आजाद होता है। ऐसा ही साधारण व्यक्ति और पागल व्यक्ति पर लागू है।
उदाहरण :

Muslim law of marriage	Z(Q7), 122
International law of war	Z1,A
Forgery in American law	Z73,5277
High Court in India	Z44, 83
Christian law of adoption	Z(Q6), 1235

[P2] पक्ष

इस पक्ष की एकल संख्या 5 Crime के अंतर्गत वर्णित किसी भी एकल संख्या के साथ 04 Abetment (प्रेरित करना) को सामान्य एकल की तरह जोड़ा जा सकता है।
उदाहरण :

British law relating to abetment of suicide	Z56,511104
Indian law relating to murder	Z44,511204

6 Conflict of law में दिये गये निर्देश के अनुसार मुख्य वर्ग Z law के [P2] पक्ष की सभी एकल संख्याओं को एकल संख्या 6 के साथ सीधे जोड़ा जा सकता है।
उदाहरण :

Conflict of law relating to immovable Property in African law	Z6,621
Conflict of law relating to rape in British law	Z56,65151

इस पक्ष की ही एक और एकल संख्या 97 Regulative law है और इस एकल संख्या को विषय विधि (SD) के द्वारा विभाजित करने के निर्देश हैं।
इसके अलावा इसी पक्ष में कुछ और एकल संख्याएँ दी गई हैं–

जैसे–	A	War
	B	Land
	C	Naval
	D	Air

अतः इन एकल संख्याओं के साथ अनुसूची में उल्लिखित किसी भी [P2] पक्ष की एकल संख्या के साथ जोड़ कर वर्गांक को अधिक सूक्ष्म बनाया गया है।
उदाहरण :

International law regarding naval ships	Z1,C265
Interantional law for international staff in air war fare	Z1,D1451
Summary trials in air war fare	Z1,D751
British war law of mines	Z56,A2113

[P3] पक्ष

यह पक्ष Z law का कोई सामान्य पक्ष नहीं है। इसके अंतर्गत [P2] दी गई एकल संख्याओं के लिए अलग–अलग [P3] पक्ष दिया गया है। ये एकल संख्याएँ निम्न प्रकार हैं–

1	Legal person	A	War
2	Property	B	Land
3	Contract	C	Naval
7	Cause of action	D	Air
8	Court		
94	Evidence		

[P2] पक्ष की एकल संख्या 1 legal person के लिए [P3] पक्ष

उदाहरण :

Right of succession of widow in Indian law	Z44,1154,6
Indian law of local bodies jurisdiction	Z44,186,1

उपर्युक्त उदाहरण में [P3] पक्ष की एकल संख्याएँ हैं वह [P2] पक्ष के 1 legal person लिए दी गई है।

2 property के लिए भी [P3] पक्ष

उदाहरण :

Property as stridhan in muslim law	Z(Q7),2,1456
Pre emption of property in christian law	Z(Q6),2,195

3 contract के लिए [P3] पक्ष दिया है। [P3] पक्ष के अंतर्गत 1 capacity तथा शेष की एकल संख्याएँ [P3] पक्ष की एकल संख्या 11 "By age and sex" लेकर 197 benami तक की सभी एकल संख्याओं का प्रयोग [P3] पक्ष की तरह किया जाना चाहिए।

उदहरण :

Benami transaction in China contract law	Z41,33,197
Consideration of American law of contract	Z73,3,38

7 cause of Action के लिए [P3] पक्ष

उदाहरण :

Ex parts summary trials in Indian law	Z44,751,73
British law of session case award	Z56,755,75

8 Court के लिए [P3] पक्ष

उदाहरण :

High court Judges in Rajasthan	Z4437,83,11
Ssupreme court Judges in Great Britain	Z56,81,11

'94 Evidence के लिए [P3] पक्ष

उदाहरण :

Admissible of hearsay evidence in muslim	Z(Q6),9414,3

A, B, C, D War के लिए [P2] तथा [P3] पक्ष की एकल संख्याएँ

उदाहरण :

Declaration of war of naval in international law	Z1,C,1
Truce proposals in air war face	Z1,D,51

P4 पक्ष

[P3] पक्ष की एकल संख्या 7 के लिए [P4] पक्ष का विशेष रूप से प्रावधान है।

उदाहरण :

American law of award partition in session cases	Z73,755,75,2

[E] [2P] पक्ष

[P2] पक्ष की एकल संख्या 98 Document के लिए ही [E] [2P] पक्ष विशेष रूप से दिया गया है।

उदाहरण :

Drafting of negotiable instruments in British law	Z56,985:1
European law of cancellation of deeds	Z44,981:5
Registration of legal documents in Japan	Z42,98:3

सामान्य एकल (Common Isolate)

Law मुख्य वर्ग के अंतर्गत y7 case study पूर्ववर्ती सामान्यएकल का प्रयोग कानूनी रिपोर्ट्स के लिए किया जाता है। ऐसे कानूनी रिपोर्ट जो सामाजिक प्रकाशन के रूप में प्रकाशित होती है। उनके y7 case study के बाद सामान्य एकल का (Periodic) प्रयोग भी आवश्यक रूप से किया जाता है।

उदाहरण :

British law reporter, 1898	Z56y7m56,M98

American law reporter, 1821	Z73y7m73,M21
All India law reporter (1914)	Z44y7m44,N14

अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्गांक निर्मित कीजिए।

1. Mentally sick people in India law
2. Injunction as legal remedy
3. Bench of judges of Rajasthan High Court
4. Stridhan in Hindu law
5. International law against wounded and sick persons in air warfare
6. Execution of deeds in Australian property law
7. International law against piracy
8. Criminal law Journal of India (Issued from 1914)
9. Indian law for abetment in crimes against state
10. Soliciter General of Supreme Court of India

वर्गीकृत शीर्षक (Classified Titles)

1.	Hindu law	Z(Q2)
2.	Cancellation of deeds in American law	Z73,985:5
3.	Law relating to prisoners of land war	Z1,B,6
4.	Hindu law of adoptions	Z(Q2),1235
5.	Death sentence in Russian law	Z58,9421
6.	Japanese law of partnership	Z42,315
7.	Supreme court of China	Z41,81
8.	Greece law relating to land lord and tenants	Z51,211,3
9.	Movable in land warfare	Z1,B56
10.	Encyclopaedia of law	Zk

16.12 अभ्यास हेतु शीर्षक (Titles for Exercise)

1. Hindu law
2. Canadian law
3. Criminals in society
4. Cristian community

5. Gold money
6. Tea industry
7. Competitive marketing
8. Foreign aid to Nepal
9. Right of succession of adults in Indian law
10. Physical character of Italians
11. Tribal women
12. Psycho-analysis of fear in criminals
13. Teaching of microbiology
14. History of African countries before 20th century
15. Education and Philosophy

16.13 सारांश (Summary)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप इस इकाई में सम्मिलित किये गये मुख्य वर्गों से संबंधित प्रावधानों की जानकारी हो गई होगी। राजनीति शास्त्र एवं इतिहास से संबंधित उदाहरणों के माध्यम से दोनों में विभेद भी समझ में आ गया होगा। इस इकाई में सम्मिलित विषयों के नियमों एवं प्रावधानों को समुचित उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया है।

16.14 शब्दावली (Glossary)

प्रामाणिक वर्ग	–	किसी विषय की वर्ग संख्या में मुख्य संख्या के अतिरिक्त पक्ष अंक में प्रथम बार प्रयोग किया जाने वाला अंक।
सामान्य एकल	–	ऐसे एकल विचार जो किसी भी विषय के साथ बिना किसी निर्देश के जोड़े जाते हैं।
अध्यारोपित युक्ति	–	एक ही अनुसूची में दो एकल अंकों का होना।
भौगोलिक विभाजन	–	ऐसे एकल जिन्हें भौगोलिक विभाजन द्वारा भौगोलिक सारणी से लाकर प्रयुक्त किया गया हो।
विषय विधि	–	एक विषय में दूसरे विषयों का प्रयोग करना।

16.15 अभ्यास हेतु शीर्षकों के वर्गांक (Class Number of Titles for Exercise)

1. Z(Q2)
2. Z72
3. Y65
4. Y73(Q6)
5. X61;1
6. X8(J451)
7. X:516
8. X755.44974
9. Z44,113,6
10. Y752:2
11. Y15-72
12. SM9,65,526
13. T:3(G91)
14. V6'N ¬
15. T oa R

16.16 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें (References and Useful Books)

1. चंपावत, जी.एस. (1986). द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रायोगिक अध्ययन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. Bhargava, G.D. and Sood, S.P. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Vijay, Ujjain.
3. Dhyani, Pushpa (1998). Library Classification : Theory and principles, Vishwa Prakashan, New Delhi.
4. P S G Kumar (2010). Practical Guide to Colon Classification, 6th ed., Y.K. Publishers, Agra
5. Ranganathan, S.R. (1963). Colon Classification, 6th raised ed., Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, Bangalore.
6. Sachdeva, M.S. (1975). Colon Classification : Theory and practice, Sterling Publishers, New Delhi.
7. Satija, M.P. (1989). Manual of Practical Colon Classification, 2nd rev.ed., Sterling Publishers, New Delhi.
8. Sharma, Pandey, S.K. (2000). Colon Classification made easy, Ess Ess Publications, New Delhi.
9. Tripathi, S.M. and others (1999). Practical Colon Classification, P.K.Publishers, Agra.